कराबादीन इहसानी की अनुक्रमणिका।

समारम्भ।

हर्फ़ अलिफ़।

प्रथम अध्याय।

द्वितीय अध्याय।

तीसरा अध्याय।

प्रथम प्रकरण।

औषध ग्रहण करने के नियम

प्रथम अध्याय।

दूसरा अध्याय।

पांचवा अध्याय ।

छटा अध्याय

सातवा अध्याय

आठवा अध्याय ।

बत्तीसा और पींडाके नुसखे

नवा अध्याय

बुरूद का वर्णन।

दसवा अध्याय ।

बुख्रात (घूनी) का वर्णन

हर्फ़ पे

ग्यारहवा अध्याय ।

पाशोये के नुसखे ।

हर्फ़ ते

बारहवा अध्याय ।

तिरियाक (ज़हरमोहरा)के नुसखों का वर्णन

तेरहवा अध्याय ।

तेज़ाब अधिक मांस को व्रण से दूर करता है और पुराने फोडोंका मवाद बहाता है

हर्फ जीम ।

चोदहवा अध्याय ।

जवारिशात का वर्णन ।

हर्फ़ हे

पन्द्रहवां अध्याय ।

मस्तिष्क के रोग और दरदों में उपयोगी गोलियां

सोलहवां अध्याय

नेत्र रोग दूर करने वाली गोलीयां

सत्रहवां अध्याय

मुख के रोग दूर करने वाली गोली

अठारहवां अध्याय ।

पाचक सुधा लगाने वाली वात शूल दूर करने वाली गोली

उन्नीसवां अध्याय ।

बीसवां अध्याय

इक्कीसवां अध्याय ।

बाईसवां अध्याय ।

सताईसवां अध्याय।

हुकना का वर्णन

हर्फखे

अट्ठाईसवां अध्याय

खमीरों का वर्णन

उन्तीसवां अध्याय। १३१

खमीरा तमाखु के नुस्खे

तीसवां अध्याय

खिजाब का वर्णन

हर्फ दाल

इकतीसवां अध्याय।

प्राचीन व नियत दवाओं का वर्णन

बत्तीसवाँ अध्याय

दरवहरा का वर्णन

सेतीसवा अध्याय

मस्तिष्क के रोग तथा दर्द को दूर करने वाले तैलों का वर्णन

चौंतीसवां अध्याय।

कर्ण रोगों में उपयोगी तैलों का वर्णन

पेंतीसवां अध्याय

पेटके रोगों को दूरकरनेवाले तैलों का वर्णन

छत्तीसवां अध्याय

चोट लगजाने ऊंचेसे गिरजाने और मारों के अच्छा करने वाले तैलों का वर्णन

सैंतीसवां अध्याय।

मूत्रेन्द्रिय के रोगोंको उपयोगी तैलोंका वर्णन

अड़तीसवां अध्याय।

बालों के तैलों का वर्णन

उन्तालीसवां अध्याय।

पिचकारी का वर्णन जो स्त्री और पुरुषों के मूत्र स्थान में लगाई जातीहै

इक्यावनवां अध्याय ।

हर्फ सीन

शरवत, फरहत देनेवाले पुष्ट करने वाले और हृदयव मस्तिष्क के रोग दूर करनेवाले

बावनवां अध्याय ।

शरवत-अनेक प्रकार की खांसी नजला, सर्दी के शिरदर्द, पसली का दर्द, फेफडे का दर्द और श्वास रोग को दूर करने वाले शरवतों का वर्णन

तिरेपनवां अध्याय ।

शरवत ज्वरोंको दूरकरनेवाले

चौवनवां अध्याय।

शर्बत—यकृत और प्लीहा के रोग दूरकरनेवाले

पचपनवां अध्याय

शरबत—गुरदे मसान और मूत्र नाली के रोग दूर करनेवाले

छप्पनवांअध्याय।

आमाशय के रोग दूर करने वाले शरबतों का वर्णन

इकसठवां अध्याय।

कान व नाकके रोग दूरकरने वाली शियाफ काविर्णन

बासठवां अध्याय

मूत्रनाली के रोगो में उपयोगी शियाफ का वर्णन

उन्नीसवां अध्याय ।

शाफा का वर्णन

हर्फ स्वाद

बीसवां अध्याय

सवगहाय त्वचा के रोगों में उपयोगी

हर्फ ज्वाद

पैंतीसवां अध्याय ।

जमाद–शिर व मस्तिष्क के रोगोंको दूर करनेवाले

छत्तीसवां अध्याय

जमाद–कर्ण और नासिकाके रोग दूरकरनेवाले

सड़सठवां अध्याय

जमाद मुख और कंठ रोग में उपयोगी

अड़सठवां अध्याय

जमाद–पहलू का दर्द पीठका दर्द फेंफड़े का दर्द और दम घुटजाने को दूर करने वाले

उनहत्तरवां अध्याय

जमाद–कुच के रोगों को दूर करने वाले

हर्फ तोय

अट्ठारहवां अध्याय ।

तिलाओं का वर्णन

शिरसे गरदन तक के रोग दूर करने वाले

उन्यासिवां अध्याय ।

तिला गरदन से पेडूतक के रोगोंमें गुणदायक

अस्सीवां अध्याय ।

तिला–अंडकोष मूत्रेन्द्रिय और जंघा के रोग दूर करने वाले

इक्यासीवां अध्याय

ब्यासीवां अध्याय

तिरासीवां अध्याय

चौरासीवां अध्याय

हर्फ नून

* इति *



नीचे लिखी पुस्तकें हमारे यहां मिलती हैं।

बूटी प्रचार

यह वैद्यक का छोटासा ग्रन्थ अपने ढंगका निराला है इस पुस्तक को महात्मा महन्त सुखरामदासजी ने अपने जीवनभर अनुभव किये हुए चुटकलों से भरा है इसमें प्रत्येक छोटे और बड़े रोगों के बहुतही सुगम उपाय लिखे हैं इस पुस्तक के पास रहने से मनुष्य अपने घरपर तथा विदेश में अपना और अपने साथियों का रोग दूरकर सकता है बार २ वैद्य हकीमों के पास दौड़ने की आवश्यकता नहीं रहती इस लिये इसकी एक प्रति अवश्य पास रखना चाहिये इसमें धातुओं के जारण मारण की विधि जंगलकी जड़ी बूटियों द्वारा बहुत ही सहज लिखी है जिन २ जड़ी बूटियों का काम इस पुस्तक में पड़ा है उन सब के ऐसे सुन्दर चित्र दिये हैं मानों अवसही खींच दिया है यह चित्र प्राय ३०० से अधिक हैं पुस्तक के अन्त में नागेश्वर यन्त्र वालुका यन्त्र मृगाग यन्त्र आदि के कितने ही अद्भुत और उपयोगी चित्र दिये हैं इस तरह सब मिलकर यह पुस्तक प्राय, ३०० पृष्ठ में सम्पूर्ण हुई है मूल्य १) डाक व्यय =)

मीजान तिब्ब

यह ग्रन्थ यूनानी हिकमत का उर्दू से अनुवाद किया गयाहै इस में सिरसे पांव तक के सम्पूर्ण रोगों के पूरूप निदान लक्षण और चिकित्सा बड़ी विलक्षणरीति से दिये गये हैं एक २ रोग पर अनेक प्रकार की औषधे ऐसी दागई हैं जिनमें दाम थोड़े लगतेहैं और कामबड़ा देतीहैं यह पुस्तक क्याहकीम और क्या वैद्य सबको अपने अपने पास रखना उचित है गृहस्थी भी इस पुस्तक के सहारे छोटे मोटे रोगों का इलाज कर सकतेहैं बातबात मेंवैद्यके पास नहीं दौड़ना पड़ेगायह पुस्तक ३५० पृष्ट में मोटे चिकने कागज पर मुम्बई टाइपमें छपकर तयार है विलायती कपड़े की जिल्द मूल्य १॥) रुपया डा० म० ।) आना

शालहोत्र बड़ा

इस में घोड़ों के शुभ अशुभ लक्षण, जाति, उत्पत्ति, स्थान भौरियों के शुभ अशुभ फल तथा बीमार घोड़ों के चित्र उनके घाव, व्रण, फोड़ा फुन्सी जहर बात तथा और भी समस्त रोगों का इलाज भली भांति वर्णन किया है यह पुस्तक अश्व-चिकित्सक, घोड़ों के सौदागर तथा उन रईसों के बड़े कामकी है जिनके यहां घोड़े रहते हैं पुस्तक उर्दू से अनुवाद की गई है मूल्य ॥) आना

होमियो पैथिक चिकित्सातत्व

इस समय डाक्टरी का प्रचार अधिक हो रहा है विशेष कर "होमियो पैथिक"

हकीम फैसागोरस ने केवल सिकंजबी बनाई थी और शरबत हकीम बतलीमूसने बनाया था। प्रथम प्रत्येक औषधि का रस निचोड कर खांड़ के साथ चाशनी की गई इसके उपरान्त शुष्क औषधियें के काढे से ही बनाने लगे और तक्षथा नामक पुस्तक में लिखा है कि धर्मपाल वैद्य ने जो भदावल में, उत्पन्न हुआ था सात प्रकार से काढ़ा बनाया और उसीने शर्बत भी बनाया परन्तु शरबत को भी काढ़े ही की गणना में रक्खा। उसके लिये कोई पृथक नाम नहीं रक्खा।

मरहम–इसका निर्माण प्रथम यूनान के प्रसिद्ध हकीम बुकरात ने किया था और अपनी पुस्तक में लिखा कि मरहम की शक्ति बहुत काल पर्यन्त शेष रहती है और जिसमें जैत का तेल मिला हो उसकी शक्ति कभी कम नहीं होती और जिस मरहम में गोंद विशेष मिला हुआ हो उसका गुण बीस वर्ष तक स्थिर रहता है और जिसमें चर्बी मिली हो उस का बल एक वर्ष पर्यन्त शेष रहता है।

सुर्मा–प्रथम इसको हकीम फैसागोरसने बादशाह अरसतन्दू के लिये बनाया था।

वरूद–(पोटली) प्रथम इसको हकीम नूसने बादशाह के लिये नेत्रों का दर्द दू

लिये ठंढी औषधि द्वारा बनाई थी इसके पश्चात् और और औषधियें भी मिलाई जाने लगीं ।

❋ तीसरा अध्याय ❋

इस पुस्तक के मुख्य विषय का वर्णन ।

इस पुस्तक के पाठकों को निम्न लिखित बातों पर ध्यान रखना चाहिये ।

(१) मिश्रित नुसखे में उसकी कोई प्रकृति स्थिर करनी उचित है अर्थात् प्रत्येक औषधि की विविध प्रकृति संयोग होकर दोनों कर्त्ता और कर्म्म शक्ति किसी एक श्रेणी पर स्थिर होजांय और जिन जिन रोगों के लिये वह मिश्रित किया गया है सबकी रिआयत प्रकृति के साथ उपस्थित हो । परन्तु यह बात उस समय सम्भव है जब उस नुसखे की सब औषधियां गिनती अथवा तोल में न्यूनाधिक न हों और यदि कोई औषधि अप्राप्य हो तो उसकी प्रकृति की दूसरी औषधि उसमें मिलादी गई हो । औषधि ठीक ठीक तोल से डालना बहुत आवश्यक है नहीं तो उसकी असली प्रकृति स्थिर रहना असम्भव है ।

यूनानी वैद्यक की पुस्तकों में जो तोल औषधियों की लिखी रहती है उनके नाम बहुधा ऐसे होते

है जैसे अदकिया, अस्तार, पल बंदकः, तुरमुसः जोज़ह, दांनक़, सिकरजः, नसुख, मिस्काल, दिरः दांग, इत्यादि। इन नामों से तोल का ठीक निदान नहीं होसकता इसके सिवाय इन तोलों की मिकदार में पृथक-पृथक हकीमों के मत से भेद है बल्कि स्थान स्थान के वजन तोला इत्यादि पृथक पृथक होते हैं ऐसी अवस्था में मिश्रित औषधियों की प्रकृति पर पूरा विश्वास किस प्रकार होसकता है। बल्कि बहुधा यही कारण है कि औषधि अपना प्रभाव यथावत नहीं दिखलाती हैं। इसी कारण से इस पुस्तक में यूनानी पुस्तकों द्वारा निश्चय करके वजन की तादाद इस भांत नियत की गई है।

आठचावल = १ रत्ती, एक माशा = आठ रत्ती
बारह माशे = १ तोला, चालीसतोले = एक रतल
अस्सी तोले = १ सेर, चालीस सेर = एक मन

(२) इस पुस्तक में बहुधा नुसख़े प्राचीन हकीमों के भी लिखे गये हैं। यदि किसी दूसरी पुस्तक से भेद पाया जाय तो उसका यह कारण है कि बहुत सी करावादीनों के मिश्रित नुसखों को इकट्ठा करके उनकी तरकीबों को देखा तो उनमें बारंबार नक़ल की नक़ल होते रहने के कारण बहुत फ़र्क पाया गया। उसमें से इस पुस्तक में वह तरकीबें

लिखी गई हैं जो कई पुस्तकों में छपती थीं और देखने में सही और ठीक ज्ञात हुई। दूसरे जहां वैद्यों का मतभेद देखा वहां जिस रायको बुद्धि और तजरुबे से ठीक पाई लिखा। तीसरे प्राचीन वज़न बहुत खोज और सावधानी के साथ नए वज़न में जिनका हाल ऊपर आ चुका है बदल दिये गये। चौथे जो औषधि नहीं मिलती है, या बहुत कम मिलती है, या जिनको लोग बहुत कम जानते और पहचानते हैं, या जो औषधि यद्यपि मिल जाती है परन्तु यह निश्चय नहीं होता कि यह उत्तम है या नहीं ऐसी औषधियों को त्याग कर उनके स्थान पर दूसरी औषधियां उनके बदले में लिखी गई हैं अथवा किसी दूसरी औषधि की तोल उचित रीत पर घटा बढ़ा कर ऐसा रक्खा गया है कि जिससे उस छोड़ी हुई औषधि की आवश्यकता नहीं रही।

(३) ऐसे नुसखे जिनकी बहुधा औषधियां अप्राप्य हैं और बहुत कम जिनके प्रयोग की आवश्यकता होती है जैसे तिरियाक, फारूक, लबूब कबीर, व कुल कुलानज इत्यादि उनको इस छोटी सी पुस्तक में नहीं लिखा गया है यदि किसी को उनके देखने की आवश्यकता हो तो कराबादीनों में देखना चाहिये।

(४) जो नुसख़ा पांच रोगों के लिये
दायक लिखा है उस का यह तात्पर्य्य नहीं है
जब वह पांचों रोग रोगी को हों तब उसका से
करे। उस नुसखेको उन रोगों में से यदि एक
रोग हो तो सेवन कराना आवश्यक है।

(५) बहुधा नुसख़ों में उसकी मात्रा
कारण से नहीं लिखी है कि उसकी मात्रा रो
की अवस्थानुसार वैद्य जो उचित समझे लिखे

(६) जिस नुसखे में हड़ बहेड़ा आम
लिखा है उससे यह तात्पर्य है कि उसकी गुठ
निकाल कर वह तोल जो नुसखे में लिखी
लेनी चाहिये और हड़ से मतलब बड़ी हड़से है

(७) हर तीन प्रकार की हड़ से मत
छोटी हड़ बड़ी हड़ और काली हड़ का है औ
तीनों हड़ गुठली निकाल कर समान भाग मिल
हुई हों उन तीनों की तोल एकत्रित, नु
खे में लिखी तोल के समान लेनी चाहिये।

(८) त्रिफला से मतलब बड़ी हड़ बहेड़ा अ
मले का है यह तीनों चीज़ें गुठली निकाल क
समान भाग मिली हुई हों।

(९) मवीज से तात्पर्य बीज निक

(१०) जहां चूर्ण में सोंठ का प्रयोग लिखाहै वहां घाड़ की सोंठ अथवा सतुआ सोंठ का प्रयोग करना चाहिये। और दूसरी तरकीबों में रेशेदार सोंठ का प्रयोग करना चाहिये।

(११) जहां केवल रेवन्द शब्द लिखाहै वहां रेवन्दचीनी समझना चाहिये।

(१२) बहमनीन से तात्पर्य बहमन सुर्ख व बहमन सफ़ेद से है।

(१३) तोदरीन से तात्पर्य्य तोदरी ज़र्द और तोदरी सुर्ख से है।

(१४) मूसलीन से मुराद मूसली स्याह व मूसली सफ़ेद है।

(१५) क़ाकलतेन से मुराद इलायची सफ़ेद व इलायची सुर्ख है।

(१६) फ़िलफ़िलैन से मुराद फ़िल फ़िल दराज़ (बड़ी पीपल) और फ़िल फ़िल गिर्द अर्थात् पीपल व मिर्च हैं।

(१७) संदलैन से मुराद सफ़ेद चंदन और रक्त चंदन है।

इष्ट०५—यह ओषधि इस रीत से लेनी चाहिये कि प्रत्येक ओषधि का उतना वमन हो जो उस नुसख़े में लिखा है।

(१८) जिस प्रयोग में शहत दाखिल है उस में साफ किया हुआ शहत मिलाना चाहिये। शहत को साफ करने की यह रीति है कि शहत को अग्नि पर रक्खें जब उसमें झाग आजांय तब उसको कपड़े से छान कर गरम अवस्था में शहत को मिलावें।

(१९) जिस प्रयोग में खांड और शहत दोनों हों वहां उचित है कि दोनों को मिलाकर उसमें थोडा जल डाल कर अग्नि पर चढावें जब खांड घुल जाय और शहत में झाग आजांय तब कपड़े से छान कर चाशनी बनाकर औषधि मिलावें।

(२०) जिस क्वाथ अथवा यूष में आकाश बेल के बीज या अमर बेल हो तो उचित है कि उनको कपडे की पोटली में बांधकर क्वाथ अथवा यूष में शामिल करें और बिना मले निचोडलें।

(२१) हम वज़न (समान भाग) से यह मतलब है कि सब औषधियों की तोल समान हो दुचंदा से यह अभिप्राय है कि सब औषधियों की अपेक्षा दूनी हो। इसी प्रकार और शब्द हैं जैसे सिचंदा इत्यादि।

(२२) ज़ीरा मुदब्बिर इस प्रकार बनाय

जाता है कि काला जीरा सिरके में भिगोकर और निकाल कर सुखालें और उसको फिर सिरके में भिगोवें और सुखावें इस प्रकार तीन बार करें।

(२३) बूदादह इस प्रकार बनती है कि औषधि को करछी में रखकर आग्नि पर रक्खे जब भुनने की गंध आने लगे और रंग बदल जाय तब उतार लें।

(२४) तमक़िया उसको कहते हैं कि किसी शुष्क औषधि को जौकुट करके किसी चीज़ के पानी में भिगोकर सुखाया जाय इसी प्रकार तीन बार से कम में ठीक तसक़िया नहीं होता।

(२५) शीर पिसर उसको कहते हैं कि स्त्री पुत्रवती हो और पुत्रको दूध पिलाती हो। इसी भांत शीर दुख्तर कन्यावती का होता है।

(२६) गिलहिकमत से यह तात्पर्य है कि औषधि को मट्टी के कोरे पात्र में रखकर उसके मुंह पर कोरा पारा (सकोरा) ढक कर आटे से उसका सांस बंद करके उसके ऊपर भीगा कपड़ा लपेट कर ऊपर से खूब मुलतानी मट्टी लगा कर उसको नियत समय तक अग्नि में रक्खें।

(२७) अर्क खींचना हो तो औषधि में नदी

का जल डालना उत्तम है । अन्य क्रिया में मीठे कुए का जल डालना चाहिये ॥

(२८) हुकना में खारी कुए का जल डालना चाहिये ।

प्रथम प्रकरण ।

औषधि ग्रहण करने के नियम ।

❋ प्रथम अध्याय ❋

औषधियों के संचित करने और सुरक्षित रखने के नियम और उनकी शक्ति स्थिर रहने की अवस्था और उपाय ।

विदित हो कि उत्तम विधि यह है कि जिस स्थान की औषधि उत्तम हो उसी का सेवन किया जाय और इस बात का ज्ञान उन पुस्तकों से हो सकता है जिनमें औषधियों के पृथक पृथक गुण दोष का वर्णन लिखा हो अथवा देशाटन करने वाले प्रवीण पुरुषों से इस बात का ज्ञान प्राप्त हो सकता है ।

समस्त औषधियों को इस प्रकार रखना चाहिये कि सील के स्थान में और अधिक ऊष्ण तथा अधिक शीतल पवन में और आंधी और गर्द गुबार में न रहने दिया जाय । इस प्रकार रखने से औषधि का गुण और बल नष्ट हो जाता है ।

जानना चाहिये कि औषधि तीन प्रकार की होती हैं।

(१) जमादात अर्थात् जो खान की सूरत मे पृथ्वी से निकलती हैं सर्व प्रकार की धातु और पाषाण और मृत्तिका इत्यादि उसमे शामिल है।

(२) नबातात अर्थात जड़ी बूंटी और काष्ठादिक जो वृक्ष और लतारूप में पृथ्वी से उत्पन्न होती हैं।

(३) हैवानात अर्थात् जीवधारी पशु पक्षी कीट पतंग जलचर इत्यादि।

❋ जमादात का वर्णन ❋

जमादात वह चीजें हैं जिनका न पेड हो न जीवधारी हों। उनके लेने के लिये कोई समय नियत नहीं किया गया है और न उनके देखने से यह ज्ञात हो सकता है कि किस समय अपने स्थान से ली गई है।

यदि मात दिल और बहार की ऋतु में अपने स्थान से ली जांय तो उत्तम हैं और खूबी उनकी यही है कि उनके जम जाने और गाढ़े पड़ जाने पर प्रत्येक कण की झलक व रंग रूप वैसा ही बना रहे। जो अंग पतला और नर्म हो और उस में कोई दूसरी वस्तु न मिली हो तो इसकी शक्ति

का जल डालना उत्तम है । अन्य क्रिया में मीठे कुएं का जल डालना चाहिये ॥

(२८) हुकना में खारी कुएं का जल डालना चाहिये ।

प्रथम प्रकरण ।

औषधि ग्रहण करने के नियम ।

❋ प्रथम अध्याय ❋

औषधियों के संचित करने और सुरक्षित रखने के नियम और उनकी शक्ति स्थिर रहने की अवस्था और उपाय ।

विदित हो कि उत्तम विधि यह है कि जिस स्थान की औषधि उत्तम हो उसी का सेवन किया जाय और इस बात का ज्ञान उन पुस्तकों से हो सकता है जिनमें औषधियों के पृथक पृथक गुण दोष का वर्णन लिखा हो अथवा देशाटन करने वाले प्रवीण पुरुषों से इस बात का ज्ञान प्राप्त हो सकता है ।

समस्त औषधियों को इस प्रकार रखना चाहिये कि सील के स्थान में और अधिक ऊष्ण तथा अधिक शीतल पवन में और आंधी और गर्द गुबार में न रहने दिया जाय । इस प्रकार रखने से औषधि का गुण और बल नष्ट हो जाता है ।

जानना चाहिये कि औषधि तीन प्रकार की होती हैं।

(१) जमादात अर्थात् जो खान की सूरत मे पृथ्वी से निकलती हैं सर्व प्रकार की धातु और पाषाण और मृत्तिका इत्यादि उसमे शामिल है।

(२) नबातात अर्थात जडी बूंटी और काष्ठादिक जो वृक्ष और लतारूप में पृथ्वी से उत्पन्न होती हैं।

(३) हैवानात अर्थात् जीवधारी पशु पक्षी कीट पतंग जलचर इत्यादि।

❋ जमादात का वर्णन ❋

जमादात वह चीजें हैं जिनका न पेड हो न जीवधारी हों। उनके लेने के लिये कोई समय नियत नहीं किया गया है और न उनके देखने से यह ज्ञात हो सकता है कि किस समय अपने स्थान से ली गई हैं।

यदि मात दिल और वहार की ऋतु में अपने स्थान से ली जांय तो उत्तम है और खूबी उनकी यही है कि उनके जम जाने और गाढ़े पड़ जाने पर प्रत्येक कण की झलक व रंग रूप वैसा ही बना रहै। जो अंग पतला और नर्म हो और उस में कोई दूसरी वस्तु न मिली हो तो उसकी शक्ति

कभी नष्ट नहीं होती परन्तु न्यून हो जाती है और बहुत पुरानी होने से निर्बल हो जाती है।

❀ नबातात का वर्णन ❀

नबातात वह वस्तु है जिनका पेड़ जमता है और उस में भी दो भेद है एक वह जिनका वृक्ष कई वर्ष पर्य्यन्त रहता है और जवान हो जाने पर हरसाल फलता फूलता है।

दूसरा वह जो हर साल किसी ऋतु में उत्पन्न होता है और उसका पेड़ एक वर्ष के उपरान्त नहीं ठेरता परन्तु कभी आकस्मिक थोड़ा बहुत शेष रह जाता है।

प्रत्येक काष्ठादिक का हर अंग घुनने अथवा सड़ने अथवा रंग, स्वाद व गंध के बदल जाने से बिगड़ जाता है और जो काल उस की शक्ति के स्थिर रहने का नियत है उस के व्यतीत होने से पूर्व ही वह औषधि के सेवन योग्य नहीं रहती।

प्रथम प्रकार के पेड़ों के पत्ते उस समय लेने चाहिये जब पतझड़ होने के पश्चात् नवीन पत्र उत्पन्न हों और कली उस समय लेनी चाहिये जब खिलने के योग्य होगई हो और फूल उस समय तक लेने चाहिये जब तक पेड़ से गिर न गए हों।

फल कच्चा और पक्का दोनों प्रकार के लिये

जाते हैं और अपने २ मौके पर सेवन किये जाते हैं जैसे बबूल का फल कच्चा लिया जाता है और उसी में पूरी शक्ति होती है और आमले का फल पका हुआ लिया जाता है क्यों कि इसका कच्चा फल बुरा होता है।

पेड़ की लकड़ी जड़ और वक्कल उस समय लेना चाहिये जब पेड़ बहार लाने के योग्य हुआ हो या बहार लाता हो।

पेड़ों से जो चीज़ प्रति बर्ष उत्पन्न होती हैं अर्थात पत्ती कली फूल फल और बीज उनमें पूर्ण शक्ति केवल एक बर्ष तक स्थिर रहती है। उसके पश्चात न्यून हो जाती है। यदि सावधानी से रक्खे जांय तो सेवन के योग्य रहते हैं वरना बिलकुल खराब हो जाते हैं परन्तु विधि पूर्वक रख ने से अति काल तक शक्ति रहती है जैसे मुरब्बा, अथवा गुलकंद बनाने से या किसी और तरकीब में दाखिल करने से।

गोंद—जिस प्रकार के वृक्षों में होता है उन वृक्षों के मद आने के समय या जाड़े के मो-सम में स्वयं बक्कल फटकर खोंों में एकत्रित हो जाता है और पेड़ की मोटी छाल पर घाव कर देने से भी निकलता है।

दूध—एक सफेद रंग की तर वस्तु है जो पेंड में घाव होने से अथवा उसकी पतली डाल या पत्ता तोडने से स्वयं वह निकलती है। उसके रखने के चंद उपाय हैं एक यह कि किसी पात्र में एकत्रित करके शुष्क किया जाय दूसरे कोई कपडा उसमें भिगो कर सुखा लिया जाय और आवश्यक्ता के समय उसको भिगोकर निचोड लिया जाय तीसरे दूध वाले पेड के हरे अथवा सूखे बक्कलको औटाकर और खूब हिलाकर साफ करके सुखा लिया जाय।

द्रष्टव्य—जो रतूवत शुष्क होने के पश्चात् तर करने से लहसदार या श्यामवर्ण या रक्त होजाय उसको समघ गोंद और गाद कहते हैं। और जो सफेद या अर्द्ध रग का या बिना लहस के हो उसको दूध कहते हैं। उसकी असली शक्ति उस समय तक स्थिर रहती है जब तक उसके रग गंध और स्वाद में परिवर्तन न हो।

अन्य प्रकार की नवातात का वर्णन।

दूसरी प्रकार के वृक्ष और पौदे जो हर साल स्वयं अथवा बौने से उत्पन्न होते हैं उनके प्रत्येक अंग की मुख्य शक्ति एक वर्ष पर्य्यन्त स्थिर रहती है उस के उपरान्त न्यून हो जाती है परन्तु जिस समय तक वह सडे घुने नहीं अथवा उस के रंग या गंध में विपर्य्य न हो उस समय तक वह वस्तु सेवन योग्य रहती है।

पत्ता उस समय लेना चाहिये जब वह फूलने फलने के करीब हो ।

कली, फूल, फल और बीज उस समय लेने चाहिये जो समय कि किस्म अव्वल के पेडों से लेने का ऊपर वर्णन किया गया है ।

पेड़ की जड़, छिलका, लकड़ी और बक्कल उस समय लेना चाहिये जब वह फल फूल कर शुष्क होने के करीब हो ।

जिन औषधियों के लेने का समय लिखा गया है इस से यह तात्पर्य्य है कि उस समय उन औषधियों में पूरी शक्ति रहती है । और यह नहीं है कि पहले पीछे लेने से सेवन योग्य न हो ।

हैवानात का वर्णन ।

हैवानात अर्थात् जीव जन्तु का प्रयोग औषधि में तीन प्रकार से होता है ।

(१) बिलकुल अर्थात सर्वाङ्ग जैसे कि बीर बहुट्टी और केंचुए का ।

(२) उनका मल साफ करके जैसे कि रेग माही केंकडा इत्यादिक ।

(३) किसी जीव का कोई मुख्य अंग जैसे मछली का पित्ता और जुंद बेदस्तर के ।

विदित हो कि जो जीव तरुण और बलवान

होता है उसका समस्त अंग काम में आताहै और प्रत्येक जीव की तरुणता की पहचान पृथक २ लक्षणों से होती है जिसका विस्तार पूर्वक वर्णन करना इस छोटी पुस्तक में असम्भव है।

प्रत्येक जीव का बल उसकी तेज चाल, तरुणता, पराक्रम, और मोटे दुबलेपन से ज्ञात होता है और प्रत्येक जीव का समस्त अंग अथवा कोई भाग उसकी तरुणावस्था में लेना उचित है और उसको सुखाने और रखने में बहुत सावधानी रखनी उचित है जिससे उसमें दुर्गन्ध न हो जाय और कीड़े न पड़ जांय। और जब तक उसका रंग, रूप स्वाद न बदले सेवन करने योग्य है।

दूसरा अध्याय।

किसी एक औषधि से एक ही औषधि बनाने की क्रिया का वर्णन। जिससे कि वह स्वच्छ और निर्मल हो जाय अथवा उसका बल या उसके गुण का प्रभाव अधिक काल तक स्थिररहै।

रुब्ब–इस क्रिया से बनाया जाता है कि ताज़ा जड़ तथा लकडी को पानी में पीसकर छान लें और पानी को अग्नि में पकावें जब गाढ़ा होजाय धूप में सुखालें। यदि जड़ या लकड़ी सूखी है तो उसको जौकुट करके पानी में औटा कर मलकर

साफ करके पकावें जब गाढा हो जाय सुखालें।

फलों का रुब्ब इस प्रकार बनता है उनका रस निचोड़ कर उसको पका कर सुखालें।

उस्सारह—यह केवल पत्ती फूल फल लकड़ी या जड़ ताजा का बनता है उस को कुचल कर उस का पानी निचोड़ कर धूप में सुखालें।

सत—केवल लकड़ी और जड़ का बनता है यदि वह गीली है तो उसको कुचल कर यदि सूखी है तो पानी में तरकरके कुचल कर हाथों से खूब जोर से मलकर और कपड़े में छान कर पानी को किसी बर्तन में रक्खें जब गाद बैठ जाय और पानी ऊपर नितर जाय तब बत्ती लगा कर पानी को टपकादें और उसको धूप में सुखालें।

खार—जिस औषधि का खार अर्थात् लवण निकालना हो उस को जलाकर उस की राख थोडे पानी में दो तीन पहर तक भिगोवें। उसके पश्चात् उसको गाढ़े कपड़े में रखकर और चारों कोने कपड़े के पृथक २ बांध कर उस के नीचे बरतन रख कर उस राख पर पानी डालें। खार पानी में नीचे टपक आवेगा उस पानी को फिर उस राख मे डाल दें इस प्रकार दो तीन वार टपका कर पानी को किसी बरतन में रख कर आग पर औटावें जब पक

उफान आजाय ठण्डा करलें । कुछ राख नीचे जम जायगी उस को दूर करके पानी को जलादें । खार नमक की तरह नीचे जम जायगा ।

धुआं—इसको काजल भी कहते हैं यह तीन प्रकार से बनाया जाता है प्रथम यह कि केवल औषधि को पवन से बचा कर जलावें और उस के धुऐं पर मट्टी का कच्चा बरतन ढकें उस में जितना धुआं जम जाय उसको उतार कर रक्खें ।

दूसरी विधि यह है कि सूखी औषधि को पीस कर कपड़े में बत्ती की तरह लपेट कर दिये में रख कर तेल डाल कर जलावें और उपरोक्त विधि से धुऐं का संग्रह करें ।

तीसरी विधि यह है कि सूखी औषधि को पानी में पीसकर अथवा गीली औषधि का पानी निचोड़ कर उस पानी में कपड़ा भिगोकर उसको सुखावें और बत्ती बनाकर दूसरी विधि के अनुसार धुआं लें।

कोयला—जिस औषधि का कोयला बनाना हो उस को टुकड़े २ करके, गिल हिकमत करके भाड या भूभल में जलावें कि जिससे उस का धुआं और लौ बाहर न निकलने पावे ।

ख़ाक—यदि गिल हिकमत में औषधि को जलावें जिससे कि उस का धुआं और लौ बाहर

निकले और कोयला न रहे राख हो जाय तो उत्तम है। यदि खुली हुई जलावें तो जिस चीज़ से जलावें उस की खाक पृथक करलेनेकी कोशिश करें।

रोग़न—बहुधा बीज का तेल निकाला जाताहै उसकी विधि तेल के प्रकरण में वर्णन की जायगी।

तीसरा अध्याय।

मुफ़रिद अर्थात् एकाकी औषधि के शुद्ध करने की क्रिया का वर्णन।

जिस से कि बल ओषधि का अधिक होजाय और उसका असर शीघ्रता से होने लगे और हलकी और दोष रहित होजाय। चाहे वह अकेली सेवन की जाय अथवा और ओषधियों के साथ मिश्रित की जाय।

विदित हो कि सबही औषधियां इस प्रकार की नहीं हैं कि बिना शुद्ध किये वह सेवन की जासकें।

* जमादात अर्थात् धात्वादिक औषधों की *
* शुद्ध करने की क्रिया का वर्णन *

मुरवारीद अर्थात् मोती—मोती को गाय के दूध में जोश देकर पानी से धोकर खरल में रिगड़े।

सीप, मूंगा, मूंगे की जड—इनको गिल हिकमत करके इतनी अग्नि दें कि श्वेत वर्ण के सदृश हो जांय

अक़ीक़ (लाल) याकूत (माणिक) और यशब (पन्ना)—इन चीजों को और इन के सदृश दूसरी चीज़ों को अग्नि में गरम करके पानी में बुझावें। इस क्रिया से शुद्ध हो जाने के अतिरिक्त इन का घिसना भी सुगम हो जाताहै।

घरिया—सोने और चांदी के गलाने की घरिया को अग्नि में खूब गरम करके एक बार सिरके और एकबार पानी में बुझावें। इसके पश्चात् उसे घिसकर पानी मिलाकर पानी को ऊपरसे नितारदें।

फिटकिरी—फिटकिरी को लोहे तथा तांबे के चमचे में रखकर आग पर रक्खें कि पिघल कर सूख जाय।

अन्य विधि—गिल हिकमत करके थोड़ी देर अग्नि पर रक्खें।

खब्सुल हदीद—इस को सात बार खूब गरम कर के सिरके में बुझावें फिर एक सप्ताह पर्य्यन्त सिरके में डूबा रक्खें फिर उसको गाय के घृत में रिगड कर पानी में घोलदें जितना नीचे बैठ जाय उसको लेकर उसी प्रकार सात बार पानी बदलें।

पारा—चालीस बार गाढ़े कपडे में छान कर साफ करलें।

बहरोज़ा—एक हांडी आधी जल से भरकर उस

के मुंह पर झिरझिरा कपडा बांध कर ऊपर बहरोज़ा रखकर ढकने से बन्द करदें और हांडी को अग्नि पर रक्खें जब बहरोज़ा पानी की गर्मी से टपक कर हांडी में गिर जाय तब कपडे और मैल को दूर करदें। फिर इसी प्रकार पांच चार बार करें यहां तक कि पीसने के लायक होजाय।

गंधक—एक देगची लेकर आधी गाय के दूध से भरें उसके मुंह पर झिरझिरा कपडा बांध कर उसके चारों ओर आटा सानकर मेंड बांधदें और गंधक के छोटे २ टुकडे करके उस कपडे पर रक्खें और उसपर उलटा तवा इस प्रकार रक्खें कि गंधक से मिला रहे। तवे पर कोयले की अग्नि रक्खें कि गंधक पिघल कर दूध में गिरे। फिर गंधक को दूध में से निकाल कर दूसरे कपड़े से पोंछ डाले।

तूतिया अर्थात् नीलाथोता—नीलाथोता बारीक पीसकर पानी से टिकिया बनाकर अग्नि पर रख कर सुखावें।

अन्य विधि—नीलाथोता पानी में पीस कर घोललें और तहनशीन करलें इस प्रकार सात बार पानी बदलें।

मुरदासंग—मुरदासंग को रगड़ कर पानी में

मिलाकर तीन दिन तक किसी पात्र में रखा रहने दें और प्रत्येक दिन दो तीन बार दिया करें। फिर पानी को दूर करके उस गाद म नया पानी मिलाकर रक्खें, जब गाद जम जाय पानी टपका कर साफ करलें।

हरताल—हरताल के छोटे २ टुकड़े करके एक कुल्हिया मे रखकर और दीवले से ढक कर उसके मुंह पर आटा लगादें और दीवले में एक छेद करके मंदी आंच पर रक्खें। जब तक काला धुआं निकले रखा रहने दें और जब सफेद धुआं निकलने लगे उतार लें।

संग सुरमा—संग सुरमा को रुई में लपेट कर जलावें जब धुआं निकलना बंद हो जाय तब साफ करलें।

अन्य विधि—संग सुरमे पर बकरी की चरबी लपेट कर अग्नि में रक्खें जब चरबी जल जाय और सुरमा लाल हो जाय तब पुत्रवती स्त्री अथवा गायके दूध में बुझालें।

अन्य विधि—उसको खूब बारीक पीसकर जल में घोलकर गाद को सुखालें।

लवण—लव [illegible] क देगर [illegible] उसका

मुंह ढकने से बन्द करके अग्नि पर उस समय तक रक्खें जब तक कि उसका चटखना बन्द न होजाय

सज्जी—सज्जी को टुकड़े२करके एक मट्टी के सकोरे में अग्नि पर इतनी देर रक्खे कि उसका रंग बदल जाय।

संग बसरी-(खपरिया) को अग्नि में लाल करके कई बार गुलाब या दही के तोड या अनार के पत्ते के रस अथवा नीबु के रस मे बुझावें।

चूना व मट्टी— को जल में घोल कर छानकर रखलें जब वह पैंदी मे बैठ जाय तब उस पानी को फैंकदे।

* काष्टादिक की शोधन विधि *

अफीम—को टुकडे २ करके पानी अथवा गुलाव जल मे चार पहर तक भिगो कर आग पर रक्खें और खूब मलें कि गल जाय फिर छान कर उसका मैल निकाल कर पानी को इतना पकावें कि गाढ़ा हो जाय और गोली बंधने लगे यदि अर्द्ध भाग अंगूरी शराब मिलाकर पकावें तो बहुत स्वादिष्ट होजाय और उसके समस्त दोष दूर हो जायगे। उत्तम अफीम वो होती है जो पानी मे जल्द घुल जाय अग्निमें प्रज्वलित हो जाय और धूप में पिघल जाय और जिसमें गंध तीव्र हो।

कुचला—तीन दिन तक जलमें तर रक्खें और जल प्रति दिन बदल दिया करें इसके पश्चात् गाय के दूध में औटाकर छिलका दूर करके बारीक काट कर सुखा लें।

एलुवा—को सेव या बिही या शलजम या गाजर में रखकर कपड़ा लपेट कर आटा लगा कर अग्नि में डाल दें थोड़ी देर पश्चात् जब गरमी एलुवे पर पहुंच जाय उसको निकाल कर ठंडा करलें।

भिलावा—के दो टुकड़े करके दो पत्थर अथवा करछी गरम करके उसमें दबावें और जो शहतस निकले उसे छुरी से अलग करलें यदि छिलके सहित उसका सेवन करें तो तिल तथा अखरोट की मिंगी के साथ कूट कर मिलावें।

भंग—की धूल मट्टी साफ करके दूध अथवा अजवाइन के रस में मल कर सुखावें फिर गायका घी मल कर कोरे ठीकरे में आग पर रखकर भून लें कि जलने न पावे।

निसौत—का ऊपर का छिलका और भीतर की सुतली निकाल डालें।

चाकसू—पोटली में बांधकर मोंठ अथवा मूं

की दारू अथवा गधे की लीद में औटाकर उसको छील डालें।

काला दाना—करछी में भर कर आग पर रक्खें कि उसका रंग और गंध बदल जाय।

जमाल गोटा—एक पोटली में रखकर प्रथम गधे की लीद में मिलाकर औटावें उसके पश्चात् दही में औटावें फिर छील कर दो टुकड़े करके उसके बीच का पदार्थ जो नखके सदृश होता है निकाल डालें।

तैल—तैल किसी प्रकार का हो शीतल जल में मिलाकर जल से पृथक करलें शुद्ध हो जायगा।

माजू—गाय के घी में इतना भूनें कि फूट जाय जले नहीं।

जंगली प्याज़—दो प्रकार की होती है एक गूदे दार वह खाने योग्य नहीं होती दूसरी छिलकेदार वह खाई जाती है उस पर आटा गूंथ कर लपेट कर भूभल में दाबदें कि आटा पक जाय और गर्मी उस तक पहुंच जाय फिर आटा पृथक करके सेवन करें।

गारीक़ून—में भीतर कडा रेशा होता है वह हानिकारक होता है उसका सेवन नहीं करना चाहिये। उस के निकालने का यह उपाय है कि गारीक़ून

को मलकर मोटे कपड़े में छानें इससे रेशा कपड़े में रह जायगा।

गोखरू—दो प्रकार के होते हैं छोटे और बड़े इनको गाय के ताजा दूध में भिगोकर सुखालें।

लाख—को पानी में औटावें जो नीचे बैठ जाय उसको लेलें और पानी को दूर कर दो तीन बार इसी प्रकार करें।

काली हड़—को गाय के घी में भूनें कि फूल कर उसका रंग लाल हो जाय।

❀ जीवजन्तु सम्बन्धी औषधोंकी शोधन विधि ❀

अबरेशम—को साफ करके किसी बरतन में अग्नि पर रक्खें कि थोडी गरमी पहुंचने से कडा होकर पीसने योग्य होजाय।

बाल—को साबन से साफ करके एक बरतन में आग पर रक्खे कि इसमें गंध आजाय परन्तु जलने न पावें।

अण्डेका छिलका—दो दिन लवण और जल में भिगो कर भीतर का छिलका व मल साफ करके गिल हिकमत करके जलावें।

केकड़ा—पर और बाजू दूर करके गिल हिकमत करके भाड तथा भट्टी में इतनी देर रक्खें कि सूख कर सफेद होजाय और घिसने योग्य होजाय और

जल कर कोयला न होजाय । प्रगट हो कि नर से मादा केकड़ा अच्छा होता है उसकी पहचान यह है कि पीठ पर सुई चुभावें यदि श्वेत रतूबत निकले तो मादा है नहीं तो नर है।

बारह सिंगा के सींग -और इसी प्रकार की अन्य वस्तुओं को गिल हिकमत करके जलाना चाहिये परन्तु वाह्य सेवन प्रयोग में जलाने की आवश्यकता नहीं है।

बीछू—मादा से नर उत्तम है नर की पहचान यह है कि वह दुबला पतला होताहै उसको गिल हिकमत करके इतनी देर अग्नि पर रक्खें कि कोयला न होजाय और जब भस्म करना चाहें तो इतनी अग्नि दें कि भस्म होजाय।

मोम—को अग्नि में पिघला कर ठण्डे जल में जिस में लवण मिला हो टपकावें और एक लकड़ी से पानी और मोम को हिलाते जांय कि मैल नीचे बैठ जाय स्वच्छ मोम ऊपर रह जायगा यदि कई बार इस प्रकार करें तो मोम विशेष साफ होजायगा।

चतुर्थ अध्याय।

ऐसी औषधियों के बनाने का वर्णन जिन का असली गुण शीघ्र नष्ट हो जाता है।

ख़िसांदा बनाने की विधि—वह औषधियें जो

फूल पत्ती हों उनको ज्यों की त्यों और जो जड़ व लकड़ी व बीज हों उनको जौ कुट करके गुन गुने जल मे भिगोकर उसका जल नितारलें चाहे मल कर छानलें।

जोशांदा (काढ़ा) बनाने की विधि—औषधियों को खिसांदे की विधि से पानी मे भिगोकर औटावें जब थोड़ा पानी जल जाय तब उसको नितारलें अथवा मलकर छानलें।

शीरा बनाने की विधि—औषधियों को जल में पीस कर छानलें और यदि तेलिया बीजों का शीरा हो तो इस बात का ध्यान रक्खें कि उनका तेल छन्ना न सोख जाय और छिले हुए बीजों को केवल घिसना ही काफी है।

आबेमरवक बनाने की विधि—दवा के ताजे पत्तों को घोट कर पानी निचोड़ कर एक प्याले में भर कर अग्नि पर रक्खें जब गर्म हो के फट जाय तब साफी में छानलें।

ल्होकी का रस निकाल ने की विधि—छोटी ल्होकी पर गीला कपड़ा लपेट कर मट्टी लगाकर सुखावें फिर उसको भाड अथवा भूभल में गाढ़ दें कि जलने न पावे फिर निकाल कर मट्टी कपड़ा दूर करके ठंडा करके कपडे में रखकर निचोड लें।

खीरा मूली और अन्य चीजों के रस निकालने की विधि–घीया का रस निकालने के अनुसारहै।

शाक का रस–आब मरवक़ के अनुसार निकाला जाता है।

जड़ों का रस–निकालने की यह विधि है कि औषधियों की जड़ (जैसे कासनी व सौंफ इत्यादि की) को जोकुट करके बीस गुने पानी में रात को भिगोदें सुबह को मंदी आग मे औटावें जब चौथाई जल शेप रहे तब ठंडी करके मोटे कपड़े में छान कर बोतल में रक्खें और जब तक उसकी दशा में परिवर्तन न हो उसको सेवन करें। यदि नित्य ताज़ा बनालें तो बहुत उत्तम है।

बीजों का रस–जड़ के रस की सदृश निकाला जाता है।

मांस का जल निकालने की विधि–यह जल निर्बल मनुष्य को आहार और औषधि है इसके जल निकालने की दो विधि हैं एक यह कि केवल मांस को उसमें इलायची धनियां और लवण की पोटली गेरकर जोश करें जब मांस गल जाय तब पानी लेकर उसको घी से सुगंधित कर लें अर्थात् बघारलें इसको फारसीमें ईखनी कहतेहैं। दूसरी विधि यह है कि मांस में नमक और

मामूली मसाला मिलाकर पकावें जब गल जाय तब दही इत्यादिक डाल कर दो तीन उफान देकर उसका जल सेवन करें इसको शोरुआ कहते हैं।

❀ पांचवां अध्याय ❀

ऐसी औषधियों के बनाने का वर्णन जो बहुत दिन तक ठेरती हैं।

नोशदारू—बनाने की यह विधि है कि पकेहुए ताज़ा आमले तोल कर पानी में पका कर मल कर उनकी गुठली निकाल डालें और झिरझिरे कपड़े में छानें कि केवल रेशे रहजांय और सब निकल आवें तब गुठली इत्यादिक को तोल कर आवलों की शेष तोलको मालम करके उससे द्विगुण भाग कंद मिलाकर चाशनी करलें और जब चाशनी बन जाय तब और जो औषधि मिलानी हों उन को बारीक पीसकर गर्म चाशनी में मिलावें यदि आमले सूखे हों तो उनकी गुठली निकाल कर उनको तोल लें और उनको धोकर स्वच्छ करलें फिर इतने गाय के दूध में भिगोवे कि आमले डूब जांय, चार पहर के पश्चात् उसमें और जल मिला कर जोशदे कि आमलेका कालापन और दूध का गाढ़ापन निकल जाय फिर दूसरे जल में औटाकर उपरोक्त रीति से बनालें।

गुलकंद—ताजे फूलों का ज़ीरा और हरी पत्ती दूर करके उसमें लाल या सफ़ेद खांड या मिश्री या कंद पिसा हुआ अथवा शहत खालिस मिलावें मीठा, फूल के समान भाग मिलाना उत्तमहै और चौगुना तक मिला सकते हैं इससे विशेष मिलाने से औषधि का बल घट जाता है और शहत में बनाने से दस्तावर मवाद का फुलाने वाला और सांस लेने के अवयवों की सफाई करने वाला हो जाता है। और गुलकंद दो प्रकार का होता है एक आफताबी दूसरा आबी।

पहले में मलके पकाने की शक्ति अधिक होती है दूसरे में ठंडापन और तरी बिशेष होती है पहले में फूल और मीठा मलकर दो सप्ताह तक धूप में रक्खें और बीच में दो तीन बार मल दें।

और दूसरी प्रकार के में फूल और मीठा मल कर एक बरतन में तीन चौथाई भर दे और उस बरतन का मुंह बंद करके तीन सप्ताह तक गरदन तक पानी में डूबा रक्खें।

बिशेष द्रष्टव्य—यदि ताज़ा फूल न मिले तो थोड़े सूखे फूल गुलाब के अर्क या जल में थोड़ी देर भिगोवें तब मीठे में मिलावें।

मुरब्बा—प्रत्येक मुरब्बे की विधि पृथक पृथक

है इस कारण उसका वर्णन अलग किया जायगा।

मेवाके रुब्ब बनाने की विधि–रसीली मेवा जैसे केला व नारंगी व अनार इत्यादि को लेकर उन का जीरा तथा दाना साफ करके उसका रस मलकर निचोडलें और उस रस में चौथाई मीठा मिला कर पकावें जब खूब गाढा होजाय रखलें और मेवाओं का रस औटा कर अथवा ठंडा ही लेकर उसमें समान भाग मेवा की शीरीनी मिला कर उस की चाशनी गाढी करलें।

नशीली मदिरा के बनाने की विधि–रस दार मेवा जैसे नारंगी इत्यदि का रस कपडे में निचोड़ कर उसमें सोलहवां भाग मीठा मिलाकर पकावें जब चौथाई रस जल जाय उस को धूप में रक्खे और जब खट्टा होजाय उसका सेवन करें इस में थोड़ा नशा होता है।

शरबत–रसीली मेवाओं का शरबत बनाने की यह विधि है कि उपरोक्त विधि से मेवाओं का रस निकाल कर उसका ढाई गुना मीठा मिला कर चाशनी करले और पक्की चाशनी का यह चिन्ह है कि दो एक बूंद अलग करके उंगली से उठावें यदि उसमें से दो तीन तार लंबे निकलें तब चाशनी पक्की जानों।

शुष्क औषधियों का शर्बत बनाने की विधि–प्रथम औषधियों को खिसांदे की तरह भिगो कर औटालें जब तिहाई जल शेष रहे तब मल कर छान लें और खांड मिलाकर चाशनी कर लें।

मेवाओं के शर्बत बनाने की विधि–जिनका रस निचोड़ने से पृथक नहीं होता है उसकी यह विधि है कि यदि मेवा खट्टे हैं जैसे आलू बुखारा या इमली तो उसको भिगो कर उसके पानी में मीठा मिलाकर चाशनी करें। यदि मेवा अनार या अंजीर के सदृश मीठी है तो उसके जोशांदे में मीठा मिलाकर चाशनी करें।

माजून–बनाने की यह विधि है कि यदि उस की सब औषधि पीसने के योग्य हों तो सबको पीसकर बूरे की चाशनी करके गर्म चाशनी में सब औषधियों को खूब मिलावें। यदि कोई औषधि जोशांदे के योग्य हो तो उसका खिसांदा निकाल कर उसको औटाकर उसमें बूरा मिलाकर चाशनी बनावें और उसमें पिसी हुई औषधि मिलावें यदि उसमें दुग्धादिक मिलाना हो तो चाशनी में दुग्धादिक मिलाकर एक उबाल देकर फिर औषधि मिलावें।

इतरीफल–बनाने की यह विधि है कि हड़

इत्यादिक को पीसकर बादाम इत्यादिक के तेल में चिकनी करके मिलावें जिससे उसकी शक्ति बहुत दिन तक स्थिर रहती है और चाशनी नरम रहती है मुफर्रह व ख़मीरा भी माजून की रीति पर बनाया जाता है।

याकूती—भी माजून के सदृश बनाई जाती है परन्तु उसमें जो औषधि जवाहरात सम्बन्धी हो उसको अन्य औषधियों के चूर्ण मिलाने से पहले चाशनी में खूब मिला लेना चाहिये जिससे वह भली प्रकार चाशनी में मिलजांय इसी प्रकार सोने चांदी के वरक़ भी पहले ही मिलाना श्रेष्ठ है कि सब चाशनी में चूरा होकर मिल जाय।

ज़वाहरात—का चूर्ण करने की यह विधि है कि मणिक इत्यादि को शुद्ध करके बारीक पीसें और उचित रस में पांच दिन घोटें यदि कोई और चीज जैसे अंबर कस्तूरी इत्यादिक मिलाना हो तो उन को मिलाकर एक दिन और घोटे और फिर सुखावें तत्पश्चात यदि शीघ्र तय्यार करना होतो उसको सुरमासा करके मिलावें नहीं तो गोली बनाकर रखछोड़ें। आवश्यकता के समय सुरमा सा करके काम में लावें। क्यों कि चूर्ण करके रखने में उसका बल न्यून हो जाता है।

चटनी अर्थात् लऊक या मुतहशा—शरबत से गाढी और माजून से पतली होनी चाहिये ताकि क्रमशः जीभ से नीचे उतर जाय। खाने पीने की औषधि की अपेक्षा इसका असर शीघ्र पहुंचने के आशय से यह रीति वैद्यों ने प्रचलित की है।

जवारिश—बनाने की विधि माजून के सदृश है परन्तु उसका चूर्ण दरदरा होता है कि उदर में ठैरे।

लबूब—पहले इस प्रकार बनाया जाता था कि बाज़े बीजों की मिंगी का शीरा निकाल कर शहत के साथ चाशनी करते थे फिर माजून की रीति से बनाने लगे अब कभी शीरा कभी कतर कर और कभी जौकुट करके मिलाते हैं।

माउल्लहम (मांस के रस निकालने) की विधि

कच्चे मांस का रस दुर्गन्ध युक्त होता है यदि पृथक भूनते हैं तो उसकी ताकृत निकल जाती है इस लिये उचित है कि प्रथम ईखनी की रीति से मुंह बंद बरतन में पकावें जब पक जाय तब वैसे ही मुंह बंद ठंडा करके उसका जल निचोड़ कर उसको अकेला ही या उसमें किसी और औषधि का संयोग करके उसका अर्क खैंचें।

* गुड़की नशीली शराब बनाने की विधि *

गुड,नबूल की हरी ताजा छाल, व बेर की ता
छाल को टूक टूक करके सब को मटके में डाल
उस में भर दें और गुड का दसवां भाग महुवा
कपडे की थैली में बहुत ढीला बांध कर उस
में छोड़ दे इस लिये कि बिना महुवा के अच
लाहन नहीं उठता और यदि मेवा किशमिश मुन
आदिक मिलाना हो तो उन्हें भी उसी मटके
डाल दें । जब लहन उठ आवे तब महुवे की थैं
उस में से निकाल डालें और अरक की क्रिया
अरक खेंचलें । यदि यह इच्छा हो कि नशा अधि
हो तो खुरासानी अजवायन, भंग धतूरे के बी
और पोस्त के डोड़े उचित भाग लेकर एक
रात जल में भिगोकर अर्क खेंचने के समय ल
में मिलावें और इसी प्रकार यदि पुष्ट औष
मिलानी हो तो एक दिन रात उनको जल में
गोकर अरक खेंचने के समय लाहन में मिलावें क
किं इस प्रकार की औषधि मटके में डालने से लाह
खराब होता है और इन औषधियों का गुण
बिगड जाताहै और यदि मास का जल मिला
हो तो ईखनी की रीति पर खेंचने के समय मिल

और यदि दूध मिलाना हो गाय का ताजा कच्चा दूध खेंचने के समय रहन में डालदे ।

दरबहरा–में नशा होता है उस के बनाने की यह रीति है कि सब औषधियों को एक मट्टी के बडे बरतन में भर कर पानी डाले और बरतन को आधा खाली रक्खे और उसको घोडे की लीद में इस प्रकार गाडे कि उसका मुँह खोल मूँद सके फिर तीन चार दिन तक उन औषधियों को लकडी से हिला दिया करे इस के पश्चात् देखता रहे जब उफान आकर वह उफान दूर हो जाय तब बिना मले और हिलाये किसी गाढ़े वस्त्र में छान कर चीनी अथवा शीशे के बरतन में रक्खे ।

नबीज़–इस में भी नशा होता है इस के बनाने की यह रीति है कि थोडी औषधियों को भिगोकर औटावे जब आधा पानी जल जाय तब उस में और औषधि मिलाकर सब को मट्टी के इतने बडे बरतन मे डालकर कि आधा भर जाय आधा खाली रहे धूप में रक्खे और दो चार दफा लकडी से औषधि को हिला दिया करे और निगाह रक्खे कि जब उफान आकर बैठ जाय तब उसको बिना मसले और हलाए किसी गाढे वस्त्र में छान कर चीनी अथवा कांच के बरतन में रक्खे ।

गोली–बनाने की यह रीति है कि जो गोलं पचाव क्षुधा तथा उदर सम्बन्धी रोगों के लिये हों इनकी औषधियां बहुत बारीक न पीसनी चाहिये जिससे कि वह आमाशय में कुछ देर ठहरें औ इनके अतिरिक्त रोगों की गोली की औषधि सुर्मे की तरह बारीक पीस कर गोली बनानी चाहिये

टिकिया–बनाने की भी यही रीति है।

शियाफ–एक ओर से मोटी बनानी चाहिये जिधर से घिसी जाय।

* औषधियों का तेजाब खेंचने की विधि *

औषधियों को जौ कुट करके एक घड़े में रक्खे उसके मुंहपर एक हांडी मुंह रिगड़ कर रक्खे दोनों का मुंह आटे से मिलाकर चूल्हे पर घड़े को तिरछा रखकर उसके नीचे आग जलावे और हांडी कोभी ऐसी चीजपर रक्खे कि वह भी चूल्हेके सदृश हो और हांडी की कमर में एक छेद करके उस छेद में बाल की बत्ती लगाकर एक चीनी या कांच का प्याला उस के नीचे रक्खे कि उस में अर्क टपकता जाय।

मोम और बहरोजे–के तेल निकालने की भी यही विधि है परन्तु हांडी की जगह घड़ा रक्खे और बजाय टेढ़े के चूल्हे पर सीधा रक्खे और

मोम के साथ तिहाई भाग सांभर लवण मोम के नीचे रखना चाहिये और बहरोजे के साथ उसका अर्द्धभाग बालू रेत उसके नीचे रखना चाहिये ।

❋ फूलों का तेल निकालने की विधि ❋

फूलों का तेल कई तरह निकाला जाता है एक-यह कि चार भाग ताजे फूल में पांच भाग तिल-का तेल डालकर धूपमें रक्खे जब तेल में असली गंध फूलों कीहो जाय तब उनको मलकर छानले और फिर दुबारा उसमें तीन भाग फूल मिलाकर इसी प्रकार धूप में रखकर छानले और फिर उसमें दो भाग फूल मिलाकर धूपमें रखकर छाने ।

दूसरी विधि—यहहै कि तेलसे ड्योढ़े अथवा समान भाग फूल साफ करके तेलमें डाल कर धूपमें रक्खे और जब फूल सूख जांय और उनमें तरी न रहे तब खूब मल कर तेलको छानले और यदि तेल में फूलों की तरी रहजाय तो उसको धूप में रखकर तरी को सुखादे ।

तीसरी विधि—यहहै कि ताजे फूलोंका शीरा निकाल कर शीरेसे ड्योढा तिली का तेल मिलाकर पकावे जब शीरा जल जाय तब तेलको छानले ।

चौथी विधि—यहहै कि सूखे फूलों को जलमें औटा

कर उस जलमें फूलों से दूना तिली का तेल मिला-कर औटावे जब पानी सब जल जाय तब तेल को छानले।

द्रष्टव्य—तेलों की शक्ति फूलोंकी न्यूनता व आधिकता पर निर्भर है परन्तु प्रथम विधि केवल गुलाब के फूल का तेल बनाने की है यदि प्रथम और दूसरी रीति में थोड़े से ताजे फूल क्रिया के पश्चात् और मिलाकर रक्खे जाय और उनकी तरी धूपमें सुखा दी जाय तो अत्युत्तम है॥

पत्ते जड़ व लकड़ी हरी व हरे बीजों का तेल उपरोक्त वर्णित तीसरी विधि से बनाना चाहिये परन्तु थोड़ा जल मिला कर शीरा निकाल लेना उचित है ताकि उसका पूरा असर आजाय।

शुष्क पत्ते जड लकडी का तेल उपरोक्त वर्णित चतुर्थ रीति से निकालना चाहिये तेलदार लकडी अथवा कपती तेल वाले बीजों का तेल डोल यंत्र द्वारा भी निकाला जासक्ता है।

※ विशेष चिकनाई वाले बीजों का तेल ※
※ निकालने की विधि ※

बादाम अथवा चिलगोजे का तेल निकालने की प्रथम विधि यहहै कि यदि बीज बहुत हों तो कोल्हू में पेलकर उनका तेल निकाल लेना चाहिये।

दूसरीविधि यहहै कि मिंगी को खूब कुचलकर पानी पकावें इस रीति से तेल जलके ऊपर आजायगा

और मल नीचे बैठ जायगा फिर जल को ठंढ़ा करके तेल को जलके ऊपर से उतारले।

तीसरी–रीती यह है कि मिंगी को कुचल कर थोडी सफेद मिश्री मिलाकर थोडा पानी गेरकर थोडा गरम करके निचोड ले तेल नीचे टपक आवेगा

चौथी–मिंगी को कुचल कर उसमें थोड़ी सफेद मिश्री और जल मिलाकर एक रकाबीमें एक ओर रक्खे और उसके नीचे मंदी मंदी अग्नि कोयलों की रक्खे अग्निकी गरमीसे तेल निकलकरतश्तरीकी दूसरी ओर जिधरसे तश्तरी नीची है बह कर एकत्रित हो जायगा।

❋ अंडेके तेल निकालने की विधि ❋

अंडेका तेल कई रीति से निकाला जाताहै प्रथम यह कि अंडेको जोश करके उसकी जर्दी पृथक करले और सब जर्दियों को हाथसे खूब मलकर प्रत्येक बड़े अंडे की जर्दीमे एक माशे नौसादर और छोटे की जर्दी में उस से कमती पीसकर मिलावे और उस सबको किसी शीशे अथवा बोतल में भरकर उसको गिल हिकमत करे और उसके मुँहमें सींक लगावे और एक ठीकरे में छेदकरके उसको चूल्हे पर रक्खे और उसके छिद्र में बोतल अथवा शीसेकी गरदन नीचेको निकालदे और उसके नीचे

जो गोली अथवा चूर्ण या कोई औषधि खांसी अथवा रुधिर थूकने इत्यादि अथवा दमे के े में सेवन की जाय उसको मुख में रखकर चूसने चाहिये जिस से उस का गुण शीघ्र फेफड़े और उस की नली में पहुंच जाय और उस औषधि के ऊपर जल पीना सर्वदा वर्जित है क्यों कि उससे औषधि का गुण नष्ट हो जाताहै ।

लड्डूक पर कदापि जलनहीं पीना चाहिये रेचक औषधि अथवा गोली सेवन के पश्चात् ऊष्ण जल पीना उचित है इससे उसकाबल बढजाता है और ऐसी ओषधि यदि गुलकंद में लपेटकर ऊष्ण जल के साथ निगली जाय तो वह और भी गुण दायक होगी ।

जो औषधि आमायश के बल देने अथवा पचाव के लिये सेवन की जाय उस के सेवन के पश्चात कदापि जल नहीं पीना चाहिये क्यों कि जल से औषधि का बल नष्ट हो जाताहै ।

अन्य औषधियों पर जो अन्य रोग के लिये सेवन की जांय चाहे वह गोली हों चाहे चूर्ण उष्ण तथा शीतल जल अथवा कोई अर्क उस के प्रभावको शीघ्र उत्पन्न करने के निमित्त पीना उचितहै

* सातवां अध्याय *

* लगाने की औषधि की सेवन विधि *

आबज़न की विधि (पानी में बैठना)-इस प्रयोग में औषधियों का काढ़ा गरम पानी में डाल कर इतनी बड़ी नांद अथवा बरतन में भरे जिस में रोगी बैठ सके नीचे के अंग रोगों में अथवा गुदा रोग व गुरदे व मसाने व योनि व आंतों के रोग में रोगी को इतने जल में बिठाना उचित है कि जल उसकी नाभि तक आजाय। यकृत व आमाशय व छाती व पहलू के रोगो में कंध तक जलमें बिठाना उचित है और समस्त शरीर के रोग में रोगी को कण्ठ तक जल में बिठाना उचित है और यदि आबजन के गर्म जलको बोतल में भरकर विकार स्थान पर सेक करे तो भी गुण दायक है।

भपारे की विधि–औषधि को ढकने दार बरतन में ओटा कर उस ढकने को बरतन से उतार कर उस पर दूसरा सुराखदार ढकना ढके या उसी ढकने में छिद्र कादे और जिस मुख्य अवयव पर भपारा देना हो उस अवयव पर छिद्र द्वारा धुआं पहुँचावे यदि समस्त शरीर पर भपारा देना हो तो रोगी को मूढे या तिपाई पर बैठा कर उस का समस्त शरीर गरदन तक चारों ओर से कपडे से ढके

और उस के भीतर बरतन रखकर उसका ढकना खोल दे इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि रोगी को धुंए की विशेष गर्मी न पहुँचे नहीं तो मूर्छा आजायगी।

धूनी की विधि—शुष्क औषधि अग्नि पर डाल कर भपारे की रीति से उसका धूआं अंगपर दे।

पाशोया की विधि—पाशोये की औषधि से प्रथम समस्त शरीर को भपारा दे फिर ऐसे स्थान मे पाशोया करे जहां वायु का प्रवेश न हो। रोगी के समस्त शरीर को कपडे से ढक कर उस के दोनों पांव खोल कर पाशोये के ऊष्ण जल मे रक्खे और उसी जलको घुटनों पर गेरकर घुटनों से नीचे की ओर सुते जब जल की ऊष्णता न्यून हो जाय तब पैरों को कपडे से पोंछकर ऊपर की ओर से नीचे तक कपड़ा लपेटे और तलुवे खुले रक्खे और रोगी को कपड़ा उढ़ा कर सुलावे और दो तीन घड़ी के पश्चात् कपड़े को पांव के तलुवे की ओर से खोले और यदि अबखरे का ऊपर चढ़ जाने का डर हो तो तलुवों को ऊष्ण जल में रख कर कपडे को पैर के ऊपर से हटावे यदि पांव में खाली सींगी लगाना भी आवश्यक हो तो पाशोये से पूर्व लगावे और बहुरान के दिन अथवा ज्वर के

विशेषता में पाशोया करना वर्जित है यदि किसी कारण से आवश्यकता हो तो केवल उष्ण जल में लवण डालकर उसमें पाशोया करे।

हुक़ना की विधि—औषधियों के काढे को खाल की थैली में जिस के मुख पर मुँहनाल के सदृश कोई पतली चीज़ छेद दार बधीं हुई हो भरकर मुहनाल को गुदा में रक्खे और थैली को धीरे धीरे दबावे कि हुकने की औषधि आंतों में पहुंचे यदि रोगी औषधि पी सके तो उसको प्रथम रेचक औषधि पिलाकर तत् पश्चात् हुकना करे इस क्रिया से मवाद भली प्रकार निकल जाता है हुकने की औषधि बहुत गाढी न हो जो फ़ुजला और आंतों में होकर जा सके और बहुत पतली भी न हो कि फ़ुजले पर न लिपट सके और गुन गुनी हो जो मवाद को अच्छी तरह से निकाले और उस में कोई तेल भी मिला हुआ होना चाहिये जिस से फ़ुजला सुगमता से निकल जाय।

❀ तेल की विधि ❀

यदि तेल शरीर पर लगाया जाय तो मालिश कम करे जिस से अंग फूलने न पावें। थोडी मालिश करने से तेल की दुर्गन्धि दूर हो जाती है और तेलका असर शीघ्र होजाता है यदि उचित होतो

कोई मुनासिब पत्ता रख कर बांध देना क्यों कि इस से तेल का पूरा असर होजाताहै।

❋ पिचकारी की रीति ❋

औषधि का शीरा अथवा काढ़ा या यूष यदि कोई शुष्क औषधि मिलाना हो तो सुरमेसी पीस कर मिलावें और हुकने के सदृश गुदा में रख कर थोडी औषधि भीतर पहुँचावें क्यों कि विशेष जल पहुंचने से कभी कभी अण्ड वृद्धि इत्यादि कड़े रोग उत्पन्न हो जाते हैं और औषधि ठण्डी होनी चाहिये।

❋ सऊत की विधि ❋

रोगी को सीधा लिटाकर पतली औषधि नाक में टपकाना चाहिये यदि रोगी स्वयं पतली औषधि को नासिका द्वारा मस्तिष्क में चढावे तो उस को फारसी में नशूक़ कहते हैं परन्तु मुल्ला सदीद की राय है कि जो पतली औषधि कहीं टपकाई जाय सब को सऊत कहते हैं।

❋ शमूम की रीति ❋

हुलास अथवा गंधित औषधि रोग निवारणा सुंघने को शमूम कहते हैं।

❋ शियाफ़ की विधि ❋

औषधि की तिकूँटी लम्बी गोली को किसी

रस या तेल में घिसकर ठंडी या उष्ण लगाना अथवा टपकाना और यदि बत्ती बहुत बारीक हो तो उसको उसी प्रकार नासुर या चीरे में रखना।

❋ शाफः की विधि ❋

औषधि की पतली बत्ती पर तेल लगाकर अथवा उसपर कोई और औषधि महीन बुरककर पतली ओर से गुदा में करना ताकि दस्त की हाजत यदि बन्द होगई हो तो हो आवे।

* सभग़ की रीति *

औषधि को महीन पीसकर ठंडी रोगीके अंग पर लगाना।

* लेप और तिला की रीति *

गरमी के रोगों में ठंडी और सरदी के रोगों में गर्म औषधि लगाना उचित है और चोट तथा गर्भस्राव में जमे हुए रुधिर को पतला करने तथा निकालने के निमित्त गरम औषधि लगाना चाहिये और यदि इन्द्री पर तिला लगावे तो सुपारी बचाकर लगाना चाहिये क्योंकि सुपारीकी खाल बहुत पतली और मुलायम होती है इसलिये औषधि की गर्मी से फट जाती है और उस पर गर्म प्रकृति का पत्ता बांधने से औषधि का प्रभाव शीघ्र हो जाता है और दाद को खुजाकर दवा

❀ कबूस की विधि ❀

शुष्क अथवा गीली औषधि पीस कर टिकिया बनाकर पीड़ित स्थान पर रखकर ऊपर से हरा पत्ता बांधना कि दवा का असर देर तक रहे ।

❀ लखलखे की विधि ❀

पतली औषधि को शीशी में भर कर सूंघना अथवा शुष्क औषधि को पोटली में बांध कर भिगो कर सूंघना।

❀ लतूख़ की विधि ❀

एक कागज़ में बहुत से छिद्र करके अथवा एक कपड़े पर गाढ़ी औषधि लगाकर पीड़ित स्थान पर लगाना ।

❀ मरहम की विधि ❀

मरहम को कपड़े के फाये पर लगा कर पीड़ित स्थान पर लगाना चाहिये परन्तु फाया नये कपड़े का नहीं बनाना चाहिये क्योंकि वह औषधि के बलको खेंच लेता है और गहरे घाव में पुरानी रुई मरहम लगाकर घाव में रखकर ऊपर से फाया लगाना उचित है और नासूर में बत्ती पर मरहम लगा कर भरना चाहिये ।

* मज़मज़ा अर्थात् कुल्हे की विधि *

सरदी तरी और नज़ले के रोगोंमें ऊष्ण प्रकृति

की औषधि और गरमी के नज़ले व रोगों को ठंडी दवा होनी चाहिये।

* नुतूल अर्थात तड़ेरे की विधि *

किसी औषधि का क्वाथ या यूष किसी अंग पर थोड़ी ऊचाई से डालना जिससे दवा की तासीर अच्छी तरह असर करे और गुरदे और मसाने के रोग मे इसके जल में बैठना भी हितकारीहै।

* नफूख की विधि *

औषधि के बारीक चूर्ण को कागज की पुंगी में रखकर नासिका में अथवा कण्ठ में अथवा किसी अन्य रोग के स्थान में फूंकना।

* वजूर की विधि *

जब रोगी औषधि न पीसके पतली दवा उस के हलक में टपकाना।

दूसरा प्रकरण।

औषधियों और अहार का वर्णन।

पहला अध्याय।

मुसलमानी धर्मी पुस्तकों के वे वचन जो उन के रसूल्लाह साहब के कहे हुए हैं।

उतरज अर्थात् बिजोरा—इस का रंग पीला होता है और यह नींबू से से बड़ा होता है इसका

छिलका बहुत मोटा होता है और इस में गूदा बहुत कम औरमीठा होता है जनाब रसूल मकबूल सल अल्लाह वसल्लम का कौल है कि बिजौरा सेवन करना उचित है क्यों कि वह दिल तथा मस्तिष्क को प्रबल करता है उसका जीरा दूसरी श्रेणी मे सर्द तरहै इसका छिलका दूसरी श्रेणी में गर्म खुश्क है आमाशय को अत्यन्त बलदायकहै पाचकहै औ यदि उचित औषधि के संयोग से सेवन किय जाय तो तबियत को फरहत देने वालाहै बातके पचाताहै पित्त से उत्पन्न वमन को शांति देता रुधिरको पित्त से शुद्ध करता है और कब्ज करताहै

असमद अर्थात सुरमा–काला सुरमा प्रथ श्रेणी में सर्द और दूसरी में शुष्क है बाजे मनुष्य यह कहानी कहते हैं कि हजरत मूसा को नूर के पहाड़ पर ईश्वर की नूर की रोशनी दिखाई गई थी उस के तेज से पहाड़ अथवा कुछ स्थान जलकर काल मिस्ल कोयला होगया था और वही कोयला यह सुरमा है रात को सोने के समय लगाने से नेत्र की ज्योति बढ़ती है बालों की गिरने से रक्षा करता है और गिरे हुए बालों को जमाताहै यादि किसी उचित औषधि के साथ इसका सेवन किया जाय

तो खूनी बवासीर और खखार में रुधिर थूकने को लाभ दायक है।

छोटी हड़—इस को फारसी में हलेलह स्याह और हिन्दी में छोटी हड़ कहते हैं और बहुत छोटी हड़ को जवाहड़ कहते है। यह प्रथम श्रेणी में सर्द दूसरी में शुष्क है हरजत का काल है कि काली हड के सेवन से स्वर्ग प्राप्त होता है स्वाद इस का कड़वा ह यह प्रत्येक रोग से बचाने वाली है बात की रेचक और रुधिर की संशोधक बवासीर को दूर करती है गलित कुष्ट को गुण दायक है और भीतर के अवयवों को बलकारक है और उदर की तरी को दूर करती है।

बनफशा—प्रथम श्रेणी में सर्द दूसरी में तर है साहब का कौल है कि जिस प्रकार सब मनुष्यों में मैं बडा हूं इसी प्रकार सब तेलों में बनफशे का तेल बडा है इस के खाने से पित्त और छाती का खरदरापन और खांसी दूर होती है इस को खाना और लगाना गुरदे पहलू और मस्तिक की पीडा तथा कण्ठ के रोग और सरदी को हितदायक है इस के लगाने से सूजन बैठ जाती है और दर्द अच्छा हो जाता है।

खरबूजा—इसकी प्रकृति दूसरी श्रेणी में गरम

तर है इसको प्रातःकाल बिना भोजन किये खाने से पेट स्वच्छ हो जाता है पित्त को पचाता है उदर के आहार को निकाल देता है इस की लाग यह है ऊष्ण प्रकृति वाले को इस के ऊपर सिकंजबीन नीबु का रस अथवा खट्टा अनार खाना चाहिये और सर्द प्रकृति वाले को सोंठ खानी उचित है इसका अधिकता से सेवन करना शरीर को पुष्ट तथा बलवान करताहै मूत्र लाताहै गुर्दा मसाना और आंत को निर्मल करताहै फेफड़े की नाली को दूर करता है सख्ती छिलके और बीजों सहित पीस कर मुखपर लगा ने से मुखकी कांति को बढ़ाता है

छुआरा—इसकी प्रकृति प्रथम श्रेणी में ऊष्ण दूसरी में तर है जनाब का कौल है कि जिस घर में छुआरा न हो वह घर अन्नरहित के समान है यह काम शक्ति को प्रबल करता है, गुर्दह को ताकत देता है और छाती की कठोरता और जोड़ के कड़े पन को दूर करता है।

अंजीर—प्रथम श्रेणी में गर्म और दूसरे में तर है जिसका रंग पक जाने पर श्वेत हो जाय वह श्रेष्ठ है पीली उस से न्यून और लाल और भी न्यून है यह कामोद्दीपन है और शरीर को पुष्ट करता है तबियत को नर्म करता है यकृत और

तिल्ली की ग्रन्थि खोलता है गुरदे के रोग कास रोग छाती और तलता के खरदराहट को दूर करता है तर अंजीर से शुष्क अंजीर में गुण कम होता है ।

लहसन—यह तृतीय श्रेणी में उष्ण शुष्क है जनाब का क़ौल है कि कच्ची लहसन सेवन करना हाजत है पकी हुई लहसन बिगडे हुए दोषों को निकालती है बात को पचाने वाली दूषित दोषों को स्वच्छ करने वाली उदर और जोड़ों की रतू-बत को दूर करने वाली रज को जारी करने वाला बात प्रकृति वालों के शरीर को पुष्ट करने वाली और नेत्रोंकी ज्योति मंद करतीहै उसका संशोधक खटाई और घृत है गर्भिणी स्त्री को इसका अधिक सेवन करना हानि दायक है ।

मकोय—बिगड़े हुए रुधिर को संशोधन करती है इसके पत्ते छाया में सुखाकर चूर्ण करके चालीस दिन तक निरन्तर फांकनेसे कुष्ट को लाभ दिखाई देता है इसके ताजे पत्ते मलने से सूजन और गि-लटी और गर्मी की फुन्सी दूर होती हैं यदि घाव तथा व्रण पर अलसी का तेल चुपर कर इसका चूर्ण बुरके तो तुरन्त अच्छा हो जायगा शीतला निकलने से पूर्व इसके ताज़ा पत्ते पीसकर पांव के

तलुवों पर लगाने से शीतला का ज़ोर कम हो जाता है तथा पीडा भी अल्प होती है।

खुब्ज़ अर्थात् रोटी—गेहूं के चून की ... श्रेणी में गर्म तर है जनाब का कोल है कि मनुष्य को सब से श्रेष्ठ आहार रोटी है उत्तम ... उत्पन्न करती है सूखी रोटी को पीसकर मेथी में पकाकर थोडा लवण मिलाकर लगाने से कडी सूजन पक कर फूट जाती है और मेदे की खमीरी रोटी को पीसकर ठंडे जल में घोलकर लगाना बवा सीर को हित है मेदे की रोटी सब से विशेष बल दायक होती है परन्तु गरिष्ठ होती है सूजी की रोटी जल्दी पचती है और चून तथा मैदे की ख मीरि रोटी शरीरको मोटा करती है।

खल्ल अर्थात् सिरका—फारसी में सिरका मु किबुल्कुवा है और मुतलक सिरके से अंगू सिरके का बोध होता है यदि ईख के ताजा रसव अथवा गुडको जल में डालकर उसका सिरका बना तो उसके गुण भी उसी के समान हैं परन्तु जं सिरका और वस्तुओं से विविध क्रियानुसार बना तो उसके गुण पृथक हैं इसका खाना तुरन्त अस करने वाला, दोष को नर्म करने वाला, भोजनको पचाने वाला, क्षुधा को बढाने वाला, ग्रन्थी औ

भीतरी अवयवों को खोलने वाला, कफ और बादी को पचाने वाला, तिल्ली की सूजन को दूर करने वाला और प्यास को मारने वाला है। इस का लगाना सूजन को बैठाता है खुजली को दूर करता है अग्नि से जले को अच्छा करता है और जानवरों के काटे और डंक के विष को दूर करता है।

परन्तु पुट्ठे के जोड़ और पुरुषत्व को हानि कारक है।

खमर अर्थात् मदिरा—खमर मुतलक़ से अंगूरी शराब का बोध होता है फारसी में शराब और मै और बादह, हिन्दी में दारू और मदिरा कहते हैं और हर ज़बान में इसके नाम इसके रंग व मज़ा व किस्म के अनुसार जुदे जुदे हैं। यह तीसरे दरजे में गर्म और दूसरे दरजे में तर है।

यदि उचित रीति से औषधि के अनुसार इस का सेवन किया जाय तो यह हृदय को फरहत देने वाली अवयवों को पुष्ट करने वाली मूत्र को लाने वाली रतूबत को नाश करने वाली छिद्र व गुद्द को खोलने वाली है और रुधिर को बढ़ा कर शरीर का रंग सुर्ख करती है। यदि भोजन से पहले थोड़ी शराब पीकर भोजन करने की आदत डाली

जाय तो शरीर को हृष्ट पुष्ट करती है। शराब के ऊपर पानी पीना अत्यन्त हानिदायक है ५। शराब में पानी मिलाकर पीना हितदायक है। शराब का कसरत से पीना, राशा, और ... प्रकार के रोग और बहशत और खफकान उत्पन्न करता है और गुड़की शराब अंगूरी शराब के सम तुल्य है परन्तु उससे फायदे में कम और हानि करने में अधिक है अगर जोश उठने के वक्त आ... ठवां हिस्सा गुलाब के फूल उसमें मिलाकर खैंचे तो फायदा ज्यादा और नुकसान कम हो जाता है

खैरा– (लहसानि या घास) फारसी में श... कहते है। दूसरे दरजे में गर्म खुश्क है। यह बाग... और जंगली कई किस्म की होती है इसका फू... सफेद व ज़र्द व सुर्ख व बनफशई होता है। इस... फूल सूंघना रियाह व मास्तिष्क की रतूबात को त... लील करता है। फूल या पत्ती या बीज या ... को पीसकर उसका पानी पीना ख्वाह अपारा कै... रजको जारी करता है गर्भ; को पात करता है... मरे बच्चे को गर्भ से निकालता है। उसका ति... वरम को निठाता है। उसका तेल गुलाब के फ... के तेल की रीति से बनाया जाता है। आप लो... का यह कथन है कि इसके फूल में कीड़ा होता...

और पास से सूंघने से नाक में चला जाता है और पीनस रोग उत्पन्न करता है।

देक—फारसी में मुर्ग़ हिंदी में मुर्गा कहते हैं इस का मांस दूसरे दरजे में गर्मतर है। इसको फाड़ कर गरम गरम शिर पर बांधना सरसाम को दूर रता है व शोरुबा गरम पीना कूलंज (दर्द जो ाडकोष और आतों में होता है) को दूर करता । यदि संगदान का अन्दरूनी पोस्त उचित ोपधियों के साथ चूर्ण करके सेवन किया जाय ो हर प्रकार के दस्तों को दूर करता है और ुर्गी के अंडे का शुष्क छिलका जला कर उसका ुरमा बनावें तो नेत्र रोगों को दूर करता है यदि उसको चूर्ण की तरह सेवन करे तो सुज़ाक को दूर करता है।

रुम्मान—फारसी में इसको अनार शीरीं (मीठा अन्नार) कहते हैं और गर्मी और सर्दी में मोत दिल है और दूसरे दरजे में तर है। और खट्टा अनार दूसरे दरजेमें सर्द तर है। और खट्टामिट्ठा अनार पहले दरजे में सर्द व दूसरे दरजे में तर है। यकृत और रूह (प्राण) को बलदायकहै अच्छे दोप का उत्पन्न करने वाला है। खफक़ान को हित दायक है मूत्र लाता है रतूबत को स्वच्छ

करता है शरीर को पुष्ट चहरे को साफ व निर्मल करता है। गरमी को शान्ति करता है रुधिर संशोधक है। अबखरों को मस्तिष्क में जाने से रोकता है। उसका दाना आमाशय को बलदायक और गरिष्ठ है उसका छिलका गरिष्ठ और खांसी को हित दायक है।

ज़बीब—फारसी में मवीज़ और हिन्दी में दाख कहते हैं। पहले दरजे में गर्म तर है। बड़ी और मोटी दाख अच्छी होती है बुरे दोषों को पकाती है आंत और छाती की वायु को तहलील करती है। यकृत को बल देती है गुरदे और मसाने के रोगों को हित करती है। सरदी व पेट के भारापन को दूर करती है। उसका बीज पहले दरजे में सर्द और दूसरे में खुश्क है और गरिष्ठ है उसका बीज पीस कर पीना रुधिर की वमन व खूनी दस्त व खूनी बवासीर को हित दायक है और पीस कर चाटना रुधिर थूकने को दूर करता है।

ज़बरजद—एक प्रकार का पत्थर है जिसको नीलम कहते हैं। तीसरे दरजे में सर्द खुश्क है इस के गुण ज़मुर्रद (पन्ना) के समान हैं। तबियत को फरहत देने वाला, नेत्र की ज्योति को ताकत वर करने वाला, रुधिर के बहने व ज़ुकाम (कोढ़

को हित है और उसको गर्भिणी स्त्रीकी बांई जंघा पर बांधने से बच्चा आसानी से उत्पन्न हो जाता है ।

ज़मुर्रद–एक प्रकार का पत्थर है जिसको पन्ना कहते हैं दूसरे दरजे में सर्द खुश्क है । यकृत हृदय व जोहर रूह को पुष्ट करने वाला है । मुखसे रुधिर थूकने को दूर करता है, मूत्र लाता है, गुरदे और मसाने की पथरी तोड़ता है । हैवानात के विष के लिये जहरमोहरा है । उसका सुरमा लगाना नेत्रों को लाभ दायक है। परन्तु पुरुषत्व को नष्ट करता है । संशोधक शहत है ।

ज़ाफरान–इसको हिन्दी में केशर कहते हैं । तीसरे दरजे में गर्म और पहले में खुश्क है । हवास जोहरे रूह हैवानी, दिल, जिगर, रगें, और श्वास लेने के अवयवों को फरहत और बल देती है । वायु और बुरे दोषों को तहलील करती है । ग्रन्थी और रगों को खोलती है । मूत्र को प्रवाहित करतीहै । गुरदे और मसाने को साफ करती है । बल कारक है और नींद लाने वाली व दर्द शिर उत्पन्न करने वाली है । उसका संशोधक शकर और शहत है ।

जैत–हकीम जालीनूस के कौल से दूसरी श्रेणी

में गर्म तर है। उसकी बहुतसी किस्में हैं। उसका फल अन्य मेवाओं की तरह खाया जाता है और तेल पकाकर व अन्य उचित औषधों के संयोग से खाया और लगाया जाताहै खाने और हैवानात के विषको दूर करता है ठण्डे दर्द रीह मरोड़े को गुण दायकहै घावों को भरता है लकवा व गशा व फा लिज रोग में हितदायक है नेत्र की ज्योति को बल देता है और फुली को काटता है मसूड़े व दांतों को पुष्ट करता है जियादा पसीने निकलने को रोकता है। ग्रन्थियों को खोलता है अवयव और पट्ठों को बलदायक है इसका तेल जितना पुराना होताहै उसकी ताकत उतनीही विशेष होतीहै

सफर जल–फारसी में आबी और हिन्दी में बिही कहते हैं। सर्दी व गरमी में मौतदिल दूसरी श्रेणी में तर है हृदय मस्तिष्क आमाशय यकृत और रूह को ताकत देती है मूत्र लाती मस्तिष्क की ओर अवखरे चढने को रोकती है जी मिचलाना वपित्त की वमन को दूर करती और गर्मी को शान्ति करने वाली है।

सनाय–सब से श्रेष्ठ मकी होती है दूसरी श्रेणी गर्म खुश्क है कफ और बातको निकालने वाली और पित्तको मुख्यतः निकाल देती है शरीर के

भीतर से मवाद को निकालती है। मास्तिष्क
का तनकिया करती है। गठिया को हि-
त दायक है। पेटके कीडों को मारतीहै;रुधिर संशो
धक मूत्र लानेवाली और ग्रन्थिको खोलने वालीहै।
इस के पत्ते जितने बडे होंगे अल्पगुण दायक
होते है।

ईर- हिंदी में जो (यव) कहते हैं दूसरी श्रेणी
सर्द तर है। अहाररत्न में गेहूं से न्यून हैं। पित्त
को सम अवस्था पर लाता है और रोह उत्पन्न
करता है। इसका जल अर्द्ध आहार है और गर्मी
से उत्पन्न ज्वरों में खासकर उपयोगी है। इसका
आशाकी अवस्था अन्य उचित औषधों के संयोग
द्वारा सेवन करना सूजन को बिठाता है और ग-
र्मी से उत्पन्न शिर दर्द को गुण करता है।

तीन–इसको हिंदी में मट्टी (मृत्तिका) कहते है।
दूसरी श्रेणी में सर्द खुश्क है। औषधि
के तरीके पर इसका खाना वर्जित नहीं है।
गरिष्ठ है. रुधिर के बहने को रोकती है। इसका
संशोधक गुलाबका अर्क है। सूजन पर इसको गर्म
लगाना तकलीफ को कम करता है और मवाद
को निकालता है।

अस्ल– इसको हिंदी में शहत कहते हैं। दूसरी

ला प्यास को बुझाने वाला और दिलकी हरारत को दूर करने वाला है। लौकी का पानी जिसको माउलकरह कहते हैं पित्त की ओर शीघ्र प्रभावित होता है इस लिये खटाई मिलाकर पीना

कुतुम—फारसी मे वस्मः और हिंदी में लील कहते है। प्रथम श्रेणी में गर्म और दूसरी में खुश्क है। यह खाने में सेवननहीं किया जाता है परन्तु लगाने के काम में लाया जाता है इसकी पत्ती बालों को काला करती है चाहे अकेली लगाई जाय चाहे अन्य ओषधों के संयोग से। मस्तिष्क में पीडा उत्पन्न करती है। संशोधक लवंग है।

कुरास—फारसी में गंदना कहते हैं। तीसरी श्रेणी मे गर्म खुस्क है। तबियत को नर्म करता है। र को प्रवहित करता है काम शक्ति पाचन शक्ति और चक्कत को बल देता है बात को पचाता है ग्रन्थियों को खोलता है। आंत के दर्द को दूर करता है पेचिश व पुराने दस्तों को गुण दायक है संशोधक धनिया है !!

कुन्दर—फारसी मे लोबान कहते हैं। दूसरी श्रेणी मे गर्म तीसरी में खुश्क है। नर्म करने वाला और बात को पचाने वाला है। रुधिर के बहने को रोकता है। वीर्य्य के पतले पन को दूर करता है औ

राने और नये मोजाक को हितकारी है। हृदय आमाशय रूह (प्राण) पाचन शक्ति स्मर्ण शक्ति और काम-शक्ति को बलदायक है। उष्ण प्रकृति वालों को शिर-दर्द उत्पन्न करता है। संशोधक शकर और बदल मस्तगी है।

लब्न-फारसी में शीर और हिन्दी में दूध कहते हैं यह जुबनियत (सफेदी) दोहनियत (चिकनाई) व माहियत (पानी) इन तीन चीजों से मिश्रित है। जुबनियत में प्रथम श्रेणी में सर्द खुश्क, दोहनियत में प्रथम श्रेणी में गर्मतर और माहियत में दूसरी श्रेणी में गर्म तर है। स्त्री के दूध के उपरान्त सब से उत्तम दूध गौ का होता है। भैंस के दूध में अहारत्व विशेष है इसके पश्चात् भेड बकरी और ऊंट के दूध में अहारत्व कमहै और दूध घोडी, गधी, खिच्चर व हिरन वगैरः का उचित रोग में ओषधि के समान सेवन करना योग्य है और मुतलक शीर से तात्पर्य गायका दूध है यह मस्तिष्क को बलदायक वीर्य्य उत्पादक शरीर के मुख्य रसों का रक्षक और तबियत को नर्म करने वाला है। संशोधक शहत व शकर है। मांस और अधभुने अंडे के अतिरिक्त सब से श्रेष्ठ आहार है।

लहम—फारसी में गोश्त और हिन्दी में
कहते हैं उत्तम आहार है और बहुतसी
इसकी तारीफ और गुण में है और बहुधा
है कि हजरत सलेअल्म को मांस बहुत रुचि
था सर्व प्रकार के मांस गर्म तर हैं कोई न्यून
अधिक उस जानवर की प्रकृति के अनुसार
जिसका वह मांस है। परन्तु मछली का मांस
खुश्क है जंगली कबूतर का मांस गर्म खुश्क
ऐसे खस्सी बकरे का मांस जो मोटा ताजा
हो और चरागाह में चराया गया हो उत्तम है
कमज़ोर दुबले व बुड्ढे का मांस बुरा है और
जानवर का मांस अच्छा और बड़े का बुरा है

मरज़ञ्जूम—फारसी में दोना मरुवा कहते
दूसरी श्रेणी मे गर्म खुश्क है। तहलील करने
खोलने वाला, फरहत देने वाला, मूत्र और
प्रवाहित करने वाला, मसाने व गुरदे की प
तोड़ने वाला और आमाशय व रंगों की गर्म
बनको सुखाने वाला है। आंत के दर्द व शी
दर्द व लकवा व परोडा व जलंधर व सीने का
व खांसी व दमे को दूर करता है। सशोधक का
नी और बदल कलौंजी है।

मश्क—इसे हिन्दी में कस्तूरी कहते हैं द

णी में गर्म तीसरी में खुश्क है। और जितना पुराना होती है उस की खुश्की विशेष होती है। प्रधान अवयवों को बलदेता है ग्रन्थियोंको खोलता है ठंडे दोषोंको तहलील करताहै विषोंको दूर और मस्तिष्क के ठंडे रोगों को गुण करताहै और गर्म प्रकृति वालों को हानि कारक है। और औषधियों की शक्ति को तुरन्त शरीर में पहुंचाता है उसका अधिक सूंघना रंग को जर्द करता है। संशोधक कपूर व गुलाब, बदल (प्रति निधि) जुन्दबेदस्तर है।

मलह—फारसी में नमक और हिन्दी में लवण कहते हैं सब प्रकार का लवण दूसरी श्रेणी में गर्म खुश्क है इस के गुणों का भेद और प्रकृति की न्यूनता व अधिकाता इसकी किस्मोंके ऊपर निर्भर है सब से उत्तम लवण "लाहौरी नमक" है पित्त व कफ को निकालता है लहसदार रतूबत को दूर करता है और उसका अधिकता के साथ सेवन करना नेत्र को कमज़ोर करता है वीर्य्य को कम करता है और खुजली उत्पन्न करता है।

वर्द—इसे फारसी में गुल सुर्ख और हिन्दी में गुलाब का फूल कहते हैं। उत्तम वह है जो फूलने से पूर्व तोड़ा जाय यह कई प्रकार का होताहै

कोई फसली और कोई बारहमासी उस के भि
भेद के अनुसार उसकी प्रकृति और गुण में
ठीक अन्तर नहीं मालूम हो सकता तदापि बहु
हकीमों ने उसके बारेमें लिखाहै। हृदय को
और फरहत देताहै। रेचक है और पित्त व पतले
कफ को निकालता है। वमन और जी मिचलाने
को रोकता है मंदाग्नि व यकृत व आमाशय
कमज़ोरी को दूर करता है मस्तिष्क और पुरुष
को हानिकारक है। उसकी गंध नजला उत्प
करती है।

हिन्द बाय—इसे फारसी में कासनी कहते
दूसरी श्रेणी में सर्द तर है। ग्रन्थियों को खोल
है, यकृत को बल देती है हरारत व रुधिर
पित्त को रोकती है गुरदे और मूत्र को प्रवा
करती है। खांसी में हानि कारक है। संशो
शकर है।

याकूत—प्रथम श्रेणी में गर्म खुश्क है। शे
उलरईस के मतानुसार मौत दिल है वैद्यों के म
से याकूत भस्मी खाने में परम श्रेष्ठ है। हृद
मस्तिष्क, और प्राणको अति पुष्टकारक है। तबियत
को फरहत देता है और विषों को मारता है।

❀ दूसरा अध्याय ❀

मुसलमानों धर्म पुस्तकों के वे वचन कि जो उनके रसूलल्लाह साहब स्वयं बर्ताव में लाते थे।

खरबूज़ा—एक हदीस में लिखा है कि आनस इब्न मालक ने देखा था कि रसूलल्लाह खरबूजा और खिजूर को साथ खाते थे। खरबूज़े की प्रकृति यह है कि जिस चीज़ को आमाशय में पाता है उसी चीज के अनुसार पचता है। यदि उसके साथ आमाशय में तरी होगी तो श्रेष्ठ रुधिर उत्पन्न होगा। खरबूज़ा व छुआरा साथ खाने में और भी हदीसें हैं।

दुजाज—एक हदीस में लिखा है कि अबू मूसाने देखा कि रसूलल्लाह मुर्ग का मांस खातेथे। दुजाज मुर्गी को कहते हैं, नर और मादा का मांस बुद्धि को तीव्र मस्तिष्क शक्ति को बढ़ाता है और रूह नफसानी को ताकत देताहै। नर का मांस उस समय तक श्रेष्ठ है जब तक वह बांग न देता हो और मादा का उस समय तक जब तक उसने अंडे न दिये हों।

ककड़ी—मुश्कात शरीफ में लिखा है कि अब्दुल्ला इब्न जाफ़र ने कहा कि नबीजी खिजूर को ककड़ी के साथ खाते थे। ककड़ी को छुआरे के

साथ खाने में यह गुण है कि ककडी की रतूबत पतली व कफ उत्पन्न करने वाली है और कभी पित्त के साथ तहलील होती है। छुआरा रुधिर उत्पन्न करने वाला है और अपने स्वाद और गुण में ककड़ी से बलवान है। उसके मिलाने में दोनों से स्वच्छ रुधिर उत्पन्न होता है और कमकरने में अधिक उत्पन्न होता है और इन दोनों के साथ खाने में और हदीसें भी है।

रोटी जो की कद्दू के साथ—आनसइब्न मालक ने कहा था कि एक दरजी ने रसूलिल्लाह की दावत की थी जो उनके पास जो की रोटी और कद्दू का शोरवा और नमक चराया हुआ मांस लाया। इसमें बडी हिक्मत यह है कि जो और कद्दू दोनों सर्द तर हैं और मांस नमक चराया हुआ गर्म खुश्क है इस संयोग से उन सब चीजों की प्रकृति गर्म तर और रुधिर उत्पादक और प्राण संरक्षक होगई।

सरीद—हदीस में लिखा है कि रसूलिल्लाह ने कहा कि "आयशा" की कृपा स्त्रीयों पर ऐसी है जैसी कि "सरीद" की समस्त भोजनों पर सरीद एक प्रकार का भोजन है कि रोटी को शोरवे में तर करते हैं। यह खाना शीघ्र पच

जाना है और स्वादिष्ट होना है और शुद्ध रुधिर उत्पन्न करता है, और प्राण शक्ति (अरवाह) का उत्पादक है और निर्बलों को अत्यन्त उपयोगी है प्रकृति उसकी गर्म तर है। वैद्यों ने दूध में रोटी भिगोने को भी मरीद लिखा है।

हलुवा और शहत—एक हदीस में लिखा है कि "आयशा" ने कहा कि पगम्बर खुदा को हलुवा और शहत प्रिय था। यद्यपि हलुवा में तात्पर्य सब मीठी वस्तुएँ हैं परन्तु हलुवा एक भोजन है कि गेहूं के मैदे को घी में भूनकर शीरीनी का किवाम मिला कर पकाते हैं। वह स्वादिष्ट गर्मतर रुधिर उत्पादक और प्राण शक्ति वर्द्धक होता है परन्तु देर में पचता है।

जौ और जैतून—अब्दुल्ला बिन अली ने कहा कि उसकी दादी सलमी ने थोड़े से जौ लेकर उनको पीस लिया और उनको हंडिया में रखकर उस पर थोड़ा जैतून का तेल डाला और थोड़ी काली मिर्च और गर्म मसाला डाल कर उसको पकाया और अबदुल्ला के पास लाई और उससे कहा कि यह ऐसा उत्तम पदार्थ है कि पैगम्बरे खुदा इस को बड़ा अद्भुत और उत्तम जान कर खाते थे। यह खाना हजरत पसंद और

साथ खाने में यह गुण है कि ककडी की रतूबत पतली व कफ उत्पन्न करने वाली है और कभी पित्त के साथ तहलील होती है। छुआरा रुधिर उत्पन्न करने वाला है और अपने स्वाद और गुण में ककडी से बलवान है। उसके मिलाने में दोनोंमें स्वच्छ रुधिर उत्पन्न होता है और कमकर ने से अधिक उत्पन्न होताहै और इन दोनों के साथ खाने में और हदीसें भी हैं।

रोटी जो की कद्दू के साथ–आनसइब्न मालक ने कहा था कि एक दरजी ने रसूलिल्लाह की दावत की थी जो उनके पास जो की रोटी और लौकी का शोरबा और नमक चराया हुआ मांस लाया। इसमें बडी हिक्मत यह है कि जो और कद्दू दोनों सर्द तर हैं और मांस नमक चराया हुआ गर्म खुश्क है इस संयोग से उन सब चीजों की प्रकृति गर्म तर और रुधिर उत्पादक और प्राण संरक्षक होगई।

सरीद–हदीस में लिखा है कि रसूलिल्लाह ने कहा कि "आयशा" की कृपा स्त्रीयों पर ऐसी है जैसी कि "सरीद" की समस्त भोजनों पर सरीद एक भोजन है कि रोटी को शोरवे में तर खाना शीघ्र पच

जाना है और स्वादिष्ट होताहै और शुद्ध रुधिर उत्पन्न करता है, और प्राण शक्ति (अरवाह) का उत्पादक है और निर्बलों को अत्यन्त उपयोगी है प्रकृति उसकी गर्म तर है। वैद्यों ने दूध में रोटी भिगोने को भी मुफीद लिखा है।

हलुवा और शहत—एक हदीस में लिखाहै कि "आयशा" ने कहा कि पैगम्बर खुदा को हलुवा और शहत प्रिय था। यद्यपि हलुवा से तात्पर्य सब मीठी वस्तुएंहैं परन्तु हलुवा एक भोजन है कि गेंहू के मैदे को घी में भूनकर शीरीनी का किवाम मिला कर पकाते हैं। वह स्वादिष्ट गर्मतर, रुधिर उत्पादक और प्राण शक्ति वर्द्धक होता है। परन्तु देर में पचता है।

जौ और जैतून—अबीदुल्ला बिन अली ने कहा कि उसकी दादी सलमा ने थोडे से जौ ले उनको पीस लिया और उसको हँडिया में रख उस पर थोड़ा जैतून का तेल डाला और थो काली मिर्च और गर्म मसाला डालकर उसको पकाया और अबदुल्ला के पास लाई और उस कहा कि यह ऐसा उत्तम पदार्थ है कि पैग खुदा इसको बड़ा अद्भुत और उत्तम जान खाते थे। यह खाना हजरत को प्रिय था।

प्रकृति उसकी मौतदिल किंचित गर्मतर होती है और कफको नाश करता है रुधिर उत्पन्न करता है और चित्त को बलवान करता है।

चुकन्दर और जौ—अम्ममन्दिर ने कहाकि मेरे यहां रसूलिल्लाह आये और उनके साथ अली थे और हमारे पास छुआरों की डालियां थीं रसूलिल्लाह उनको खाने लगे और अली भी उनको खाने लगे, रसूलिल्लाह ने अली से कहा कि तू निर्बल है मत खा। अम्ममन्दिर ने कहा कि मैंने उनके लिये चुकन्दर और सूखा जौ बनाया है। नबी ने अली से कहा कि यह चीज तेरे उपयोगी है इसको खा अतएव इस हदीस शरीफ से साबित होता है कि रसूल साहब ने निर्बलता की अवस्था में छुआरा खाने को वर्जित किया है इस वास्ते कि सूखा छुआरा आमाशय को गर्म... है और चुकन्दर और जौ खाने की... कि वह दोनों मिलकर हलके कफ... शीघ्र पचने वाले और उत्तम र... करने वाले हो जाते है।

छुआरा और जौ की...
अबदुल्ला बिनसलाम ने देखा...
टुकडा जौकी रोटी का...

छुआरा रक्खा और कहा कि यह जौ की रोटी का दर्पनाशक है। इस क्रिया से खाना अनेक गुण रखता है। विदित होकि जिन वस्तुओं के साथ हज़रत ने छुआरा खाया उन वस्तुओं के साथ यदि लाल बूरा या गुड़ खाया जाय तो भी यूनानी वैद्यक मतानुसार वेही गुण सम्भव है। क्योंकि इन दोनों वस्तुओं की प्रकृति छुआरे की प्रकृति से मिलती हुई है।

तीसरा प्रकरण।

मिश्रित औषधियों का वर्णन।

हर्फ़ अलिफ़।

पहला अध्याय।

ऐसी मिश्रित औषधें जिनका कि एकही नुसखा है।

अनकरूया—इसका अर्थ मनोवरी शक्ल है। इसका निर्माण कर्ता हकीम चुकरात है और चूंकि भिलावा जो इसका सबसे मुख्य अंग है मनोवरी शक्ल है अतएव इसी नाम से प्रचलित किया। यह लकवा, फालिज, मृगी, शून्यवाय, भूल रोग व समस्त कफके रोगों को दूर करता है और पाचन तथा काम शक्ति को प्रबल करता है।

विधि—अकरकरा, कलौंजी, कालीमिर्च, वच,—

उशबन्द गोल प्रत्येक एक तोले चीता सोंठ
प्रत्येक नौ माशे नागरमोथा, बालछड़, लौं
बड़ी हड़, काली हड़, प्रत्येक छै माशे मिल
पांच तोला शहत खालिस डेढ गुना लेकर वि
अनुसार माजून बनावें।

अमरोसिया—यह माजून बुकरात हकीम
एक बादशाह अमरूस नामी के लिये बनाई
अतएव इस नाम से इसे विख्यात की। आमा
व यकृत व तिल्ली व गुरदे को बल दायक है न
की ग्रन्थि व गुरदे और मसाने की पथरी को
करती है मूत्र लाती है और यदि जलंधर रोग
आरम्भ में इसका सेवन किया जाय तो रोग
फायदा देती है।

विधि—मीठा कूट, सफेद मिर्च, पीपल, ज
गंधीक प्रत्येक एक तोला छै माशे, पोदीना,
मिलसां अजमोद के बीज, बच, तज, पिस्ता
ऊपर का छिलका प्रत्येक एक तोला, केशर
माशे, शहत द्विगुण भाग लेकर माजून की रं
से बनावें।

अफ़लूनिया—यह अफलातूनी नामक हक
की निर्माण की हुई है। हर क़िस्म का नज़ला,

का दर्द हैज़ा और प्रदर रोग को अत्यन्त लाभ दायक है।

विधि—सफेद मिर्च, पीपल, अजवायन प्रत्येक छै तोले, अफीम तीन तोले, केशर डेढ़ तोले, पहाड़ी अजमोद के बीज बालछड़ प्रत्येक दो तोले तेजपात तज हब्बबिलसां अकरकरा प्रत्येक नो माशे शहत तीन भाग लेकर माजून बनावें। यह छै महीने के पश्चात् सेवन के योग्य है। और आंत के दर्द में इसके सेवन के पश्चात् सोंफ के बीज का जोशांदा पीना चाहिये और गुरदे के दर्द में खरबूज़े के बीज का जोशांदा और आमाशय के दर्द में अनीसू का काढा और दर्द सपर्ज़ में सिकंजबीन व मसाने के दर्द में सौंफ का काढ़ा और रुधिर के बंद करने में ततरीक का काढा पीना चाहिये।

अरसतूं—इसके बनाने वाला हकीम अरस्तू है लिहाज़ा इस नाम से विख्यात हुआ। योनि का दर्द पेट का दर्द आंत का दर्द और चौथिया ज्वर को दूर करती है।

विधि—तज अकरकरा पोदीना जीरा प्रत्येक एक तोला पीली गंधक प्रत्येक छै माशे केशर तीन माशे शहद डेढ़ भाग लेकर माजून बनावें।

आत्रकामः—प्राचीन हकीमों का ईजाद किया हुआ है । आमाशय व क्षुधा को बलवान करता है और कफ को निकाल कर दूर करता है । इसमें थोड़ी लाख मिलाकर पीना शरीर के कमज़ोर करने में उपयोगी है ।

विधि—गेहूं की गर्म और मोटी रोटी जो करीब आध सेर के तोल में हो लेकर एक हांडी में में बन्द करके रक्खें जब फफूंद जाय तब खूब कुचल कर उसमें पांच सेर सिरका और आधपाव सांभर नमक मिलाकर चार सप्ताह तक धूप में रख छानलें और पोदीना छे तोले सोंठ तीन तोले कालीमिर्च पांच तोले पालक के बीज दो तोले मिलाकर एक सप्ताह धूप में रखकर कपड़े से छान कर शीशे में रखलें ।

आसूरसलीम—यह हकीम सलीम का बनाया हुआ है लिहाज़ा इस नाम से मशहूर हुआ । फालिज व लक़्वा व हजूर पुराना शिर दर्द और अन्य ठंढे रोगों को उपयोगी है । और अफीम खाने की आदत को छुड़ाता है ।

विधि—बालछड़, मस्तगी, नरकचूर, अफीम, सफेदमिर्च, नकछिकनी, अकरकरा, लोबान, चीतमलुरा डेढ़ डेढ़ तोले वज़न, जरावन्दतवील, जरावन

गोल, राई, गूगल, कुटकी, इन्द्रायन की जड, जुंद बेदस्तर, गंधक आमला सार, तग तेजक के बीज, संभालू के बीज, तितली के बीज, कलौंजी, जाव शीर प्रत्येक दो तोले, और शहत तीन भाग लेकर माजून बनावें और दो महीने तक नाज में गाढ कर रक्खें।

अगबरलूलूई–यह प्राचीन ओषधि है यह घिसकर गर्द के सदृश किया जाता है अतएव इस नाम से विख्यात हुआ यह सुरमे की किस्म से है यह नेत्रकी खुजली, व ढलका व बाम्हनी व कुत्थी व नेत्र की कमज़ोरी को उपयोगी है।

विधि–तूतिया हाहनी, मगसुल, फिटकरी मुदब्बिर प्रत्येक नौ माशे, अनविंधे मोती तीन माशे सफेद मिश्री पांच माशे लेकर सुरमा बनावें।

अकसीरैन–यह भी प्राचीन ओषधि में से है-इसमें गुण बहुत अधिक हैं इस कारण से इसका यह नाम पड़ा है। नेत्र के घाव व मोर सुर्ख को दूर करता है।

विधि–वंग, चांदी की मूस, बबूल का गोंद प्रत्येक छ माशे, गेहूं का निशास्ता दो माशे अफीम दो माशे लेकर फूल के बरतन में यहां तक घिसें कि सुरमे के सदृश हो जाय।

प्रत्येक तीन तोले सफूफ करके रौगन बादाम में चिकनी करके आधा रतल शकर व शहत की चाशनी में मिलावें।

इत्रीफल उस्तखुद्दूसी—मस्तिष्क और त्वचा के रोगों को हित दायक है।

विधि—काबली हड़, बहेडा, आमला प्रत्येक तीन तोले, उस्तखुद्दूस, गुलाब के फूल दो दो तोले, आकाश बेल अनीसूं (बादयान रूमी) बिल्ली लोटन चीता एक एक तोला शहद तीन भाग।

इत्रीफल कर्बाली—तीनों प्रकार के पेट के कीडों को मारता व दूर करता है।

विधि—पीली हड़ बहेडा आमला कबीलि (कमीला) दो दो तोले हिंग काबली मीठा कूट एक तोला छोटे इन्द्रायन के फल का गूदा नागर मोथा हल्दी छे छे मारो और शहत तीन भाग।

इत्रीफल सादा—आमाशय व मस्तिष्क को बल दायक है और आमाशय को बुरे दोषों से स्वच्छ करता है।

विधि—पीली हड बहेडा आमला समान भाग कूट छानकर रोगन बादाम में चिकनी करके छे भाग शहत कच्चे में मिलावें।

चौथा अध्याय।

अयारजात का वर्णन।

यद्यपि अयारज के अर्थ बहुत लिखे गए परन्तु इसका मुख्य कारण यह है कि अयारज सकमूनिया (मुसव्वर) को कहते हैं और सकमूनिया मुख्य अंग इस तरकीब का है अतएव उसके नाम से विख्यात हुआ और सब रेचक औषधों से पूर्व वैद्यों ने इसको ईजाद किया था।

अयारज—बात और कफ के मवाद को निकालता है और हर प्रकार के शिर दर्द, कान के दर्द, भारापन पक्षाघात लकुवा राशा दीप कोढ़ व बर्स को हित दायक है।

विधि—सफेद निसोत गारीकून सकमूनिया (एलुवा) एक २ तोला अनीसून (बादियान रूमी) तज कालीमिर्च सोंठ उस्तखुद्दूस गुलाब के फूल पांच २ माशे और शहत दो भाग।

अयारजफैकरा—आमाशय के बुरे दोषों को निकालता है और नाना प्रकार के शिर दर्द व मस्तिष्क के रोगों को दूर करता है।

विधि—जटामासी सुगंध वाला तज छे छे माशे मस्तगी नौ माशे केशर तीन माशे एलुवा समान भाग और शहद दो भाग सब औषधों से लें।

अन्य वर्श-गुल बनफशा, ऊद सलीब, उस्तखु
द्दूस, पीली हड़ छै छै माशे, सफूफ करके दो तोले
अफीम में कि जल में घोल कर गर्म कीहो मिला
कर गोली बनावें ।

अन्य वर्श-लौंग, केशर, अकरकरा, खुरासानी
अजवायन पांच पांच माशे सफूफ करके दो तोले
अफीम या केवडे के अर्क में घोल कर गरम किया
हो इतना मिलावें कि माजून के सदृश होजाय ।

❋ आठवां अध्याय ❋

बत्तीसा और पीडा के नुसखे ॥

बत्तीसा-स्त्रियों की रतूवत दूर करने रजध
का गैर मामूल होना, कमर के दर्द व कमजो
और तबियत की कमजोरी को गुण दायक है
और पुरुषों का प्रमेह व वीर्य्य का पतलापन
करता है और पुष्ट कारक है ।

विधि-माजू, माई लोध बाय बिडंग, बान ख
धावा के फूल, गोखरू बड़े, गोखरू छोटे, सुपारी
फूल, चिकनी सुपारी, सेमल की मूसली, समं
सोंख, मौलसरी की छाल, ढाक का गोंद, छोटी इ
यची, मए छिलके के मजीठ, पलंग तोड, कमर
एक २ तोला, संग जराहत दो तोले, बबूल
गोंद घी में भुना हुआ सात तोले सबको

छानकर साठी चांवल का मैदा आधसेर और शकर तीन पाव मिलावें और छुआरा, चिरोंजी, लावा एक छटांक ज़ीरा करके मिलावें और तीन पाव गो घृत जो दाग़ से खुशबू किया हो मिला कर चाहे वैसाही रक्खें चाहे थोड़ा पानी मिला कर लड्डू बनालें।

अन्य बत्तीसा—सैंभल का मूसला,मजीठ, पुरानी सुपारी, पलंगतोड, सुरयाली के बीज, गाजर के बीज, बीजबंद, कोंचके बीजों की मींगी धावाके फूल चूनिया गोंद, पलास पापडे का गूदा, इन्द्रयव, तेज बल, पीपलामूल, माई समन्दर सोख, बाय बिडंग, शी अजवायन, ताल मखाना, सोंठ गोखरू छोटे, ोखरू बडे, सफेद मूसली, काली मूसली, माजू. ारचीनी, बाबखुमा, लोध, मोचरस, कमरकस, कामराज, सीगड़ी बबूलकी, मूफली, बडी इलायची असगंध एक एक तोला, संगजराहत तीन तोले, गेहू का मैदा, साठी चांवल का मैदा प्रत्येक पाव सेर, सफेद शक्कर, घी, आध-२ सेर लेकर बनावें।

पोंडी—यह स्त्री की प्रकृति को अवश्य उपयोगी है। दोषों को सुलाती है शरीर को खुश रंग और बलवान करती है। स्वच्छ रुधिर उत्पन्न करतीहै। और मनुष्यों के धातु दोष और काम शक्ति की न्यूनता को दूर करती है।

अन्य वर्ती—गुल बनफशा, ऊद सलीब, उस्तखु द्दूस, पीली हड़ छे छे माशे, सफूफ करके दो तोले अफीम में कि जल में घोल कर गर्म कीहो मिल कर गोली बनावें।

अन्य वर्ती—लौंग, केशर, अकरकरा, खुरासानी अजवायन पांच पांच माशे सफूफ करके दो तोले अफीम या केवड़े के अर्क में घोल कर गरम किया हो इतना मिलावें कि माजून के सदृश होजाय।

❋ आठवां अध्याय ❋

बत्तीसा और पीडा के नुसखे ॥

बत्तीसा—स्त्रियों की रतूबत दूर करने रजधर्म का गैर मामूल होना, कमर के दर्द व कमजोरी और तबियत की कमजोरी को गुण दायक है। और पुरुषों का प्रमेह व वीर्य्य का पतलापन दूर करता है और पुष्ट कारक है।

विधि--माजू, माई, लोध, बाय बिडंग, बाद खमा धावा के फूल, गोखरू बड़े, गोखरू छोटे, सुपारी का फूल, चिकनी सुपारी, सेमल की मूसली, समन्दर सोख, मौलसरी की छाल, ढाक का गोंद, छोटी इलायची, मए छिलके के मजीठ, पलंग तोड, कमरकस एक २ तोला, संग जराहत दो तोले, बबूल का गोंद घी में भुना हुआ, सात तोले सबको कूट

छानकर साठी चांवल का मैदा आधसेर और शकर तीन पाव मिलावें और छुआरा, चिरोंजी, लावा एक छटांक ज़ीरा करके मिलावें और तीन पाव गौ घृत जो दाग़ से खुशबू किया हो मिला कर चाहे वैसाही रक्खें चाहे थोड़ा पानी मिला कर लड्डू बनालें।

अन्य बत्तीसा—सैंभल का मूसला,मजीठ, पुगनी सुपारी, पलंगतोड, सुरयाली के बीज, गाजर के बीज, बीजबंद, कौंचके बीजों की मींगी धावाके फूल चूनिया गोंद, पलास पापडे का गूदा, इन्द्रयव, तेज ल, पीपलामूल, माई समन्दर सोख, बाय बिडंग, शी अजवायन, ताल मखाना, सोंठ गोखरू छोटे, ोखरू बडे, सफेद मूसली, काली मूसली, माजू. ारचीनी, बावखुपा, लोध, मोचरस, कमरकस, कामराज, सीगड़ी बबूलकी, मूफली, बडी इलायची असगंध एक एक तोला, संगजराहत तीन तोले, गेहूं का मैदा, साठी चांवल का मैदा प्रत्येक पाव सेर, सफेद शकर, घी, आध २ सेर लेकर बनावें।

पींडी—यह स्त्री की प्रकृति को अवश्य उपयोगी है। दोषों को सुखाती है शरीर को खुश रंग और बलवान करती है। स्वच्छ रुधिर उत्पन्न करतीहै। और मनुष्यों के धातु दोष और काम शक्ति की न्यूनता को दूर करती है।

विधि-ताल मखाना चाकसू, उटंगन के बी बहेडा आमला, हरे माजू, काला ज़ीरा, सफ़ेद ज़ीरा लोध दो२ तोले, बडी इलायची, छोटी इलायची, सग्यानी के बीज, जायफल लवंग एक एक तो बिनौले की मींगी, सुपारी प्रत्येक चार तोला बबूल का गोंद घी में भुना हुआ नौ तोले, गेहूं का नि शास्ता डेढ पाव, सफेद शकर ढाई पाव, और मेव जात व घी उपरोक्त वर्णित नुसखे के अनुसार मि लाकर बनावें ।

❋ नवां अध्याय ❋

बरूद का वर्णन ॥

यह सुरमे की किस्म से है ॥

बुरूद-नेत्र का मैल और पानी दूर करे जा और फुली को काटे । आंख की सुरखी और रत ध दूर करे ।

विधि- नीलाथोता शुद्ध किया हुआ एक मा पीली हड का बक्कल दो माशे, काबली हड गुठली जली हुई एक नग, कपूर दो रत्ती, लाहौ नमक चाररत्ती, लेकर सुरमेकी तरह घिसकर लगा

अन्य बुरूद-नेत्र की ज्योति को बल दे औ नेत्र की रोगों से रक्षा करे ।

विधि--चांदी की मूस तीन माशे, केशर एक
[माशे], कपूर चार रत्ती ।

अन्य बरूद्--आंख की खुजली और जलन
[दू]र करे ।

विधि--संग बसरी सीपी जली हुई तीन२ माशे
[ज]त पांच माशे, कपूर एक माशे, सफेद बंसलो-
[चन] छे रत्ती ।

दसवां अध्याय ।

बखुरात (धूनी) का वर्णन ॥

बखुर--बवासीर के मस्से और गुदा की सुजन
[को] दूर करे और चुनचुनों को मारे ।

विधि--गंधक छे माशे, सिंदूर छे माशे, मुलह-
[टी] की जड, मदारकी जड, बेरके पत्ते, प्रत्येक दो
[तो]ले, जलाकर गुदा में धूआ पहुंचावें ।

अन्य बखुर--रजको प्रवाहित करे, मरे बच्चेको
[ग]र्भ से निकाले और प्रसव की कठिनता को
[सु]गम करे ।

विधि- नकछिकनी, नख, हाऊ बेर, गूगल, गं-
धक समान भाग पीसकर गाय के पित्ते में सानकर
[ग]ोली या बत्ती बना कर रक्खें आवश्यक्ता के समय
जला कर धुआं लें ।

अन्य--बादी बवासीर को दूर करे ।

विधि-भटकटैया का फल, नीम के पत्ते
सबंद के दाने समान भाग से धुनी दें ।

बखूर-प्रसव में सरलता करै ।

विधि-सांप की कांचली एक भाग औ
या गधे के खुर चार भाग मिलाकर धुनी

बुखूर-हाथ और नख के अपरसको दू

विधि-वेद अंजीर का तेल पीडित स्था
लगाकर आक की लकडी से धूनी दें ।

ग्यारहवां अध्याय ।

हर्फ पे ।

पाशोये के नुसखे ।

पाशोया-गरमी की मस्तिष्क पीडा
सरसाम और निन्द्रा न आने को गुण दाय

विधि-बेर के पत्ते आद पाव. गेहूं की
आद पाव. बनफशे के पत्ते; नीलोफर के फू
तमी के फूल. मकोय. कुलफे के पत्ते. पा
पत्ते चार चार तोले. छहोकी कुटी हुई छै
लवण तीन तोले ।

अन्य पाशोया-नीलोफर के फूल चार
गुलाब के फूल एक तोला. कटा हुआ पेठा
हुआ बडा कद्दू. गेहूं की भुसी, छै छै तोले
धनियां. खारी नमक दो२ तोले बेरके पत्ते

अन्य पाशोया—सर्दी की मस्तिष्क पीडा, निन्द्रा, कफ, सरसाम व कफ ज्वरको गुण दायकहै

विधि—बाबुना. अकीकुलमलक. खतमीके फूल राई. लवण. खुब कला तीन२ तोले. गेहूंकी भुसी छे तोले. वेर के पत्ते छे तोले।

अथवा—काली झांय, बाबूना के फूल. खतमी के बीज तीन२ तोले. बेर के पत्ते चार तोले. सहजने के पत्ते चार तोले. सांभर लवण दो तोले।

बारहवां अध्याय।

हर्फ ते।

तिरयाक (जहरमोहरा) के नुसखों का वर्णन।

विदित होकि हकीमों ने प्रथम तिरियाक को विषों की मारने वाली औषधियों से बनाया था इसके बाद फिर कड़ी २ औषधों से बनाना आरम्भ किया. प्रयोजन यह है कि तिरियाक रोग को उसी प्रकार उपयोगी है जैसा कि विष के मारने में जहरमोहरा होता है।

तिरियाक अरबः—यह हकीम अन्द्रमाखस का ईजाद किया हुआ है बनजाने से चालीस दिन पश्चात् सेवन करना चाहिये इसका पूर्ण वल दो वर्ष तक स्थिर रहता है। गलीज़ वात को पचाने वाला, यकृत व तिल्ली को उपयोगी ग्रन्थियों

खोलने वाला जानवरों के बिष के लिये ...फुज़लात को निकालने वाला और मृगी खफ़क़ व अन्य ठंडे रोगों को गुण दायक है और बच्चे को निकालता है

विधि—जवासे के बीज, पाखानबेद बीजाबो जरावन्द तवील अथवा जरावन्द गोले समान भ सफूफ़ करके तीन भाग शहद में मिलावें। मा एक माशे से चार माशे तक। यदि एक भाग के और मिलावें तो बहुत लतीफ़ और बलदाय हो जायगा।

तिरियाक़ समानियः—हकीम वलीदुनसने अ चीजों से बनाकर इस नाम से बिख्यात किया खाये हुए बिष और जानवरों के काटने और मारने के विष के विषैलापन को दूर करता वायशूल तथा उदर की सख्ती तथा तिल्ली को ग तथा पक्षाघात तथा कंपनबाय और मृगी को दायक है। वायु को पचाता है और ग्रन्थियों खोलता है।

विधि—बीजाबोल, जवासे के बीज, पाखान कड़वा कूट, प्रत्तेक एक तोला, काली मिर्च, त प्रत्येक आठ माशे केशर दारचीनी चार २ मा

तिरियाक सगीर—यह वउलरईस का ईजाद कि

ता है। विष का विषैलापन दूर करता है और जानवरों का विष दूर करने में तिरियाक अरबःसे बढ़कर है।

विधि–जरावन्द तवील, जवासे के बीज, पाखा-भेद, कनेर की जड़ का छिलका, अफसन्तीन, हल्दी, इन्द्रायन की जड़ समान भाग लें और सब औषधों से ड्योढा शहत।

तिरियाकुलमसाना–हकीम अबुलमाहर का ईजाद किया है। गुरदे व मसाने के घावको अच्छा करता है। मूत्रको प्रवाहित करताहै। मूत्रमें जलन अथवा कठिनता से आने को हित दायक है थोडे गाय के दूध के साथ गर्भाशय के रोग को, रज जारी करने को और इन्द्री की पीडा को गुण दायक है। चने को पानी में भिगोकर उस जलके साथ सेवन करने से अबखरों को मस्तिष्कमें चढने से रोकता है और शहत के जलके साथ सेवन करने से स्वांस लेने के अवयवों को पुष्ट और शुद्ध करता है।

विधि–बन गायकेसींग की भस्म, मूंगा, मोती, नौ नौ माशे अफीम एक माशे मुलहटी का सत तंतरीक, गिले अरमनी, गुलशीराजी, रवन्द चीनी तुख्म खुरफा, पहाडी पोदीना, अजमोद के बीज,

खोलने वाला जानवरों के बिष के लिये जहरमुहरा फुजलात को निकालने वाला और मृगी ... व अन्य ठंडे रोगों को गुण दायक है और मरे बच्चे को निकालता है

विधि—जवासे के बीज, पाखानवेद बीजावोल जरावन्द तवील अथवा जरावन्द गोले समान भाग, सफूफ करके तीन भाग शहत में मिलावें। मात्रा एक माशे से चार माशे तक। यदि एक भाग केशर और मिलावें तो बहुत लतीफ और बलदायक हो जायगा।

तिरियाक़ समानियः—हकीम वलीडुनसने आठ चीजों से बनाकर इस नाम से विख्यात किया है। खाये हुए बिष और जानवरों के काटने और डंक मारने के विष के विषैलापन को दूर करता है। वायशूल तथा उदर की सख्ती तथा तिल्लीकी गांठ तथा पक्षाघात तथा कंपनवाय और मृगी को गुण दायक है। वायु को पचाता है और ग्रन्थियों को खोलता है।

विधि—बीजाबोल, जवासे के बीज, पाखानवेद कड़वा कूट, प्रत्येक एक तोला, काली मिर्च, तज प्रत्येक आठ माशे केशर दारचीनी चार २ माशे

तिरियाक सगीर—शेखउलरईस का ईजाद किया

विधि—सफेद फिटकरी दो तोला पीली फिटकरी चार तोले, कलम शोरा सात तोले लेकर व दस्तूर बनावें और त्वचा को खुजा कर लगावें।

अन्य तेजाब—इसको "देगवरदेग" कहते हैं बासीर और विशेष मांस को काट कर दूर करता है परन्तु यह औषधि मांस के कटजाने के पश्चात बहुत दुख देती है। गोभीके पत्तों को जोश करके उसका पानी लेकर उसमें गाय का घी मिला कर घोटें जब मरहम के सदृश होजाय तब लगावें यदि एक दिनके लगाने में मांस कटे तो दो एक दिन का बीच देकर फिर लगावें।

विधि—पारा नौसादर चार२ तोले जिंगार पत्थर का चूना आठ आठ तोले, सज्जी, लोबान, गंधक प्रत्येक चौबीस तोले लेकर पारे व जिंगारको सिरके में खरल करें जब पारे का निशान बाकी न रहै अन्य औषधि मिलाकर खरल करके दवा को सुखावे इसके बाद ठंडे पानी में रखकर एक मट्टी के देग में रक्खें दूसरा देग ऊपरसे औंधा उसके ऊपर रखकर आटेसे मुंह बंद करें और उसके नीचे मंदी आंच करते रहैं कि सब औषधि का जौहर उडकर दूसरे देगमें लिपट जाय तब खोलकर और उस चढे हुए जौहर को लेकर काम में लावें।

अनीसु चार चार माशे, गुले मखतुम, खतमी के बी जखुम्वाजी के बीज, कुलफे के बीज, खीरे ककडी के बीज, मीठे कद्दू के बीजकी मींगी, खरबूजे के बीज की मींगी, दम्मुलअखवेन पांच २ माशे छडीला, कतीरा, कुलथी, मीठे बादाम की मींगी सात२ माशे हब्बेकाकनज नौमाशे शहत तिगुना।

तिरयाकुल अस्नान-दांत के दर्द और मसूडों की सूजन को जो शरदी के कारण उत्पन्न हुई हो दूर करने में अद्वितीय है।

विधि-गोलमिर्च, अकरकरा.हींग, नरकचूर सैंधानोंन, समान भाग कूट छान कर शहत में सान कर गोली बनाकर छाया में सुखाकर दांत के नीचे दबावें।

तेरहवां अध्याय।

तेजाब के नुसखे।

तेजाब-अधिक मांस को व्रण से दूर करता है व कडे फोडे को तोडता है और पुराने फोड़ों का मवाद बहाता है।

विधि-कलमी शोरा फिटकरी नौसादर समान भाग जौकुट करके वदस्तूर अर्क खैंचें।

अन्य तेजाब-सफेद दागकी त्वचा और खराब को काटे और अच्छा मांस व त्वचा जमावे।

विधि-सफेद फिटकरी दो तोला पीली फिट-करी चार तोले, कलम शोरा सात तोले लेकर व दस्तूर बनावें और त्वचा को खुजा कर लगावें।

अन्य तेजाब-इसको "देमबरदेग" कहते हैं बवासीर और विशेष मांस को काट कर दूर कर देताहै परन्तु यह औषधि मांस के कटजाने के पश्चात बहुत दुख देती है। गोभीके पत्तों को जोश करके उसका पानी लेकर उसमें गाय का घी मिला कर घोटें जब मरहम के सदृश होजाय तब लगावें यदि एक दिनके लगाने में मांस कटे तो दो एक दिन का बीच देकर फिर लगावें।

विधि-पारा नौसादर चार२ तोले जिंगार पत्थर का चूना आठ आठ तोले, सज्जी, लोबान, गंधक प्रत्येक चौबीस तोले लेकर पारे व जिंगारको सिर के में खरल करें जब पारे का निशान बाकी न रहे अन्य औषधि मिलाकर खरल करके दवा को सुखावे इसके बाद ठंडे पानी में रखकर एक मट्टी के देग में रक्खें दूसरा देग ऊपरसे औंधा उसके ऊपर रखकर आटेसे मुंह बंद करें और उसके नीचे मंदी आंच करते रहैं कि सब औषधि का जौहर उडकर दूसरे देगमें लिपट जाय तब खोलकर और उस उडे हुए जौहर को लेकर काम में लावें।

चौदहवां अध्याय।

हर्फ़ जीम ॥

जवारिशात का वर्णन ॥

इसका प्रचार माजून के पश्चात हुआ मुख्यतः आमाशय के रोगों के लिये इसके बाद और और अवयवों के लिये भी बनने लगीं।

जवारिश दारचीनी—समस्त अवयवों और काम शक्ति को बल देतीहै और दर्द कफकी खांसी बादी की बवासीर दाद पेर की उंगलियों का दर्द छीप व मसाने व गुर्दे की पथरी को हित है।

विधि—बालछड छोटी इलायची के बीज तज दारचीनी कुलीजन लौंग मोथा सोंठ कालीमिर्च पीपल मीठा कूट नेत्र वाला प्रत्येक दो भाग केशर एक भाग मस्तगी पांच भाग सफेद शकर सब औषधियों के समान भाग और शहत दोनों के समान भाग।

जवारिश कमूनी—आमाशय को बलदायक पाचक वायको पचाने वाली और फुजलों को दूर करने वाली है।

विधि—काला ज़ीरा शुद्ध सिरके में भीगा हुआ सात भाग कालीमिर्च सोंठ तितली पीपल पोदीना पीलीहड प्रत्येक तीन भाग लाहोरी नमक ४ भाग और सब औषधियों से तिगुना शहत।

जवारिश मस्तगी–आमाशय व यकृत की तरी को दूर करती है, मुख से लार बहने को रोकती है आमाशय व पाचन शक्ति को बलदायक है।

विधि–रूमी मस्तगी एक भाग पीसकर सफेद कन्द की चाशनी सोलह भाग में गुलाब के अर्क के साथ बनाया हुआ हो मिलावें।

जवारिश ऊदतुर्श–आमाशय को बलदायक और भोजन को पचाती है।

विधि–ऊद पांच तोले, लौंग, बालछड, जरिश्क एक२ तोले लेकर एक रतल सफेद शकर की चाशनी में जिसमें कागज़ी नीबू का रस अथवा बारह तोले खट्टे अनार का रस मिश्रित हो मिलावें।

जवारिश जालीनूस–समस्त अवयव और कामदेवको बल देती है। मूत्र की अधिकता वायकी प्रबलता, मस्तिष्क पीडा, कफ की खांसी, बादी बवासीर, दाद, हाथ की उंगलियों की पीडा छीप और गुरदे व मसाने की पथरी को दूर करती है और बालों को काला रखती है।

विधि–बालछड, इलायची, तज, दारचीनी, कुलीजन, लौंग, नागर मोथा, सोंठ, चिरायता कालीमिर्च, पीपल, मीठा कूट, ऊदाविलसां, नेत्रबाला एक एक तोला केशर छे माशे, रूमी मस्तगी दो

तोके कंद सफेद सब औषधियोंके समान भाग तथ
शहत दो भाग।

जवारिश खोजी–खोजिस्तान के हकीमों ने इ
को निर्माण किया है। भोजन को पचाती है दस्त
को बन्द करती है तिल्ली की सूजन को जिसक
प्लीहा और बरबट कहते हैं जलंधर को और मू
की अधिकता को दूर करती है।

विधि–मीठा कूट, तज, बालछड़ प्रत्येक ए
तोला, जायफल दो तोले, इलायची के बीज, गु
लाब के फूल लोंग, अनीसू अकीकुल मलक चीत
नौ नौ माशे, जावित्री, दरूज अकरबी, जरावन्द
गोल, छडीला, पीलीहड़, कावली हड़ प्रत्येक छै छै
माशे सफेद मिश्री सब औषधियों से दूनी लेक
बनावें। बननेके दो मास पश्चात् सेवनके योग्यहै।

जवारिश बू अली–नादी, खफक़ान, विक्षिप्तता
दिल की घबराहट और बिसवास सौदावी को
दूर करती है।

विधि–अगर, जावित्री, तुलसी, तालीसपत्र नर
कचूर, गावज़बां के पत्ते, बालछड़, एक एक तोला
दारचीनी, मस्तगी सोंफ छै छै माशे, कपूर तीन
माशे शहत सब औषधियों से तिगुना और सफेद
मिश्री दूनी।

जवारिश अशरफ़—यह हकीम अशरफ ने लिखा है कि मैंने किसी मिश्रित ओषधि को इससे उत्तम प्रभावित नहीं पाई। शूलादिक, आंतों और उदर के रोग, ववासीर पीठ के दर्द, चूतड़ के दर्द बेहोशी और वमन को दूर करती है।

विधि- सोंठ, दारचीनी, आमला, लौंग, बिसफ़ायज, जायफल, एक २ तोला, कालीमिर्च छोटी इलायची, डेढ़ २ तोला, मुसव्वर, निसोत नौ नौ माशे सफ़ेद मिश्री समान भाग व शहत दो भाग।

जवारिश—पित्त की अतीसार, पेचिश पेट का दर्द व दवामी ववासीर को गुण दायक है।

विधि—तंतरीक, हालों के बीज, काला जीरा साफ किया हुआ, रूमी मस्तगी, काली मिर्च, इलायची एक एक तोले मुसव्वर, निसोत पांचर माशे शहत तीन भाग।

जवारिश--मस्तिष्क, यकृत व गुरदे को बलदेती है वीर्य्य को अधिक गाढ़ा और कामदेव को बलवान करती है।

विधि--प्याज के बीज, चूका के बीज हालों के बीज, शलजम के बीज, गाजर के बीज, अजमोद के बीज, शकाकुल मिश्री, सालिब मिश्री, पीपल बड़ी इलायची, कुलींजन, दारचीनी, तज, सोंठ, नौ

तोले कंद सफेद सब औषधियोंके समान भाग तथा शहत दो भाग।

जवारिश खोजी—खोजिस्तान के हकीमों ने इस को निर्माण किया है। भोजन को पचाती है दस्तों को बन्द करती है तिल्ली की सूजन को जिसको प्लीहा और बरबट कहते हैं जलंधर को और मूत्र की अधिकता को दूर करती है।

विधि—मीठा कूट, तज, बालछड प्रत्येक एक तोला, जायफल दो तोले, इलायची के बीज, गुलाब के फूल लौंग, अनीसू अकीकुल मलक चीता नौ नौ माशे, जावित्री, दरूज अकरबी, जरावन्द गोल, छडीला, पीलीहड, कावली हड प्रत्येक छै छै माशे सफेद मिश्री सब औषधियों से दूनी लेकर बनावें। बननेके दो मास पश्चात् सेवनके योग्यहै।

जवारिश बू अली—बादी, खफक़ान, विक्षिप्तता दिल की घबराहट और बिसवास सौदावी को दूर करती है।

विधि—अगर, जावित्री, तुलसी, तालीसपत्र नर कचूर, गावज़वां के पत्ते, बालछड, एक एक तोला दारचीनी, मस्तगी सौंफ छै छै माशे, कपूर तीन माशे शहत सब औषधियों से तिगुना और सफेद मिश्री दूनी।

जवारिश अशक़फ़—यह हकीम अशकफ ने लिखा है कि मैंने किसी मिश्रित औषधि को इससे उत्तम प्रभावित नहीं पाई। शूलादिक, आंतों और उदर के रोग, ववासीर पीठ के दर्द, चूतड़ के दर्द बेहोशी और वमन को दूर करती है।

विधि- सोंठ, दारचीनी, आमला, लोंग, बिसफ़ायजं, जायफ़ल, एक २ तोला, कालीमिर्च छोटी इलायची, डेढ़ २ तोला, मुसव्वर, निसोत नौ नौ माशे सफ़ेद मिश्री समान भाग व शहत दो भाग।

जवारिश—पित्त की अतीसार, पेचिश पेट का दर्द व दवामी ववासीर को गुण दायक है।

विधि—तंतरीक, हालों के बीज, काला ज़ीरा साफ किया हुआ, रूमी मस्तगी, काली मिर्च, इलायची एक एक तोले मुसव्वर, निसोत पांच२ माशे शहत तीन भाग।

जवारिश--मस्तिष्क, यकृत व गुरदे को बलदेती है वीर्य्य को अधिक गाढ़ा और कामदेव को बलवान करती है।

विधि--प्याज के बीज, चूका के बीज हालों के बीज, शलजम के बीज, गाजर के बीज, अजमोद के बीज, शकाकुल मिश्री, सालिब मिश्री, पीपल बड़ी इलायची, कुलींजन, दारचीनी, तज, सोंठ, नौ

नौ माशे, असगंध, काली मूसली, सफेद मूस
कंकोल मिर्च, कबाब चीनी, अकरकरा छे छे म
लौंग, जायफल, तीन २ माशे बबूल का गोंद
के घीमें भुनाहुआ तीन तोले सफेदशकर तीनगु

पन्द्रहवां अध्याय ।

हर्फ हे

मस्तिष्क और दर्दों के रोग को उपयोगी गोलियां।

हब्ब-फालिज लकवा व राशे को दूर करे ।

विधि--पीपलामूद, कटाई, अजवायन, अज
पीपल, कबाबचीनी, और सांभर लवण समान
कूटकर मदार के पत्ते के जल अथवा शीरे में
गोकर सफूफ करके घीग्वार के गूदे में चने
बराबर गोली बनाकर एक सुबहको और एक
को सोते समय खांय ।

हब्बे कुचला--पक्षाघात, लकुवा, कंपन
अवयवों की पीडा और नजले की अधिकता
दूर करता है । और यदि बांझ स्त्री रजधर्म के
श्चात् खाय तौ गर्भवती हो जाय ।

विधि--दारचीनी, जायफल, जावित्री, ऊदसल
लौंग एक एक तोला, कुचला गाय के दूध में
गोकर और छीलकर और बारीक पत्ने काटकर

ाला, लेकर सबको सफूफ करके अजवायन व पो-
दीने के पानी में भिगोकर गोली बनावें।

हब्ब—जोड़ के दर्द को दूर करै।

विधि—एलुवा, सकूतरी, सफेद निसोत, डेढ़ डेढ़ तोले, पीली हड बूजीदान, सूरंजान मीठा, एक एक तोला, अनीसुन, सकमूनिया, गूगल नौ नौ माशे लेकर गंदना के पानी में गोली बनावें।

हब्ब—पैर की उँगलियों के दर्द को दूर करता है।

विधि—कलौंजी, कित्रकी जड़, गूगल अकरकरा सात सात माशे, कालीमिर्च, आमला, शीतरज, सोंठ पीपल, सांभर नमक नौ नौ माशे, मीठा शीरंजान सब औषधियों के समान भाग लेकर सौंफ के पानी में गोली बनावें।

हब्ब—अर कुन्निसा रोग को दस्तों द्वारा दूर करता है।

विधि—एलुवा, बड़ी हड, सूरंजान मीठा, समान भाग लेकर गोली बनावें।

❋ सोलहवां अध्याय ❋

नेत्र रोग के दूर करने वाली गोली।

हब्बे सुर्ख—नेत्र के समस्त रोगों को विशेष कर नेत्र की सुर्खी को अत्यन्त उपयोगी है।

विधि—गेरू चार भाग, अफीम एक भाग, अर्द्ध भाग लेकर हड़ के जल में बड़ी बड़ी गोली बना कर रक्खें। यदि नेत्र पर सूजन हो तो धनिये तथा मकोय के पानी में घिसकर और सूजन न हो तो खश खश के पानी में घिसकर लगावें।

हब्ब अमराज चश्म—यह नेत्र के रोगों को गुण दायक है।

विधि—फिटकरी भुनी हुई चारमाशे, अफीम दो माशे, रसौत आठ माशे, नीमके ताजा पत्ते पांच नग, केशर पांच रत्ती, सब को लोहे की कढ़ाई में रिगड़ कर गोली बनाकर रक्खें और आवश्यकता के समय लेप करें।

❋ सत्रहवां अध्याय ❋

मुख के रोग दूर करने वाली गोली

हब्ब—यह जिव्हा की जलन को दूर करती है

विधि—खरबूज़े के बीज की मींगी, खीरा ककड़ी के बीज की मींगी, मीठे कद्दू के बीज की मींगी एक एक भाग, निशास्ता गेहूं का तीन भाग लेकर बबूल के गोंद के पानी में गोली बना कर मुख में रक्खें।

हब्ब—मुख की दुर्गन्धि को दूर करती है।

विधि—जावित्री, नागरमोथा, बिजौरे का छि

।, तुलशी, सफेद चंदन, एक एक तोला, बंसलो-
न, कपूर छडीला तीन तीन माशे, कस्तूरी एक
शे, लेकर बबूल के गोंद के पानी में गोली
नावें।

हब्ब—आवाज बठ जाने और भारी होजाने को
ण दायक है।

विधि—मुलहटी छिली हुई, अलसी भुनी हुई,
तीरा, बबूल का गोंद, मीठे बदाम की मींगी, चि-
गोजे की मींगी समान भाग लेकर शहत में गोली
नावें और मुख में रक्खें।

✻ अठारहवां अध्याय ✻

पाचक, क्षुधा लगाने वाली, वात और शूल दूर करने
वाली गोली।

हब्बे गूर्गद—(गंधक की गोली) भोजन को
पचाने वाली तथा अजीर्ण, दस्त, वमन और जी
मिचलाने को दूर करने वाली है।

विधि—सोंठ काली मिरच, पीपल, पीला गंधक
लाहोरी नमक सब समान भाग लेकर नीबु के रस
में गोली बनावें।

अन्य—कालीमिर्च, आक के फूल, अजवायन,
अजमोद, लाहोरी लवण समान भाग लेकर अदरक
के रस में गोली बनावें।

अन्य—दालचीनी, सोंठ. कालीमिर्च. काला नमक, सुज्जीनमक, जवाखार समान भाग लेकर गोली बनावें ।

अन्य—अपचता को दूर करे ।

विधि—तितली तीन भाग, कालीमिर्च दो भाग लाहौरि नमक एक भाग लेकर सिरके में गोली बनावें ।

अन्य—भोजन को पचाने वाली है ।

विधि—सुहागा, जवाखार, नौसादर सैंधालवण, हींग, कालीमिर्च समान भाग लेकर सिरके में गोली बनावें ।

अन्य—भोजन को पचानेवाली है और क्षुधा लगाने वाली है ।

विधि—अमलबेद, सोंठ, कालीमिर्च, श्रीफल, पीपलामूल, देशी अजवायन, अजमोद, प्रत्येक, एक तोला, कालानमक लाहौरीनमक, नौ नौ माशे, लेकर नीबू के रस में गोली बनावें ।

हब्ब—यह वायगोला, शूल. और पेट के दर्द को दूर करती है ।

विधि—सोंठ कच्चासुहागा, हींग, सैंधानमक समान भाग लेकर संहजने की छाल के रस में जंगली बेरके बराबर गोली बनावें और आवश्यकता

के समय एक गोली गर्म जल के साथ सेवन करें। हिन्दी में इसका मसला भी है।

सोंठ सुहागा सेंधा कांधी, सहजन के रस गोली बांधी।
चौंसठ वाय चौरासी शूल, फट धन्वन्तर रहे न मूल॥

❋ उन्नीसवां अध्याय ❋

काबिज गोलियों का वर्णन

हब्ब-दस्तों को बंद करे और कब्ज करे।

विधि-हरे माजू माई छे छे माशे, अफीम दो माशे लेकर चने के बराबर गोली बनावें।

अन्य-अनार का छिलका, ततरीक, माजू समान भाग लेकर चने के बराबर गोली बनावें।

अन्य—सुहागा भुना एक भाग, अफीम ४ भाग लेकर यदि शहत में गोली बनावें तो रात्रि के समय अधिक दस्तों के आने को उपयोगी है और यदि नीबू के रस में गोली बनावें तो दिन के दस्तों को हित दायक है।

अन्य-बच्चों को रंग विरंगे दस्त आने को उपयोगी है।

विधि-छोटे अनार की कली एक अदद, चाकसू, रसौत, नरकचूर सफेद जीरा, छिलीहुई हल्दी, नीम के पत्ते, बकायन के पत्ते, बंबूलके पत्ते प्रत्येक दो माशे, अफीम एक माशे।

❀ बीसवां अध्याय ❀

दस्तावर गोलियों का वर्णन

हब्ब—मस्तिष्क को शुद्ध करे और मस्तिष्क के रोगों को गुण दायक है।

विधि—काबली हड़, सनायमकी, बहेड़ा प्रत्येक तीन भाग, गूगल एक भाग गुलाब के फूल, नील के बीज, एलुवा चार चार भाग, उस्सारह रेवन्द, मस्तगी दो दो भाग लेकर बदस्तूर गोलियां बनावें। रातको सोने से पूर्व उचित मात्रा मे खांय।

हब्बे कूक़ाया—यूनानी भाषा में कूक़ शिर को कहते हैं, क्योंकि इस गोली से शिर के मवाद का तनाक़िया होता है और मस्तिष्क के रोग और शिर के अवयवों को हितदायक है इस लिये इसके निर्माण कर्ता हकीम जालीनूस ने इसका यह नाम रक्खा।

विधि—एलुवा, उस्सारह, अफसन्तीन, रूमी मस्तगी प्रत्येक एक तोला, इन्द्रायन का गूदा, निसोत प्रत्येक छे माशे लेकर अजमोद के पानी में गोली बना रक्खें और यदि उस्सारह रेवन्द न मिले तो उससे दूना अफसन्तीन डालें।

हब्बे लाजवर्द—वात के मवाद को दूर करने में [illegible] है और अन्य वातके रोगों को गुणदायक

है और अगर माउलजुब्न में दिया जावे तो अत्युत्तम है ।

विधि—शुद्ध लाजवर्द नौ माशे, गूगल, मुसव्बर तीन तीन माशे, गारीकून आकाश बेल, कंकाली अयारज फेकरा एक एक तोला लेकर अनीसुनके जल में गोली बनावें ।

हब्ब—अजीर्ण व पेट के दर्द को दूर करती है।

विधि—काली मिर्च, पीपल, पीली हड़, बहेड़ा गुलाब के फूल, चीता, सोंफ प्रत्येक छे छे माशे, सनाय नौ माशे, निसोत तीन माशे, कालानमक, सांभर नमक, लाहोरी नमक चार चार माशे ।

हब्ब मुसहिल—सनाय के पत्ते, निसोत, गारी कून, शुद्ध जमाल गोटा समान भाग लेकर नीबूके रस में गोली बनावे ।

अन्य—शुद्ध जमालगोटा, एलुवा, बड़ी हड़, आमला समान भाग लेकर गोली बनावें ।

हब्ब—खनाजीर (कंठ माला) सलअ (रसौली) और गिल्टी के माद्दे को दस्तों द्वारा निकालती है ।

विधि—अयारज फैकरा नौ माशे, गारीकून छे माशे, नौसादर छे माशे, इन्द्रायन का गूदा तीन माशे, लाई भुनी हुई एक तोला, निसोत डेढ़तोला

सुसब्बर चार माशे लेकर गंदना के पानी में गोली बनावें। मात्रा तीन माशे।

इक्कीसवां अध्याय

तिल्ली की सूजन दूर करने वाली गोली

इब्ब–यह गोली तिल्लीकी सूजनको पचातीहै।

विधि–कच्चा सुहागा, अजवायन, कलोंजी, सूआ के बीज, नोसादर, सज्जी समान भाग लेकर घीग्वार के पाठे के लुआब में गोली बनावें।

अथवा—हींग, सुहागा, भुना हुआ एक एक तोले, लेकर चार तोले पुराने गुड के साथ चने के प्रमाण गोली बनावें।

अथवा–बडीहड, चीता, सोंठ सज्जी, सुहागा भुना हुआ काला जीरा और लाहौरी नमक समान भाग लेकर सब के बराबर पुराना गुड मिला कर गोली बनावें।

अथवा–हड, सोंठ, चीता, सुहागा भुना हुआ, सज्जी, कलमी शोरा, बाय बिडंग, सैंधा नमक समान भाग लेकर सिरके में गोली बनावें॥

अथवा–सोंठ, फिलफिलैन, (काली मिर्च पीपल) दारु हल्दी, जवाखार, चीता, कमीला सब भाग लेकर गोली बनावें।

बाईसवां अध्याय

ज्वर और खांसी दूर करने वाली गोली

हब्ब–गोली चौथेया ज्वर को हितदायक है।

विधि– पलासपापड़े के बीज की मिंगी का छिलका दूर करके और करंजा के बीज की मिंगी समान भागलेकर काली मिरच के बराबर गोली बनावे और प्रत्येकदिन प्रातःकाल एक गोली खाया करे।

हब्ब–यह सब प्रकारके ज्वरों को हितदायक है।

विधि–पीपल, करंजकेबीज की मिंगी एक एक तोले, सफेद जीरा, बबूल के ताजा पत्ते, छे छे माशे लेकर चने के बराबर गोली बनावे और एक सुबह एक दोपहर और एक शाम को तीन दिन सेवन करे।

हब्ब–कफ ज्वर और कफके दर्दको उपयोगीहै।

विधि–बडीहड, काली हड, एलुआ, लाई, गूगल इन्द्रायन का गूदा दस दस माशे राई नागरमोथा, काला जीरा, सेंधा नमक मस्तगी दो २ माशे लेकर छोटी २ गोलियां बनावे मात्रा दोमाशे से तीन माशे तक।

हब्बेराफा–नजले केरोगों और कफ ज्वर व वात ज्वरों को उपयोगी है कफज्वर में ज्वर आने के समय से चार घड़ी पहिले खाना चाहिये।

विधि–धतूरा तीन भाग, रेवत चीनी दो भाग,

विधि—केला, चूना, नीला थोता, पीली ह
पपड़िया कत्था, समान भाग लेकर गोली बन
रक्खें। आवश्यकता के समय गो घृत में रग
कर लगावें।

हब्बे बुक़रात—मसाने व मूत्रेन्द्रिय के घाव औ
मूत्र के रुक जाने को दूर करती है।

विधि—खतमी के बीज, खीरा ककड़ी के बीजे
की मींगी, प्रत्येक दो तोला, सफेद लोबान, खर
बूज़े के बीज की मींगी, कुलफे के बीज, पोस्त के
दाने, सफेद कत्था एक एक तोला लेकर ईसपगोल
के लुआब में गोली बनालें।

चौबीसवां अध्याय।

बाजी कर्णव पुष्ट कारक गोलियां।

हब्बे जालीनूस—जो मनुष्य कि अवयव की
सुस्ती या विशेष हस्त क्रिया के कारण कार्य
हीन होगया हो इसके सेवन से फिर बलवान
हो जाता है।

विधि—शकाकुल मिश्री, प्याज़ का बीज, गंदना
का बीज, सालिब मिश्री, तरातेज़क के बीज, रेगमाही
सब समान भाग लेकर चिड़े के शिर का भेजा जो
उस के मस्ती के समय निकाला गया हो एक नग
लेकर शहद में चने के प्रमाण गोली बनावें और

तीन माशे गोली अंगूरी शराब अथवा अंगूर के रस के साथ खांय ।

हब्ब मुवहीवं मुमसिक—अर्थात् वीर्य उत्पन्न करने वाली और स्तम्भन गोली।

विधि-दोनों तोदरी, माई तेजपात, नागरमोथा, केशर, लवंग, सुरंजानमीठा, जायफल, जाविश्री, मस्तगी, अनीसून, पोस्त खशखाश, छोटी इलायची, वंसलोचन, गुलाव के फूल, सफेद चंदन, बालछड अगर, दरूनअकरबी, बूज़ीदान, बबूलका गोंद भुना हुआ, दालचीनी, तुख्मखशखाश, खुरासानीअजवायन, एक एक तोला, सालवमिश्री, सकाकुलमिश्री, दो दो तोला, चूरण करके बादाम के तेल में चिकनाकरके और आधपाव सफेदमिसरी की आधपाव गुलाबजल में चाशनी करके मिलाकर गोली बनावें ।

हब्बे इमसाक—मस्ती लाती है और स्तम्भन करती है ।

विधि—जायफल, कुलीजन, सालिबमिश्री, एक एक तोल, जाविश्री, निराबिसी छै छै माशे, अफीम तीन माशे, लेकर चनेके बराबर गोली बनावें ।

हब्ब मुमसक व मुनश्शत—वाजीकरण व मनको प्रसन्न करने वाली है।

विधि—नेत्रवाला, केशर, अजमोद, दालचीन बालछड़, छै छै माशे, खुराशानी अजवायन, तग कचूर, अकरकरा, लौंग, जावित्री, बबूल का गों तीन तीन माशे, अफीम चार माशे लेकर गुलाब गोली बनावें।

हब्ब असफ़हानी—चित्तको प्रसन्न करती पुष्ट कारक है और स्तम्भन है।

विधि—वर्ग, दरूंजअक्रबी, सालबमिश्री, प्रत्ये क नौ माशे जद्वारखताई तीन माशे लेकर कोक नार के पानी में गोली बनावें।

हब्बे हिन्दी—संसर्ग के समय चित्त को प्रसन्न तथा स्तम्भन करे। एक गोली समय पर सेवन करनी चहिये।

विधि—असपंद जलाकर भूना हुआ डेढ़ तोला पोस्त खशखाश कालेतिल एक एक तोले कूट कर दस तोले पुरानागुड़ मिलाकर सात गोली बनावें।

हब्बे हिन्दी—ताकत को बढ़ावे और स्तम्भनकरे।

विधि—कुचला गायके दूध में मिलाकर छिला हुआ चार तोले, काली मिर्च पीपल दो दो तोले, लेकर झड़ बेरीके बराबर गोली बना कर मैथुन से दो घड़ी पहले खानी चाहिये।

भाग लेकर शहत में चने के बराबर गोली बनाकर मैथुन से पूर्व सेवन करे।

अथवा—चिड़े को मस्ती के समय शिकार करके काटकर उसके पर और झिल्ली दूर करके एक छुआरे में उसकी गुठली के बराबर अफीम भरकर चिड़े के पेट में भरकर गेहूं के आटे से गिलहिकमत करके पकावे और फिर आटा दूर करके सबको पीस कर चने के बराबर गोली बनावे और मैथुन से पूर्व खाय।

पच्चीसवां अध्या।

हलुओं का वर्णन

हलुवा—शरीर को मोटा करताहै पुष्ट कारक है और काम शक्ती उत्पन्न करता है।

विधि—छुआरे गुठली निकले हुए आधसेर, एक सेर गाय के दूध में पकाकर पीसे और गेहूं का मैदा और चने का बेसन पाव पाव सेर सूखा हुआ भूनकर मिलावे और आधसेर गायके घी में सब को भूनकर तीनपाव सफेद शक्कर का किवाम मिलाकर हलुवा पकावे और बदाम की मिंगी, चिलगोजे की मिंगी पिस्ता, अखरोट की मिंगी एक एक छटाक कुचलकर मिलावे।

हलुवाएमुम्सिक—अर्थात् काम शक्ति उत्पन्नकरनेवला

विधि—चने को भैंसकेदूधमेंतीनबार भिगोकर गाय के घी में भूनकर बेसनकरे और उसमें मीठा घी और उचित तोल में मेवा डालकर हलुवा बनावै।

हलुवाएगज़र—गाजर का हलुवा किअत्यन्त पुष्टकारक तबियत को फरहत देने वाला अवयवों को पुष्ट करनेवाला बलदायक है।

विधि—गाज़र को छीलकर उसके भीतर से रेशा निकालकर और पानी निचोड़कर तीन सेर लेकर एक सेर शक्कर के साथ चाशनी करे और पिस्ता, चिलगोजे की मिंगी, अखरोट की मिंगी, मीठे बादाम की मींगी, फिंदक की मींगी, और चिरोंजी प्रत्येक एक छटांक पीसकर आधसेर गायका घी मिलाकर हलुवा पकावै।

अथवा—दो सेर गाज़र साफकी हुई व रेशा निकाला हुआ दो सेर गाय के दूध में पकाकर मए दूध के पीसें और आधसेर गायके घी मे खूब भूनें कि तरी जातीरहै फिर चिरोंजी आधपाव, मीठे बादाम की मींगी, गोला, स्याही दूर करके प्रत्येक एक छटांक बारीक कुचलकर मिलावें और एक सेर सफेद शक्कर की चाशनी डालकर हलुवाबनावें।

अथवा—यह अत्यन्त पुष्ट कारक है।

विधि—गाजर शुद्ध कीहुईदो सेर, शलजम शुद्ध

किया हुआ एक सेर, छुहारे व मुनक्का बीज निकले हुए किशमिश प्रत्येक पाव पाव सेर. गाय के दूध में पकाकर खूब पीसे और तीन पाव गाय के घी में भूनकर एक सेर कंद की चाशनी मिलावे।

हलुवाएमुर्ग–कामदेव को पुष्ट और शरीर को मोटा और कान्ति को बढावे

विधि–मोटे व जवान मुर्ग का मांस तीन सेर, बडी इलायची, दारचीनी, सूखाधनिया प्रत्येक एक तोला लेकर और आधपाव प्याज डालकर एक मुहबंद देगची में खूब पकावे और उसीप्रकार ठंडा करके खूब मलकर छानलें कि खूब गाढ़ा रस निकल आवे फिर सेर भर सफेदशकर मिला करचाशनी करे और मीठे बादाम की मिंगी, चिरोंजी प्रत्येक आधपाव, पिस्ता, चिलगोजे की मिंगी, चार चार तोले बारीक पीसकर मिलावे.

हलुवाएतुख्म मुर्ग–चित्तको प्रसन्न करे और बलको बढ़ावे।

विधि–बीसनग अंडोंकी सफेदी व ज़र्दीको बांस की पतली तीलियोंसे खूब मिलावे फिरडेढ़ पाव घी मिलाकर बहुत मन्दी अग्निपर रक्खे और उन्हीं तीलियों से चलाता रहै कि एक जगह न जमनेपावे जब पुख़ता हो जाय अढाई पाव सफेद शकर की

चाशनी डालकर ऊपरसे दारचीनी, जावित्री, केशर तीन तीन माशे,छोटी इलायची के दाने दो माशे शकाकुल मिश्री एक तोले और सालिब मिश्री एक तोले पीसकर मिलावे ।

हलुवा चोबचीनी—जिस मनुष्यकी उपदंश केपश्चात् कामशक्ति निर्बल होगई हो अथवा बातज मवाद के चिन्ह शेषहों उसको विशेषतःउपयोगी है।

विधि—गेहूंका आटा आध सेर ,पावभर घी और पावभर सफेद तिलकेतेल में,भूनकर बारह तोले चोबचीनी और एक एक तोले, इन्द्रयव , सालब मिश्री, सकाकुलमिश्री, दारचीनी, कुलीजन, नागरमोथा और बहमनसेफद, चूर्ण करके मिलावें और तीनपाव सफेद शकर की चाशनी डाल कर चिलगोजे की मिंगी, पिस्ता बादाम की मिंगी चारचारतोला और चिरोंजी छे तोले खूब कुचल कर मिलावें।

हलुवा—कामशक्ति को बल देताहे वीर्य्यकोउत्पन्न करता है और गाढ़ा करता है।

विधि—चार सेर गाय के दूध में एक सेर शफेद शक्कर डाल कर खोये की तरह पकावे और कुलीजन, सतावर, सकाकुलमिश्री, असगंध प्रत्येक एक तोला छुहारे छे तोले, मखाने की खील दो तोले, ...मकी मिंगी, चिलगोजे की मिंगी, पिस्ता,चि

रोंजी तीन २ तोले, बारीक पीसकर मिलावे मात्रा डेढ़ तोले।

अन्य–पुष्टकारक है तथा गुरदे व मसाने को बलदायक है और वीर्य्यको गाढ़ा और श्वेतप्रमेह को दूर करता है।

विधि–तुरंजवीन खुरासानी, सफेदमिश्री, प्रत्येक नौ तोला, शहत अठारह तोले, लेकर दोसेर गायके दूध में डाल कर गरम करे, व छान व खोयेकी तरह बनाकर दोनों बहमन और कौंचके बीजों की मिंगी एक एक तोले, शकाकुल, सितावरहिन्दी, बादाम की मिंगी, पिस्ता, चिलगोज़ा, तीन २ तोले नरकचूर, जावित्री छे छे माशे और केशर चूर्ण करके मिलावे।

छब्बीसवां अध्याय।

हसू [जिसको हरीरा और तलीभी कहते हैं] कावर्णन

हसू–यह शिरदर्द को जो, मास्तिष्क की निर्बलता के कारण हो दूर करता है

विधि–गेहूं की भुसी एक छटांक पानी में भिगो कर मल कर छान ले और खशखाश के दाने का शीरा, कद्दू के बीज की मिंगीका शीरा, और धनिये का शीरा एक एक तोला, सफेद शकर चार तोले, मिलाकर पकावे और घी से सुगंधित करके

नीम गर्म पीवे।

हसु—यह फेफड़े को स्वच्छ करता है।

विधि—गेहूंकी भुसीका पानी एक छटांक मटर का चून एक तोले, चिलगोजे का शीरा नौ माशे, मुलहटी छिली हुई तीन माशे लेकर तीन तोले सफेद शकर डालकर पकावे।

हसु—रुधिर थूकने को उपयोगी है।

विधि—जौछिले हुये चार तोले, बारतंग छै माशे सफेद खशखाश के बीज एक तोले, उन्नाव बीज निकले हुए दस दाने और सफेद मिश्री चार तोले लेकर विधि अनुसार पकावे।

सत्ताइसवां अध्याय।

हुकना का वर्णन

हुकना—यहपित्तजवकफजसरसामकोहितदायकहै

विधि—गावजुवां के पत्ते, बनफशे के पत्ते, अलसी प्रत्येक एक तोला, मकोय छे माशे, सौंफ छे माशे, औटाकर इसका स्वच्छ जल लेकर एकतोले गुलरोगन मिला कर हुकना करे।

हुकना—वायशूल को उपयोगी है।

विधि—अनीसुन सौंफ, कासनी के बीज, नीलोफरके फूल, गावजवां के पत्ते, बनफसाके पत्ते, प्रत्येक नौ माशे इंसराज, बाबूना के फूल, खतमी

के बीज, छै छै माशे, सनायमक्की के पत्ते डेढ तो-
ला, वेद अंजीरका तेल दो तोले।

हुकना--आतों के घाव और पेचिश को गुण
दायक है।

विधि–मसूर, गुलाबके फूल गुलनार, छिले
ी प्रत्येक एक तोला. दम्मुल अखवैन अक़ाकिया,
कीकर का दूध) बबूल का गोंद प्रत्येक छै माशे।

अन्य–बबूल का गोंद, गुलाब के फूल, अलसी
ख़तमी के बीज, ईसबगोल गुलाबका जीरा एक २
ोले लिहसोडे दस नग, केशर दो माशे उपरोक्त
विधि से सेवन करे।

अठाईसवां अध्याय

हर्फ ख़े

ख़मीरों का वर्णन

ख़मीरा संदलीन–ख़फ़क़ान व दिलकी घबराहट
व बात की जलन को उपयोगी है।

विधि– सफेद चंदन नौ तोले, रक्त चंदन पांच
तोले चूर्ण करके रात दिन आधसेर गुलाब के अर्क़ में
भिगोकर औटावें और ढाईपाव सफेद मिश्री
पीसकर मिलाकर जोश देकर गाढा कर लें।

ख़मीरागावज़ुबां–मस्तिष्क और हृदयको बलदे-
तीहै और ख़फ़क़ान व अचेतन्यतोको गुणदायक है।

विधि—गावज़ुवां के पत्ते दस तोले, बिल्लील पांच तोले, बालछड़, गुलाब के फूल, चंदन दकाबुरादा, प्रत्येक एक तोला तीन भाग और दो भाग गुलाबजल में भिगोकर आटावे चौथाई जलशेष रहै मलकर छानले और तीन सफेद शक्कर मिलाकर चाशनी कर और चार म केशर बारीक घिसकर मिलावे ।

खमीरा आब्रेशम—हकीम मुबारिकउद्दीन बनाया हुआ है यह रीवां के राजा के लि बनाया गया था। यह प्रधान अवयवों को बलदे है और पाचन शक्ति को बढ़ाता है ।

विधि—सब्ज संगेयशब तीन माशे व मोती ती माशे लेकर तीन दिन केवड़े के अर्क में घोटे फिर स्तगी, तुलसी, गुलगावज़ुवां छे छे माशे, आबरे शम कच्चा दो तोले पीसकर आधसेर कंदका,चा शनीमें जो कि एक तोले बर्ग गावज़ुवां और एक तोले बिल्लीलोटन के काढ़े में की हुई हो मिलावे ।

खमीरा बनफशा—यह हकीम इमामअली का बनाया हुआ है। यह छाती के रोग व पहलू और फेफड़े के दर्द को लाभदायक है और पित्त के दोषों को निकालता है ।

ज़बां तीन २ तोले कंद सफेद कुटा हुआ डेढ़पाव लेकर उसमें आधसेर गुलाबका अर्क मिलाकर खूब मीडकर पकावे कि गाढ़ा हो जाय ।

उन्तीसवां अध्याय ।

खमीरा तमाखू के नुसखे ।

प्राचीन पुस्तकों में तमाखू का प्रचार होने का इस प्रकार से वर्णन किया है कि "सिकन्दर जू उल करनीन" की सेना में यात्रा के समय वबाई हवा विशेषता से उत्पन्न हुई । सेना के मनुष्य अधिकता से मरने लगे हकीम लोग इस के दूर करने और चिकित्सा करने के लिये उपस्थित हुए हकीम बुकरात ने कोहिस्तान तमाखू का जंगल देखकर उसका धुआ वबाको दूर करने वाला निश्चित किया और उसका धुआ करने से लश्कर की वबाई हवा दूर होगई हवा की शुद्धि के लिये उसका धुआ करना प्रचलित हुआ इसके पश्चात् प्रत्यक देश में उसका धुआ खैंचने की विविध रीति निर्माणित हुई और एक से एक उत्तम रीति जारी हुई अतएव अजीर्ण के दूर करने व पेट की वात के पचाने, मुख और कण्ठ की रतूबत दूर करने और विविध प्रकार की मस्तिष्क की रतूबतों को निकालने वाली है इस लिये चन्द नुसखे लिखे जाते हैं ॥

खमीरा पानड़ी—गुड़ दो सेर चाशनी करके उस में आध सेर तमाखू सफूफ करके मिलावें और रक्त चन्दन, श्वेत चंदन, अगर, तगर, लौंग. दोनों इलायची, नागर मोथा. बाल छड़, छडीला, नरकचुर प्रत्येक छे छे माशे, पानडी छे तोले चूर्ण करके मिला रक्खें इक्कीस दिन के पश्चात् इस में से थोडा खमीरा तमाखू में जो समान भाग गुड़ के साथ कूटी गई हो मिलावें ।

खमीरा मुश्क—कस्तूरी खालिस दो माशे. जल में घोलकर आधपाव तमाखू के सफूफ में मलें

खिज़ाब- महँदी के शुष्क पत्ते एक भाग, जंगली नील के पत्ते पांच भाग पृथक पृथक सुरमे की सदृश्य बारीक पीसकर दोनों को मिलाकर जल में घोल कर लगावें और ऊपर से अरंडका पत्ता बांधें।

खिजाब—मीठे अनार का छिलका अथवा त्रिफला जोश करके उस के जल में वसमा घोलकर लगावें और बांधें।

खिजाब-संग जराहत व संग मरमर का चूना एक एक भाग और मुरदा संग चौथाई भाग सुरमा सा करके रक्खें आवश्यकता के समय जल में घोल कर लगावें और पान बांधें।

खिजाब—लहचून एक भाग गेहूं का आटा दो भाग जल में घोल कर धूप में रक्खें जब खमीर होजाय लगा कर बांधे।

खिजाब—माजू फल बिना छेद के आधपाव काले तिल के तेल में भूनें जब सुर्ख होजाय कपडे में मलकर तेल दूर करें फिर कालीहड़ सात पैसे भर तांबे का बुरादा छः पैसे भर फिटकरीदो पैसे भर नौसादर एक पैसे भर. सबको चूर्णकरके और त्रिफले का काढ़ा समान भाग मिलाकर लोहे की कढ़ाई में लोहेकी मूस... घोटकर गोली बना

रक्खें। आवश्यकता के समय आमले के जल में घिसकर लगावें और अरण्ड का पत्ता बांधें।

खिजाब—तांबे का बुरादा पांच तोले, कसीस एक तोला, लौंग एक तोला, जवाहड़ पांच तोले, तबाशीर कबोद छः माशे, बडे माजू पाव भर लेकर माजूको उपरोक्त विधि से भून कर उपरोक्त विधि से गोली बनावें और इसी प्रकार लगावें।

खिजाब—माजू हरे आधपाव भून कर तांबे का बुरादा, जवा हड़ एक एक छटांक नीला थोता संग जराहत और लौंग एक एक पैसे भर लेकर विधि अनुसार गोली बनाकर लगावें।

* इकत्तीसवां अध्याय *

हर्फ दाल

प्राचीन व नियत दवाओं का वर्णन॥

दवा उलमिस्क—तीन प्रकार के माली खोलिया अर्थात् मिराकी, अहतराकी और सफरावी और चित्त के उचाट और विक्षिप्तता को दूर करे।

विधि—उत्तम कस्तूरी, तीन माशे, केशर एक माशे, मोती दो माशे, कहरुबा, मूंगे की जड संगय शव, अबरेशम, बंसलोचन प्रत्येक छः छः माशे लेकर गुलाब जल मे पीसें और सूखा धनिया, कुलफा के बीज, खीरा ककडी के बीज, प्रत्येक एक तोला

तथा जलोदर को गुण दायक है।

विधि—बालछड, मस्तगी, केशर, बंसलोचन, दारचीनी, तज,गंधाल सुगंधबाला, मठाकूट,आकाशबेल के बीज, अजमोद, जराबन्द, छोटी इलायची के बीज, ऊदगरकी सब समान भाग और गुलाब के फूल सब औषधियों के समान भाग सफूफ करके तिगुने शहत में मिलावे।

दवाएमुहज़र औजाअ—अर्थात् जोड़ों के सूत्र को दूर करने वाली औषधि जिस समय जोड़ोंमें विशेषता से दर्द हो उस समय सेवन करनी चाहिये और शूल आदिक की पीड़ा में जहां तबियत को नर्म करना इच्छित हो।

विधि—काहु के बीज एक तोला, खुरासानी अजवायन एक तोला, चीता तीन माशे, अफीम तीन माशे ले कर चिलगोजे के समान गोली बनावे और एक गोली रोज खाय।

दवाउलहरमल—कफ और बात की सूजन को हितकारी है इसका गरगरा किया जाता है और कंठपर लेप की जाती है।

विधि--असवंद, मुली के बीज, हींग,बीजा बोल, पपडी खार, नोसादर सब समान भाग पीसकर सब के समान शहत में मिलावें।

दवाउलहलतत—गला बेठजाने को गुण दायकहै।
विधि—काली मिर्च, हींग,राई,केशर समान भाग और शहत सबके समान भाग ।

दवाउलखुतातीफ—कंठ में कफ और बात कीसुजन को गरगरा और लेप करना हित कारी है।
विधि—जावित्री छे माशे,बालछड छे माशे, अजमोद अनीसून, अजवायन, असबंद, दार चीनी बीजा बोल, जुरा वन्द तवील, प्रत्येक नौ नौ माशे गुलाब के फूल, हरा माजु एक एक तोला छोटी समगादड़ की राख डेढ़ तोला, केशर तीन माशे, शहत तीन भाग सब औषधों से ।

दवाउलहलीतत—विषैले जानवरों के काटने और डंक मारने का विष इसके खाने और लगाने से दूर होता है ।
विधि—हींग, तितली,बीजा बोल,कालीमिर्च, समान भाग शहत सबके बराबर ।

दवा उलजालीनूस— जालीनूस का कौल है कि मैंने नहीं देखा कि जिसको बावले कुत्ते ने काटा हो और इस औषधि से लाभ न हुआ हो।
विधि—केकडा जलाहुआ दोभाग. कुन्दर एक भाग. सफेद मिश्री एक भाग सबको चूर्ण करके तीन माशे सुबह व छै माशे शाम को खांय।

तथा जलोदर को गुण दायक है।

विधि—बालछड, मस्तगी, केशर, बंसलोचन, दारचीनी, तज, गंधलि सुगंधबाला, मठाकूट, आकाशबेल के बीज, अजमोद, जराबन्द, छोटी इलायची के बीज, ऊदगरकी सब समान भाग और गुलाब के फूल सब ओषधियों के समान भाग सफूफ करके तिगुने शहत में मिलावे।

दवाएमुहज़र औजाअ—अर्थात् जोड़ों के सूत्र को दूर करने वाली ओषधि जिस समय जोड़ोंमें विशेषता से दर्द हो उस समय सेवन करनी चाहिये और शूल आदिक की पीड़ा में जहां तबियत को नर्म करना इच्छित हो।

विधि—काहु के बीज एक तोला, खुरासानी अजवायन एक तोला, चीता तीन माशे, अर्फीम तीन माशे ले कर चिलगोजे के समान गोली बनावे और एक गोली रोज खाय।

दवाउलहरमल—कफ और बात की सूजन को हितकारी है इसका गरगरा किया जाता है और कंठपर लेप की जाती है।

विधि—असबंद, मूली के बीज, हींग, बीजा बोल, पपड़ी खार, नौसादर सब समान भाग पीसकर सब के समान शहत में मिलावें।

दवाउलकहलतत—गला बैठजाने को गुण दायकहै।
विधि—काली मिर्च, हींग,राई,केशर समान भाग और शहत सबके समान भाग ।

दवाउलखुतातीफ—कंठ में कफ और बात कीसुजन को गरगरा और लेप करना हित कारी है।
विधि—जावित्री छै माशे,बालछड छै माशे, अजमोद अनीसून, अजवायन, असबंद, दार चीनी बीजा बोल, जरा वन्द तबील, प्रत्येक नौ नौ माशे गुलाब के फूल, हरा माजू एक एक तोला छोटी चमगादड़ की राख डेढ़ तोला, केशर तीन माशे, शहत तीन भाग सब औषधों से ।

दवाउलहलीतत—विषैले जानवरों के काटने और डंक मारने का बिष इसके खाने और लगाने से दूर होता है ।
विधि—हींग, तितली,बीजा बोल,कालीमिर्च, समान भाग शहत सबके बराबर ।

दवा उलजालीनूस— जालीनूस का कौल है कि मैंने नहीं देखा कि जिसको बावले कुत्ते ने काटा हो और इस औषधि से लाभ न हुआ हो ।
विधि—केकडा जलाहुआ दोभाग, कुन्दर एक भाग, सफेद मिश्री एक भाग सबको चूर्ण करके तीन माशे सुबह व छै माशे शाम को खांय ।

होने के पश्चात् के रोगों को हित दायक हैं।

विधि—मैदा सोंठ तीन छटांक चूर्ण करके स
रेस गाय के दूध में पकावें जब गाढा होजाय त
पाव सेर गाय के घी में भूनकर तीनपाव सफे
कशर की चाशनी मिलावें और नागर मोथ
काला ज़ीरा, सफेद ज़ीरा, धनिया सोंफ, सोये
बीज, नर कचूर, सुगंधबाला, लौंग जावित्री स
फेद चंदन, पठानी लोध, हाऊबेर, तेजिया अग
पीपल, पीपरा मूड़, काली मिर्च एक एक तोले
चूर्ण कर के मिलावें यदि रोगी को तकविय
देनी इच्छित हो तो उचित मेवा और सोने चां
के वर्क जितने आवश्यक हो मिलावें।

दवा उलकंबील—सब प्रकार के पेट के कीडोंके
मारता है।

विधि—नीम के पत्ते, वायविडंग, कबीला, स
मान भाग चूर्णकरके उसमें आवश्यकतानुसार शहद
मिलाकर खांय।

दवाउलदराज—इसको हकीम गैलानी ने संग्र-
हणी के वास्ते गुण दायक लिखा है।

विधि—तीतर को मारकर उसकी आलायश
निकाल कर उसके पेटमें सामनभाग
अनारदाना चूर्ण करके भरदे और

हिकमत करके जलावे कि कोयला होजाय और उस कोयले के समान भाग जली हुई गेहूंकी रोटी मिलाकर चूर्ण करे औरउचित मात्रा में खिलावे।

तीसवां अध्याय

दरवहरा का वर्णन

दरवहरा चीग्वार–कफ़ बात और शीत के रोगों को और यकृत के रोग व जलोदर को दूरकरता है और नशा लाता है।

विधि–गुण दससेर, बबूलके पेडकी भीतर की छाल ढाईसेर, बेरके पेड की भीतर की छाल एक सेर, घीग्वार का गूदा तीन पाव, आमला पावसेर नेत्रबाला, तज, उस्तखुद्दूस बिल्लीलोटन, दालची-नी, सौंफ बालछड,चोबचीनी, नागकेशर, कबाब-चीनी,खुरासानी अजवायन पांच पांच तोले तुरं-के ताजा पत्ते,नारंगी के ताजा पत्ते छै छे तोले लेकर उसमें एक मनजल डालकर उपरोक्त विधि अनुसार बनालें।

दरबहरा बलादर–कामशक्ति को प्रबल करता है नशा लाताहै, शीतके रोगोंको और पांवकी उंगलीयों के जोडों के दर्द को और गठिया को हितहै

विधि–गुड़पांच सेर, भिलाया कुटा हुआ पाव भर, कालीहड़, जवाहड, काली मिर्च, पीपल, दा-

पानी जल जाय तेल को काम में लावै ।

रोगन लबूब-अंगों के खिचजाने, मालीखोलिया, और नींद न आने को दूर करता है इसको लगाना खाना और नाकमें टपकाना चाहिये ।

विधि-फिदक की मिंगी, पिस्ता, मीठे बादाम की मिंगी, सफेद तिल, चिलगोज़े की मिंगी, मीठे कद्दू के बीज की मिंगी, अखरोट की मिंगी, सब समान भाग लेकर बादाम के तेल की रीति अनुसार तेल बनावै ।

रोगन बलादर-पठ्ठों के खिंचने, फालेज, लकवा और अन्य रोगोंको दूरकरताहैओर पचाताहै।

विधि-जटामांसी, जायफल, काली मिर्च, तज, चीता, पीपरामूल, आंबाहल्दी, पीपल, मैनफल, भिलावा, सौंफ कडवाकूट, नरकचूर प्रत्येक एक तोला, जो कुटकरके तीन पाव जलमें चार पहरतक भिगो कर रक्खे फिर आधसेर गाय का दूध और ढाई पाव सफेद तिलका तेल मिलाकर पकावै जब पानी और दूध जल जाय तेलको साफ करले ।

रोगन चोबचीनी-पक्षाघात, सर्वांगवात और कपनबाय, गठिया का दर्द जोड़ोंका दर्द और उपदंश के कारण उत्पन्न दर्द और अन्य कफज रोगों को हितकारी है ।

विधि–चोबचीनी बीस तोले. सुरंजान कडवा तितली, प्रत्येक पांच तोले; चिरायता, छड़ीला, जटामांसी, तेजपात दौनामरुवा, जरावन्द तवील, अकरकरा प्रत्येक तीन तोले, कडवा कूट दस तोले, सबको जोकुट करके दो रात दिन ५ सेर नदी के जल में भिगोवे और सरसों का तेल, गुलरोगन बाबूना का तेल प्रत्येक चौबीस तोले. भिलावे का तेल, चमेली का तेल, सोयेकातेल, प्रत्येक डेढ़पाव मिलाकर पकावे जब पानी जल जाय तेल साफ करले यदि लगानेके समय थोडी मोमियाई अथवा जुदबेदस्तर मिलाकर लगावे तो और भी बलवान हो जायगा।

रोगन हुरमुल–राशा, तशन्नुज हाथ पैर का भारीपन, वात व कफकेदर्द जो किसी अवयव अथवा समस्त शरीर में हो, सबको दूर करता है।

विधि–हुरमुल सोख्तनी (असवंदजलाहुआ) बारहतोले, सोंठ तीन तोले, लेकरपावभरपानी में चार पहर भिगोकर आध सेर काले तिलका तेल मिला कर पकावें जब औषधि जल जाय तेल को छानलें. और पांच नग जायफल सुरमा सा पीसकर तेल में मिलावें और लगाने के समय ठंढे जलसे शरीर को रक्षित रक्खें।

पानी जल जाय तेल को काम में लावै।

रोगन लबूब-अंगों के खिचजाने, मालीखोलिया, और नींद न आने को दूर करता है इसको लगाना खाना और नाकमें टपकाना चाहिये।

विधि-फिंदक की मिंगी, पिस्ता, मीठे बादाम की मिंगी, सफेद तिल, चिलगोज़े की मिंगी, मीठे कदू के बीज की मिंगी, अखरोट की मिंगी, सब समान भाग लेकर बादाम के तेल की रीति अनुसार तेल बनावे।

रोगन बलादुर-पट्ठों के खिचने, फालिज, लकवा और अन्य रोगोंको दूरकरताहैऔर पचाताहै।

विधि-जटामांसी, जायफल, काली मिर्च, तज, चीता, पीपरामूल, आबाहल्दी, पीपल, मैनफल, भिलावा, सोंफ कडवाकूट, नरकचूर प्रत्येक एक तोला, जो कुटकरके तीन पाव जलमें चार पहरतक भिगो कर रक्खे फिर आधसेर गाय का दूध और ढाई पाव सफेद तिलका तेल मिलाकर पकावे जब पानी और दूध जल जाय तेलको साफ करले।

रोगन चोबचीनी-पक्षाघात, सर्वांगबात और कपनवाय, गाठिया का दर्द जोड़ोका दर्द और उपदंश के कारण उत्पन्न दर्द और अन्य कफज रोगों को हितकारी है।

विधि—चोबचीनी बीस तोले. सूरंजान कडवा तितली, प्रत्येक पांच तोले; चिरायता, छडीला, जटामांसी, तेजपात दौनामरुवा, जराबन्द तवील, अकरकरा प्रत्येक तीन तोले, कडवा कूट दस तोले, सबको जौकुट करके दो रात दिन ५ सेर नदी के जल में भिगोवे और सरसों का तेल, गुलरोगन बाबूना का तेल प्रत्येक चौबीस तोले. मिलावे का तेल, चेमली का तेल, सोयेकातेल, प्रत्येक डेढ़पाव मिलाकर पकावे जब पानी जल जाय तेल साफ करले यदि लगानेके समय थोडी मोमियाई अथवा जुंदवेदस्तर मिलाकर लगावे तो और भी बलवान हो जायगा।

रोगन इुरसुल–राशा, तशन्नुज हाथ पैर का भारीपन, वात व कफकादर्द जोकिसी अवयव अथवा समस्त शरीर में हो, सबको दूर करता है।

विधि—इुरसुल सोख़तनी (असबंदजलाहुआ) बारहतोले, सोंठ तीन तोले, लेकरपावभरपानी मेंचार पहर भिगोकर आध सेर काले तिलका तेल मिला कर पकावें जब औषधि जल जाय तेल को छानलें और पांच नग जायफल सुरमा सा पीसकर तेल में मिलावें और लगाने के समय ठंढे जलसे शरीर को रक्षित रक्खे।

विधि—इन्द्रायन का गूदा एक तोले, एलुआ छे माशे, पानी में पीसकर बेद अजीर का तेल छे तोले में पकाकर लगावें।

रोगन—पेट के दर्द को दूर करता है।

विधि—सहंजने के पेड की छाल, सम्भालू के ताजा पत्ते, आक के पत्ते चार चार तोले लेकर कुचल कर पानी निचोड लें। और उस जल में छे तोले सरसों का तेल डालकर पकावें जब पानी जल जाय तब काम में लावें।

छत्तीसवां अध्याय ॥

चोट लगजाने ऊंचे से गिरजाने और घावों के अच्छा करने के तेलो का वर्णन।

रोगन देवदार—यह प्राचीन क्रियाओं में से है और मोतबिर पुस्तकों से लिया गया है। चोट लगजाने और ऊंचे से गिरजाने की सूजन और दर्द को दूर करने व चोट के घाव से मैल व खराब मांस को दूर करने व उत्तम मांस जमाने तथा घाव के भरने में अकसीर है। इसका लेप करना अथवा टपकाना अथवा इसमें रुई या कपडा भिगो कर पीडित स्थान पर रखना चाहिये।

विधि—आंवा हल्दी देवदार की लकडी, मुलदार हल्दी दो दो तोले खूब वारीक पीसे

और दोतोले भाडका काजल मिला कर थोडी देर तक घोटें और तीन पाव जल में सब को मिला कर पकावें जब आधा पानी जल जाय तब डेढ पाव तिल का तेल मिला कर बदस्तूर मंदी आंच पर पकावें जब सब पानी जल जाय और तेल काला न होने पावे अग्नि मे पृथक कर लें। हकीम अली गैलानी ने अपने तजरुबात में लिखा है कि इस तेल में यदि बहरोजा मिलाकर लगांव यो गांठिया के दर्द और अन्य पुराने दर्दों को दूर करता है और यदि शीतला के फफोले घाव पड़ गए हों और सड़ गए हों तो थोड कि-र उसतेल में हल करके लगांवव

रोगन शेखसनआन—समस्त प्रकार के घाव सुर और बवासीर को दूर करता है सर्दी की सुजन को तहलील करता है अवयवों को चल ता है। इसके खाने से अतीसार रोग दूर हो जाता है।

विधि—निरबिसी, सफेद कत्था, जायफल, सफेदराल, दारुहल्दी, झाऊकी लकडी, देवदार की लकड़ी, मुलहटी की जड, बहरोजा, हड़, बहेड़ा, आमला, आबनूस, बबूल के पेड़ की छाल, प्रत्येक दो तोले कंकोल मिर्च, सुपारी, चोबचीनी, मेथी

मकड़ी का जाला. छप्पर का धूआं. आंबा हल्दी एक एक तोला ताजा महँदी के पत्ते, पान, ककड़ी डेढ़ २ तोला, सबको जौ कुटकरके तीन सेर पानी में पकावे जब चौथाई जलशेष रहे साफकरले और मोमियाई, उश्क, शिंगरफ, हरताल सुर्ख, मुर्दासंग सफेद राल छे छे माशे सफूफ करके मिलावे और ढाई पाव सफेद तिलका तेल मिलाकर पकावे जब पानी बाकी नरहे उतार कर रक्खे।

रोगन—ऊंचे से गिरजाने और चोटलगजाने और उसके कारण घाव व सूजन हो जानेको हितदायक है।

विधि—मुलहटी की जड़, देवदार, बबूलके पेड की छाल, आंबाहल्दी, दारहल्दी, दो २ तोला, जोकुट करके आधसेर जल में एक रात भिगोवें और सुबहको डेढ़पाव अलसी का तेल मिलाकर पकावें जबपानीजलजाय तेलसाफकरके काममेंलावें।

सैंतीसवां अध्याय

मूत्रेन्द्रिय के रोगों को उपयोगी तैलों का वर्णन

रोगन मोरचगान—मूत्रेन्द्रिय को कड़ा और मोटा और ऊंचा करता है काम शक्ति को प्रबल करता है चित्त को प्रसन्न करता है यद्यपि वह निराश भी हो गया हो।

विधि-चमेली का तेल आध पाव लेकर एक शीशीमें भरकर उसमें कब्रिस्तानके सो बड़े बड़े चेटें डालकर चालीस दिन धूपमें रक्खें उसके पश्चात् मूत्रेन्द्रिय को खुजाकर उसपर लगावें।

रोगन खिरक-वीर्य को गाढ़ा और काम शक्ति को तेज़ और गुर्दे व मसाने की शुद्धि करता है।

विधि-ताजा बड़े गोखरू कुचलकर उसमें से डेढ़ पाव जल निकालें और डेढ़पाव गायका दूध और पाव भर सफेद तिलका तेल और एक छटांक सोंठका सफूफ मिलाकर मंदी अग्नि पर पकावें जब दूध व पानी जल जाय तब तेल को साफकरलें और उचित मात्रा में खाया करें।

रोगन-हकीमइमामअली का ईजाद किया हुआ है। इसको मूत्रेन्द्रिय पर लगाना कामदेव को बढाना है रगों की सुस्ती को दूर करता है अवयव की तरी को और इन्द्री से पसीना निकलने को विशेष कर लाभ दायक है

विधि-सफ़ेद घुंघची, सफेद कनेर की जड़का छिलका, असगंध नागोरी, जुंज, दालचीनी, अकरकरा, तालमखाना, कटंगन के बीज, इन्द्रायन, असगंद, कलोंजी, प्याज के बीज, बिनोले की मींगी, पाकलंगनी घोड़ेका सुम तराशा हुआ, छे छे माशे

चिरौंजी, चिलगोज़ा, ऊँटकटेरेकी -जड़ देवदार, ऊदगरकी, काली मूसली, एक एक तोले, जायफल लौंग, रसकपूर धतूरेके बीज, तीन २माशे, अफीम दो माशे, सब को कूटकर डेढ़ छटांक भेड़ के घीमें अथवा गाय के घी में मलकर दश नग मुर्गे की जर्दी में मिलाकर चार पहर शीशे में रखकर उसके पश्चात् विधि अनुसार अण्डे का तेल निकाले और काम में लावे।

अड़तीसवां अध्याय

बालों के तैलों का वर्णन

रोगन—बालों को लंबा और काला करता है और गिरने से बचाता है।

विधि—हड़, बहेड़ा, आमला, दो २ तोले हंसराज ऊदखाम एक २तोले, बेर के पत्ते, मीठे अनार के पत्ते, महंदी के पत्ते, बबूलके पत्ते प्रत्येक ताजा तीन तीन तोले लेकर एक सेर जल में औटावें जब तिहा ई रहे साफ करलें फिर उस जल में चार तोले जौ कुट सुपारी, रूमी मस्तगी एक तोले, सफेद बंसलो चन छे माशे, सफेद तिल का तेल पावभर मिलाक र पकावें जब पानी जल जाय शीशी में भर का रख छोड़े।

रोगन बैजा—यहदोसप्ताहमें बालोंको जमाता है

विधि—एक नग अधपके खरबूज़े में छिद्र करके उसके बीज निकाल डालें और दश नग मुर्गी के अण्डे की ज़र्दी, एक तोले लोहेकाबुरादा, दो तोले बेर के ताजा पत्ते, और चार तोले सरसों का तेल उस में भरकर उसका मुंह मजबूत बन्द करके गिल हिकमत करके चार पहर गरम भाड़ में रखकर सुबह को मट्टी प्रथक करके और रगड़ कर मरहम सदृश बनाकर लगावें।

रोग़न—बालोंको लम्बा और खूबसूरत करताहै।

विधि—हड़, बहेड़ा, आमला, नागरमोथा, जटामांसी, छड़ीला एक २ तोला गुलाब के फूल, नरकचूर, कपूरकचरी, छै २ माशे, सबको जोकुट करके सफेद तिलका तेल डेढ़ पाव मिलाकर शीशे में रक्खे और थोड़े दिन के पश्चात् काम में लावे।

रोग़न—यह बालों को फटने व गिरने व बालों की जड़ों में खुजली होजाने को दूर करता है।

विधि—आमला, मेंहदी के ताजा पत्ते, दो २ तोले लेकर पाव भर जलमें जोश करें जब चौथाई भाग जल शेष रहे मलकर छानले और पाव भर सफेद तिलका तेल मिलाकर पकावे-जब पानी जल जाय तेल साफ करके उसमें सेवती के फूल छड़ीला, गुलाब के फूल, एक २ तोला मिलाकर धूपमें

रले और काम में लावे।

उन्तालीसवां अध्याय

पिचकारीका वर्णन जो स्त्री और पुरुषों के मूत्रस्थान में लगाई जातीहै

ज़रदक़-यह सोज़ाक के नये व पुराने घावको दूर करती है।

विधि-फिटकरी एक तोले, नीलाथोता छे माशे दोनों को भूनकर एक सेर जलमें घोलकर शीशे में रक्खें और प्रत्येक दिन पांच चार बार काम में लावें और यदि उचित समझें तो फिटकरी व नीले थोते को न भूनें उनको जलमें पकाकर काम में लावें।

अन्य ज़रदक़-यह मसाने और इन्द्री के घावों को उपयोगी है।

विधि- बबूल का गोंद, कतीरा, निशास्ता, चांदी की धरिया एकरमाशे, खीर ककड़ी के बीज की मींगी, बंग दो दो माशे, शीराखिस्त छे माशे, के कर लंबी तिरखूंटी गोली बनाकर रक्खें आवश्यकता के समय कन्यावती स्त्रीके दूधमें अथवा बकरी के दूध में घिस कर मूत्र नली में टपकावें।

अन्य ज़रदक़-सोज़ाक के घाव दूर करने में अद्वितीय है।

विधि-काशागरी सफ़ेदा कुन्दर फिटकिरी भुनी हुई

बबूलकागोंद, निशास्ता, दम्मुलअखवैन समानभाग लेकर नीमके ताजे पत्तों के रस में गोली बनावें और आवश्यकता के समय पुत्रवती स्त्रीके दूध अथवा गधी या बकरी के दूध में घिसकर लगावें।

अन्य ज़रदक-सोज़ाक के घावको दूरकरताहै

विधि-काशगारी सफेदा, गिले अरमनी एक एक तोला, अफीम नौ माशे, नीलाथोता छे माशे सुरमा सा करके दूध अथवा पानी में घिस कर पांच चार बार रोज़ लगावे।

अन्य ज़रदक-सोज़ाक क दूरकरने में हितकारीहै

विधि-सफेद फिटकरी, गेहूं का निशास्ता, बंग समान भाग लेकर खरल करके बकरीके दूध में मिलाकर काम में लावें।

अथवा-काली हड़, बड़ीहड, आमला, समान भाग लेकर जोकुट करके जलमें भिगोवें और फिर उसको यूप अथवा क्काथ करके और साफ कर के काम में लावें।

चालीसवां अध्याय

हर्फ़ सीन

सऊत का वर्णन

सऊत-सरसाम और गरमी की मस्तिष्क पीड़ा को उपयोगी है।

कि जलने के करीब होजाय फिर उसमें समान भा
ग सफेद कत्था और सोंठ मिलाकर काममें लावें।

मंजन–दर्द और दांत के हिलने को दूर करताहै

विधि–मस्तगी, माजू, सुपारी जली हुई, प्रत्येक छः माशे, चोबचीनी पपड़िया कत्था, प्रत्येक एक तोला; लोहे का मैल दो तोला, हरा थोथा भुना हुआ तीन माशे. लेकर इनको पीस कर मंजन करें और मंजन करने के पश्चात् तीन बार धुले हुए तिली के तेल से कुल्ला करके फिर चंद बार गरम पानी से कुल्लाकरें और पान खाकर पीक थूकदें।

मंजन– दांतो के दर्द, कमज़ोरी, हिलने, दांतों से रुधिरनिकलने और मसूड़े के घावको दूरकरताहै।

विधि–संगजराहत, माजू, गुलनार, फिटकरी भुनी हुई, सफेद कत्था, सफेद वंसलोचन, हीराकसीस नागरमोथा, अकरकरा, रेवन्द चीनी जली हुई, खरिया समान भाग ले कर मंजन बनावें।

मंजन–दांतों को मजबूत करे और उनके रंग कोनिखारे और मुख को सुगन्धित करे।

विधि–माजू, सोंठ, समुद्र फेन, पीपल, छोटीइला-यची के बीज, प्रत्येक दो माशे, सांभर नमक भुना हुआ दस माशे, अगर जला हुआ पांच माशे, पत्र जले हुए पांच माशे।

मंजन—मुखको सुगंधित करे और दांतों को मजबूत करे और निखारे और मसूड़ों के मांसको जमावे और मजबूत करे।

विधि—पीली कौडी पांच नग जली हुई. समुद्र फैन. सांभर लवण. लाहोरी लवण. सज्जी तीन तीन माशे जो जले हुए, अगर जली हुई शकरकेरा कबाब चीनी. पांच २ माशे;लौंग दो माशे।

मंजन—दांतों को मजबूत करनेमें अनुपम है।

विधि—हड़, बहेड़ा, आमला. सोंठ. काली मि. र्च. पीपल. हरेमाजूफल नीला थोता. पतंग. लाहोरी नमक. काला नमक,सांभर. नमक सब समान भागलेकर मंजनबनावे जैसा कि हिन्दीवालेने लिखाहै

दो०—त्रिफला, त्रिकुटा, तूतिया, तीनों नोन, पतंग।
दांत बज्रहों जात है, माजूफल के संग॥

मंजन—यह अनेक बार का अजमाया हुआहै दांतो के दर्द और हिलने को दूर करता है।

विधि—कुचले का कोयला, अमलतास के बीजों का कोयला.प्रत्येक.एक तोला काली मिरच,लाहोरी नमक प्रत्येक छे छे माशे लेकर पीसकर मंजन करे और मंजनके पश्चात् कुल्ला न करे केवल पान का बीड़ा खाले बहुत फायदा होगा।

बयालीसवां अध्याय

मंजन मिस्सी की किस्म के

मिस्सी-दांत और ममूड़ों को मज़बूत
खुश रंग करे।

विधि-लोहचुन आठ तोले, हरेमाजू चार त
नीला थोता भुना हुआ एक तोला, सफेद क
दो तोले, छोटी इलायची के बीज छः माशे,
कर काम में लावें।

अथवा-लोहचून पावभर, माजू बिना छे
आध पाव, इलायची छोटी मए छिलका, नी
थोता, लाल कत्था, प्रत्येक एक तोला, कमीम
गी, हीरा कसीस, सोना माखी प्रत्येक चारमा

अथवा-तांबेका बुरादा, अनार का छिल
एक२ छटांक,हरेमाजूआधी छटांक फिटकरी १तो

अन्य मिस्सी-दांतों को मजबूत करती है।

विधि-मस्तगी, मांई, हीरा कसीस, माजूफ
बड़ीहड़ का छिलका, फिटकरी भुनी हुई, नीला
ता भुना हुआ, मौलसरी की छाल समान भ
लेकर मंजन करके मुख से लार टपकावें और
पान खाकर लार को दूरकरें।

तेतालीसवां अध्याय

सिकंजबीनका वर्णन

सिकंजबीन सादा-पित्त की प्रावल्यता, य
की गर्मी, तृषा, अचेतनता, और मुखके कड़

पन को दूर करती है नसों की ग्रन्थि खोलती है और मूत्रको प्रवाहित करती है।

विधि—स्वच्छ सिरका पाव सेर, सफेद शकर ढाई पाव, अग्निपर रख कर साफ करलें और चाशनी बनावें। यदि इच्छित हो कि विशेष बलवान् हो तो सिरका अधिक करें।

द्रष्टव्य—जिस शरबत के नुसखे में सिरका मिलाया जाता है उसका नाम सिकंजबीन हो जाता है। जैसा शरबत बजूरी बा, रिद में जब सिरका मिलजाता है तो उसका नाम सिकंजबीन बजूरी बारिद होजाता है और उस शरबत में सिकंजबीन सादा के गुण विशेष हो जाते हैं इसी प्रकार सिकंजबीन बजूरी हार, सिकंजबीन बजूरी मोतदिल, और सिकंजबीन दीनारी वगैरः है।

सिकंजबीन अनसली—यकृत और प्लीहा की कठोरता और नसोंकी गांठ, खांसी, स्वास और बुरे दोषों को दूर करती है।

विधि—जंगलीप्याज आधा रतल, बांस की खपच के टुकडे पांच रतल, लेकर सिरके में जोश करें और मल छानकर साडे सात रतल सफेद शकर मिलाकर चाशनी करें और यदि विशेष बलदायक बनाना इच्छित हो तो जंगली प्याज के आठवें हिस्से के हिसाब से हंसराज, और जूफा जंगली प्याज के साथ जोश करें और यदि सिरका कमकरें तो पानी मिलावें ताकि दवा खूब पकजाय।

सिकंजबीन रम्मानी— ऐसे ज्वरों को जिनमें कोई दोष लगगया हो और यकृत और आमाशय की गर्मी को दूर करतीहै और प्यास को बुझाती है।

बिधि—सिरका. खट्टे अनार का पानी, मीठे अनार का पानी, प्रत्येक पावसेर, गायका दूध आध सेर. खटाई से फाड़ कर जितना उसका जल निकले, जरिश्क एक छटांक लेकर सबको मिलाकर जोश करें जब अर्द्ध भाग जल रहै साफ करके तीन पाव शकर मिलाकर चाशनी करें।

सिकंजबीन बरदी—उदर की गर्मी और अजीर्ण को दूर करती है।

बिधि— गुलकन्द आफताबी पावसेर. पावसेर गुलाब (केअर्कमें) पीसकर उसमें पावभर सिरका मिलाकर साफ करके चाशनी करें।

सिकंजबीन अफतीमूनी—माली खोलिया, व्यअता और मृगीरोग को मवाद निकाल कर दूर करती है।

बिधि—आकाश बेल, खकाली, सफेद निसोत, गावजुबां के पत्ते, हंसराज. कासनी के बीज, तुलसी, बिल्ली लोटन छे छे माशे, गुलकन्द आफताबी पांच तोले आधसेर स्वच्छ सिरके और पावभर पानी में चार महर तक भिगोकर औटावें फिर साफ करके आध सेर शकर के साथ किवाम करें

चौवालीसवां अध्याय

सफूफ का वर्णन

सफूफ-जिनून, खफकान, पुरानेज्वर और ऐ. से सिरके दर्द को जो आमाशय से अवखरे उठने के कारण हो, दूर करता है।

विधि- सूखा धानियां दो तोले, गावजवां के पत्ते, आमले, मुनक्का, गुलाब के फूल सफेद चंदन प्रत्येक एक तोला, लेकर पीस छानकर आधपाव सफेद शक्कर में मिलावें।

अथवा-गावजवां के फूल, नीलोफर के फूल, प्रत्येक ६ माशे, सफेद चँदन तीन माशे, रक्त चँदन तीन माशे सूखा धनियां एक तोले, सफेद शक्कर तीन तोले।

अथवा-गुलाब के फूल, सफेद वंसलोचन, करपुर तीन तीन माशे, सूखा धानियां ६ माशे, जो का निशास्ता दो तोले सफेद मिश्री समान भाग।

अथवा-सेवती के फूल एक तोला, गुलाब के फूल एक तोला, गावजवां के फूल ६ माशे, गुलबनफशा ६ माशे, सफेद चँदन नौ माशे, आबरेशम कच्चा नौ माशे, सफेद मिश्री सब औषधियों के समान भाग।

सफूफ–खून थूकने को दूरकरता है।

विधि–अंजवार की जड़, दम्मुल अखवैन, निशास्ता प्रत्येक छे माशे, कुलफे के बीज भुने हुए, बबूल का गोंद, कहरुवा काहू के बीज, कीकर का दुध पोस्त के दाने, कतीरा, मुलहटी का सत, गिले अरमनी, सफेद चँदन चार चार माशे, कपूर तीन माशे केकड़ा जला हुआ नो माशे, सफेद मिश्री सब ओषधियों का अर्द्ध भाग।

अथवा–सेलर बडी, तीन माशे, पोस्त के दाने भुने हुए दम्मुल अखवेन, कहरुवा, अंजबार की जड़ प्रत्येक पांच माशे, निशास्ता नो माशे, सफेद मिश्री सब के समान भाग।

सफूफ–कफकी खांसी और श्वास की तंगी को गुण करता है।

विधि–मुलहटी, पीपल, अकरकरा, बंसलोचन समान भाग पीसकर सबके समान भाग लाल बूरा मिलाकर सोते समय उचित मात्रामें खाकर ऊपर से गर्म जल पीकर सो रहे।

अथवा–देशी अजवायन, खारी नमक, दो २ तोला, पानी में पीस कर २५ नग मदार (आक) के पत्तों पर जो पीले पड़कर गिरे हों लगाकर तह सुलावें और एक कुल्हिया में रखकर गिल

हिकमत करके जलावे और उसकी राख थोड़ी २ मुहमें रक्खे। बहुत शीघ्र आराम होगा।

❋ सैंतालीसवां अध्याय ❋

❋ सफूफ का वर्णन ❋

आमाशय को बलदायक, पाचक, वात, वायगोला और वायशूल को दूर करने वाले चूर्णों का वर्णन॥

सफूफ—आमाशय को बलदायक है।

विधि—कबाबचीनी, जटामासी, नरकचूर, रूमी मस्तगी, मीठे अनार के दाने, बिजौरेका छिलका पांच२ माशे, लौंग, जावित्री तीन २ माशे, कच्चा अगर एक तोले, सफेद शक्कर सबके समान भाग।

अन्य—आमाशय के बिगड़ जाने को, जलन को, और अचेतनता को दूर करता है भोजन को पचाता है मुखकी दुर्गन्ध को दूर करता है और हृदय व मस्तिष्क को बल देता है।

विधि—तज, पत्रज, अगर, तगर, मस्तगी, काबलीहड़, तुकमी, काला जीरा, दारचीनी, छड़ीला, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, कालीमिर्चे पीपल, सोंठ, लौंग, जायफल, मीठा अनारदाना सब समान भाग लेकर सब औषधों के बराबर मिश्री मिलावें।

सफूफ बजूर-आमाशय को बलकारक है और
वायु को पचावे।

विधि-काला जीरा, तज, अजवायन, अजमोद, बड़ी इलायची के बीज, प्रत्येक छै माशे, लौंग दो माशे, सोंठ, पीपल पांच पांच माशे; सफेद शकर डेढ़ भाग सब औषधों को लेकर चूर्ण करें।

सफूफ-क्षुधा लगाने में अद्वितीय है।

विधि-सांभर लवण आध पाव लेकर फोड़कर किसी वर्तन में रखकर आग पर रक्खें और उस में सिरका छिड़कें और एक लकड़ी से हिलावें कि आधपाव सिरका उसमें सोख जाय तब उतार लें और भुना धनियां, ज़रिश्क, अनारदाना भुनाहुआ तंतरीक एक एक तोले मिलाकर चूर्ण करलें।

अथवा-सूखा पोदीना एक तोले, कालीमिर्च छे माशे, अजवायन, सोंठ, वायविड़ंग, लौंग तीन माशे लाहोरी नमक नौ माशे।

सफूफ हिन्दी-क्षुधा लगाने में सर्वोत्तम है। और ...स्तानी वैद्यों का प्रचलित किया हुआ है।

...नकछिकनी, मूली, पोदीना, कटाई, आक क... निकालकर समान भाग मिलाकर अजव... ...समें चिकनी करके चूर्ण करें
।, ...
त्तों प
सुखाव

सफूफ नमक सुलेमानी—भोजन के पचाने में श्रेष्ठ है और यदि अधिक मात्रा में मुर्गी के अण्डे में मिलाकर खाय तो कामदेव को बलवान करताहै।

विधि—लाहौरी नमक, सांभर, काला नमक, नौसादर, प्रत्येक सात तोले, अजमोद, अजवायन काली मिर्च, सोंठ, लोंग, काला जीरा, जायफल, जावित्री, एक एक तोला, जौकुट कर आधसेर सिरके में जोशदें कि सब एक जात और शुष्क हो जाय तब सबको चूर्ण करें।

सफूफ—आमाशय की तरी को दूर करे और भोजन को पचावे।

विधि—दालचीनी, नागरमोथा, अगर, अजवायन, सोंफखताई, काली मिर्च, पीपल, छोटी इलायची के बीज, पोदीना अनीसून धनियां भुना हुआ, कालाजीरा भुना हुआ, सोंठ मस्तगी, सब समान, नागसफेद बूरा सब के बराबर।

सफूफ—वायगोला और अधिकतासे डकारआने को दूर करता है।

विधि—मिर्च, पीपल, सोंठ, काला जीरा, अजमोद हींग, सेंधानमक, समान भाग चूर्ण करके रखछोड़े और थोड़ा भोजन के पूर्व और पश्चात् खाय।

अथवा—काली मिर्च, अजवायन, मूलीका खार,

सब समान भाग लेकर चूर्ण बनाव और उचित मात्रा में खाया करें।

अथवा—सज्जी, जवाखार, कालानोन, सोंठ, काला जीरा, बाबूना के फूल, समान भाग लेकर चूर्ण बनावें।

अड़तालीसवां अध्याय

अजीर्ण नाशक चूर्ण का वर्णन

सफूफ—जो पेटकी नरमी को दूर करे।

विधि—ततरीक, अजवायन, सोंठ, अनार दाना भुना हुआ, जरिश्क, बेरकी गुठली, समानभाग और सबके बराबर बूरा मिलाकर चूर्ण बनाले।

सफूफ—दस्तों को बन्द करने वाला।

विधि—गुलनार, बबूल का गोंद भुना हुआ, गुलेबांस, ततरीकगुलाब का फूल पांच२ माशे, अनारदाना भुनाहुआ नोमाशे, सफेदशक्कर सबके बराबर।

सफूफ—संग्रहणी को दूर करने वाला।

विधि—काली हड़ भुनी हुई, तज, बेलका गूदा, सौंफ भुनी हुई, खशखाश के छिलके भुने हुए सफेद मरोड़फली, धनियां, नागरमोथा, आमकी गुठलीकी मींगी, समान भाग, शकर सबके बराबर।

अथवा—मोचरस माई धावाकेफूल प्रत्येक६माशे [illegible] का गूदा, पो[illegible] । सफेद [illegible] शकर सबके [illegible]

विधि-हालों के बीजभुने हुए,झाऊबेर भुनेहुए, तंतरीक, प्रत्येक सात माशे, काला जीरा, गंदना के बीज, सोये के बीज,पोस्त के दाने,अनीसून,अजमोद, खुरासानी अजवायन,प्रत्येक नौ माशे, अफीम तीन माशे, सफेद मिश्री सब औषधियों का अर्द्ध :भाग मिलाकर चूर्ण बनावै ।

सफूफ-दस्त बंद करे विशेष कर अफीम खाने वाले मनुष्य के, कि जिसकी औषधि कठिन है ।

विधि-धावा के फूल सफेद राल दोनों समान भाग चूर्ण करके खाय और उसके ऊपर मठा लोहे से बुझा कर पीवे ।

सफूफ-पित्त-अ र रुधिर के अतीसार को दूर करता है

बिधि-बबूल का गोंद,कतीरा,सफेद वंसलोचन, सेलखडी, अरमनी मिट्टी, दम्मुलअखवैन, एक एक माशे चूर्ण करके एक तोला बीह का रुब्ब या मीठे अनार के रुब्ब के साथ खावे।

सफूफ-मरोड़ा आम और आंतों के दर्द को दूर करता है।

विधि-खतमी के बीज, खुब्बाजी के बीज, एक एक तोले,निशास्ता भुना हुआ नौ माशे, बबूल का गोंद,अरमनी मिट्टी, बंसलोचन छे छे माशे मात्रा

तीन २ माशे सुबह शाम सेवनकरे और ऊपरसे जल पीवें जिसमें बबुल का गोंद तीन माशे घुला हो।

सफूफ-दस्तोंको दूरकरने में अत्यन्त उपयोगीहै।

विधि-बलूत,माजू,मीठे अनार का छिलका, एक एक तोले तंतरीक, गुलेबांस, प्रत्येक डेढ़ तोला, चूर्ण करके छे माशे ठंडे जल के साथ सेवन करें।

सफूफ-अतीसारको जिसमें खांसीभीहोदूरकरताहै।

विधि-गुलेबांस, बलूत,पोस्त के डोड़े भुने हुए, नो २ माशे,बबूल का गोंद भुनाहुआ छे माशे।

अथवा-बबूल का गोंद बंसलोचन, अरमनीमिट्टी,गुलेबांस एक एक तोला, हंसराज, कुन्दर,तीन तीन माशे, उचित मात्रा में शरबत खशखाश के साथ खाय।

सफूफ-रुधिर के दस्तों को और साधारण दस्तों को दूर करता है।

विधि-बबूल का गोंद भुना हुआ, बंसलोचन, अरमनीमिट्टी, गुलेबांस, पिस्ता का ऊपर का छिलका जला हुआ,छुहारे की गूठली जलीहुई,मुनक्का, हरे/जूफरु, मीठे अनार का छिलका, खट्टे अनार का छिलका, सूआसुपारी, कहरवा,गुलनारअखरोट का छिलका जला हुआ,माई, बेरकी गुठली की मींगी, कीकर का दूध,सफेद चंदन का बुरादा,पोस्त

के डोंड़ा, काला जीरा, कुलफेके बीज भुनेहुए, जामन की गुठली की मींगी, आमकी गुठलीकी मींगी, छे छे माशे चूर्ण करके बारतंग, कौंच, रेहांके बीज, ईसपगोल, हालों, चूकाके बीज छे छे माशे भूनकर मिलावे और सब के अर्द्ध भाग सफेद शकर मिलावें और सुबह शाम ठंढे जल के साथ खाय ।

उनञ्चासवां अध्याय

वमन और उबाकी दूर करने वाले चूर्णों का वर्णन.

सफूफ–पित्त की वमन और उबाकी को दूर करता है ।

विधि– कपूर दो माशे, सफेद बंसलोचन दो माशे, गुलाब के फूल तंतरीक प्रत्येक पांच माशे चूर्ण करके उचित मात्रा में खट्टे अनार के शरबत के साथ सेवन करें ।

अथवा–कच्ची अगर, पिस्ता का छिलका, पोदीना प्रत्येक छे माशे, जरिश्क तंतरीक, खट्टा अनार दाना, नौ२माशे सफेदशकर सबके समानभागी

अथवा–सफेद इलायची के बीज, कमल गट्टे के बीज की मींगी, सूखा धनियां भुना हुआ तीन तीन माशे सफेद शकर एक तोला ।

सफूफ–कफकी वमन को दूरकरे ।

विधि–पोदीना, दालचीनी, सोंठ एक २ तोला

तीन २ माशे सुबह शाम सेवनकरे और ऊपरसे जल पीवें जिसमें बबूल का गोंद तीन माशे घुला हो।

सफूफ-दस्तोंको दूरकरने में अत्यन्त उपयोगीहै।

विधि-बलूत,माजू,मीठे अनार का छिलका, एक एक तोले तंतरीक, गुलेबांस, प्रत्येक डेढ़ तोला, चूर्ण करके छे माशे ठंडे जल के साथ सेवन करें।

सफूफ-अतीसारको जिसमें खांसीभीहोदूरकरताहै।

विधि-गुलेबांस, बलूत,पोस्त के डोड़े भुने हुए, नौ २ माशे,बबूल का गोंद भुनाहुआ छे माशे।

अथवा-बबूल का गोंद बंसलोचन, अरमनीमि ट्टी,गुलेबांस एक एक तोला, हंसराज, कुन्दर,तीन तीन माशे, उचित मात्रा में शर्बत खशखाश के साथ खाय।

सफूफ-रुधिर के दस्तों को और साधारण द स्तों को दूर करता है।

विधि-बबूल का गोंद भुना हुआ, बंसलोचन अरमनीमिट्टी, गुलेबांस, पिस्ता का ऊपर का छि लका जला हुआ,छुहारे की गुठली जलीहुई हरेमाजूफल, मीठे अनार का छिलका, खट्टे अन का छिलका, सुआसुपारी, कहरवा,गुलनारअखरो का छिलका जला हुआ,माई, बेरकी गुठली की गी, कोकर का दूध,सफेद चंदन का बुरादा पो

ज़रिश्क़, मिर्च, पीपल, तीन २ माशे, लाहौरी नमक नौ माशे ।

अथवा--लौंग, जायफल, छोटी इलायची, तीन तीन माशे, दालचीनी, खट्टे अनार का छिल्का छेः छेः माशे, सफेद शक्कर दो तोले उचित मात्रा में सेवन करें ।

पचासवां अध्याय

जलोदर, तिल्ली की सूजन, कमल वाय यकृत के रोग और बवासीर को दूर करने वाले चूर्णों का वर्णन

सफूफ--जलोदर के दूर करने में उपयोगी है ।

विधि--हींग नौ माशे, पीपल, सोंठ, अजवायन, डेढ़ डेढ़ तोला, पीली हड़, चीता, मीठाकूट, बहमन सफेद, सनायमक्का, दो दो तोला, सैंधानमक सब का छटा भाग ।

सफूफ--तिल्ली की सूजन को दूर करता है ।

विधि--जूफा, हंसराज, कनेर की जड़ का छिल्का मकोय, संभालूके बीज, तितली के बीज समान भाग चूर्णकरके सिकंजबीनसादाके साथ खाय ।

अथवा--एक तोला भुना सुहागा और तीन तोले राई मिलाकर सेवन करें ।

सफूफ--पुरानी सूजन और तिल्ली के बढ़ने को दूर करे ।

विधि—नौसादर, भुना सुहागा, कल्मीशोरा, काली मिर्च,समान भाग चूर्ण करके रक्खे और हर रोज़ प्रातःकाल दो माशे घीग्वार का गूदा लेकर उसमें जितना चूरन छिपटजाय लपेटकर निगलजाया करो।

सफूफ—कमल वाय को दूर करता है ।

विधि—पीली गंधक दो माशे,आकाशबेलअजमोद सफेद कुंदर प्रत्येक चार माशे चिलगोज़े की मींगी नौ माशे,मुनक्का एक तोले,लेकर चूर्ण बनाकर उचित मात्रा में सेवन करें और ऊपर से सौंफ का अर्क पीवें ।

सफूफ—यकृत की सूजन को उपयोगी है और यकृत को बलवान करता है ।

विधि—गुलाब के फूल नौ माशे, ज़रिश्क, लाख धुली हुई सात सात माशे, सफेद बंसलोचन, सफेद चन्दन निशास्ता, बबूल का गोंद तीन २ माशे, रेवन्द चीनी दो माशे, केशर एक माशे, सफेद मिश्री दो तोले ।

सफूफ बजूर—यकृत की सूजन को दूर करता है और मूत्र को जारी करने वाला है ।

विधि—खरबूज़े के बीज की मींगी, खीरे ककड़ी के बीज की मींगी, एक एक तोला कासनी के बीज, आकाश बेलके बीज नौ नौ माशे, अनीसून

ज़रिश्क, मिर्च, पीपल, तीन २ माशे, लाहौरी
क नौ माशे ।

अथवा--लौंग, जायफल, छोटी इलायची,
तीन माशे, दालचीनी,खट्टे अनार का छिल्का
छेः माशे, सफेदशकर दो तोले उचित मात्रा म
वन करें ।

पचासवां अध्याय

जलोदर, तिल्ली की सूजन, कमल वाय यकृत के रोग
और बवासीर को दूर करने वाले चूर्णों का वर्णन

सफूफ--जलोदर के दूर करने में उपयोगी

विधि--हींग नौ माशे, पीपल, सोंठ, अजवा
डेढ़ डेढ़ तोला, पीली हड़, चीता, मीठाकूट, ब
सफेद, सनायमका,दो दो तोला, सैंधानमक स
छटा भाग ।

सफूफ--तिल्ली की सुजन को दूर करता

विधि--ज़ूफा,हंसराज,कनेर की जड़का छिल्
मकोय,संभालूके बीज, तितली के बीज समान
चूर्णकरके सिकंजबीनसादाके साथ खाय ।

अथवा--एक तोला भुना सुहागा और
तोले राई मिलाकर सेवन करें ।

सफूफ--पुरानी सूजन और तिल्ली के

विधि–नौसादर, भुना सुहागा, कल्मीशोरा, काली मिर्च, समान भाग चूर्ण करके रक्खे और हर रोज प्रातःकाल दो माशे घीग्वार का गूदा लेकर उसमें जितना चूरन छिपटजाय लपेटकर निगलजाया करें।

सफूफ–कमल बाय को दूर करता है।

विधि–पीली गंधक दो माशे, आकाशबेल अजमोद सफेद कुंदर प्रत्येक चार माशे चिलगोजे की मींगी नो माशे मुनक्का एक तोले लेकर चूर्ण बनाकर उचित मात्रा में सेवन करें और ऊपर से सौंफ का अर्क पीवें।

सफूफ–यकृत की सूजन को उपयोगी है और यकृत को बलवान करता है।

विधि–गुलाब के फूल नौ माशे, ज़रिश्क, खाख धुली हुई सात सात माशे, सफेद बंसलोचन, सफेद चन्दन निशास्ता, बबूल का गोंद तीन २ माशे, रेवन्द चीनी दो माशे, केशर एक माशे, सफेद मिश्री दो तोले।

सफूफ बज़ूर–यकृत की सूजन को दूर करता है और मूत्र को जारी करने वाला है।

विधि–खरबूजे के बीज की मींगी, खीरे ककड़ी के बीज की मींगी, एक एक तोला कासनी के बीज, आकाश बेल के बीज नो नो माशे, अनीसून

२३

सौंफ, अजमोद, मुलहटी का सत, ज़रिश्क,
चीनी, लाख धुली हुई, बालछड़ मस्तगी,
माशे, केशर तीन माशे, कपूर दो माशे,
मिश्री सब औषधों की अर्द्ध भाग।

सफूफ-खूनी और बादी बवासीर को
करती है।

विधि-बकायन के बीज की मींगी, नि
कीमींगी, रसौत, काली हड़, समानभाग चूर्ण
उसमें से तीन माशे ठंडे जल के साथ खाय
उस पर थोड़े भुने चने चावे।

सफूफ-खूनी बवासीर को दूरकरनेमें उपयोग

विधि-बिनौले की मींगी, दो माशे, रसौत
माशे, सफेद मिश्री तीन माशे, चूर्ण करके खाय
ऊपर से ठंडा पानी पीवें।

इक्यावनवां अध्याय

हर्फ शीन

शरबत फरहत देनेवाले पुष्ट करने वाले और हृदय म
मस्तिष्क के रोग दूरकरने वाले।

शरबत गावज़बां-हौलदिली, व्यग्रता अ
कंठ की सूजन को दूर करता है।

विधि-गावज़बां के पत्ते दो तोले, गुलबनफ

बिल्ली लोटन, नीलोफर के फूल, एक एक तोला. आधसेर पानी में भिगोकर जोश देकर थोड़ी देर मलकर और छानकर और उसमें आधपाव गुलाब का अर्क मिलाकर डेढ़ पाव सफेद शक्कर की चाशनी में शरबत करे।

शरबत आबरेशम–यह शरबत हकीम मसीहउलज़मान ने जहांगीर बादशाह के लिये बनाया था और खफकान के दूरकरनेमें अत्यन्त उपयोगीहुआ।

विधि–आबरेशम कच्चा दस तोले, बिल्लीलोटन एक तोले तीन पाव जल में भिगो कर और जोश देकर उसमें पावभर गुलाब का अर्क और ढाई पाव मिश्री मिलाकर चाशनी करें और संगयशब छे माशे, अनबिंधे मोती दो माशे, केवड़े के अर्क में घिसकर और सफेद चन्दन, कच्चा अगर रूमी मस्तगी, सात सात माशे चूर्णकरके मिलावें।

शरबत सेव–हृदय को बल देता है और प्रसन्न रखता है आमाशय को बल देता है और वमन और पित्त के दस्तों को बंद करता है।

विधि–सेव को छीलकर बीज निकालकर कुचलें और उसको निचोड़ कर उसका सवा सेर जल पकावें जब आधा शेष रहै ढाई पाव सफेद कंद मिलाकर चाशनी करें।

शरबत संदल—हृदय को बलदायक, खफ़कानको दूरकरने वाली आमाशय व यकृत की गर्मी को उपयोगी और प्यास को बुझाती है।

विधि—सफेद चँदन का बुरादा आधपाव लेकर आध सेर गुलाब के अर्क में चार पहर भिगोकर थोड़ा जोश देकर और मलकर छानलें और आध सेर सफेद कंद मिलाकर चाशनी करें।

शरबत नारंज--आमाशय व हृदयको बलदायक और चित्त को प्रसन्न करने वाला है।

विधि—सफेद शकर एक सेर लेकर उसमें अर्क गावजुबां तीन पाव मिलाकर चाशनी करें जब खुब गाढ़ा हो जाय तब नीबू और नारंगी का रस शकर के समान भाग निचोड़ कर और मिलाकर चार पांच जोश दें और तीन माशे केशर चार तोले गुलाब के अर्क में घिसकर मिलावें।

शरबत बर्गतुरंज—हृदय और आमाशय की निर्बलता और खफकान को हितदायक है।

विधि—तुरंज (बिजौरा) के पत्ते ढाई सौ नग लेकर एक सेर जल में जोश दें जब तिहाई भाग घट कर शेषरहे । बिना मले साफ करलें और तीन पाव सफेद शकर मिलाकर चाशनी करें।

शरबत पोस्त तुरंज—आमाशय को अत्यन्त

बलदायक और चित्त को प्रसन्न करने वाला है।

विधि–बिजोरेका छिलका यदि ताज़ाहो तो एक सेर,और शुष्क हो तो आध सेर जोश करके उस के जल में आधसेर सफेदशकर मिलाकर चाशनीकरें।

शरबत गाजर का–हृदय व कामदेव को शक्ति देता है चित्तको प्रसन्नकरता है और स्वच्छ रुधिर का उत्पादक है।

विधि–आध सेर छिली हुई गाजर का रस ले कर एक सेर सफेद कंद में चाशनी करें।

बावनवां अध्याय

शरबत–अनेक प्रकार की खांसी, नजला, सर्दी के शिर दर्द, पसलीका दर्द,फेफड़े का दर्द, और श्वास रोग को दूरकरने वाले शर्बतों का वर्णन

शरबत उस्तख़ुद्दूस–ज्वर, कफ़की खांसी,और छाती के मवाद को दूर करता है।

विधि–उस्तख़ुद्दूस दो तोले, मुलहटी, खतमी के बीज, डेढ़ २ तोले, बनफशे के पत्ते एक तोले, मुनक्का साठ नग, लिहसौड़े चालीस नग, उन्नाब तीस नग, शकर सुर्ख आध सेर, शहद आध पाव लेकर शरबत बनावें।

शरबत जूफा–ज्वर, कफ़की खांसी, और श्वास को दूर करता है।

विधि—शुष्कजूफा डेढ़ तोला, मुलहटी डेढ़ तो-
ला, सौंफ, हंसराज, अजमोद, छे छे माशे, पीली
अंजीर दस दाने, मुनक्का चालीस नग, मेथी नो
माशे, गुलक़ंद आफ़ताबी छे तोले, शकर आध सेर
लेकर शरबत बनावें।

शरबत बनफ़सा—पसली का दर्द, फेफड़े का
दर्द और शिर दर्द को दूर करता है।

विधि—आध पाव बनफशे के पत्ते आधसेर
जल में ४ पहर भिगो कर जोश दें जब तिहाईजल
शेषरहे आधसेर सफेद शकर मिलाकर चाशनी करें।

शरबत नीलोफर—शिर दर्द, पित्तज्वर, पसली
के दर्द और फेफड़े के दर्द को उपयोगी है।

विधि—नीलोफर के फूल की पत्ती यदि ताज़ा
हों तो ४ रतल और शुष्क हो तो १ रतल लेकर
दो रतल जल में जोश करें जब तिहाई जलशेषरहे
दो रतल सफेद शकर मिलाकर चाशनी करें।

शरबत प्रजाज़—सर्व प्रकार की शुष्क खांसी
और बिषम ज्वर को उपयोगी है।

विधि—उन्नाब तीस दाने, लिहसोड़े साठ दाने,
मुलहटी छिली हुई, खुब्बाज़ी के बीज, खतमी के
बीज, नीलोफर के फूल, बनफशे के फूल, प्रत्येक
डेढ़ तोला, बिहीदाना छे माशे, बबूल का गों-

नौ माशे, सेर भर जल में भिगो कर और जोशदे-
कर तीन पाव सफेद शकर मिलाकर चाशनी करें
और नौ माशे कतीरा पीसकर मिलावें।

शरबत अनसल–इसको शरबत नरगिस भी
कहते हैं नए और पुराने श्वास को दूरकरता है।
विधि--जंगली प्याज जिसके छिलके पर छिलका
होता है और जो खाने की प्याज के समतुल्य होती
है साफ करके बांस की छुरी से तराश कर चोगुने
जल में जोशांदा बनाकर प्याज से ढाई गुना
बूरा मिलाकर चाशनी करें।

तिरेपनवां अध्याय

शरबत ज्वरों को दूर करने वाले

शरबत कासनी–पित्त ज्वर को दूर करता है,
आमाशय यकृत और हृदय को बल देताहै ग्रन्थि
यों को खोलता है और मूत्रको प्रवाहित करता है।

विधि–कासनी के पत्तों का रस एक रतल में
डेढ़ रतल सफेद बूरा मिलाकर चाशनी करें और
चाशनी होने के पूर्व चार तोले कागजी नींबू
का रस उसमें डालें।

शरबत आलू–यह पित्तज्वर और दोषज्वर
को दूर करता है और शिर दर्द हाथ पावों की
जलन और उबाकी को गुण दायक है।

विधि—कुलफे के बीज, खीरे ककड़ी के बीज, काहू के बीज, बिजोरे का छिलका एक २ तोला, आलूबुखारा ५० दाने, इमली चार तोले, तीन पाव जल में जोश करें फिर साफ करके ढाई पाव सफेद बूरा मिलाकर चाशनी करें।

शरबत गिलोय—विषमज्वर को गुणदायक है चाहे केवल ज्वर हो चाहे उसके साथ खांसीभी हो।

विधि—ताजा गिलोय जौकुट की हुई छे तोला, नीलोफर के फूल साफ किये हुए चार तोला, गुलाब केफूल दोतोला, सफेदमिश्री आधसेरलेकरशर्बतबनावें

शरबत फरयाद रस—नज़ले की खांसी और ज्वर को दूर करता है।

विधि—गावजुवां के पत्ते, सफेद चँदन, हंसराज दो २ तोले, मुलहटी सौंफ, खतमी के बीज, गुलाब के फूल, सेवती के फूल, पोस्त के डोड़ा पोस्त के दाने, एक एक तोला मुनक्का पच्चीस नग लेकर तीन पाव सफेद बूरे के साथ चाशनी बनावें।

शरबत—यह हकीम शेरअली का बनाया हुआ है और पुराने और मिश्रित ज्वरों में उपयोगी है।

विधि—खीरे ककड़ी के बीज, कुलफे के बीज नीलोफर के फूल एक एक तोला, गावजुवां के पत्ते, ताजा गिलोय, दो २ तोला, जोश करके छानें

और पेठे का पानी और बड़े कद्दूका पानी प्रत्येक अर्द्ध रतल और सफेद बूरा एक रतल मिलाकर चाशनी करें।

शरबत–मन्इ त्रिषमज्वर को दूर करता है।

विधि–नीलोफर के फूल, गावज़बां के पत्ते दो २ तोले, बनफशे के पत्ते, सफेद चंदन का बुरादा, ताजा गिलोय प्रत्येक एक तोला, बडे खीरे का रस, बड़े कद्दूका रस प्रत्येक आध पाव, खट्टे अनार का रस १ छटांक लेकर दो रतल सफेद बूरे के साथ चाशनी करें।

शरबत बजूरी मोतादिल–ज्वर और यकृत और गुरदे के रोगों को गुण दायक है और मवाद को मूत्र के साथ निकाल कर दूर करता है।

विधि–कासनी के बीज, सौंफ, खरबूजेके बीज एक एक तोला, कासनी की जड़, सौंफ की जड़, प्रत्येक डेढ़ तोला, सफेद बूरा पाव भर लेकर शरबत बनावें।

शरबत बजूरी–आमाशय, यकृत और गुरदे के सरदीके रोगोंको और सरदीके ज्वरोंको गुणदायकहै

विधि–कासनी की जड़का छिलका तीनतोला, सौंफ की जड़का छिलका, कासनी के बीज दो दो तोला, सौंफ, अजमोद की जड़, एक एक तो-

आकाश बेल के बीज छे माशे, सफेद शकर आध सेर लेकर शरबत बनावें ।

शरबत बजूरी बारिद—यकृत के गर्म रोगों को और गर्मी के ज्वरों को और गुरदे और मसानेके रोगों को हितदायक है ।

विधि—कासनी की जड़का छिलका दो तोले, खरबूज़े के बीज, खीरे ककडी के बीज डेढ २ तोला, लेकर ढाई पाव शकर के साथ शरबत बनावें और चाशनी होनेके समय उसमें तरबूज़ के बीज की मींगी और पेठेके बीजकी मींगी, एक एक तोले शीरा करके मिलावें ।

शरबतबजूरी—पुराने ज्वर और कमलबाय को दूर करता है और मूत्र और रज को प्रवाहित करता है और गुरदे और मसाने की पथरी को गिराता है और तिल्ली और जिगर की ग्रन्थियों को खोलता है ।

विधि—कासनीके बीज, सोंफ, खरबूजे की मींगी कद्दू के बीज, कडके बीज दो२ तोला, कासनी की जड का छिलका, खतमी के बीज, मुलहटी बालछड़ गुफ़्नफ़शा गावज़बां के पत्ते; डेढ़ डेढ़ तोला, शकर सफेद तीन पाव लेकर शरबत बनावें ।

चौवनवां अध्याय

शर्बत—यकृत और प्लीहा के रोगों को दूर करने वाले

शरबत अज़ख़र—यकृत की ग्रन्थि, कफलवाय आमाशय की वायु, और पेचिश को गुणदायक है।

विधि—बालछड़, तज, तुरकीबच, रेवन्दचीनी, मस्तगी, प्रत्येक नो माशे, ज्वरांकुश, गंधील की जड दो दो तोले, सोंफ. अनीसू. अजमोद, गुलाब के फूल एक एक तोला. सफेद बूरा ढाई पाव लेकर शरबत बनावें।

शरबत असुल—हाथ पांव की सूजन और जलोदर को अत्यन्त उपयोगी है ग्रन्थियों को खोलता है बात को तोडता है और फुज़लात को निकालता है।

विधि—सोंफ की जड का बक्कल, अजमोद की जड का बक्कल, कासनी की जड प्रत्येक डेढ़ तोला, सोंफ, अजमोद, कासनी एक एक तोला, मुनक्का दो तोले, पीली अंजीर बीस नग, किब्र की जड़का छिलका नो माशे, अजख़र का गूदा, बालछड़, नत्रेवाला तज, सात सात माशे, सफेद बूरा तीन पाव लेकर शर्बत बनावें।

शर्बत कशूस—आमाशय और यकृत को बलदायक है ग्रन्थियों को खोलता है। तबियत को नर्म करता है हाथ पैरकी सूजन को और मिश्रित ज्वरमें उपयोगी है।

विधि—सौंफ की जड़का छिलका, गुलाब के फूल, अनीसूं नो २ माशे, खीरे ककड़ी के बीज, कासनी के बीज, खरबूज़े के बीज, एक एक तोले, आकाश बेल के बीज छे माशे, कन्द सफेद आध सेर और शीरखिस्त चार तोले, लेकर शर्बत बनावें।

शरबत रेवन्द—यकृत और प्लीहा के रोगों को गुण दायक है ग्रन्थियों को खोलता है और तबियत को नर्म करता है।

विधि—रेवन्द चीनी डेढ़ तोले, सफेद निरौत, ग़ारीकून, बिसफायज, छै छे माशे, कासनी के बीज, दो तोले, सोंठ तीन माशे, सफेद कन्द एक रतल लेकर शरबत बनावें।

शर्बत दीनार—इसको हकीम नहशू ने निर्माणित किया है इसका नाम शर्बत दीनार पडने के कईकारण हैं एक तो यह कि इसका निर्माण कर्ता इसको दीनार (अशर्फी) के बराबर बेचताथा; दूसरे यह कि दीनार आकाश बेल को कहते हैं इस समानता से कि दीनार थैली में रहता है और आकाश बेल भी थैली में रखकर जोश होता है तीसरे यह कि इसका निर्माण कर्त्ता ज़रेमहलूल इसमें डालता था चौथे यह कि ज़र्द रंगका होता है। ज्वर और ~ के बिगड़ जानेको लाभदायक है तबियतको

नर्म करता है ग्रन्थियों को खोलता है हाथ पैरकी सूजन, जलोदर, पसली का दर्द और यकृत, पेट, यानि और मसाने के दर्द को गुण दायक है और मूत्र को प्रवाहित करता है।

विधि—कासनी के बीज दो तोले, गुलाब के ़ दो तोले, कासनी की जड का छिलका चार े, नीलोफर के फूल, गावज़वां के पत्ते एक२ तोले ाकाश बेल का बीज डेढ तोले और सफेद कंद न पाव लेकर शरबत बनावें।

अन्य शरबत दीनार—इसका निर्माण कर्त्ता ह न सदीद है। यह अत्यन्त उपयोगी है। यकृत, और पट्ठों की ग्रन्थियों को खोलता है और की सूजन को दूर करता है।

विधि—रेवन्द खताई, आकाश बेल के बीज, छे ाशे, गुलाब के फूल दो तोले, कासनी के बीज ा तोले, कासनी की जड़का छिलका चार े, सफेद कंद डेढ़ रतल लेकर शरबत बनावें।

पचपनवां अध्याय

शरबत गुरदे मसाने और मूत्र नालीके रोग दूरकरने वाले।

शरबत क़िल्लत कुलथी—गुरदे और मसाने की ी को तोड़ता है और मूत्रके द्वारा निकाल देताहै।

विधि—कासनी की जड, सौंफ की जड, खुरक

क़िह्नत (कुलथी के बीज) प्रत्येक दो तोले, कार
नी के बीज,. सौंफ, खीरे ककड़ी के बीज, खरबू
के बीज, प्रत्येक डेढ़ तोला, अजमोद के बीज, हं
राज प्रत्येक ६ माशे, सफेद कंद सवा रतल लेक
शरबत बनावें ।

शर्बत हलयून—गुरदे और मसाने के रेत औ
मवाद को मूत्र द्वारा निकालता है ।

विधि—तुख्म हलयून (नागदौन के बीज) चार
तोला, कबाबचीनी, खरबूजे के बीज एक एक तोला
कंद सफेद आधसेर लें और विधि अनुसार शरबत
बनावें ।

शरबत आलू बालू—गुरदे और मसान की बा
लू और पथरी को मूत्र द्वारा निकालता है ।

विधि—आलू बालू एक रतल जोश करके सा
करें और दो रतल सफेद कंद के साथ चाशनी करें

शर्बत ख्स्क—ऊपरोक्त गुण रखता है और काम
शक्ति को बल देता है ।

विधि—छोटे बड़े ताज़ा गोखरू का जल प्रत्ये
आध रतल. लेकर डेढ़ रतल सफेद कंद के सा
चाशनी करें और यदि गोखरु सूखे हों तो पाव
रतल लेकर जौकुट करके उनको जलमें भिगो
फिर जोश देकर छानकर उसका शरबत बनावें

शरबत काकनज-मसाने के घाव और पुराने सोज़ाक को दूर करता है।

विधि- अनीसून, अजमोद, गावज़वां के पत्ते, सूखे गोखरू प्रत्येक नौ माशे, हंसराज, गुलबनफ़शा प्रत्येक छे माशे, काकनज डेढ तोले औटाकर छानकर पावभर सफेद बूरे के साथ चाशनी करें।

छप्पनवां अध्याय

आमाशय के रोगों को दूर करने वाले शरबतों का वर्णन

शरबत ऊद-आमाशय, क्षुधा और पाचन शक्ति को बलदायक है और मुखको सुगंधित करता है।

विधि-अगर, आमला साफ किया हुआ, प्रत्येक दो तोला, बालछड़, लौंग, मस्तगी, जायफल, नौ नौ माशे जौकुट करके जोशदें और साफ करके उस जल में पाव सेर गुलाब का अर्क और आध सेर सफेद बूरा मिलाकर चाशनी करें।

शरबत तमर हिन्दी-आमाशय को बल देता है। वमन और उबकाई को दूर करता है तबियत को नर्म करता है और पित्त को दूर करता है।

विधि-इमली पावभर, जरिश्क चार तोला. जल में भिगोकर साफ करलें और आध सेर सफेद बूरे के साथ चाशनी करें।

शरबत खम्सुलहदीद-आमाशय और

शक्ति को बल देता है और बवासीर की वायु को दूर करता है।

विधि—अजमोद, सोंठ, कुन्दर, सोंफ की जड़ अनीसून प्रत्येक ६ माशे, काला जीरा, पोदीना, सूखा धनियां दालचीनी, बालछड़, नागरमोथा प्रत्येक एक तोला, लोहे का मैल पांच तोला दो सेर जल में जोश करके उसका जल नितार कर उसमें ढाई पाव सफेद मिश्री मिलाकर चाशनी करें।

शरबत फ़िसतक़—उबकाई और वमन को दूर करता है और आमाशय को बल देता है।

विधि—पिस्ता का ऊपर का छिलका दो तोले, पोदीना, गुलाब का फूल. ज़रिश्क अगर एक एक तोला. रूमी मस्तगी नौ माशे. सेव तराशा हुआ छै तोले लेकर सबको जोश करके साफ करें और उस जल में ढाईपाव सफेद मिश्री मिलाकर चाशनीकरें.

शरबत—आमाशय की सुजन को पकाकर फाड़ताहै

विधि—मेथी के बीज, अलसी प्रत्येक चार तोला विलायती अंजीर बीसनग, मकोय दो तोले, जोश देकर और साफ करके आध सेर लाल बूरेके साथ चाशनी करें और छे माशे केशर थोडे गुलाब के अर्क में पीसकर मिलावें।

शरबत सुलेयन—आलूबुखारा सौनग, इमली आ-

धा रतल, सफेद निसौत, एक तोले, चूर्ण करके पोटली में रखकर सब को औटा कर साफ करके छे तोले तुरंज बीन और डेढपाव शकर के साथ चाशनी करें।

सत्तावनवां अध्याय।

विविध प्रकार के शरबतों का वर्णन।

शरबत अस्ल—कम्पन वाय, अर्द्धांग वाय और अनेक प्रकार के कफ और सर्दी के रोगों को अत्यन्त उपयोगी है।

विधि—दो रतल निर्मल शहद आठ रतल नदी के जल में मिलाकर अग्नि पर रक्खें और उस के झाग दूर करके काली मिर्च, सोंठ, कुलीजन, दवंग, मस्तगी, पोदीना, अक़रक़रा, एक एक तोला कूट कर पोटली में बांध कर उस में डालें और पोटली को हिलाते रहें जब शरबत गाढ़ा होने के करीब हो पोटली को निचोड़ कर पृथक करें और शरबत की चाशनी करलें और यदि एक एक माशे कस्तूरी और अम्बर तय्यार हो जाने के पश्चात् मिलावें तो और भी अत्यन्त शीघ्र प्रभाव दायक होजाय।

शरबत अफ़सन्तीन—विक्षिप्तता, और तरी के कारण मन्दाग्नि को और हाथ पांव की सूजन को अत्यन्त उपयोगी है और तबियत को नर्म करता।

विधि–बालछड दो तोला, सफेद निसौत, सफेद गारीकून, तीन तीन तोला, रूमी अफसन्तीन चार तोला गुलाबके फूल छै तोला, और आध सेर सफेद बूरा लेकर शरबत बनावें ।

अन्य शरबत अफसन्तीन–आमाशय और यकृत की निर्बलता, प्लीहा की सूजन और आंतों की वायको दूर करताहै और तबियतको नर्म करताहै

विधि–अफसन्तीन छै तोले, बालछड, अजमोद की जड़ चार चार तोला शकर सफेद तीन पाव लेकर बदस्तूर शरबत बनावें ।

शरबत तूत–गले की सूजन को दूर करता है।

विधि–दो रतल शहतूत का रस निचोड़ा हुआ लेकर एक रतल निर्मल शहद के साथ चाशनी करे और एक माशे केशर घिस कर मिलावें ।

शरबत अंजबार–रुधिर थूकने और रुधिर की बमन को और रज और बवासीर में अधिक रुधिर जाने को दूर करता है ।

विधि–अंजबार की जड़ दो तोला, मीठे अनार का छिलका, हुब्बुल्लास एक एक तोला सफेद चंदन का बुरादा नौ माशे जोश देकर और छान कर चा तोले बबूल की ताजा पत्तीके शुद्ध किये हुऐ जल और आध सेर सफेद बूरे केसाथ चाशनी करें ।

शर्बत तम्बोल (पान)–चित्त को प्रसन्न करता है काम शक्ति को बल देता है और मस्तिष्क में तरी उत्पन्न करता है ।

विधि–दो सौ नग पके हुए बंगला पान बारीक कतर कर अथवा जोकुट करके दो रतल जल में उबाल कर साफ करें और डेढ रतल सफेद कन्द के साथ चाशनी करें और पकती चाशनी में केशर जा: विन्नी छोटी इलायची के बीज छे छे माशे और लौंग तीन माशे गुलाब के अर्क में पीसकर डालें।

शर्बत अंगूर–काम शक्ति को बल दायक चित्त को प्रसन्न करने वाला और शरीरको निखारने वालाहै

।विधि–दो रतल अंगूर के जल में डेढ़ रतल सफेद कन्द मिलाकर चाशनी करें और पकती चाशनी में सालब मिश्री दो तोला, शलजम के बीज, बहमन, इन्दर जौ गाजर के बीज, छे छे माशे केवड़े के अर्क में पीसकर डालें।

शरबत वर्द मुकर्रिर–पित्तका रेचक है और मात्रा बहुत न्यून है ।

विधि–गुलाब के शुद्ध ताज़ा फूल एक रतल लेकर चार रतल नदी के जल में जोश करें जब एक रतल पानी जल जाय तब मलकर छानलें और इसी जलमें एकरतल फूल और मिलाकर जोशदें इसीप्रकार

तीन बार एक एक रतल फूल मिलाकर पकावें और मलकर छानलें फिर उस जल में एक रतल सफेद बूरा मिलाकर चाशनी करें।

विदित हो कि इस रीति से जितने फूल विशेष डाले जायँगे उतना ही उसका गुण बढ़जायगा ॥

शरबत वर्द (गुलाब)—यह पित्तको सम अवस्था पर लाता है, गर्मी को शान्ति करता है और प्यास को बुझाता है।

विधि—एक रतल गुलाब के ताजा फूल दो रतल पानी में उबाल कर मलकर छानलें और एक रतल सफेद बूरा मिलाकर चाशनी करें।

शर्बत गुड़हल—मस्तिष्क की ओर परिमाणु चढ़ने को रोकता है और व्यग्रता और जिनून कोदूर करता है मुख की क्रान्ति बढ़ाता है आमाशय और अन्य बलों को बलवान करता है और चित्त को प्रसन्न करता है।

विधि—सो नग गुडहल के फूलों की सबजी और जीरा दूर करके आधे रतल कागज़ी नीबू के पानी में चार पहर भिगोकर दो रतल सफेद मिश्री की चाशनी में जो मेह के जल अथवा नदी के जल से बनाई हो मिलाकर शीशे में भरें कि आधा शीशा खाली रहे और शीशे का मुख मोम से बन्द करें

उसको गरदन तक चार पांच दिन पानी में डूबा रक्खें जब उफनने लगे तब शरबत को छानकर शीशी में भरकर रक्खें।

अट्ठावनवां अध्याय।

मादक मदिराओं का वर्णन।

शराब फ़ंजीनोश—शरीर में मद लावे और श्वेत प्रमेह को दूर करे।

विधि—तंतरीक, माजू, सुर्ख गुलाब के फूल, सूखा धनियां, कुन्दर पहाड़ी, पोदीना, नागर मोथा प्रत्येक दो तोला, लोहे का मैल एक तोला, दो सेर जल मे भिगोकर लाहन में जो सात सेर गुड़ और आधसेर किशमिशसे बनाया हो मिलाकर अर्क खेंचें।

शराब रैहानी—इस में उत्तम नशा है और कफ के रोगों को दूर करती है।

विधि—गुड़ बीस सेर, अंगूर मले हुए पांच सेर लें और यदि अंगूर न मिलसकें तो दो सेर किशमिश कुटी हुई मिलाकर लाहन उठावें। जब लाहन तय्यार हो जाय तब दालचीनी, लौंग, जावित्री, जायफल, अगर प्रत्येक तीन तोला, गावजवां के पत्ते, बिल्ली लोटन एक एक छटांक मिलाकर दूसरे दिन अर्क खेंचें।

शराब—मस्तिष्क और हृदय को ताकत देती है

तीन बार एक एक रतल फूल मिलाकर पकावें और मलकर छानलें फिर उस जल में एक रतल सफेद बूरा मिलाकर चाशनी करें।

विदित हो कि इस रीति से जितने फूल विशेष डाले जायँगे उतना ही उसका गुण बढ़जायगा॥

शरबत वर्द (गुलाब)—यह पित्तको सम अवस्था पर लाता है, गर्मी को शान्ति करता है और प्यास को बुझाता है।

विधि—एक रतल गुलाब के ताजा फूल दो रतल पानी में उबाल कर मलकर छानलें और एकरतल सफेद बूरा मिलाकर चाशनी करें।

शर्बत गुढहल—मस्तिष्क की ओर परिमाणु चढ़ने को रोकता है और व्यग्रता और जिनून को दूर करता है मुख की क्रान्ति बढ़ाता है आमाशय और अन्य बलों को बलवान करता है और चित्त को प्रसन्न करता है।

विधि—सौ नग गुडहल के फूलों की सबजी और जीरा दूर करके आधे रतल कागजी नीबू के पानी में चार पहर भिगोकर दो रतल सफेद मिश्री की चाशनी में जो मेह के जल अथवा नदी के जल से बनाई हो मिलाकर शीशे में भरें कि आधा शीशा खाली रहे और शीशे का मुख मौम से बन्द करके

उसको गरदन तक चार पांच दिन पानी में डूबा रक्खें जब उफनने लगे तब शरबत को छानकर शीशी में भरकर रक्खें।

अट्ठावनवां अध्याय।

मादक मदिराओं का वर्णन।

शराब फ़ज़ीनोश—शरीर में मद्लावे और शुक्र प्रमेह को दूर करे।

विधि— ततरीक, माजू, सुर्ख गुलाब के फूल, सूखा धनियां, कुन्दर पहाड़ी पोदीना, नागर मोथा प्रत्येक दो तोला, लोहे का मैल एक तोला, दो सेर जल में भिगोकर लाहन में जो सात सेर गुड़ और आधसेर किशमिशसे बनाया हो मिलाकर अर्क खेंचे।

शराब रैहानी—इस में उत्तम नशा है और कफ के रोगों को दूर करती है।

विधि—गुड़ बीस सेर, अंगूर मले हुए पांच सेर लें और यदि अंगूर न मिलसकें तो दो सेर किशमिश कुटी हुई मिलाकर लाहन उठावें। जब लाहन तय्यार हो जाय तब दालचीनी, लौंग, जावित्री, जायफल, अगर प्रत्येक तीन तोला, गावजवां के पत्ते, बिल्ली लोटन एक एक छटांक मिलाकर दूसरे दिन अर्क खेंचें।

शराब—मस्तिष्क और हृदय को ताक़त देती है

और फिर उसी अर्क को दुबारा खैंचें।

शराब—बुड्ढे मनुष्य को तरुणताई का बल देती है और काम शक्ति को प्रबल करने और स्तम्भन में अद्वितीय है।

विधि— गुड दो मन, काली मुनक्का दस सेर, बबूल की छाल बीस सेर, और दो सेर आमला लेकर लाहन उठावें और बालछड़, छडीला, भंगरा खस प्रत्येक पाव सेर, तज, तेजपात, इश्कपेचां की जड़, पान की जड, बिल्ली लोटन, बडी इलायची, ताल मखाना, बीजबंद, हाऊ बेर, धावा के फूल, सुगंधवाला, इन्दर जौ, नरकचूर, नागर मोथा, माई सफेद चन्दन, रक्त चन्दन दोनों मूसली उटंगन के बीज, असगंध, सितावर प्रत्येक आध पाव पानी में भिगोकर लाहन में मिलाकर अर्क खैंचें और फिर उस में सालबमिश्री अगर, लौंग, जायफल, जावित्री, गाजर के बीज, शलजम के बीज, प्याज के बीज, कौंचकी मींगी, दोनों बहमनी, दोनों तोदरी, सकाकुल मिश्री, नाग केशर दो दो तोले, चोबचीनी, बिजौरे का छिलका, पाव पाव सेर, मिलावें और तीन दिन के पश्चात् दो सेर सफेद कंद और दस सेर गाय का दूध उस में डाल कर दुआतशा खैंचें।

उनसठवां अध्याय

शम-अर्थात् गंधदार औषधोंका वर्णन ।

शमूम-सरदीकी मस्तिष्क पीडाको गुणदायकहै।
विधि-जायफल लोंग समानभाग पीसकरसूंघें।

शमूम-गरमीके शिरदर्द को उपयोगी है।
विधि-कपूर व छोटीइलायचीकेबीज घिसकरसूंघें।

अथवा-ताजा फूल जैसे गुलाब या नीलोफर का फूल सूंघें।

अथवा-बड़ा खीरा तराशकर सूंघें।

शमूम- भूलरोग तथा शिरदर्द को हितकारीहै।
विधि-जायफल,जावित्री,लोंग,कालीमिर्च,पीसकर दौनामरुवाकारस या तितलीकारस मिलाकरसूंघें।

शमूम-चक्कर आनेको गुण दायक है।
विधि-हराधनियां,ताजाबिह या पक्का अमरूदसूंघें।

शमूम-निद्रा अधिक आने को दूर करताहै।
विधि-कालीमिर्च कुचलकर सिरकेमें डालकरसूंघें।

अथवा-कस्तूरी सूंघें या कालीकुटकी बच और कड़ना कूट सूंघें।

साठवां अध्याय

नेत्र रोगमें उपयोगी शियाफ का वर्णन

शियाफ-नेत्र की पीड़ा-को तुरन्त दूर करतीहै।
विधि-गुलाबके फूल सवा तोले, केशरदमाशे,

अफीम दस माशे, मालछड़ तीन माशे, बबूलका गोंद तीन माशे. लेकर नदीके जलमें शियाफ़ बनावें।

शियाफ़—आंख के कोये में नासूर होजाने को लाभ दायक है।

विधि—एलुआ, कुन्दर, गुलाबका फूल, लाई, दम्मुल अखवेन, सुरमा, फिटकरी तीन तीन माशे गुलाबके अर्क में शियाफ बनावें और नासुर कामुँह साफ करके उसमें टपकावें।

शियाफ़—खुजली, ढलका, गुहेरी, नाखूना और पलकों के कड़ेपन को हितदायक है।

विधि—नीला थोता शुद्ध किया हुआ, चीनी ममीरा, समुद्रफेन, रसौतमकी प्रत्येक चार माशे, पीलीहडकी छाल, तेजपात तीन तीन माशे केशर कतीरा बबूलका गोंद दोदो माशेलेकर शियाफबनावें।

शियाफ—नेत्रमेंनजलेके जल उतर आनेको गुण दायक है।

विधि—चांदीकी घरिया, सोनेकी घरिया, पीपल, उस मकान का धूआं जहां तांवा गलता हो, सब समान भाग लेकर सोंफके जल के साथ शियाफ बनावें।

शियाफ असवद— ढलका बाम्हनी (गुहेरी) और पलकों की खुजली को उपयोगी है।

विधि–जिगार छे माशे, उश्क, बबूल का गोंद प्रत्येक चार माशे,सोने की घरिया, अफीम दो दो माशे, माजूफल एक माशे, लेकर तितलीके पानी के साथ शियाफ बनावें।

शियाफ–नेत्रों में नजलेका पानी उतरने, खुज-ली, ढलका, नेत्रों की सुर्खी, और पलकों के अ-न्य रोगों को गुण दायक है।

विधि–नीला थोता पानीमें पाला हुआ,बिजौरे का छिलका, प्रत्येक नो माशे, कतीरा गेहूं का निशास्ता,लाई,गुलाब के फूल,एलुवा, रसौतमक्की प्रत्येक दो माशे, कलई का कुश्ता तीन माशे, बडी हड़ गुठली समेत एक नग और अफीम एक माशे लेकर शियाफ बनावें।

शियाफ अबीज–नेत्र के गर्म्म रोगों को दूर करती है और सूजन को बिठाती है और सूजनसे मवादको निकालती है।

विधि–निशास्ता तीनमाशे,बंग,बबूल का गोंद कतीरा प्रत्येक नो माशे लेकर इसबगोलके लुआब के साथ अथवा मुर्गीके अंडे की सफेदी केसाथ शियाफ बनावें।

शियाफ़ अबीज़–आंखों की सुरखी के आरम्भ में हितदायक है

विधि–बंग छे माशे, लाई भुनीहुई लेकर गधी के दूधमें भिगोकर बड़ी हड़ की छाल एक तोले, और मुर्गी के अंडेकी सफेदी तीन माशे में शियाफ बनावें।

शियाफ चमली–नेत्रका ढलका, नाखूना, गुहेरी और नेत्रोंके सामने अंधेरा आजानेको गुणदायक है।

विधि–तीस नग चमेलीके ताजा फूल, सुरमा, उगबसरी, नीला थोता, कलमी शोरा, सिरसके बीजकी मींगी प्रत्येक तीन माशे, केशर दो माशे लेकर कागजी नीबू के रस में तीन दिन तक घोट कर शियाफ बनावें।

शियाफ अहमर–ढलका नाखूना, कुर्थी, फुली गुहेरी और नेत्र की पुरानी सुरखीको दूर करती है।

विधि–फिटकरी आधी कच्ची आधी भुनी हुई सोने की घरिया, खपरिया, सुरमा, प्रत्येक तीन माशे और दम्मुलअख्वैन छे माशे लेकर मुर्गी के अंडे की सफेदी के साथ शियाफ बनावें।

शियाफ अखज़र–खुजली, ढलका बाम्हनी, नाखूना और फुली को हित दायक है।

विधि–जंगाल सुधी हुई तीन माशे, चांदी की घरिया, बबूल का गोंद, बंग समुद्र फैन प्रत्येक दोमाशे लेकर ताजा तितली के जल में शियाफ बनावें।

इकसठवां अध्याय

कान व नाकके रोग दूर करने वाली शियाफ का वर्णन।

शियाफ—बहरेपन को दूर करे।

विधि—दोना मरुवा, राई, तितली, इन्द्रायन फल, सब समान भाग लेकर बकरी के पित्ते में फ बनाकर रक्खें और कडवे बादाम के तेलमें कर कान में टपकावें।

शियाफ—बहरेपन और कान मेंशब्द होने को करती है।

विधि—पपरिया खार, जवासे के बीज, जुंदबे र, तीन तीन माशे राई चार माशे, अंजीर एक लेकर पुरानी शराब अथवा बैल के पित्ते में ाफ बनावें।

शियाफ—कान की कमज़ोरीऔर ऊंचा सुनने उपयोगी है।

विधि—इन्द्रायन का गूदा, अफसन्तीन, जुंदबे र, जरा वन्द गोल प्रत्येक तीन माशे, सज्जी ाशे लेकर तितली के जलके साथ अथवा हरे सोये स में शियाफ बनावें।

शियाफ—नकसीर को बंद करती है।—

विधि—नक छिकनी, मुनक्का, सज्जी जंगाल, ानभाग लेकर बकरीके पित्ते में वारीक शियाफ

विधि–पोदीना, सफेद निसोत, चूहे की मैंगनी प्रत्येक छे माशे, अमल तास का पानी दो तोले, लेकर शियाफ बनाकर रख छोड़ें और आवश्यकता के समय गुलरोगन मे चिकनी करके काम में लावें

अन्य–चूहे की मेंगनी एक तोला, लाल बुरा एक तोला, सेंधा नमक तीन माशे लेकर अग्निपर पकाकर शियाफ बनावें और गुलरोगन से चिकना करके काम में लावें।

चौंसठवां अध्याय

हर्फ स्वाद

सवग़हाय–त्वचा के रोगों में उपयोगी

सबग़–नेत्र को काला और खुशरंगकरता है

विधि–सुरमा तीनमाशे, काजल दो माशेमाजूफल एक माशे, लेकर सुरमा करके लगावें।

सबग़–कोढके सफेद दागको काला करता है।

विधि–माजूफल, महंदीके ताजा पत्ते, अंजीर की जडका छिलका समान भागलेकर घिसकर लगावें।

अथवा–अंजीर के पेड़ की छालको सिरके में घिसकर लगावें।

सबग़–छापके दाग को दूर करता है।

विधि–नकछिकनी तीनमाशे, कडवीकूट तीनमाशे

ज़माद-गर्मी से उत्पन्न शिर दर्दको दूर करताहै

विधि-कुलफ़ेके पत्ते, घीया तराशाहुआ, खतमी के फूल, सफेद चंदन, प्रत्येक समान भाग लेकर गुलाब में पीसकर थोड़ासा सिरका मिलाकर लगावें।

ज़माद-गिरजाने की चोट से उत्पन्न मस्तिष्क पीड़ा को उपयोगी है।

विधि-गिलेअरमनी, एलुवा प्रत्येक दस माशे, मूंग, भटवांस, गुलाबके फूल, प्रत्येक एक तोला, बाबुना के फूल, चिरायता, प्रत्येक दो माशे, लेकर लेपकरें और यदिसुज गया हो तो मसूर और गुलाब के फूल प्रत्येक दो माशे और मिलावें।

ज़माद-शिर का घूमना और आंखों के साम्हने अंधेरा आने को गुण दायक है।

विधि-बालछड़ तीन माशे, एलुवा, मरमकी गुलाबके फूल, प्रत्येक छैमाशेलेकर चूर्ण करके एक तोला मोम और तीन तोले घीको गर्म करके मिलावें और माथे और शिर पर लेपकरें।

ज़माद-बच्चों के सरसाम को हितदायक है।

विधि-बनफशे के फूल चार माशे, अगर सलीब, उस्तखुद्दूस प्रत्येक तीन माशे, मूंगकी धुलीहुई दाल दो तोला, एक नग मुर्गी के अंडेकी जर्दी लेकर उसमें थोड़ा कन्यावती स्त्री का दूध मिलाकर लेपकरे

अथवा-कपडे पर लगा कर शिर पर रक्खें।
ज़माद-कफके सरसामको गुणदायक है।
विधि-उस्तख़ुद्दूस, अगर ऊदसलीब, प्रत्येक छेमाशे, मूंगका आटा चारतोला, एक नग मुर्गी के अंडेकी ज़र्दी लेकर सबको मिलाकर जल और गुलरोगन के साथ लेपकरें।

ज़माद-सकता और सुबात (निद्राभूल) रोगमें उपयोगी है।

विधि-राई, चीता, दौनामरुवा प्रत्येक नौ माशे लेकर गायकेदूधमें पीसकर गुनगुना लेप करें।
ज़माद-सकता रोगको हितदायक है
विधि-सोसनके फूल, धनिया. राई प्रत्येक छे माशे, जायफल लौंग अकरकरा प्रत्येक दो माशे लेकर गाय के दूध में पीस कर लेप करें।

❋ छयासठवां अध्याय ❋

जमाद-कर्ण और नासिकाके रोग दूर करने वाले।

ज़माद-कानकी कड़ी सूजनको गुणदायक है।
विधि-बाकलेका आटा, जौ का आटा, प्रत्येक एक तोला, बाबूना का फूल, बनफशाका फूल, खतमीका फूल, प्रत्येक छे माशे, नाखूना तीन माशे लेकर बनफशे का तेल मिलाकर लेप करें।

ज़माद–गर्मी से उत्पन्न शिर दर्दको दूर करताहै

विधि–कुलफ़ेके पत्ते,घीया तराशाहुआ, ख़तमी के फूल, सफेद चंदन, प्रत्येक समान भाग लेकर गुलाब में पीसकर थोड़ासा सिरका मिलाकर लगावें।

ज़माद–गिरजाने की चोट से उत्पन्न मस्तिष्क पीड़ा को उपयोगी है।

विधि–गिलेअरमनी. एलुवा प्रत्येक दस माशे, मूंग. भटवांस, गुलाबके फूल. प्रत्येक एक तोला. बाबुना के फूल. चिरायता. प्रत्येक दो माशे, लेकर लेपकरें और यदिसुज गया हो तो मसूर और गुलाब के फूल प्रत्येक दो माशे और मिलावें।

ज़माद–शिर का घूमना और आंखों के साम्हने अंधेरा आने को गुण दायक है।

विधि–बालछड़ तीन माशे, एलुवा, मरमकी गुलाबके फूल, प्रत्येक छैमाशेलेकर चूर्ण करके एक तोला मोम और तीन तोले घीको गर्म करके मिलावें और माथे और शिर पर लेपकरें।

ज़माद–बच्चों के सरसाम को हितदायक है।

विधि–बनफशे के फूल चार माशे,अगर सलीब, उस्तखुद्दूस प्रत्येक तीन माशे, मूंगकी धुलीहुई दाल दो तोला, एक नग मुर्गी के अंडेकी जर्दी लेकर उसमें थोड़ा कन्यावर्ती स्त्री का दूध मिलाकर लेपकरे

अथवा–कपडे पर लगा कर शिर पर रक्खें।

ज़माद–कफके सरसामको गुणदायक है।

विधि–उस्तखुद्दूस, अगर ऊदसलीब, प्रत्येक छैमाशे, मूंगका आटा चारतोला, एक नग मुर्गी के अंडेकी ज़र्दी लेकर सबको मिलाकर जल और गुलरोग़न के साथ लेपकरें।

ज़माद–सकता और सुबात (निद्राभूल) रोगमें उपयोगी है।

विधि–राई, चीता, दौनामरुवा प्रत्येक नौ माशे लेकर गायके दूधमें पीसकर गुनगुना लेप करें।

ज़माद–सकता रोगको हितदायक है

विधि–सोसनके फूल, धनिया, राई प्रत्येक छै माशे, जायफल लौंग अकरकरा प्रत्येक दो माशे लेकर गाय के दूध में पीस कर लेप करें।

❋ छयासठवां अध्याय ❋

जमाद–कर्ण और नासिकाके रोग दूर करने वाले।

ज़माद–कानकी कड़ी सूजनको गुणदायक है।

विधि–बाकलेका आटा, जौ का आटा, प्रत्येक एक तोला, बाबूना का फूल, बनफशाका फूल, खतमीका फूल, प्रत्येक छै माशे, नाखूना तीन माशे लेकर बनफशे का तेल मिलाकर लेप करें।

लेकर बिहीदाने का लुआब तीन माशे के साथलेपकरें।
ज़माद--श्वास की तंगी को गुणदायक है ।
विधि--कद्दू का पानी, तथा खीरा का पानी तथा ईसबगोल के पत्तों का रस या जौ के पानी में अलसी का लुआब निकालकर उसमें कपडा भिगोकर सीने पर रक्खें अथवा इन्हीं वस्तुओं को पीस कर लेप करें ।
अन्य--मरतगी, बालछड एलुआ और चिरायता समान भाग पीस कर लेप करें ।

* उनहत्तरवां अध्याय *

ज़माद--कुच केरोगोंको दूरकरनेवाले।

ज़माद--कुचके सोथ को दूर करता है ।
विधि--मैदालकडी. कचनाल की छाल, मेथी का बीज, अंड की जड़ का छिलका, गेरू समान भाग लेकर लेप करे ।
अन्य--काकजंघा, मकोय के पत्ते, गेरू समान भाग लेकर लेप करे ।
अन्य--जौ का आटा, बाकला का आटा, मसूर का आटा, गुलाब के फूल समान भाग लेकर लेपकरें।
ज़माद--दूध की अधिकता को दूर करता है ।
विधि--जंगली [illegible] का पारा समान भाग [illegible]

* अड़सठवां अध्याय *

ज़माद–पहलू का दर्द, पीठ का दर्द फेफड़े का दर्द और दम घुट जाने को दूर करने वाले।

ज़माद–पहलूके दर्द को आराम करता है।

विधि–जौका आटा दो तोला, नाखुना पोस्त खशखाश प्रत्येक एक तोला लेकर जलमें पीसकर लेप करे।

ज़माद–पहलू और फेंफड़े के दर्द को दूर करता है और मवाद को पचाता है या पकाकर निकाल देता है।

विधि–बनफ़शेके पत्ते, खतमीके बीज, बाबूना के फूल, प्रत्येक छै माशे, बाकला का आटा, अलसी, एक एक तोला, मुलहटी डेढ़ तोला लेकर गुलरोग न मिलाकर लेप करें।

ज़माद–छाती की नस फटजाने को गुणदायकहै जिसके कारण से थूकमें रुधिर निकलता है।

विधि–अनारका छिलका, माजूफल गुलाबके फूल अरमनी-मिट्टी, छै छै माशे जौ का आटा १॥ तोला

ज़माद–पहलू के दर्द को गुण दायक है।

विधि–बाकला का आटा, जौ का आटा, गेहूं आटा का प्रत्येक एक तोला, बनफशेके पत्ते खतमी के बीज मीठेकद्दू के बीज की मींगी प्रत्येक, छै माशे

लेकर बिहीदाने का लुआब तीन माशे के साथ लेपकरें।

ज़माद्--श्वास की तंगी को गुणदायक है।

विधि--कद्दू का पानी, तथा खीरा का पानी तथा ईसबगोल के पत्तों का रस या जौ के पानी में अलसी का लुआब निकालकर उसमें कपडा भिगोकर सीने पर रक्खें अथवा इन्ही वस्तुओं को पीस कर लेप करें।

अन्य–मस्तगी, बालछड एलुआ और चिरायता समान भाग पीस कर लेप करें।

* उनहत्तरवां अध्याय *

ज़माद–कुच केरोगोंको दूरकरनेवाले।

ज़माद्–कुचके सोथ को दूर करता है।

विधि–मैदालकडी. कचनाल की छाल, मेथी का बीज, अंड की जड़ का छिलका, गेरू समान भाग लेकर लेप करे।

अन्य–काकजंघा, मकोय के पत्ते, गेरू समान भाग लेकर लेप करे।

अन्य–जौ का आटा, बाकला का आटा, मसुर का आटा, गुलाब के फूल समान भाग लेकर लेपकरें।

ज़माद–दूध की अधिकता को दूर करता है।

विधि–जंगली तुलसी के बीज, बाकला का पारा समान भाग लेकर लेप करें।

ज़माद—गाढ़े दूध को शुद्ध करता है ।

विधि—बनफ़शेके पत्ते, खतमी के बीज, जौं छिले हुए समान भाग लेकर लेप करें ।

ज़माद—गाढ़े और जमेहुए दूध को पतला करें।

विधि—लौंग दो माशे, साठी चांवल दो तोले लेकर गुन गुना करके लेपकरें ।

ज़माद—कुचकी सूजन और दर्द को जो दूध की अधिकता से हो दूरकरता है ।

विधि—बाकला का आटा, छिली मसूर का आटा जौका आटा प्रत्येक एक तोला, काहू के बीज, गुलाब के फूल अरमनी मिट्टी पांच पांच माशे लेकर रोगन गुल और सिरका मिलाकर लेपकरें ।

ज़माद—जमे हुए रुधिर को शुद्ध करे ।

विधि—तिल, बाक़ला, गेहूं की सूखीरोटी, समान भाग लेकर थोड़ा गौघृत और शहत मिलाकर लेपकरें

ज़माद—कुचके कड़ेपन को दूर करे ।

विधि—मूंग, मुनक्का बीजों सहित समान भाग लेकर लेपकरें ।

ज़माद—कुचके फोड़े को पकाकर तोड़े ।

विधि—अलसी, कालेतिल, सोसन की जड़, बकरी की मेंगनी, कबूतर की बीट, समान भागलेकर थोड़ा गुल रोगन मिला कर लेपकरे ।

※ सत्तरवां अध्याय ※

ज़माद-आमाशय, आंत, प्लीहा और यकृतके रोगोंको दूर करने वाले

ज़माद-आमाशय की कड़ी सूजन को दूर करे।

विधि-अफ सन्तीन, बालछड़, प्रत्येक एक तोला, एलुआ, केशर, प्रत्येक तीन माशे, लेकर गुन गुना करके लेप करे।

ज़माद-उदरके पुराने सोथ को तहलील करे।

विधि-करम कल्लाके बीज, बाल छड, प्रत्येक एक तोला, नागरमोथा, मस्तगी अजखर प्रत्येक छे माशे, उश्क तीन माशे लेकर नीम गर्म लेप करे।

अन्य-मेथी के बीज, अलसी, खतमी के बीज बाबूना के फूल, नागर मोथा एक एक तोला, फिट करी मस्तगी छे छे माशे थोडा गुलरोगन मिला कर लेप करे।

ज़माद-तिल्ली के सोथ को दूर करे।

विधि-बलायती अंजीर सिरके में पीसकर गुन गुना लगावें।

अन्य-अंगूर की लकडी की भस्म, बकरी की मिंगनी की भस्म, समान भाग सिरके में पीसकर गुनगुना कर लेप करे।

ज़माद-पेट फूल जाने और तिल्ली की सख्ती को दूर करे।

विधि--तितली पोदीना नौ नौ माशे, पपड़िया खार तीन माशे पुराने सिरके में मिलाकर लेपकरे।

जमाद--लपीहा केसोथ और कड़ापन को दूर करे

विधि--मेथी, बाबूना, बालछड एक एक तोले पीली अंजीर पांच नग सिरके में पीसकर लेपकरे।

अन्य--गूगल छै माशे, बाकला का आटा मटर का आटा एक एक तोला, अलसी, बालछड़, नाखूना नौ नौ माशे सिर के में पीसकर थोड़ा बाबूना का तेल मिलाकर लेपकरे।

जमाद--यकृत की सूजन को दूर करे।

विधि--सुपारी गुलाब के फूल, सफेद चंदन चिरायता चार चार माशे, जौ का आटा एक तोला कपूर तीन माशे सिरके में मिला कर लगावे।

जमाद--यकृत की निर्बलता को उपयोगी है।

विधि--रसोत मकी, धनियां के बीज, अगर, तंतरीक प्रत्येक छै माशे, मस्तंगी चार माशे केशर दो माशे थोडा बाबुना का तेल मिलाकर लेपकरे।

ज़माद-यकृत की गरमी की शोथ को गुणदायक है।

विधि--कपूर रूमीमस्तगी, तेजपात, प्रत्येक तीन माशे अरमनी मट्टी बनफशे के फूल गुलाब के फूल सफेद चंदन, सूखा धनिया प्रत्येक छै माशे लेकर लेपकरें।

ज़माद-यकृतके सरदी के शोथ को गुणदायक है

विधि-तगर-तज प्रत्येक पांच माशे, केशर दो माशे बाबूना का तेल मिलाकर लगावें।

ज़माद-अतीसार को बंद करे।

विधि-बबुल की पत्ती अनार की पत्ती बेरके पत्ते, अरमनी मिट्टी समान भाग लेकर लेप करें।

अन्य-आमला सूखा धनिया, नीलोफर की जड़, गेरू समान भाग लेकर लेपकरें।

अन्य-रसौतमकी, मीठे अनार का छिलका, कीकर का दूध, सुपारी का फूल, पिस्ता का फूल गुलनार, माजू समान भाग लेकर लेप करें।

ज़माद-बच्चों के अतीसार को गुण दायक है।

विधि-गुलाबका ज़ीरा, ततरीक, सूखा धनिया, प्रत्येक तीन माशे अनार का छिलका पांच माशे लेकर लेप करें।

इकहत्तरवां अध्याय

ज़माद-गुदा के रोगों को दूरकरने वाले

ज़माद-गुदा के शोथ को दूर करे।

विधि-मसुर छिली हुई, अनार का छिलका, मुआसुपारी, थोडा गुलरोगन मिला कर लेपकरें।

ज़माद-गुदाकी सूजन और निकलने को गुण दायक है।

विधि–भांग के पत्ते, एक तोला, बनफशेके पत्ते चार माशे लेप करें।

अन्य–कीकर का दूध, रसौत, दम्मुलअखवेन समान भाग लेकर लेपकरें।

ज़माद–वादी बवासीर के दर्द और सोथ को गुण दायक है।

विधि–गंदना के बीज, अलसी, गूगल अरजक का, समान भाग थोडा गोघृत मिलाकर लगावें।

अन्य–गायके सींग का गूदा, आलू की गुठलीकी मींगी, मुर्गी के अंडे की जर्दी, और गाय का घी जिसमें प्याज का भगार दिया हुआ हो मिला कर लेपकरें।

अन्य–गायके घी में प्याज भून कर लेप करें।

अन्य–बबुलका गोंद दम्मुलअखवेन, बंग प्रत्येक तीन माशे गूगल छे माशे, अफीम एक माशे, थोडा, रोगन गुल मिला कर लेप करें।

अन्य–निबोली की गुठलीकी मींगी, बकायन के बीज की मींगी, और रसौत समान भाग लेकर लेपकरें।

अन्य–मीठे कद्दू के बीजकी मींगी और आलू के बीज की मींगी गाय के दुध में पीसकर लेपकरें

* बहत्तरवां अध्याय *

ज़माद–गुरदें और मसाने के रोगों को दूर करने वाले।

~ जमाद–गुरदे के सोथ को बिठावै

विधि– धनिया के ताजा पत्ते, बनफशे के फूल, कुलफा प्रत्येक छे माशे, मीठे बादाम की गिरी, पांच नग, गुलाब के अर्क में पीसकर लगावें।

जमाद–गुरदे के कड़े सोथ को बिठावै।

विधि–उश्क गूगल, रूमीमस्तगी, प्रत्येक तीन माशे, पानीमें घोलकर खतमीके बीज खुब्बाजीके बीज, सोयेके बीज, बाबूनाके फूल, अलसी, मेंथी प्रत्येक पाँच माशे चूर्ण करके मिलाकर लगावे।

जमाद–गुरदे के सोथको तहलील करता है।

विधि–गेहूंका आटा, सोयेके पत्ते, बाबूनाके फूल, मुलहटी प्रत्येक छे माशे शहत डेढ़ तोले गायके दूधमें पका कर लगावें।

जमाद–मसानेके जमेहुए रुधिरको मूत्रद्वारा निकाले।

विधि–अजमोद सात माशे, अजवायन सात माशे, जवासेकेपत्ते, नाखुना, बाबूना केफूल, प्रत्येक माशे, जौका आटा, काले चनेका आटा, एक एक तोला, करमकल्ले के पत्ते के रसमें पीस कर लगावें।

जमाद–मूत्रके रुक जानेको जो मसानेमें राध जमजानेके कारणसे रुकजाय उपयोगी है।

विधि—भांग के पत्ते, एक तोला, बनफशेके पत्ते चार माशे लेप करें।

अन्य—कीकर का दूध, रसौत, दम्मुलअखवेन समान भाग लेकर लेपकरें।

ज़माद—वांदी बवासीर के दर्द और सोथ को गुण दायक है।

विधि—गंदना के बीज, अलसी, गूगल अरजक का, समान भाग थोडा गोघृत मिलाकर लगावें।

अन्य—गायके सींग का गूदा, आलू की गुठलीकी मींगी, मुर्गी के अन्डे की जर्दी, और गाय का घी जिसमें प्याज का भगार दिया हुआ हो मिला कर लेपकरें।

अन्य—गायके घीमें प्याज भून कर लेप करें।

अन्य—बबूलका गोंद दम्मुलअखवेन, बंग प्रत्येक तीन माशे गूगल छे माशे, अफीम एक माशे, थोडा, रोगन गुल मिला कर लेप करें।

अन्य—निबोली की गुठलीकी मींगी, बकायन के बीज की मींगी, और रसौत समान भाग लेकर लेपकरें।

अन्य—मीठे कद्दू के बीजकी मींगी और आलू के बीज की मींगी गाय के दूध में पीसकर लेपकरें

* बहत्तरवां अध्याय *

ज़माद—गुरदें और मसाने के रोगों को दूर करने वाले।

अन्य–बिच्छू जला हुआ, हुजरुलयहुद, कछुए का अण्डा, आलूबालू, गुलाब के फूल समान भाग सोये के रस में पीसकर लेप करें ।

ज़माद–मसानेकेसोथ को जो गर्मी से हो गुण करै ।

विधि–सोये के बीज, बाबूना के फूल, खतमी के बीज समान लेकर लेपकरे ।

ज़माद–गुरदेके ठण्ड से उत्पन्न सोथको दूरकरे।

विधि–छुआरे की गुठली एक तोला, खतमी के बीज एक तोला, सिरके में पीसकर लेपकरे ।

अन्य–बाकला का आटा, मुनक्का काला-जीरा प्रत्येक नौ माशे खाकस्तर छुआरे की गुठली खतमी के बीज प्रत्येक तीन माशे ।

❋ तिहत्तरवां अध्याय ❋

ज़माद–अंडकोष और मूत्रेन्द्रियके रोगों में गुणदायक ।

ज़माद–अण्ड कोश और मूत्रेन्द्रिय की सरदी की सूजन को गुण दायक है ।

विधि–सम्हालू के बीज, चनेका आटा, बाकला का आटा, प्रत्येक नौ माशे मुनक्का पन्द्रह नग लेकर सरसों के तेल और थोडी बतख की चरबी में मिलाकर लगावें ।

ज़माद–फितक (अण्ड वृद्धि) को गुणदायक है ।

विधि–नागरमोथा, पपडिया खार

विधि–चुकन्दरके पत्ते मेथीका बीज बाबूनाके फूल, नाखूना, बाकलाका आटा, चनेका आटा, प्याज़ भुनी हुई समान भाग लेकर थोड़ी कबूतर कीबीट और सरसों का तेल मिलाकर लेपकरें।

ज़माद–मूत्रमें रुधिर आनेको गुण करता है।

विधि–कीकरकादूध, सफेद चंदन रक्तचंदन तंतरीक धनिया सूखा हुआ समान भागलेकर लेप करें।

अन्य–कुलफे के बीज, गुलाबके फूल, अनारके फूल, छैछे माशे, माजूफल, बबूलका गोंद तंतरीक तीनतीन माशे लेकर लेप करें।

ज़माद–गरमीके कारण मूत्रमें रुधिर आनेको गुण दायक है।

विधि–अरमनीपिट्टी. एलुवा. रसौत, कीकर का दूध. समान भाग लेकर थोड़ा गुलाबका अर्क और सिरका मिलाकर लेप करें।

ज़माद–मसाने और गुरदेकी पथरीको तोड़ और दूर करे।

विधि–महँदीके पत्ते. हंसराज तुलसीके पत्ते. पोदीनाके पत्ते-सोया. सौंफके पानीमें पीसकर लेपकरें।

अन्य–कछुएके अंडे, नागदूनके बीज, सेलखड़ी पीसकर, बिच्छू का तेल मिलाकर लगावें।

अन्य–बिच्छू जला हुआ, हुजरुलयहूद, कछुए का अण्डा, आलूबालू, गुलाब के फूल समान भाग सोये के रस में पीसकर लेप करें।

जमाद–मसानेकेसोथ को जो गर्मी से हो गुण करै।

विधि–सोये के बीज, बाबूना के फूल, खतमी के बीज समान लेकर लेपकरै।

ज़माद–गुरदेके ठण्ड से उत्पन्न सोथको दूरकरै।

विधि–छुआरे की गुठली एक तोला, ख़तमी के बीज एक तोला, सिरके में पीसकर लेपकरै।

अन्य–बाकला का आटा, मुनक्का कालाजीरा प्रत्येक नौ माशे खाकस्तर छुआरे की गुठली खतमी के बीज प्रत्येक तीन माशे।

❋ तिहत्तरवां अध्याय ❋

जमाद–अंडकोष और मूत्रेन्द्रियके रोगों में गुणदायक।

ज़माद–अण्ड कोश और मूत्रेन्द्रिय की शरदी की सूजन को गुण दायक है।

विधि–सम्हालू के बीज, चनेका आटा, बाकला का आटा, प्रत्येक नौ माशे मुनक्का पन्द्रह नग लेकर सरसों के तेल और थोडी बतख की चरबी में मिलाकर लगावैं।

ज़माद–फितक (अण्ड वृद्धि) को गुणदायक है।

विधि–नागरमोथा, पपडिया खार, कालाजीरा

विधि–चुकन्दरके पत्ते मेथीका बीज बाबूनाके फूल, नाखूना, बाकलाका आटा, चनेका आटा, प्याज भुनी हुई समान भाग लेकर थोड़ी कबूतर कीबीट और सरसों का तेल मिलाकर लेपकरें।

ज़माद–मूत्रमें रुधिर आनेको गुण करता है।

विधि–कीकरकादूध, सफेद चंदन रक्तचंदन ततरीक धनिया सूखा हुआ समान भागलेकर लेप करें

अन्य–कुलफे के बीज, गुलाबके फूल, अनारके फूल, छेछे माशे, माजूफल, बबूलका गोंद ततरीक तीनतीन माशे लेकर लेप करें।

जमाद–गरमीके कारण मूत्रमें रुधिर आनेको गुण दायक है।

विधि–अरमनीमिट्टी. एलुवा. रसौत, कीकर का दूध. समान भाग लेकर थोड़ा गुलाबका अर्क और सिरका मिलाकर लेप करें।

ज़माद–मसाने और गुरदेकी पथरीको तोड़े और दूर करे।

विधि–महँदीके पत्ते. हंसराज तुलसीके पत्ते. पोदीनाके पत्ते-सोया. सोंफके पानीमें पीसकर लेपकरें।

अन्य–कछुएके अंडे, नागदूनके बीज, सेलखड़ी पीसकर, बिच्छू का तेल मिलाकर लगावें।

अन्य–बिच्छू जला हुआ, हुजरुलयहूद, कछुए का अण्डा, आलूबालू, गुलाब के फूल समान भाग सोये के रस में पीसकर लेप करें ।

जमाद–मसानेकेसोथ को जो गर्मी से हो गुण करे ।

विधि–सोये के बीज, बाबूना के फूल, खतमी के बीज समान लेकर लेपकरे ।

ज़माद–गुरदेके ठण्ड से उत्पन्न सोथको दूरकरै।

विधि–छुआरे की गुठली एक तोला, खतमी के बीज एक तोला, सिरके में पीसकर लेपकरै ।

अन्य–बाकला का आटा, मुनक्का कालाजीरा प्रत्येक नो माशे खाकस्तर छुआरे की गुठली खतमी के बीज प्रत्येक तीन माशे ।

❋ तिहत्तरवां अध्याय ❋

जमाद–अंडकोष और मूत्रेन्द्रियके रोगों में गुणदायक ।

ज़माद–अण्ड कोश और मूत्रेन्द्रिय की शरदी की सूजन को गुण दायक है ।

विधि–सम्हालू के बीज, चनेका आटा, बाकला का आटा, प्रत्येक नो माशे मुनक्का पन्द्रह नग लेकर सरसों के तेल और थोडी बतख की चरबी में मिलाकर लगावें ।

ज़माद–फितक (अण्ड वृद्धि) को गुणदायक है ।

विधि–नागरमोथा, पपडिया खार, कालाजीरा

इन्द्रयन का बीज, एलुवा प्रत्येक दो माशे, जौ क
आटा बकरी की मेगनी अरमनी मिट्टी प्रत्येक च
माशे लेकर स्वच्छ सिरका मिलाकर लगावें।

अन्य--चिरोंजी, अनार का छिलका, माजूफल
अनार के फूल, कुन्दर प्रत्येक तीन माशे, बाकल
का आटा एक तोले लेकर पुरानी शराब में पीस
कर लेपकरें।

अन्य--नागरमोथा, बीजाबोल, बबूल क
गोंद, दोनामरुवा, माजूफल, कीकर का दू
कुन्दर समान भाग पुरानी शराब में पीसकर लेपकरें

लेप--इन्द्री के लिपट जाने को दूर करे।

विधि--बीजाबोल दस माशे, कड़वाकूट रेवन्द
चीनी, अफीम प्रत्येक तीन माशे, मस्तगी पांच
माशे फिटकरी पांच माशे, केशर एक माशे अंगूरी
शराब में पीसकर थोड़ा तेल मिलाकर लगावें।

ज़माद--इन्द्री के कुचल जाने को गुणदायक है।

विधि--भटवांस, एलुआ, मरमकी कीकर का
दूध समान भाग लेकर बारीक पीस कर थोड़ी मुर्गी
के अण्डे की सफेदी मिलाकर लेप करें।

जमाद--दर्द दूर होने के पश्चात् इन्द्री को
सख्त करताहै।

विधि--रसौतमकी, कीकरका दूध अनार के

माजूफल भुने हुए,मीठे अनारके बीज और छिलका. समानभाग लेकर ईसबगोलके लुआबकेसाथ-लेपकरें ।

अन्य–मीठे अनार का छिलका, सोनामाखी भुनी हुई, गेरू समान भाग लेकर लेप करें और यदि दर्द के पश्चात् राध मूत्र नाली में हो तो गुल रोगन टपकावें ।

❀ चौहत्तरवां अध्याय ❀

जमाद–गर्भाशय के रोग दूर करने वाले ।

जमाद–गर्भाशय के दर्द को दूर करै ।

विधि–केशर अफीम, खुरासानी अजवायन, प्रत्येक दो माशे,खतमी के बीज, अलसी पांच पांच माशे. एक नग मुर्गी के अंडे की ज़र्दी अध भुनी हुई लेकर लेप करें ।

जमाद–मासिक धर्म के रज के प्रवाह को जो रगों के मुख बढ़ जाने के कारण से उत्पन्न हुआ हो दूर करता है ।

विधि–अनार के फूल, सुआ सुपारी.बबूल के पत्ते, बेरके पत्ते, छुआरे की गुठली समान भाग लेकर लेप करें ।

अन्य–छिली मसुर, खट्टे अनार का छिलका, बेर के पत्ते, हरे माजू समान भाग लेकर लेप करें ।

अन्य–गुलाब के फूल. नागर मोथा,अनार के

फूल, मसूर छिली हुई. खट्टे अनार का छिलका, छुआरे की गुठली प्रत्येक चार माशे, भंग छे माशे, लेकर लेप करें ।

ज़माद-गर्भवती स्त्री के रज प्रवाहित हो जाने को बंद करता है ।

विधि-माँइ, माजूफल, अनार का छिलका, गुलनार, समानभाग लेकर स्वच्छ सिरका मिलाकर लेपकरें।

ज़माद-स्त्रियों के जिनादर्द के पेडू फूल जाने और अचेतनता हो जाने को दूर करता है ।

विधि--रूमी मस्तगी, चालछड़, प्रत्येक छेमाशे, अकलीलुलमलक, तज, कलोंजी, पहाड़ी पोदीना, सोये के बीज प्रत्येक नौ माशे, बाबूना का तेल मिलाकर छाती से टूंडी और कमर से चूतड़ तक लेप करें।

ज़माद-मरे बालक को गर्भ से निकाले ।

विधि-इन्द्रायन का गूदा, तितली के पत्ते, कडवा कूट, समान भाग लेकर बैल के पित्ते, अथवा शहत, में मिलाकर टूंडी और पेडू पर लेप करें ।

ज़माद-प्रसव की कठिनता को सुगम करे ।

विधि-अलसीएकतोले पीसकर एक तोले शहत और थोड़ा तिलका तेल मिलाकर गरम करके पेडू और नाफ़ पर लेप करें ।

❋ पचहत्तरवां अध्याय ❋

ज़माद–त्वचा के फोड़े और सोज दूर करने वाले ।

ज़माद–सोथके शुरू में मवादको बाजगश्तकरै।

विधि–रक्तचंदन, गेरू, रसौत समानभागलेकर धनेयेके पानी अथवा मकोयके अर्कमें पीसकर लेपकरें।

अन्य–गुलाब के फूल, मसूर छिली हुई, अनार के फूल, जौ का आटा समान भाग थोड़ा गुल रोगन मिला कर लगावें।

ज़माद–सोथ को बिठाता है।

विधि–खतमी के फूल, बनफशे के फूल, मसूर का आटा, समान भाग लेकर थोडा स्वच्छ सिरका मिलाकर लेप करें।

अन्य–सफेद खतमी के फूल, गुल बनफशां, प्रत्येक पांच माशे, सूखा धनिया, बाबूना के फूल, नाखूना, प्रत्येक छे माशे।

अन्य–पीला मोम छे माशे डेढ़ तोले, सरसों के तेल में मिलाकर, मुनक्का एक तोले, पीली अंजीर दो नग पीसकर मिलावें।

अन्य–बाबूना के फूल, नाखूना, अलसी, मेथी के बीज, जौका आटा समानभाग, थोड़ा गुलरोगन मिलाकर लगावें।

ज़माद–सोथ को पकाकर तोड़े।

फूल, मसूर छिली हुई. खट्टे अनार का छिलका, छुआरे की गुठली प्रत्येक चार माशे, भंग छै माशे, लेकर लेप करें।

ज़माद-गर्भवती स्त्री के रज प्रवाहित हो जाने को बंद करता है।

विधि-माँइ, माजूफल, अनार का छिलका, गुलनार, समानभाग लेकर स्वच्छ सिरका मिलाकर लेपकरें।

ज़माद-स्त्रियों के निनादर्द के पेडू फूल जाने और अचेतनता हो जाने को दूर करता है।

विधि--रूमी मस्तगी, बालछड़, प्रत्येक छैमाशे, अकलीलुलमलक, तज, कलौंजी, पहाड़ी पोदीना, सोये के बीज प्रत्येक नौ माशे, बाबूना का तेल मिलाकर छाती से टूंडी और कमर से चूतड़ तक लेप करें।

ज़माद-मरे बालक को गर्भ से निकाले।

विधि-इन्द्रायन का गूदा, तितली के पत्ते, कडवा कूट, समान भाग लेकर बैल के पित्ते, अथवा शहत, में मिलाकर टूंडी और पेडू पर लेप करें।

ज़माद-प्रसव की कठिनता को सुगम करे।

विधि-अलसीएकतोले पीसकर एक तोले शहत और थोड़ा तिलका तेल मिलाकर गरम करके पेडू और नाफ पर लेप करें।

❋ पचहत्तरवां अध्याय ❋

ज़माद-त्वचा के फोड़े और सोज दूर करने वाले ।

ज़माद-सोथके शुरू में मवादको वाजगश्तकरे।

विधि-रक्तचंदन,गेरू,रसौत समानभागलेकर धनियेके पानी अथवा मकोयके अर्कमें पीसकर लेपकरें।

अन्य-गुलाब के फूल,मसूर छिली हुई, अनार के फूल, जौ का आटा समान भाग थोड़ा गुल रोगन मिला कर लगावें ।

ज़माद-सोथ को बिठाता है ।

विधि-खतमी के फूल, बनफशे के फूल, मसूर का आटा, समान भाग लेकर थोडा स्वच्छ सिरका मिलाकर लेप करें।

अन्य-सफेद खतमी के फूल, गुल बनफशां, प्रत्येक पांच माशे, सूखा धनिया, बाबूना के फूल, नाखूना , प्रत्येक छे माशे ।

अन्य-पीला मोम छे माशे डेढ़ तोले, सरसों के तेल में मिलाकर, मुनक्का एक तोले, पीली अंजीर दो नग पीसकर मिलावें ।

अन्य-बाबूना के फूल, नाखूना, अलसी,मेथी के बीज,जौका आटा समानभाग, थोड़ा गुलरोगन मिलाकर लगावें ।

ज़माद-सोथ को पकाकर तोड़े ।

फूल, मसुर छिली हुई. खट्टे अनार का छिल
छुआरे की गुठली प्रत्येक चार माशे, भंग छे म
लेकर लेप करें।

ज़माद–गर्भवती स्त्री के रज प्रवाहित हो
को बंद करता है।

विधि–माई, माजूफल, अनार का छिलका, गुलन
समानभाग लेकर स्वच्छ सिरका मिलाकर लेप

ज़माद–स्त्रियों के बिनादर्द के पेडू फूल-ज
और अचेतनता हो जाने को दूर करता है।

विधि–रूमी मस्तगी, बालछड़, प्रत्येक छेमाशे, अ
लीलुलमलक, तज, कलोंजी, पहाड़ी पोदीना, सों
के बीज प्रत्येक नौ माशे, बाबूना का तेल मिल
कर छाती से टूंडी और कमर से चूतड़ तक लेप करें

ज़माद–मरे बालक को गर्भ से निकाले।

विधि–इन्द्रायन का गूदा, तिलली के पत्ते, क
डवा कूट, समान भाग लेकर बैल के पित्ते, अथव
शहत, में मिलाकर टूंडी और पेडू पर लेप करें।

ज़माद–प्रसव की कठिनता को सुगम करे।

विधि-अलसी एकतोले पीसकर एक तोले शहत
और थोड़ा तिलका तेल मिलाकर गरम करके पेडू
और नाफ़ पर लेप करें।

❋ पचहत्तरवां अध्याय ❋

जमाद्-त्वचा के फोड़े और सोज दूर करने वाले।

जमाद-सोथके शुरू में मवादको बाजगश्तकरें।
विधि-रक्तचंदन, गेरू, रसौत समानभागलेकर धनियेके पानी अथवा मकोयके अर्कमें पीसकर लेपकरें।

अन्य-गुलाब के फूल, मसूर छिली हुई, अनार के फूल, जौ का आटा समान भाग थोड़ा गुल रोगन मिला कर लगावें।

जमाद-सोथ को बिठाता है।
विधि-खतमी के फूल, बनफशे के फूल, मसूर का आटा, समान भाग लेकर थोडा स्वच्छ सिरका मिलाकर लेप करें।

अन्य-सफेद खतमी के फूल, गुल बनफशा, प्रत्येक पांच माशे, सूखा धनिया, बाबूना के फूल, नाखुना, प्रत्येक छे माशे।

अन्य-पीला मोम छे माशे डेढ़ तोले, सरसों के तेल में मिलाकर, मुनक्का एक तोले, पीली अंजीर दो नग पीसकर मिलावें।

अन्य-बाबूना के फूल, नाखूना, अलसी, मेथी के बीज, जौका आटा समानभाग, थोड़ा गुलरोगन मिलाकर लगावें।

जमाद-सोथ को पकाकर तोड़े।

विधि—कबूतर की बीट, मुर्गे की बीट प्रत्येक छे माशे गेंहू की रोटी का खमीर डेढ तोला, सांभर लवण दो माशे पकाकर लगावें ।

ज़माद—फोड़े को तोड़ता है ।

विधि—नीलाथोता तीन माशे हालों के बीज, हल्दी राल छे छे माशे गूगल, गुड़ प्रत्येक १ तोले ।

ज़माद—फोडे को बिठावे या तोड कर पकावे ।

विधि—मूंग का आटा, जौका आटा, लोबिया का आटा, मसूर, गेरू समान भाग सिरके और पानीमें खमीर करके गुन गुना लेप करें ।

❀ छिहत्तरवां अध्याय ❀

जमाद—(ज़रबः) चोट और (सकत) गिर पडने से चोट लगजाने को दूर करने वाले ।

ज़माद—सोथ और दर्द जरबःव सकतःको दूरकरें ।

विधि—मैदालकडी, आमला, आंबाहलदी, पंवाड के बीज, साबन, पुरानी ईंट सब समान भाग लेकर थोड़ा काले तिलकातेल मिलाकर गुनगुना लेपकरें ।

अन्य—भटवांस अरमनी मिट्टी, खतमी के बीज, एर्द, एलुवा प्रत्येक एक तोला, हलदी, सोया कुन्दर प्रत्येक छे माशे ॥

ज़माद—ज़रबः सकतः व कुचलजानेको हितहै ।

विधि—अरमनी मिट्टी छे माशे, झाऊ के पत्ता

गुलाब के पत्ता,बेरके पत्ता प्रत्येक नौ माशे ।

अन्य—हल्दी, मकोयके ताजा पत्ते, गिलेअरमनी प्रत्येक एक तोला सरसों की खल दो तोला ।

अन्य—गिले अरमनी, काले तिल, आंबा हल्दी हालों के बीज, समान भाग लेकर थोड़ा अलसी का तेल मिलाकर लेपकरें ।

ज़माद—जरबः और सकतः के निशान की स्याही को दूर करे ।

विधि—मटर का आटा, चनेका आटा, छड़ीला अलसी प्रत्येक नौ माशे, लाल बुरा छ माशे,काली मिर्च तीन माशे, थोड़ा सिरका मिलाकर लेपकरें ।

* सतहत्तरवां अध्याय *

ज़माद—विविध प्रकार के ।

ज़माद—बौंडर को दूर करे ।

विधि—बाकलाका आटा,माजूफल,खट्टे अनार काछिलका प्रत्येक एकतोला, जलमें पीसकर उसमें एकतोले मुर्गीके अण्डेका छिलका मिलाकर लेपकरें।

ज़माद—सरतान को दूर करता है ।

विधि—मसूर का आटा, अनार का छिलका, गेरू, पुराना गुड़ समान भाग लेकर सरतान के चारों ओर लगावें और कोई ओषधि न लगावें क्योंकि यही ओषधि गुणदायक है ।

ज़माद—शरीर को उज्वल करे ।

विधि–बाकला का आटा, चनेका आटा, छडीला बादाम की मागी छिली हुई, खरबुजे के बीज, खीरा ककड़ी के बीज समुद्र फेन समान भाग लेकर गाय के ताजा दूध में पीसकर थोड़ा शहत मिलाकर लेप करें और एक पहर के पश्चात् धोवें।

जमाद–कांटा आदि जो शरीरमें चुभाहो निकाले।

विधि–नकी जड़; जराबन्द गोल समान भाग पीसकर शहत मिलाकर लेपकरें।

ज़माद–घाव के सूजने के पूर्व सांप के काटे के विष को सोखले।

विधि–हाऊ बेर जंगली प्याज, जवासे, मटर का आटा, समान भाग शराब में पीसकर लेपकरें।

अन्य–जीता चिड़ा अथवा मुर्गी फाड़कर बांधें।

अन्य–काले सर्प और मेंढक का मांस समान भाग पीसकर लगावें।

ज़माद–बतोड़े को काट कर गिरावे।

विधि–सज्जी, चूना, सिंदूर, चिड़ेकी बीट, साबुन समान भाग लेकर लेपकरें और जब बतोड़ा दूर होजाय तब गाय का घी लगा कर पीपल का नर्म पत्ता बांधें कि फिर न निकले।

अन्य–बतोड़े पर पछने लगा कर साबुन सज्जी, चूना, नोसादर, सिंदूर समान भाग पीसकर तिलका

तेल मिलाकर लगावें जब सब मवाद दूर हो जाय तब घाव के भरने की तदवीर करें।

अन्य–अफीम, संखिया, नीलाथोता, सज्जी छप्पर का धुंआ समान भाग पीसकर लेपकरें

अन्य–अत्यन्त उपयोगी है।

विधि–चूक, नीला थोता, सज्जी, नौसादर, काले तिल का तेल मिलाकर लेपकरें।

ज़माद अस्प गोल–गर्मी के शोथ, गठिया के दर्द, घाव और रान, मूत्रेन्द्रिय और समस्त अवयवों के दर्द को दूर करता है।

विधि–ईसवगोल सावन और पोस्त के डोड़ा चूर्ण करके दोनों समान भाग लेकर पकावें और थोड़ा गुलरोगन मिलाकर लगावें।

❋ अठहत्तरवां अध्याय ❋

हर्फ़ तोय।

तिलाओं का वर्णन–शिर से गर्दन तकके रोग दूर करने वाले।

तिला–सर्दी से उत्पन्न आधासीसी को दूर करे।

विधि–राई एक भाग, मुनक्का दो भाग लेकर सिरके में पीस कर लगावें।

अन्य–सोंठ दो माशे, मह्दी के हरेपत्ते एक तोला, पानी में पीसकर लगावें।

अन्य–केशरएक माशे, मीठे बादामकी मींगी दो नग, दौनामरुवाके ताज़ा पत्तेके साथ पीसकर लगावें

तिला—गर्मी से उत्पन्न आधासीसी को दूर करे।

विधि—श्वेत चन्दन नीलोफर के फूल प्रत्येक एक तोला, कपूर दो माशे।

अन्य—मुचकुन्द के फूल, ताजादूब, कसेरू समान भाग पानी में पीसकर लगावें।

अन्य—गुलाब के फूल, काहू के बीज, कासनी के बीज, सूखा धनियां पानी में पीसकर लगावें।

तिला—गरमी से उत्पन्न शिरदर्द को दूर करे।

विधि—श्वेतचंदन, रक्तचंदन, नीलोफर के फूल, गुलाब के फूल, काहू के बीज, प्रत्येक तीन माशे, अफीम चार रत्ती, केशर दो रत्ती, गुलाब के अर्क में पीसकर लगवें।

अन्य—सूखा धनिया, यव, सफेद चंदन, समान भाग लगावें॥

अन्य—बनफशे के पत्ते, नीलोफरके फूल, समान भाग जल में पीसकर थोड़ा गुलरोगन मिलाकरलगावें

तिला—सरदीकी पुरानीमस्तिष्कपीडाकोगुणकरे

विधि—आमला सार गंधक एक भाग, पपड़िया खार दो भाग पानी में पीसकर लगावें।

अन्य—सफेद चंदन एक तोला लोंग पांचनग।

अन्य—अजवायन, अजमोद, सोयेकेबीज, समान भाग लेकर तिला करें।

तिला—प्रत्येक प्रकारके दर्दको हित है कारण यह है कि इसमें सुन्नकर देने की शक्ति है ।

विधि—पोस्तका डोड़ा,खुरासानी अजवायन,एक एक तोला,अफीम दो माशे जल में घिसकर तिलाकरें।

तिला—नेत्र की सुरखी को हितदायक है ।

विधि—पठानी वोध , रसौत, फिटकरी भुनी हुई, पीलीहड का छिलका, प्रत्येकतीनमाशे,अफीम एक माशे जलमें घिसकर नीम गर्मलगावें।

तिला—बालकों की नेत्रकी लालीको दूरकरै ।

विधि—फिटकरी भुनीहुई चारमाशे, रसौत चार माशे, सफेदकत्था एक माशे, अफीम एकमाशे वारीक पीस कर कागज़ीनीबू के रस में आठपहर लोहेके दिस्तेसे लोहे के वरतनमें घिसकर काममेंलावें।

तिला—कानके पीछे के सोथको दूर करै ।

विधि—रक्त चंदन,सुपारी एलुवा, समानभाग लेकर गुलाब के अर्क़ में घिसकर लगावें ।

तिला—नाक की फुन्सी को चाहे ऊपर हो चाहै भीतर, दूर करै ॥

विधि—अरमनी मिट्टी दो माशे, कपूर केशर प्रत्येक एक माशे, गुलरोगन में घिसकर लगावें ।

अन्य—मुरदासंग सिरके में घिस कर लगावें ।

तिला—गंजको दूर करै ।

विधि—कवीला, कच्चासुहागा, हल्दी, बावची.

समान भाग सरसों के तेल में हल करके लगावें।

अन्य–नीलाथोथा बुझा हुआ, काली मिर्च प्रत्येक ६ माशे, मसूर जली हुई, जमाल, अनार का छिलका, पोस्त के डोडा, कमीला समान भाग चूर्ण करके सरसों का तेल मिलाकर लगावें।

अन्य–तंहूर की ठीकरी जलाकर एक तोला नमक और छै माशे सिरके में मिलकर लगावें।

अन्य–मुरदासंग, खट्टे अनार का छिलका, माजू फल समान भाग लेकर सिरके में पीसकर लगावें।

अन्य–साबन गुलाब के अर्क में घोलकर लगावें।

तिला–बालकों के गंज को उपयोगी है।

विधि–बादाम की मींगी जली हुई, महँदी के सूखे पत्ते, कमीला प्रत्येक एक तोला, मुरदासंग छे माशे, नीला थोता काली मिर्च प्रत्येक एक माशे चूर्ण करके सिरके में घोल कर थोड़ा रोगन गुल मिला कर लगावें।

विधि–गुलाबके फूल,मसूर का आटा, मुनक्का समान भाग लेकर सिरके में घिसकर लगावे।

अन्य–एलुवा जानवरकी पुरानी हड्डी,कुन्दरप्रत्येक छे माशे,तितली३माशे; सिरकेमेंपीसकरलगावें

अन्य–अत्यन्त गुण दायक है।

विधि–कागज़ी नीबू में पिसीहुई हल्दी भरकर एक सप्ताह पर्यन्त रख छोड़ें फिर सरकंडे की ताजा जड़के साथ पीसकररातकोलगावें औरसुबहकोधोवें।

अन्य–छड़ीला तीन बार खरबूज़े के रसमें तसकिया (देखो पृष्ठ १२ नम्बर २४) किया हुआ दो तोला, मसूर का छिलका, सरकण्डे की जड़का छिल का प्रत्येक छे माशे पानी में पीसकर लगावें।

तिला–मुहासे को दूर करे और रंगको निर्मलकरें

विधि–जौ छिले हुए आधपाव लेकर पावभर गायके दूधमें जोश करके सुखाकर रख छोड़े और उनमें से थोड़े जौ लेकर उसमें थोड़ी हल्दी मिला कर दोनों को पीसकर तिला करें।

अन्य–सौसन के पत्ते, नीम के पत्ते, सिरस के पेड की छाल, थोडी थोडी घिसकर लगावें।

❋ उन्यालीसवां अध्याय। ❋

तिला–गर्दन से पेड़ू तक के रोगों में गुणदायक।

तिला–वमन को बंदकरे।

जायफल एक नग अफीम नौ मासे, सब को चूर्ण करके बडे गोंद की पत्ती दो तोले मिलाकर एक दिन खरल करें उसके पश्चात् धतूरे के ताजा पत्ते का रस मिलाकर खरल करके गोली बना रक्खें आवश्यकता के समय दो आतिशा शराबमें घिसकर सुपारी छोडकर तिला करें और ऊपरसे पान बांधें।

तिला-हकीम शेरअली का बनाया हुआ है नपुंसक और नामर्द के लिये हितदायक है।

विधि-सफेद कनेर की जड का छिलका,सफेद घुंघची प्रत्येक आध पाव, कड्वा कूट, जमालगोटा प्रत्येक दो तोले, चूर्ण करके पंद्रह सेर गाय के दूध में खूब मिलाकर पकावें और दही जमाकर सुबह को चार सेर पानीमें डाल कर मक्खन निकालें और दही को पृथ्वी में गाढ़दें क्यों कि वह विषैला हो जाता और मक्खन को ताकर रक्खें और इन्द्रीपर उसको तिला करके पान बांधे और एक रत्ती पान के साथ खाया करें। दो सप्ताह के सेवन करने से पूरा आराम हो जायगा।

तिला-रानकी जड़की सूजन को दूर करे।

विधि-रक्त चंदन, गुलाब के फूल, चीनारसोत, सुपारी प्रत्येक छै मासे, केशर दो मासे, ताज़ा

धनिये के जल अथवा मकोयके ताजा पत्तों के रस में पीस कर तिला करे ।

अन्य—रक्त चन्दन, गिले अरमनी, रसोतएलुआ, कीकर का दूध प्रत्येक नो माशे, अफीम एक माशे, केशर चार रत्ती, मकोय के ताजा पत्तोंके रस अथवा काशनी में पीसकर तिला करें ।

तिला—उपदंशके घाव चरब फुनसियोंकोदूरकरे ।

विधि—हरतल, पारा, प्रत्येक तीन माशे, खुरासानी अजवायन एक तोला, गायका घी दो तोले. लेकर नीमके दस्तेसे फूलके बरतनमें घोटकर लगावें।

❀ इक्यासीवां अध्याय ❀

तिला—गुदा के रोग दूर करने वाले ।

तिला—बवासीर के दर्द को आराम करने में अद्वितीय और उपयोगी है ।

विधि—नरमा कपास के ताज़ा पत्तों के रस में आंबा हल्दी घिसकर तिलाकरें और सूख जानेपर दुबारा तिबारा तिला करें ।

तिला—बवासीर और भगन्दर को उपयोगी है ।

विधि—केंचुए को गधे के रुधिरमें पीसकर सुखा कर रक्खें आवश्यकता के समय परवान वेदके काढे के जल में घिसकर लगावें ।

अन्य—बैगनकी डीप और कडवा बादाम समान

भाग पीस कर गुल रोगन मिला कर लगावें।

अन्य–डगर के क़ब्ज़ की हड्डी गुलाब के अर्क में घिसकर तिलाकरें।

अन्य–बकायन के बीज की मींगी,निबोली की मींगी रसोत पानमें घिसकर लगावें।

अन्य–आलू के बीज की मींगी, मीठे कद्दू के बीज की मींगी, बकरी के दूधमें घिसकर लगावें।

* व्यासीवां अध्याय *

तिला–हाथ पैरऔर जोडो के रोग दूर करने वाले।

तिला–हाथ पैरकी सूजनको.जो बडी बीमारी में उत्पन्नहो जाती है दूर करती है।

विधि–कीकर का दूध, शियाफ मामीसा,बीजा बोल, नागरमोथा, केशर, रसोत, गिले अरमनी, समान भाग लेकर सिरके और मकोयके ताजा पत्तों के रसमें पीसकर तिला करें।

अन्य–समुद्र फेन, लाहोरी नमक,बूरए अरमनी, कच्चा अगर, नरकचूर, एलुवा समान भाग सिरके और गुलाब के अर्क में पीसकर लगावें।

अन्य–अरमनी मट्टी, मकोय के ताजा पत्ते, सोंठ समान भाग पीसकर थोडा सिरका और गुल रोग़न मिला कर लगावें।

तिला–छाजन और हाथ पैरके कट जाने को दूर करे।

विधि-बलायती साबुन गुलाबमें घिसकर लगावें।

अन्य-पारा, अजवायन, कत्था प्रत्येक एक तोला, गायका घी छे तोला तांबे के बरतनमें नीम की लकड़ी से रगड़ कर लगावें।

अन्य-सरेस दो तोला, थोडा पानी डाल कर आग पर पिघलाकर हरताल, एलुवेका चूर्ण प्रत्येक छे माशे तरबूजके बीजकी मींगी, एक तोला मिला-कर मरहम बनाकर लगावें।

तिला-एडीके फटने और दर्द को दूर करे।

विधि-बड़ा इन्द्रायन का फल एक नग, सुरं-जान कडवा एक तोला, ताजा मेंहदी के पत्ते नो माशे पानी में पीसकर थोडा कडवा तेल मिलाकर, गुन गुना लगाकर बांधें।

तिला-हाथ पेरों और जोड़ोंके कडापनको दूरकरे

विधि-बतख की चरबी, मुरगे की चरबी, गाय अथवा बकरी के सींग कगूदा, प्रत्येक एक तोला च-मेली का तेल दो तोला खरल करके लगावें।

अन्य-बकरी के दूध का ताजा मक्खन लेकर उसमें पिसा हुआ लाहोरी नमक मिलाकर लगावें।

तिला-नख से छिलका उखड़ने को दूर करे।

विधि-मस्तगी छे माशे लाहोरीनमक एक माशे लेकर चमेली के तेलमें खरल करके लगावें।

* तिरासीवां अध्याय *

तिला-सुन्न, कोढ़, सफेद दाग और त्वचा के अन्य रोगों को दूर करने वाले।

तिला-अवयव के सुन्न होजाने को दूर करै।

विधि-पारा, बच्छनाग तीन तीन माशे, धतूरे के बीज जले हुए दोतोला, काली मिर्च एक तोला आक के पत्ते के दूध में खरल करके तिलाकरें।

अन्य-अकरकरा,मुनक्का,पोदीना समान भाग पुराने सिरके में पीसकर लगावें।

अन्य-बीजाबोल एलुवा, समान भाग लेकर ताजा पोदीने के जल में घोटकर लगावें।

तिला-थोडेदिन लगानेसे कोढकोदूर करताहै।

विधि-चीता,अकरकरा, रसोत, राई, भुनी कलोंजी समान भाग लेकर बकरी के रुधिर में गोली बनारक्खें और बकरीके ताजा रुधिर अथवा खारी जलमें घिसकर लगावें।

अन्य-मूली के बीज, नेक छिकनी, कडवे बादाम की मींगी चीता, हरताल, असंबर,कालाकूट, अखरोट का छिलका, समान भाग बारीक पीसकर तेज शराब में हल करके लगावें।

अन्य-तेलन, शहद, भिलावा, मूली के बीज,

चीता, कबूतर की बीट समान भाग लेकर सिर के में घोटकर लगावें। यह तिला घाव द्वारा पुरे मवाद को निकाल कर अच्छा करता है।

अन्य–राई,कलोंजी, चूरए अरमनी,गंधक, कनेर की जड समान भाग लेकर स्वच्छ सिरके में पीस कर लगावें।

अन्य–अंजीर की जड़ का छिलका, आमला, प्रत्येक दो तोला, बगची एक तोला लेकर ढाकके फूल स्याही और सुरखी सहित का काढा करके उसमें गोली बनावें और तिला करें।

तिला–कोढ और छाजन को दूर करता है।

विधि–अलसी,तरातेजक के बीज, राई सिरकेमें पीसकर तिला करें।

अन्य–चिरोंजी और चने का आटा सिरके के साथ तिला करें।

अन्य–शराब का तिलछट, सिरका और गंधक मिलाकर तिल करें।

अन्य–चूका की जड़ सिरके में पीसकर तिलाकरें

तिला–कोढ कोदूर करे।

विधि–हरताल, गंधक, फिटकरी, समान भाग पीसकर सिरका और शहत मिलाकर लगावें।

अन्य–कडवे बादाम की मींगी, भटवांस, स
बीज, लटजीरे का बीज, करमकल्ले का बीज
तेजक कडवी कूट, चितावर समानभाग लक
के में घिसकर तिला करें।

अन्य–चितावर का छिलका, सरकंडे क
नीबूके रस में घिसकर लगावें। जब घाव हो
नीम का तेल लगावें कि जल्द घाव भरकर
खाल आजाय।

तिला–सफेद दाग को दूरकरै।

विधि–चीता, मूली का बीज, नकछिकनी
समान भागलेकर सिरके में पीसकर लगावें

अन्य–मूली के बीज दस माशे, कडवा
नकछिकनी पांच पांच माशे, अंगूरी सिरके में
कर लगावें।

तिला–अकौटे को दूर करने में उपयोगी

विधि–सुपारी चार नग भिलावा चार नग म
शिर की पुरानी हड्डी डेढ तोला, लेकर सबको
की लीद में पृथक २ जला कर कोयला करे
पृथक २ सुरमासा बारीक पीसकर करवा
नीला थोता एक ... पीसकर
गोमूत्र में मिला

अन्य—जला हुआ कुचला एक तोला, फिटकिरी नीलाथोता कत्था प्रत्येक छे माशे गौ घृत एक छटांक में मरहम के सदृश बनाकर लगावें।

अन्य—छै तोले बगची के बीज जो कुट करके आधपाव गाय के दूध की पुट दें और कपास के पेड़ की छाल, खट्टा कच्चा अनार डेढ डेढ तोला लेकर सबको पीसकर गोली बना रक्खें और मकोय के ताज़ा पत्ते के रसमें घिसकर तिलाकरें।

अन्य—सुपारी, हल्दी, बगची, मसूर, पोस्त के डोरा सब जले हुए एक एक तोला, सफेद राल, भुना सुहागा, भुनी फिटकिरी, पपाडिया कत्था प्रत्येक छे माशे, काली मिर्च तीन माशे, सबको बारीक पीसकर सरसों के तेल में मिला कर लगावें और दो चार दिन ढाक का पत्ता सेक कर बांधे फिर खुला रक्खें।

❋ चौरासीवां अध्याय ❋

तिला—खुजली और दाद का दूर करने वाले।

तिला—सूखी और तर खुजली को दूर करे।

विधि—गंधक, पारा, नीलाथोता, हरताल, बगची समान भाग लेकर द्विगुण कडवे तेलमें खरल करके तिला करें।

अन्य—पारा, चांदी की मूस, गंधक कनेर के

पत्ते जले हुए नकछिकनी. मुरदासंग, कबीला हल्दी नीलाथोता, प्रत्येक एक तोला, सफेद कत्था नौ माशे, महेंदी के ताजा पत्ते दो तोला, सरसोंके तेल में खरल करके लगावें।

अन्य–सीसे की भस्म तीन तोला, गंधक दो तोला, हरताल एक तोला, पारा एक तोला, सिरके मे खरल करके लगावें।

तिला–मूत्रेन्द्रिय की खुजली और छालों के चिन्हों का दूर करे।

विधि–पारा तीन माशे, कडवे बादाम की मींगी छे माशे, खरबूज़े के बीज नौ माशे. सिरकेमें घिस-कर रात को तिलाकरें और सुबह को धोडाले।

तिला–दाद को दूर करे।

विधि–पंवाड के बीज. आमला. कच्चीलाख. काला ज़ीरा समानभाग चूर्ण करके पानी में घिस-कर दाद को खुजा कर तिलाकरें

तिला–दाद के दूरकरने में अत्यन्त उपयोगी है

विधि– पंवाडके बीज. नौसादर, सफेदकत्था हल्दी कली का चूना नैनुआ गंधक समानभागलेकर कागची नींबूके रसमें गोली बनाकर रक्खें और आवश्यकता के समय नीबू के रस अथवा जल में घिसकर ल-गावें और हिन्दी कहावत है।

आरू बीज पवाड के, नौसादर और खैर ।
हल्दी चूना मैनुआ, करैं दाद सों बैर ॥

❀ पिच्यासीवां अध्याय ❀

तिला—कामदेव और मूत्रेन्द्रिय को बलदेने वाले स्तंभन करनेवाले रोकने वाले और चित्त प्रसन्न करनेवाले ।

तिला—कामदेव और यकृत को बलदे ।

विधि—सफेद राल आधसेर, सफेद चंदन का बुरादा पावसेर, सफेद लोबान आधपाव लौंग दो तोला, लेकर विधि अनुसार चोआखेंचें और यकृत और मूत्रेन्द्रिय पर लगावें ।

तिला—कामदेव को प्रबल करे ।

विधि— सिंदूर, हरताल तबकी, पारा, कमीला अकरकरा, प्याज, नरगिस, दारचीनी, समानभाग बैल के पित्ते में खरल करके तिला करें ।

तिला—मूत्रेन्द्रिय की सुस्ती को दूर करे ।

विधि—पीपरा मूड़.कड़वाकूट, असगंध नागौरी समानभाग सुरमासा करके गायके मक्खन में मिलाकर लगावें ।

तिला—इन्द्रीको बलवान और मोटी करे ।

विधि—असबंद अरंड के बीज की मींगी समानभाग चमेली के तेल में खरल करके लगावें ।

तिला—मूत्रेन्द्रियको मोटा और बड़ाकरे ।

विधि—बड़ी कटाई के फल पके हुए,मोंफ अस-

चंद कडवा कूट, असगंध समान जल में पीसकर चंद बार तिला करें और बांधें ।

तिला—कामदेवको बलदे और स्तम्भन करे ।

विधि—आककी जडका छिलका दो तोले, कुचला एक तोले, सफेद कनेरकी जडका छिलका चार तोले, रसकपुर छे माशे सबको बैल के पित्ते में घिसकर वत्तीबनाकर रक्खें और आवश्यकता के समय पोस्त खशखाश के जल में घिसकर लगावें ।

तिला—संसर्ग में चित्तको प्रसन्न करे ।

विधि—अक्करकरा, सुहागा कच्चा, कपूर समान भाग सुरमासा करके शहत में मिलाकर तिला करें और थोडी देर बाद कपडे से पोंछ कर संसर्ग करें ।

तिला—प्रसंग की लज्जत और बल विशेष करे

विधि—शेरकी चर्बीमें थोडे उटंगनके बीज मिलाकर तिलाकरें और थोडीदेर बाद पोंछकर संसर्गकरें

तिला—स्त्री को शीघ्र स्खलित करे ।

विधि—कच्चा सुहागा, और कपूर समान भाग शहत में मिलाकर तिलाकरें और संसर्ग करें ॥

छियासीवां अध्याय ।

तिला—केशों के सम्बन्ध में ।

तिला—बालखोरा को दूर करता है ।

विधि—काले बकरे का सुमजला हुआ, गधे का

खुरजला हुआ,प्रत्येक छे माशे,मक्खीका शिर तीन माशे, सरसों के तेल में घिसकर लगावे ।

अन्य--नकछिकनी अंडेकेतेलमें मिलाकरलगावें

अन्य--समुद्रफेन, नेकी जड का छिलका, मूसे की मेंगनी कड़वे बादाम की मींगी समानभाग लेकर सरसों के तेल में खरल करके लगावें ।

अन्य--हाथीदांत का बुरादा, मक्खी की मेंगनी समानभाग लेकर अंडे का तेल मिलाकर लगावें ।

अन्य--बकरी के बाल जले हुए,बकेरके बाल जले हुए आंवला सार,गंधक समानभाग सरसों के तेल में घिसकर त्वचा को प्याज से खुजाकर तिलाकरें ।

तिला -डाढ़ी मूछ के बाल जमावे ।

विधि--समुद्रफेन, कड़वे बादाम की मींगी, समान भाग सरसों के पुराने तेल में अथवा अंडे के तेल में घिसकर लगावें ।

तिला--समस्त प्रकारकी जूंआंको मारता है ।

विधि--एलुवा, हरताल, समानभाग रोग़न गुल में घोलकर लगावें ।

अन्य--चमेली के तेल मे पारा घिसकर लगावें और बालो को कपड़े से बांधें ।

अन्य--भटवांस के बीज,खरबूजे के बीज, लौंग

प्रत्येक एक तोला, नीलाथोता छे माशे जलमें घि-सकर लगावें और दो पहर के पश्चात् धोवें।

अन्य—बाकलाकाआटा,मसूरकाआटा,भटवांस का आटा,समान भाग पानी में घोलकर लगावें।

अन्य—सीताफल के बीज की मींगी, और खिरनी के बीज की मींगी समान भाग लेकर जलमें पीसकर लगावें।

सत्तासीवां अध्याय

तिला—सोथ, फुंसी, चोट, और गिरपडने आदिकी चोट को दूर करने वाले।

तिला—जलन सहितफुंसी और तरफुंसीको दूरकरें।

विधि—रक्तचंदन, सुपारी, गिलेअरमनी, समान भाग हरेधानिये के जल अथवा मकोयके पत्तों के रसमें पीसकर तिलाकरें।

तिला—जो जलन होनेवाले सोथको दूरकरे।

विधि—श्वेतचंदन, रक्तचंदन, सूखा धनिया, एक एक तोला, जोका आटा दो तोला, गिलेअरमनी छे माशे, पानी में पीसकर लगावें और तर कपड़ा उसपर रक्खें।

तिला—अवयव के कुचल जाने, टूटजाने और सोथ को दूर करे।

विधि—अरमनी मिट्टी, सुपारी, सफेद चंदन,

प्रत्येक एक तोला, रसौत, मुर्दासंग, एलुवा, प्रत्येक छै माशे लेकर मकोय के ताज़ा पत्तों के पानी में पीसकर तिला करें।

तिला—चोट लगजाने को दूरकरै।

विधि—एलुवा तीन माशे, खतमीके बीज बनफ़शेकेपत्ते, सफेद चंदन, रक्तचंदन, भटवांस, नाखूना प्रत्येक छे माशे, चूर्णकरके मुर्गी के अण्डेकी सफेदी मिलाकर गुनगुना लगावें।

अन्य—काले तिलकी खल, सरसोंकी खल, गेहू प्रत्येक एक तोला, संभालू के पत्ते, मकोय के पत्ते, प्रत्येक डेढ़ तोला, पानी में पीसकरनीमगर्म लगावें।

तिला—चोटके लगजाने के असर को दूर करै अंगके रंग को साफ करे।

विधि—बारह सींगे के सींग की भस्म तीन माशे, कुन्दर तीन माशे, भटवांसका आटा, बाकलाकाआटा प्रत्येक नोमाशे नौसादर बबूलकागोंद, प्रत्येक छे माशे कड़वे बादाम की मींगी एक तोला, जल में पीस कर लगावें।

अन्य—कड़वे बादाम की मींगी, पुरानी हड्डी एक एक तोला, सीपी जली हुई, समुद्रफेन पीली फिटकरी प्रत्येक छे माशे पानी में पीसकर लगावें।

तिला—अधिक मांस को बैठावे।

विधि—हरताल, कालीकुटकी, प्रत्येक पांच माशे, तांबे का मैल दस माशे, गुलरोगन में खरल करके लगावें।

तिला—आग्नि से जले हुए को अच्छा करें।

विधि—मसूर चार तोला, पानी में पकाकर एक तोला गुलाब के फूल मिलाकर पीसकर लगावें और पन-कपड़े से तर रक्खें।

अन्य—मुर्गी के अंडे की सफेदी गुलरोगन में मिलाकर लगावें।

अन्य—मदिरा बांधे।

तिला—विषैले जानवरोंकेकाटनेके विषको दूरकरे

विधि—हींग गंधक पोदीना के पत्ते, कबूतर की बीट सबको पीसकर लगावें।

* अट्ठासीवां अध्याय *

हर्फ ऐन

अर्क—दोषों को मातदिल और शोधने वाले

अर्क—रुधिर में जोश आजाने और जलजाने को व खुश्की, जलन, तर और शुष्कखाज, और फुन्सियों को दूर करे।

विधि—पित्तपापडा, आमला, चिरायता सरफोका, गुलमुन्डी, जलनीब, शीशम का बुरादा, कचनाल नीम और बकायनकी छालका भीतरका छिल्का,

महँदी के बीज, चोबचीनी उन्नाब प्रत्येकदस तोले, सफेदचन्दन का बुरादा, लालचंदन का बुरादा खस, सुखाधनिया गावज़बांकेपत्ते, बिल्लीलोटन, उस्त खुद्दूस, कालीहड. कसूमके फूल, नीमकेफूल, बकाय नकेफूल, बहेड़ी, आबनूसका बुरादा, एक एक छटाक लेकर विधि अनुसार अर्क खेंचे।

विदित हो कि इन औषधियों में से यदि थोड़ी औषधियों का भी अर्क इसी वजन से तय्यारकिया जाय तो भी यही गुण रखता है।

अन्य–गुलमुंडी, पित्तपापड़ा प्रत्येक २० तोला चोबचीनी खस प्रत्येक दस तोला, काबली हड, आमला, खतमी के फूल, गुलाब के फूल, प्रत्येक एक छटांक, चारसेर जलमें भिगोकर बड़ा कद्दू कतरा हुआ डेढ सेर पेठा कतरा हुआ तीनपाव लेकर सब को तीन सेर गायके दूध में डालकर पांचसेर अर्क खेंचें।

अन्य–छड़ीला, बिल्ली लोटन, कासनी के बीज, कसौंदी की जड़की छाल, कासनी की जड़की छाल, आवरेशमकच्चा प्रत्येक एक छटांक, आमला, कचनारके भीतर की छाल खस गोंदनी की छाल जलनीब, मुन्डी नीलोफर के फूल, गुढहल, चोबचीनी कसूम के फूल, प्रत्येक आधपाव, दस सेर जल में भिगोकर तीनसेर नीम का जल जो

पेड़ से टपकता है डालकर सात सेर अर्क खेंचें।

❀ नवासीवां अध्याय ❀

अर्क–चित्त प्रसन्न करने वाले बलदायक और रोगोंके दूर करनेवाले

अर्क चोबचीनी–निर्बल को बलवान करै काम शक्ति को विशेष बलिष्ट करै और मिराकी माली खोलिया को हितदायक है।

विधि–चोबचीनी, तीन पाव, दारचीनी पाव सेर, कबाब चीनी, लौंग, नागर मोथा, तेजपात, अगर, बहमन सफेद, बहमन सुर्ख, नरकचूर, कुली जन, जटा मांसी, छड़ीला, चन्दन चूरा प्रत्येक आध पाव, गावज़बां के पत्ते, बिल्लीलोटन प्रत्येक पाव भर, छोटी इलायची, जाय फल, जावित्री, दरूंज अकरबी, सालबमिश्री, रूमी मस्तगी, प्रत्येक तीन तोला, मुनक्का पांच सेर, निर्मल शहद दो सेर, लेकर सब औषधियों को दो दिन रात नदीके जलमें भिगोकर आध पाव गुलाब के फूल डालकर पन्द्रह सेर अर्क खेंनें और छे माशे केशर की पोटली बना कर नइचे के मुख पर भवके के भीतर लगावें।

अर्क गुल सैंमल–बल दायक, पुष्ट कारक, आनन्ददायक और उन्मादक है।

विधि–सैंमल का फूल हरियाली दूर किया हुआ गुलाब के फूल, मुण्डी के फूल, सब छाया में सुखाये

हुए प्रत्येक आध सेर, चमेली के ताजा फूल आध सेर लेकर विधि अनुसार अर्क़ खींचें।

अर्क़ गाजर—चित्त को प्रसन्न करने वाला और पुष्ट कारक है।

विधि—गाजर भीतरका डांठला दूर की हुई और छिली हुई पच्चीस सेर, किशमिश पांच सेर लेकर ढकने दार देगची में जोश देकर देगची को ठण्डी करें कि उसका धुआं न निकले फिर दालचीनी जो कुट की हुई, गुलाब के फूल, नागर मोथा, बिजोरे का छिलका, चोबचीनी जो कुट की हुई, बहमन सफेद जो कुट की हुई, प्रत्येक आध पाव सफेद चंदन एक छटांक, छोटी इलायची दो तोले मिलाकर अर्क़ खींचें।

अर्क़ पान—आमायश की पीड़ा, पेट का दर्द और वायशूलको दूर कर के कामशक्तिको प्रबल करता है।

विधि—ताज़ा बंगला पान पांचसौ नग, ताज़ा पोदीना आध पाव, कुलीजन एक छटांक, लौंग तीन तोले, छोटी इलायची एक तोले लेकर विधि अनुसार तीन सेर अर्क़ खींचें।

अर्क़—फरहत देनेवाला और हृदय और मस्तिष्क को बलदायक है।

विधि—गाजर का डंठल और छिलका दूर कर के कोल्हू में पिराकर उसका रस पन्द्रह सेर किशमिश

आमलेका मुरब्बा गुठली निकला हुआ प्रत्येक एक सेर लेकर अर्क़ खींचें।

अर्क़ गुड़हल—ताक़त देने वाला, कामशक्ति को उत्पन्न करने वाला और तबियतको फरहत देनेवाला है

विधि—गुढहलके ताज़ा फूल जीरा और सब्जी दूर किये हुए सवासेर, किशमिश आध सेर, दारचीनी एक छटांक, सालव मिश्री चार तोले लेकर अर्क़ खींचें।

अर्क़ कपूर—गरमी के ज्वर और विषमज्वर को हितदायक है।

विधि—धनिया सूखा हुआ, गावज़बां के पत्ते, श्वेत चन्दन, रक्तचन्दन, कासनी के बीज, खीरा ककडी के बीज, काहु के बीज, कुलफेके बीज, बनफशे के पत्ते नीलोफर के फूल, गुलाब के फूल, प्रत्येक एक छटांक ताजा कद्दू तराशा हुआ तीन पाव, पेठा तराशा हुआ डेढ़पाव, कपूर पांच तोले लेकर अर्क़ खींचें।

अर्क़ शीर—पित्तज्वर, वातज्वर और विषम ज्वर को गुणदायक है।

विधि—गावज़बां के पत्ते, बनफशे के पत्ते, नीलोफरके फूल प्रत्येक आधपाव, श्वेतचन्दन एक छटांक लेकर गाय का दूध सात सेर मिलाकर अर्क़ खींचें।

करा, सूखा पोदीना, बाबूना के फूल, उस्तखुद्दूस, ऊदसलीब, छे छे माशे, लौंग दस नग जलमें भिगो कर जोशदेकर उसके गुनगुने जलसे गरगरा करें।

अन्य–गले का काग ढीला होने को दूर करे।

विधि–मसूर, गुलनार, नाखूना, माई, महँदी के पत्ते, पीली हड़, समानभाग जोशकरके गरगराकरें।

अन्य–नजले से उत्पन्न गलेके सोथको दूर करें।

विधि–सूखाधनिया, पोस्त के डोड़ा, गुलनार मकोय प्रत्येक छेमाशे जोशकरके छानकर उसमें दो तोले अमलतास का गूदा मल कर फिर छानें और तीन माशे रसौत मिलाकर गरगरा करें।

अन्य–गलेके भीतर के सोथ को दूर करे।

विधि–अलसी, मेथीके बीज नौनौ माशे, पीली अंजीर पांच नग, उन्नाव, लिहसौडे प्रत्येक पन्द्रह नग, मुनक्का बीस नग, पोदीना, दौनामरुवा छेछे माशे जोशकरके गरगरा करें।

अन्य–कंठकी कड़ी सोथ को दूर करे।

विधि–बारतंग के पत्ते, अजमोद, मुलहटी जोकुट, खतमी के बीज जौकुट, मकोय, गुल बनफशा, नीम के पत्ते, खुब्बाजी के पत्ते, नाखूना, समान भाग बकरी या गायके दूधमें जोश करके साफ करके थोडा गेहूं का निशास्ता मिलाकर काम में लावें।

अन्य-कण्ठ के सोथ को तोड़े।

विधि-मेथी छे माशे, अंजीर पांच नग, उन्नाब १५ नग, जोश करके मलकर साफकरें और गाय का दूध एक छटांक, गेहूं के आटे का खमीर दो तोले हल करके ग़रग़रा करें यदि दो तीन दिनके सेवनमें नटूटे तो कच्ची फिटकरी छेमाशे पीसकर मिलावें।

अन्य-सोथके टूटने के पश्चात् मवादको निकाले।

विधि-जटामांसी,पोदीना, मकोय,उन्नाब बीज निकले हुए सात सात माशे, जोश करके सिरका एक तोले शहत दो तोले मिला कर ग़रग़रा करें।

ग़रग़रा-कंठकी सूजन को दूर करे।

विधि-बकरी के दूध में गेहूं के आटे का खट्टा खमीर हल करके ग़रग़रा करें।

अन्य-कण्ठ के कड़े सोथ को दूर करे।

विधि-मकोय के पत्ते, काहू के पत्ते, कासनी के पत्ते, धनिये के पत्ते का रस पृथक २ समान भाग निचोड़ कर उस में ताज़ा शहतूत मलकर अथवा रुब्बेतूत घोलकर ग़रग़रा करें।

अथवा-मेथी अलसी, दालों नौ नौ माशे जोश करके ग़रग़रा करें।

अथवा-महँदी के पत्ते, गुलनार, हल्दी एक एक

तोला, बेर के पत्ते, शहतूत के पत्ते, तीन तीन तोला जोश करके गरगरा करै।

अथवा—गोंदनी की छाल, चमेलीकी जड़, सेवती के फूल समान भाग जोश करके साफ करके थोड़ा कत्था मिलाकर गरगरा करें।

दृष्टव्य—यदि कोई गरगरा उपयोगी न हो तो मवाबील की बीट भेड़िये की लीद, अमलतास का गूदा प्रत्येक दो तोले जोश कर के साफ करें और रोगी को बिना जताये गरगरा करावें।

गरगरा—तालुवे के छिद्र को जो उपदंश अथवा मवाद के उतरने से हो जाता है दूर करे।

विधि—पोस्त के डोड़ा, सूखा धनिया, गुलनार काली हड़, हब्बुल्लास, जंगली बेरके पत्ते, गुलाब के फूल, मँहदी के पत्ते, छे छे माशे, माईं माजूफल, पांच पांच माशे, जोश करके रसौत गिले अरमनी तीन२ माशे मिलाकर गरगरा करें।

अन्य—कण्ठ के भीतरी दर्द को दूर करे।

विधि—मॅहदी के पत्ते, गुलनार, हल्दी, बेर के के पत्ते, गोंदनी के जड़ की छाल, चमेली की जड़ सुपारी, समान भाग जोश करके गरगरा करें।

अन्य—गुलनार, पोस्त के डोडा, सफेद चन्दन, रक्त चन्दन छे छे माशे, मसूर साबित, एक तोला जोश देकर गरगरा करें।

अन्य-अरहर के ताज़ा पत्ते, बेर के पत्ते, शहतूत के पत्ते, चमेली के पत्ते, पोस्त के डोडा, समान भाग जोश करके गरगरा करें।

❋ बानवेंवां अध्याय ❋

गुमरह व गालिया का वर्णन।

गुमरह वह वस्तु है जो उबटने के सदृश मुख पर तथा समस्त शरीर पर लगाई जाती है। गालिया वह वस्तु है कि सुगन्धित वस्तुओं को एकत्रित कर के किसी लाभ के अर्थ सूंघें अथवा शरीर पर लगावें।

गुमरह-मुख को स्वच्छ व निर्मल करे।

विधि-छिले हुए जौ चार भाग, खरबूज़े के बीज, बाकला का आटा, चिरोंजी दो दो भाग रात को लगावें सुबह को धोडालें।

अन्य विधि-जौ का आटा, चनेका आटा, मसूर का आटा, महँदी के सूखे पत्ते, एक एक तोला केशर एक माशे पीसकर रातको लगावें सुबहको धोडालें।

गुमरह-शरीर की त्वचा को खुशरंग नर्म और सुगन्धित करे।

विधि-श्वेत चन्दन, रक्त चन्दन, अगर, तगर, प्रत्येक छे माशे केशर तीन माशे चिरोंजी चार तोला पानी में पीसकर गेंहूं की मैदा आधपाव और दो तोले चमेली का तेल मिलाकर लगावें।

अन्य विधि-महँदी के ताज़ा या सुखे एक छटांक पत्ते पानी में पीस कर, दो तोले रक्त चन्दन, तीन

तोले चिरोंजी, दस तोले गेहूं का मैदा, और दो तोले बेला का तेल मिलाकर लगावें।

ग़ालिया—मस्तिष्क और हृदय को बल दे और विक्षिप्तता को दूर करे।

विधि—अम्बर अशहब दो माशे, अगर आठ माशे, सफेद चन्दन एक तोला, कस्तूरी एक माशे, पीसकर गुलाबके अर्क़में मिलाकर सूंघें तथा शरीरपर लगावें।

अन्य विधि—सफेद चन्दन नौ माशे, नागरमोथा बालछड़ छै छै माशे, केवड़े के अर्क़ में पीसकर गुलाब का इत्र मिलाकर सेवन करें।

अन्य विधि—सूखा धनिया, गुलाबके फूल, सफेद चन्दन का बुरादा, एक एक तोला, पीसकर गुलाबके अर्क़ में सान कर उस में केवड़े अथवा खस का एक माशे इत्र मिलाकर काम में लावें।

* तिरानवेवां अध्याय *

इफ के

फ़तीलजात का वर्णन।

फ़तीला—कान के व्रण को दूर करे।

विधि—बैल का पित्ता दो भाग, एक भाग स्वच्छ शहत में मिलाकर उस में बत्ती भिगोवें और कान में इस प्रकार रक्खें कि व्रण तक पहुंच जाय।

अन्य विधि—शहत में बत्ती भिगोकर उसपर कच्ची फिटकरी छिड़क कर कान में रक्खें।

फतीला—कान के दर्द और रतुबत और मैल आने को दूर करे।

विधि—कागज़ जले हुए और शहत, मुर्गी के अंडे की जर्दी में मिलाकर बत्ती भिगोवें और फिटकिरी एलुवा और दम्मुल अखवैन पीसकर उसपर बुरकें

अन्य--नीमका तेल, और शहत मिलाकर उस में बत्ती तर करके कान में रक्खें।

❀ चौरानवेंवां अध्याय ❀

फुरजजा का वर्णन

फुरज़जा—मरे बालक को गर्भ से निकाले और रज को प्रवाहित करे।

विधि—इन्द्रायन के फल का गूदा, कांली कुटकी मुनक्का, नौसादर, बीजा बोल, समानभाग पीसकर वेद अंजीर के तेल और बैलके पित्ते में मिलाकर उसमें बत्ती भिगोकर योनिमें रक्खें॥

फुरज़जा--रज को प्रवाहित करे।

विधि—तितली, बीजा बोल, हाऊबेर, सौंफ, कर्नौचे के बीज, समान भाग बैल के पित्ते के साथ मिला कर उस में बत्ती भिगोकर रक्खें।

फुरज़ज--रज को बंद करे।

विधि–कपूर, बबूल का गोंद समान भाग जल में पीसकर उसमें बत्ती भिगो कर योनिमें रक्खें।

अन्य–सुरबासंग, गुलनार, अरमनी मिट्टी, सुरमा समान भाग।

अन्य–माजू जले हुए, दम्मुलअखवेन, बर के पत्ते, अरमनी मिट्टी, गुलाब के फूल, पीसकर उस में वह कपड़ा जो अनार के छिलके के जोशांदे में तर किया हुआ हो सानकर रक्खें।

फुरज़जः–योनी को संकुचित करे।

विधि–बबूल का दूध, नागरमोथा, बालछड़, समान भाग पीसकर वह कपडा जो अनारके छिलके के जोशांदे में तर किया हो सफ़ूफ़ में सानकर योनि में रक्खें।

अन्य–धावा के फूल, माजू, मैनफल, माई, मोचरस, समान भाग पीसकर बारीक कपड़े में रखकर बत्ती बनाकर रक्खें बकौल वैद्यक तिब्बके।

अन्य–अगर, नागरमोथा, हल्दी, लौंग, कीकर का दूध, समान भाग।

फुरज़ज–योनीको तंगकर उसकी तरी को सोखे।

विधि–हरे माजू फल, चूका के बीज, लोहे का मैल, चार२ माशे, गुलनार, सुआ सुपारी तीन२माशे

अन्य–हरे माजू फल, सफ़ेद राल, आमला,

पीली हड़ का छिलका, बहेड़े का छिलका प्रत्येक दो माशे लोंग पांच नग ।

फ़ुरज़जः—योनी को तंग और सुगन्धित करे ।

विधि—केशर, नागरमोथा, अगर, लोंग प्रत्येक तीन माशे, ज्वरांकुश का फूल, हरा माजूफल, पांच२ माशे, अम्बर अशहब, कस्तूरी, चार२ माशे।

फ़ुरज़ज—योनिके शोथ को पचावे ।

विधि—गूगल, खतमीके बीज, अलसी, तीन २ माशे, मुर्गकी चरबी छे माशे, थोड़ा शहत मिलाकर।

अन्य—लाई कुन्दर, दम्मुलअखवैन, अरमनी मिट्टी, समान भाग, बारतंग के जल में घोलकर उस में बत्ती भिगोकर योनि में रक्खें ।

फ़ुरज़जः—योनि की पीड़ा और उसकी गंदी तरी को दूर करे ।

विधि—बायबिडंग, समुद्रफेन, छे छे माशे, सुखा बहरोज़ा नौ माशे, लाहोरी नमक तीन माशे, पीस कर पोटली बना कर गर्भाशय के मुख पर रक्खें ।

अन्य—अजमोद, बायबिडंग, सुखा बहरोजा तीन तीन माशे, सोयेके बीज, लाहोरी नमक डेढ़ डेढ़ माशे चूर्ण करके शहत में मिलाकर सबको सानकर बारीक कपड़े में रखकर योनि में रक्खें ।

फ़ुरज़ज—योनि की खाज को दूर करे ।

विधि–तितली, पोदीना, मसूर, छिली हुई, गुलाब में पीसकर थोड़ा सिरका मिलाकर उस में कपड़ा भिगाकर योनि में रक्खें।

फुरज़ज़ः–बन्ध्यापन को दूर करे।

विधि--जाय फल, मांई, फिटकिरी भुनी हुई, अनार का छिलका समान भाग कूट छान कर जलमें बत्ती बनावें और मासिक धर्म के पश्चात् तीन दिन रात उसबत्तीको योनिमें रक्खें उसके पश्चात् स्त्री संगकरें।

अन्य–ख़रगोश का मैला, पनीरमायः खरगोश समान भाग पीसकर शहद मिलाकर तीन दिन रात योनिमें रक्खें इस के पश्चात् संग करें।

❀ छियानवेंवां अध्याय ❀

हर्फ़ काफ़।

कुर्स (टिकिया) शिर दर्द, ज्वर, खांसी इत्यादि और श्वासनाली के रोगों को दूर करने वाले।

क़ुर्स मुसल्लिस–अर्थात् त्रिकोण टिकिया इस को इस रूप में निर्माण कर्त्ता ने इस लिये बनाया है कि इसकी सूरत देखनेसेही ज्ञात होजाय कि यह खाने की नहीं है। इस के कनपटी और माथे पर तिला करने से शिर दर्द, आधा शीशी और निद्रा न आना दूर होजाता है शीत के रोगों में महँदी के रस दौना मरुवा के रस अथवा उसी प्रकार के अन्य रसों में

घिसकर और गरमी के रोगों में नीबू के रस, धनिये के रस सिरका, पोस्त के डोडा अथवा उसके सदृश अन्य रस में घिसकर तिला करें ।

विधि—मरमकी, अफीम, खुरासानी अजवायन, कपूर, केशर, अंबर, लाजन, जंगली बैंगनकी जड़ का छिलका दश दश माशे, कुन्दर, लाई, आमला, अरमनी मिट्टी डेढ डेढ़ तोला, पीसकर गुलाब के अर्क में त्रिकोण टिकिया बनावें ।

कुर्स—शिर दर्द, सन्निपात, ज्वर, और कास, रोग को गुणदायक है नींद लाती है और बर्राने और तृषा को दूर करती है ।

विधि—कद्दू के बीज की मींगी, खीरे ककडी के बीज की मींगी, काहू के बीज दो दो तोला, मुलहटी का सत, गेहूं का निशास्ता, कतीरा डेढ २ तोला, अफीम एक माशे लेकर ईसपगोल केलुआब के साथ टिकिया बनावें ।

कुर्स—खांसी और यकृत के शोथ को दूर करे ।

विधि—शुद्ध लाख, कासनी के बीज, सौंफ, कुलफे के बीज, पोस्त के डोडा, बबूल का गोंद, मुलहटी का सत, खीरे ककडी के बीज की मींगी, कद्दू के बीज की मींगी, नौ नौ माशे, रेवन्द चीनी कशूस के बीज, छे छे माशे, बंसलोचनकबीर तीन माशे लेकर टिकिया बनावें ।

कुर्स बनफशा—छाती के खुरदराहट, खांसी पहलू के दर्द रुधिर थूकने, और पित्त के अतीसार को गुणदायक है।

विधि—बनफशे के फूल एक तोला, बनफशे के पत्ते एक तोला, मुसब्बर भुना हुआ चार माशे, मुलहटी का सत छे माशे, कतीरा छे माशे, निशास्ता छे माशे, सफेद मिश्री एक तोला छे माशे लेकर ईसपगोल के लुआब में टिकिया बनावें।

कुर्स सरतान—खांसी में रुधिर आने और विषम ज्वर और रुधिर थूकने को दूर करें।

विधि—सरतान जला हुआ ढाई तोला, बंसलोचन, कहरबा, पोस्त के डोड़ा, सुगन्धित कपूर, सेलखडी अरमनी मिट्टी तीन तीन माशे, गेहूं का निशास्ता खीरे ककडी के बीज की मींगी, एक एक तोला, गुलाब के फूल, सुलहटी का सत, कतीरा, बबूल का गोंद भुना हुआ कुलफे के बीज भुने हुए, नौ नौ माशे अफीम एक माशे, लेकर बिहीदाने के लुआब के साथ टिकिया बनावें।

कुर्स सन्दल—गरमी के ज्वर प्यास आमाशय और यकृत की गरमी जिह्वा की खुशकी और पित्त के बढ़ जाने को दूर करती है।

पाचं पांचं माशे, सफेद चन्दन, रक्त चन्दन नौ २ माशे, मुलहटी का सत, कुलफे के बीज, कतीरा गुलाब के फूल, सफेद बंसलोचन, चार चार माशे लेकर ईसपगोल के लुआब में टिकिया बनावें और मीठे अनार या सेब के जल के साथ खांय।

कुर्स तबाशीर काबिज़—विषम ज्वर, और पित्तज अतीसार को गुणदायक है।

विधि—बंसलोचन, गुलाब के फूल, कासनी के बीज, काहू के बीज, कुलफे के बीज, तंतरीक छै २ माशे, गुलनार, सफेद चन्दन, चूका के बीज, कपूर तीन२ माशे, अफीम डेढ माशे लेकर टिकिया बनावें।

कुर्स तबासीर मुलैयन—पित्तज ज्वरों को दूर करे आमाशय को बलदे और गरमी को शान्ति करे।

विधि—सफेद बंसलोचन, सात माशे, गुलाब के फूल नौ माशे, जरिश्क छै माशे, मुसब्बर, भुना हुआ तीन माशे लेकर काशनी के जल के साथ टिकिया बनावें।

कुर्स काफूर—कमलवाय और गरमी के ज्वरों को गुणदायक है।

विधि—जरिश्क. कासनी के बीज. गुलाब के फूल खरबूज़े के बीज की मींगी, बड़े कद्दू के बीज सफेद चन्दन नौ नौ माशे कतीरा, कपूर, मुलहटी

का सत तीन तीन माशे, ईसपगोल के लुआब के साथ टिकिया बनावें।

कुर्स कुहल–खांसी, थूक में खून आने को और खूनी बवासीर को गुणदायक है।

विधि–बारह सींगे के सींग जले हुए, कीकर का दूध हँसराज, गुलनार, माजूफल, अंजबार की जड प्रत्येक नौ माशे, सुरमा अस्फहानी तीन माशे, दम्मुलअखवैन छे माशे, लेकर बारतंग के पानी के साथ टिकिया बनावें।

कुर्स कहरुबा–रुधिर थूकने और बवासीर में रुधिर बहने को दूर करे।

विधि–कहरुबा एक तोला, कुलफे के बीज एक तोला, बारह सींगे की भस्म, कतीरा, बबूल का गोंद, सूखा धनिया भुना हुआ, सफेद पोस्त के होडा, प्रत्येक छे माशे, निशास्ता नौ माशे लेकर बारतंग के जल में टिकिया बनावें।

❋ छियानवेंवां अध्याय ❋

कुर्स–ज्वर और आमाशय के रोगों को गुणदायक है।

कुर्स गाफिस–कमलवाय, यकृत की पीड़ा, प्लीहा, विषम ज्वर, और चौथैयाज्वर को दूर करे और पट्ठों की ग्रन्थी खोले।

विधि–उस्सारह गाफिस आधी छटांक, बालछड़

दो तोले, सफेद बंसलोचन एक तोला, लेकर टिकिया बनावें।

कुर्सकफ-वातोदर को गुण करे और पट्ठों की ग्रन्थियों को खोलती है।

विधि-लाख धुली हुई दो तोला, रेवन्द चीनी एक तोला, सुगंध बाला, बालछड, मस्तगी, अजमोद अनीसून, अजवायन, गंधील, मठिाकूट, काली मिर्च, सोंठ, प्रत्येक छैर माशे लेकर टिकिया बनावें।

कुर्स गुल सुर्ख—जलोदर, आमाशय, यकृत प्लीहा और अतीसार को गुणदायक है।

विधि-गुलाब के फूल एक तोला, गुलनार, जरिश्क, तंतरीक, बड़ी माई, चूका के बीज, कासनी के बीज, तुलसी, कुलफे के बीज चार चार माशे, नागरमोथा, गंधील की कली, बालछड़, रेवन्द चीनी लाख धुली हुई किब्रकी जड, कपूर प्रत्येक दो माशे अफीम एक माशे।

कुर्सफूह (मजीठ)—प्लीहाके शोथ को गुणदायकहै।

विधि—मजीठ एक तोला, जरावन्द लम्बा नौ माशे, रेवन्द चीनी तीन माशे, भुना सुहागा दो माशे लेकर दो नग अंजीर सिर के में पीसकर उसमें मिलाकर कुर्स बनावें।

कुर्स अफ़सन्तीन—आमाशय के सोथ की पीड़
को उपयोगी है।

विधि—अफ़सन्तीन रूमी, अनीसून, अजमो
समान भाग लेकर टिकिया बनावें।

कुर्स मस्तगी—वमन, हुचकी और उबाकी के
गुणदायक है।

विधि—कच्चा अगर, मस्तगी, एक एक तोला
पिस्ता का ऊपर का छिलका दो तोला, गुलाब के
फूल डेढ़ तोला, लेकर टिकिया बनावें।

कुर्स जंजबील—अतीसार और मरोड़े को हितदायक है

विधि—सोंठ, बेलगिरी, सूखा धनिया, सफेद
राल समान भाग लेकर टिकिया बनावें।

❀ सत्तानवेंवां अध्याय ❀

कुर्स—मूत्रेन्द्रिय के रोग दूर करने वाले।

कुर्स ज़याबीतुस—बार२ मूत्र आने को हित है।

विधि—बंसलोचन पांच माशे, कुलफे के बीज,
काहू के बीज सात सात माशे, चूका के बीज गुलाब
के फूल, सुखा धनिया, अरमनी मिट्टी तीन तीन
माशे, सफेद चन्दन, गुलनार, तंतरीक दो दो माशे
कपूर चार रत्ती लेकर कुलफे के पत्ते के रसमें टिकिया
बनावें और मीठे अनार के रस के साथ सेवन करें।

अन्य कुर्स ज़याबीतुस—इस के गुण उपरोक्त हैं।

विधि--गुलेबांस, चूका के बीज, दो दो माशे, बबूल का गोंद, निशास्ता, एक एक तोला, लेकर ईसपगोल के लुआब के साथ टिकिया बनावें।

कुर्स काकनज--गुरदे और मसाने के घाव और राध बहने को और मूत्र दाह को गुणदायक है।

विधि--खीरे ककड़ी के बीज की मींगी, खरबूजे के बीज की मींगी, कुलफे के बीज, चार चार माशे गुलाब के फूल, बंसलोचन, अरमनी मिट्टी, बबूल का गोंद, निशास्ता, दम्मुलअख़्वैन, काली पोस्त के दाने तीन २ माशे, मीठे बादाम की मींगी, चिलग़ोज़े की मींगी दस दस माशे काकनज एक तोला लेकर बिहीदाने के लुआब के साथ टिकिया बनावें।

कुर्स कहरुबा--मूत्र में रुधिर आने को हित है।

विधि--कहरुबा पांच माशे, गुलनार, कुन्दर, तंतरीक, बबूल का गोंद तीन२ माशे अफीम ४ रत्ती।

कुर्स लबूब--गुरदे और मसाने के घाव को मवाद से शुद्ध करके आराम करें।

विधि--निशास्ता एक तोला, खतमी के बीज, खुब्बाजी के बीज, कुलफे के बीज, अजमोद, सोंफ, प्रत्येक तीन माशे, खुरासानी अजवायन, अफीम, एक एक माशे, फ़िंदक की मींगी, मीठे बादाम की मींगी, खीरे ककड़ी के बीज की मींगी, बेरकी गुठली

की मींगी, खरबूजे के बीज की मींगी, मीठे कद्दू के बीज की मींगी, चिलगोज़े की मींगी, मुलहटी का सत, चूकाके बीज, अरमनी मिट्टी प्रत्येक पांच माशे लेकर अलसी के लुआबके साथ टिकिया बनावें।

क़ुर्स मासिकुल बौल-मूत्र को रोकती है।

विधि—बड़ी माई, कीकर का दूध, काबली हड़ की छाल, धनियां भुना हुआ, अरमनी मिट्टी, सुआ-सुपारी, गुलेबांस समान भाग लेकर टिकियाबनावें।

क़ुर्स—सोज़ाक को दूर करे।

विधि—वंग, सलाजीत का सत, कतीरा, अरमनी मिट्टी, सफेद खशखश के दाने, बबूल का गोंद खीरे ककड़ी के बीज की मींगी, कुलफ़े के बीज छिले हुए, मीठे कद्दू के बीज समान भाग लेकर ईसपगोल के लुआब के साथ टिकिया बनावें और गाय के दूध में जल मिलाकर उस के साथ खांय।

✻ अट्ठानवेंवां अध्याय ✻

कैरूती अर्थात् मौम रोगन का वर्णन॥

क़ैरूती—नाक के व्रण को दूर करे।

विधि—एक तोला पीला मौम, तीन तोला गुल में मिलाकर मुरदा संग दो माशे और वंग चार माशे मिलावें।

क़ैरूती—घाव और सूखे तारों को दूर करे।

विधि—दो तोले चमेली का तेल अग्नि पर रखकर उसमें एक तोला पीला मोम, एक तोले बकरी की पिंडली की मींगी और छे माशे कतीरा हलकरके लगावें

कैफ़ीयत—होठ तथा हाथ पैर के फट जाने को उपयोगी है।

विधि—तीन तोले गुलरोगन अग्नि पर रखकर पीला मोम डेढ़ तोला, मुरग़ाबी की चरबी एक तोला और कतीरा तीन माशे मिलाकर बनावें।

कैफ़ीयत—पहलू और छाती के दर्द को दूर करे।

विधि—बनफ़शे का तेल पांच तोला, अग्नि पर रखकर सफेद मोम दो तोले कतीरा नौ माशे मिलावें।

अन्य—बनफ़शे के पत्ते, सफ़ेद चन्दन, खतमी के बीज, नाखुना, जौ का आटा, गेहूं की भुसी समान भाग कूट छान कर रोग़न में जो रोग़न बनफ़शा या रोग़न गुल या सफेद तिल के तेल में बनाया हुआ हो मिलावें।

अन्य—गुल बनफ़शा, नाखूना, बाबूना के फूल, खतमी के बीज, ईसपगोल, गुलाब के फूल नौ नौ माशे पानी में जोश करके छानें और पांच तोले तिल का तेल मिलाकर पकावें जब पानी जल जाय, तब दो तोले पीला मोम मिलावें।

कैफ़ीयत—सरदी के श्वास को दूर करे।

विधि—पीला मोम तीन तोले, लेकर छे तोले काले तिल के तेल में मिलावें और मेथी नौ माशे कलोंजी, मुलहटी चार चार माशे, अकरकरा दो माशे कूट छान कर मिलावें।

कैरूती—गरमी के श्वास और खांसीको गुणकरे।

विधि—काहू दो तोला, धनियां दो तोला, नीलोफर के फूल एक तोला, बनफशे के पत्ते एक तोला पानी में पीस छान कर सफेद तिल के छे तोले तेल में पकावें जब पानी जल जाय तब ढाई तोला सफेद मोम मिलावें।

कैरूती—अण्डकोश के सोथ को गुणदायक है।

विधि—पीला मोम दो तोला, गुलरोगन चार तोला में मिलाकर गूगल लोवान चार२माशे मिलावें

* निन्यानवेंवां अध्याय *

कुतूर का वर्णन॥

कुतूर—कान के व्रण को गुण करे और मैल और मवाद को दूर करे।

विधि—ऐलुआ, लाई, समुद्र फेन, पपड़िया खार दम्मुलअखवैन, लोवान, समान भाग पानी में पीस कर दो तीन बूंद सिरका मिलाकर कानमें टपकावें और थोड़ी देर के पश्चात् निकाल डालें।

कुतूर—गरमी की कर्ण पीड़ा को दूर करे।

विधि—अफीम एक माशे, लेकर दो तोला गुल रोग़न में घोलकर उस में चन्द बूंद सिर के की मिलाकर कान में टपकावें।

अन्य—कर्ण की असह्य पीड़ा को गुण करे।

विधि—समान भाग अफीम और कपूर कन्यावती स्त्री के अथवा बकरी के दूध में घोल कर कान में टपकावें।

कुतूर—कान में शब्द होने को दूर करे।

विधि—लोबान, केशर, समान भाग शराब में घोलकर टपकावें।

अन्य—तीन नग लौंग, दौना मरुवा के रस में घिसकर टपकावें।

अन्य—सफेद कुटकी दो माशे, जुंदबेदस्तर एक माशे पानी में घोलकर थोड़ा सिरका मिलाकर कान में टपकावें।

कुतूर—सोज़ाक और मसाने तथा मूत्र नाली के व्रण को उपयोगी है।

विधि—लाई दम्मुलअख़्वैन लोबान, बंग निशास्ता अफीम, समान भाग जलमें घोलकर टपकावें।

अन्य—बबूल का गोंद दो माशे, गेहूं का निशास्ता चार माशे कन्यावती स्त्री अथवा बकरी के दूध में हल करके टपकावें।

अन्य—पोस्त के डोड़ा, निशास्ता, मुलहटी का सत समान, भाग दूध में पीसकर छानकर टपकावें।

❀ सौवां अध्याय ❀

हर्फ़काफ़।

कुहल (सुरमा) का वर्णन।

कुहल—नेत्रकी फुली को काट कर दूर करें।

विधि—चमेली की ताज़ा कली, सफ़ेद तिल, काली मिर्च प्रत्येक चार तोला, भुनी फिटकिरी सात तोले खूब खरल करें फिर सुखा कर खरल कर के सुरमा बना कर काम में लावें।

अन्य—फुली, जाला, ढलका, धुंध, ख़याल़ात, नज़ला, और तरी को दूर करता है और ज्योति को बढ़ाता है।

विधि—सुरमा सौंफ को पानी में तीन बार बुझा कर और डेढ़ तोले हड्डी जली हुई, एक माशे छुआरा चार रत्ती तेजपात और दो माशे जावित्री मिला कर खूब खरल करके काम में लावें।

अन्य—जाला और ढलके को दूर करे और नेत्र की ज्योति को बढावे और नेत्रों की सुरखी को भी गुण करे।

विधि—सीपी जली हुई, तूतिया शुद्ध किया हुआ

और सफेद मिश्री समान भाग लेकर सुरमा बना कर काम में लावें ।

कुहल उक्त जवाहर—नेत्र की ज्योति अधिक करै और धुंध रतुबत बहने और डीढ़ आनेको दूरकरै ।

विधि—अनविधे मोती एक माशे, मूंगा डेढ़ माशे फीरोज़ा लाज वर्द शुद्ध किया हुआ, याकूतरम्मानी सुर्खलाल, प्रत्येक चार रत्ती. चांदी के वरक सोने के वरक, पांच पांच नग लेकर तीन दिन केवड़े के अर्क में घोटें उस के पश्चात् चीनी ममीरा दो माशे संगबसरी तीन माशे, नीलाथोता छै रत्ती, केशर डेढ़ माशे, तेजपात एक माशे, कपूर एक माशे. काली मिर्च चार रत्ती, और सुरमा दो तोले मिलाकर सौंफ का पानी डाल डाल कर आठ पहर खरल करें ।

कुहल मामीरान—नेत्र की खुजली, धुंध और ढलका को दूर करै, पलकों के बालों को जमावे और नेत्र की ज्योति अधिक करे ।

विधि—रसौतमकी, फिटकिरी भुनी हुई, चीनी ममीरा, चांदी की वरिया, सोने की वरिया, हड़ का छिलका प्रत्येक चार माशे, नौसादर तेजपात, जा-वित्री, तीन तीन माशे, काली मिर्च, कपूर, जटा मांसी, नीलाथोता बंसलोचन, नील वर्ण, बंग प्रत्येक एक माशे, काला सुरमा डेढ़ तोला बकरी

का पित्ता एक नग, लेकर सौंफ के पानी में आठ पहर घोटकर सुरमा बनावें ।

कुहल चशख़ाम–नेत्र में जल आना, आंख दुखना और बालकों के नेत्र की कोथी को दूर करे ।

विधि–चशख़ास अर्थात चाकसू दो तोले एक पोटली में बांध कर गधे की लीद या उर्द की दाल के पानी में डालकर पकावें और छिलका दूर करके सुखावें और खपरिया छे माशे, फिटकिरी भुनी हुई चार माशे, रसौत तीन माशे, सुरमा नौ माशे मिला कर खरल करके सुरमा बनावें ।

कुहल–रतौंध, जाला, ढलका, गर्द, पुरानी सुर्खी नाखुना और फुली को दूर करे ।

विधि–काली मिर्च तीन माशे, बकरी के पित्ते में तसक़ियाकी हुई और संगवसरी छे माशे चार बार नींबूके रसमें बुझी हुई, खिरनी के बीज की मींगी दो माशे और चमली का फूल एक तोला लेकर सौंफके पानी में खरल करके सुरमा बनावें और नेत्रमें लगावें ।

❀ एक सौ एकवां अध्याय ❀

काजल और रिगोह का वर्णन ।

काजल–फुली, ढलका, जाला, और नाखुना को दूर करे और नेत्र की ज्योति को बढ़ावे ।

विधि–चीनी ममीरा, लोंम संगवसरी सफेद सुर या ए ॰ एक माशे, हलदी, गुलाब की जड़, खिरनी की गुठली की मींगी, अनार की कोंपल, बकायन की कोंपल तीन तीन माशे पीसकर दो तोले गौ घृत में सान कर कसूमी रंग के कपड़े में लपेट कर बत्ती बनावें और दिये में कड़वा तेल डाल कर उस में वह बत्ती जला कर कच्चे पारे में काजल पाडें।

काजल–नेत्र की ज्योति को बढावे और जलवा न करे और खुजली को दूर करे।

विधि--नीम के फूल, बकायन के फूल, रुई में लपेट कर सरसों के तेल से कच्चे पारे में काजल पाडें और एक पोटली में मजबूत बाध कर चालीस दिन तक सोंफ के पानी में पडी रक्खें उस के पश्चात् निकाल कर नेत्र में लगावें।

काजल--पलकों के बाल जमावे और नेत्र की सुरखीको जो आंख दुखनेके पश्चात रहतीहै या पीला पनको जो रोगोंके कारण नेत्रमें होजाताहै दूरकरताहै

विधि–ताजा बन्दाल कुचल कर निचोडें और उस रस में तीन चार चार कपडा भिगोकर सुखा कर उसपर आंवा हल्दी एकतोला और सफेद फिट-किरी नौ माशे पीसकर लपेटें और दिये में सरसों का

तेल डालकर इस बत्ती से काजल पाडकर काममेंलावें।

अन्य--आंबा हल्दी को सोंफ के पानी में पीस कर उस में कपड़ा रंग कर उस में थोड़े मकड़ी के के जाले साफ करके रक्खें बत्ती बनावें फिर कड़वे तेल में इस बत्ती का काजल पाड़ कर काममें लावें।

रिगड़ा--नेत्र के दुखने और दर्द को और आंसू बहने को दूर करे।

विधि--फिटकिरी भुनी हुई तीन तोले, स्वच्छ अफीम छे माशे लेकर लोहे के पात्र में लोहे के मूसले से नीबू का रस डालकर रिगड़ें कि पाव भर नीबू का रस सोख जाय फिर उठाकर रख छोडें जब सुख जाय तब सादा जल डालकर ढीला करलें।

अन्य--रसौत, फिटकिरी भुनी हुई आंबा हल्दी प्रत्येक छे माशे, पठानी लोध तीन माशे अफीम दो माशे लेकर आमले की ताज़ा पत्ती का रस डालकर फूलके बरतन में बड़ी कौड़ी से रिगड़ें जब सब एक जात होजाय काम में लावें।

अन्य--पठानी रतन जोत, लोध फिटकिरी भुनी हुई तीन तीन माशे स्वच्छ अफीम दो माशे लेकर लोहे के पात्र में नीम दस्ते से त्रिफला का पानी डालकर रिगडें।

❀ एक सौ दोवां अध्याय ❀

कमाद् अर्थात् सेक का वर्णन।

कमाद--आधा सीसी, अतिकी पीडा और अशुद्ध बात को उपयोगी है।

विधि–दोना मरुवा के पत्ते, बाबूना के फूल, तुलसी के पत्ते, कुचल कर कपड़े की पोटली में बांध कर गुन गुनी कर के सेकें।

कमाद–सकते की अवस्थामें सकते को गुणकरे।

विधि–लौंग, जावित्री, जाय फल, अक़रकरा छे छे माशे, सांभर लवण दो तोले, चूर्ण करके पाव भर बाजरे का आटा मिलाकर दो पोटली बनाकर सेकें।

कमाद–आमाशय की बात पीडा को गुणकरे।

विधि–अजवायन, सफेद जीरा, सौंफ अजमोद सोंठ दो दो तोला, खारी लवण चार तोला चूर्ण करके आद पाव गेहूं की भुसी में मिलाकर दो पोटली बना कर सेक करें।

अन्य–अजवायन, नमक, गेंहूं की भुसी उचित मात्रा में लेकर पोटली बनाकर सेक करें।

कमाद--बातको पचावे और पुट्ठे और पसली के दर्द को दूर करै।

विधि--सोये के ताज़ा पत्ते. ताज़ा पोदीना, दो

दो तोले अनीसुन सोंफ अजमोद प्रत्येक एक तोला जल में औटाकर साफ कर के बकरी के मसाने में अथवा बोतल में भरकर सेक करें।

कमाद–प्लीहा वा यकृत कीपीडाको गुणदायकहै।

विधि–मकोय के पत्ते, कासनी के पत्ते, सम्हालू के पत्ते, तितली के पत्ते, उचित मात्रा में औटा कर स्वच्छ सिरका मिलाकार उसमें कपड़ा तरकरके सेककरें।

* एक सौ तीनवां अध्याय *

कबूस अर्थात् लुपडी का वर्णन।

कबूस–गुदाके ढीलाहो जाने को गुणदायक है।

विधि– सुआ सुपारी लोवान, चांदीकी घरिया प्रत्येक तीन माशे चूर्ण करके दो तोले बबूल के ताजा पत्ते पीसकर मिलावें और ठंडी बांधें।

कबूस–कांच निकलने को दूर करे

विधि–बेरके पत्ते एक तोले, भंग दो तोला, आंबा हल्दी छै माशे हरे माजू छै माशे, मिलाकर लूपड़ी बनाकर गुदापर बांधें।

कबूस–हरएक स्थानकी बातज पीड़ा को गुण दायक है

विधि–महुआ तीन भाग और खानेकी तमाखू, एक भाग पीसकर गुनगुनी बांधें।

अन्य—अकीते को दूर करे।

विधि- काले तिलकी खली और नदी की रेत समान भाग जल में टिकिया बनाकर बाधें और चार पहर के पश्चात् बदल दें॥

❀ एकसौ चारवां अध्याय ❀

गुलकन्दों का वर्णन॥

गुलकंद मुतलक—इससे तात्पर्य गुलाब के फूल के गुलकंद का है पित्तज दोषों को दूर करता है, तबियतको नर्म करता है॥

अन्य—उचित औषधियों के सम्मेलन से तीनों दोषों का रेचक है। आंतों के सुद्दे को खोले, वाय शूल मरोड़ा और आमाशय के दर्दको गुणदायक है। शेखबूअली ने अपनी निर्माणित पुस्तकों में लिखा है कि मैने एक तरुण स्त्री देखी जिसको दूसरी श्रेणी में विषमज्वर होगया था उसको मैंने केवल गुलकंद काहीसाधन कराया यहांतक कि अत्हारमें भी बहुधा गुलकंद शामिल किया उसको एक वर्ष में आरोग्यता प्राप्त होगई और उसके सन्तति उत्पन्न होने लगी।

गुलकंद सेवती—चित्त को प्रसन्न करताहै वानज विसवास, उन्माद, वहशत और मालीखोलिया मिराकी को दूरकरता है।

विधि—गुलकंद आफतावी अथवा गुलकंद आबी की रीत से बनावें।

गुलकंद गुड़हल—बावलेपन और बहशत को दूर करे। निर्मल रुधिर उत्पन्न करे और पितज बातज हानिता को दूर करे।

विधि—इसमें फूलोंकी तोलका अर्द्धभाग कागज़ी नीबू का रस अथवा खट्टे अनार का रस मिलाकर गुलकंद आबी की रीति से बनावें।

गुलकंद खयार शंबर—तबियत को नर्म करताहै और पित्तका विरेचक है।

विधि—अमलतास के ताज़ा फूलकी केवल पंखड़ी लेकर समान भाग लाल बूरेमें मिलाकर आफतावी गुलकंद की रीति से बनावें।

गुलकंद नीम—रुधिर संशोधक बातज रोगों का नाशक और नसों की ग्रन्थियों को खोलने वालाहै।

विधि—नीमके ताजा फूल समान भाग स्वच्छ शहत में मिलाकर आफताबी गुलकंद की रीति अनुसार गुलकंद बनावें।

गुलकंद खशखाश—दस्तों को बंद करता है नज़लेको दूर करताहै और बलगमीं खांसीको गुणदायकहै।

विधि—खशखाश के ताज़ा फूल ज़ीरा करके ति-

गुनी सफेद शकर में मींडकर तीनदिन तक धूपमेंरक्खें।

गुलकंद हिना–रुधिर संशोधक और नज़ले को दूर करने वाला है।

विधि–हिना के ताज़ा फूल समान भाग स्वच्छ शहत में मिलाकर तीन दिनतक धूपमें रक्खें।

हर्फ लाम।

❀ एकसौ पांचवां अध्याय ❀

लखलखे का वर्णन॥

लखलखा–गरमीकी मस्तिष्क पीड़ा और आधा सीसीको गुणदायक है।

विधि–सफेद चन्दन और सूखा धनिया गुलाब में पीसकर स्वच्छ सिरका मिलाकर लखलखा करें।

लखलखा–शरदी की मस्तिष्क पीडा और आधा सीसीको लाभदायक है।

बिधि–दौना मरुआ के पत्ते और तुलसी के पत्ते पानी में पीसकर उसमें थोडी सोंठ काली मिर्च और चूना पीसकर मिलाकर सूंघें।

लखलखा–शिरदर्द और गर्म सरसाम को गुण दायक है।

विधि–रक्तचंदन, श्वेतचंदन, सूखाधनिया, अरमनी मिट्टी पानीमें पीसकर थोडा कपूर मिलाकरसुंघें।

❋ एक सौ छेवां अध्याय ❋



लतूख का वर्णन ।

लतूख–दोनों कनपटी पर लिपटाने से आधा सीसी और मास्तिष्क पीड़ा को गुण करै

विधि–एलुवा, काहू के बीज, खुरासानी अजवायन, कतीरा प्रत्येक दो माशे, अफीम एक माशे, केशर छे रत्ती, सिरके में हल करके कनपटीपरलगावें ।

अन्य–कतीरा, बबूल का गोंद, पोस्त दो दो माशे, दम्मुलअखवेन रसौत, गुलाबके फूल, अफीम एकर माशे, मुर्गीके अण्डकी सफेदीमें मिलाकर लगावें

अन्य–खशखाश, गुलाब के फूल, सूखा धनियां प्रत्येक चार माशे, बाबूना के फूल, खुरासानी अजवायन, प्रत्येक तीन माशे, सफेद चन्दन दो माशे, अफीम एक माशे लेकर लगावें ।

अन्य–पुराने जुकाम को दूर करे ।

विधि–लोबान, गूगल, रूमीमस्तगी, बाबूना के फूल, जटामांसी समान भाग पानी में पीसकर थोड़ा रोगन गुल मिलाकर लगावें ।

अन्य–अफीम तीन भाग केशर एक भाग मिलाकर लगावें ।

❀ एक सौ सातवां अध्याय ❀

लऊक का वर्णन ।

लऊक बादाम—कण्ठ और गले की खुश्की और सूखी खांसी को गुण दायक है ।

विधि—कद्दूके बीज की मींगी, मीठे बादाम की मींगी, दो दो तोले, निशास्ता, कतीरा, बबूल का गोंद मुलहटी का सत, एक एक तोला बारीक पीसकर पाव भर शकरअथवा सफेद मिश्री की चाशनीमें मिलावें

लऊक—स्वास की तंगी और गला बैठ जाने को गुणदायक है ।

विधि—अलसी दो तोला, मेथी के बीज चार माशे, मीठे बादाम की मींगी, मुनक्का, कतीरा, मुलहटी, चिलगोजे की मींगी, निशास्ता, बबूल का गोंद एक एक तोला, बारीक पीसकर पाव भर मिश्री की चाशनी में मिलावें ।

लऊक—गले से रुधिर निकलने को गुणदायक है, यकृत की गर्मी को शान्ति करता है और बवासीर को हितदायक है ।

विधि—कुलफे के बीज, बंसलोचन, सात२ माशे काहू के बीज की मींगी, खीरे के बीज की मींगी एक एक तोला, ईसपगोल का लुआब तीन तोला, बार

तंग का लुआब तीन तोला, लेकर आध पाव सफेद मिश्री की चाशनी में मिलावें ।

लऊक़ खशखाश—खांसी और नज़ले को दूर करे।

विधि—मुलहटी छिली हुई, खतमी के बीज बिहीदाना प्रत्येक डेढ़ तोला, खशखाश के बीज एक तोला लेकर तीन पाव जल में भिगो कर और जोशांदा करके डेढ़ पाव सफेद बूरे में चाशनी करें फिर मुलहटी का सत कतीरा, बबुलका गोंद एक एक तोले पीसकर मिलावें ।

लऊक़ अबहल—इस के एक सप्ताह के सेवन से श्वास रोग नष्ट हो जाता है ।

विधि—झाऊबेर छै तोला पीसकर और तीन तोले गुलरोग़न में मिलाकर पावभर स्वच्छ शहत में मिलावें

लऊक़ जूफ़ा—श्वास और पुरानी खांसी को हितदायक है और सीने और फेफड़े को बुरे दोष से शुद्ध करता है ।

विधि—शुष्क जूफ़ा, सौसन की जड़, कसोद एक एक छटांक लेकर काढ़ा बना कर डेढ़ पाव स्वच्छ शहत मिलाकर गरम करें और साफ़ करके चाशनी करें यदि सौसन की जड़ न मिले तो उस से समान भाग कलोंजी मिलावें ।

लऊक़-रुधिर थूकने और सूखी खांसीको गुणकरै।

विधि-बिहीदाना, ईसबगोल, खतमी के बीज, डेढ२ तोला लेकर उनका लुआब निकाल कर, मीठे अनारकापानी, खीरे का पानी कद्दूका पानी कुलफे के पत्तों का पानी प्रत्येक आधपाव निचोडकर उस में आधसेर सफेद बूरा मिलाकर चाशनी करें और बबूल का गोंद कतीरा, मीठे बादाम की मींगी छिलीहुई, खशखाशके बीज प्रत्येक एक तोला, मुलहटी का सत्त, शकरतग़ाल छे छे माशे पीसकर मिलावें और थोडी थोडी उसमें से चाटाकरें।

लऊक सिपिस्तां-कफकी खांसी और नज़ले को उपयोगी है।

विधि-लिहसौडे पके हुए पचासनग, उन्नाब बीस नग, मुलहटी एक तोला, खतमीके बीज एक तोला, खशखाश का छिल्का दो तोला, बिहीदाना छै माशे, जोशांदा बनाकर और आधसेर सफेद शकर मिलाकर चाशनी करें और जब चाशनी होनेपर आजाय तब उसमें छिले हुए जौ, मीठे बादाम की मींगी छिली हुई, खशखाशके बीज, प्रत्येक एक तोला, शीरा बनाकर मिलावें और जब चाशनी बनजाय मुलहटी का सत, कतीरा, बबूल का गोंद

छे छे माशे पीसकर मिलावें और रात दिनमें पांच चार वार उसमें से चाटें।

❋ एकसो आठवां अध्याय ❋

लबूब और लौज़का वर्णन।

लबूब–गुरदे को गर्म और बलवान करे काम शक्ति को प्रबल और वीर्य को अधिक करे, हृदय और मस्तिष्क को बलदे, शरीर को पुष्टकरे और चित्त को प्रसन्न करे और वीर्य्य को सोधन करने और इन्द्री को बलदेनें में आद्वितीय है।

विधि–पिस्ता बादाम की मींगी, गोला, फिंदुक की मींगी, अखरोट की मींगी, चिलगोजे की मींगी कडके बीज की मींगी, बिनोले की मींगी, सफेद पोस्त के दाने, सफेद तिल धुले हुए, प्रत्येक तीन तोला, गाजर के बीज, शलजम के बीज, मूली के बीज, प्याज के बीज, गंदना के बीज, इन्द्रजौ, नागदोन, हालों के बीज, प्रत्येक डेढ़ तोला, पानी में इतना पीसें कि कपडे में छानना न पडे फिर उसको तीनपाव सफेद शकर और पावभर शहत की चाशनी में मिलाकरपकावें किपानी जलजाय फिर उसमें कुलीजन शकाकुल मिश्री, दोनों बहमनी, दोनों तोदरी और सालब मिश्री प्रत्येक एक तोला बारीक पीसकरमिलावें।

लबूब-वीर्य को बढावे, और गुरदे मसाने और काम शक्ति को बलदे ।

विधि-आध आध सेर सफेद बूरा और स्वच्छ शहत मिलाकर चाशनी करे और दारचीनी, कुलीजन, सोंठ हालों के बीज, बहमनी सफेद, बहमनी लाल, तोदरीपीली, तोदरी सुर्ख, प्रत्येक डेढ तोला सुखापोदीना एक तोला, कालीमिर्च, लौंग जायफल जावित्री चिलगोज़े की मींगी, पिस्ता, प्रत्येक तीन तोला. चिरोंजी छै तोले नरम कूटकरमिलावें।

कबूब वारिद-उस निर्बलता को जो गर्मी के कारण हो गई हो हितदायकहै ।

विधि-सफेद मिश्री डेढपाव, तुरंजबीन खुरासानी आधपाव, स्वच्छ शहत पावभर, सफेद खशखाश के दानों का शीरा, सफेद तिल मीठे कद्दू के बीज की मींगी, खीरे ककडी के बीज की मींगी, खरबूजे के बीज की मींगी, तरबूजे के बीज की मींगी, प्रत्येक तीन तोले, मिलाकर चाशनी करें और सालब मिश्री, शकाकुल मिश्री, प्रत्येक दो तोला, पीसकर मिलावें ।

लोज़-कामशक्ति को बलदे और नजले को गुणदायक है ।

विधि—बादाम की मींगी छिली हुई आधपाव, पिस्ता, सफेद खशखाश के बीज, प्रत्येक एक छटांक का शीरा करके सफेद मिश्री डेढपाव, गेहूं की मैदा पावसेर तीन छटांक घी में भुनी हुआ लेकर हलुवे की तरह कडा पकावें फिर केशर तीन माशे, छोटी इलायची के बीज, छे माशे पीसकर उसमें डालें और गरम गरम जमाकर उसके टुकडे टुकडे तराश कर रक्खें।

हर्फ मीम।

❋ एकसौ नौवां अध्याय ❋

माउल्लहम मांसका वर्णन॥

शेखुलरईस बूअली ने लिखा है यद्यपि मांस आहार है परन्तु उसका पानी हृदय की निर्बलता को दूर करने तथा अन्य रोगों में उचित औषधि है और किसी किसी हकीम नें कई मांसों को एकत्रित करना उचित नहीं समझा है क्योंकि शीघ्र पचने वाला और देर में पचने वाला मांस का संयोग नहीं करना चाहिये परन्तु किसी किसी हकीमने परंदों के मांसका बकरी के मांस के साथ मिलान जायज रक्खा है।

माउल्लहम सादा—हृदय को बलदे और शरीर को हृष्ट और पुष्ट करे तथा उचित शरबतों के साथ विषम ज्वरको गुणदायक है।

विधि—तरुण और मोटे बकरे का मांस चरबी और सफेदी पृथक करके और धनियां, तेजपात, बडी इलायची और दार चीनी एक पोटली में बांधकर उसमें डालें और मुंहबंद देग में जोश दें जब मांस

खूब गल जाय तब भवके से उसका अर्क खेंचलें ।

माउल्लहमुरक्कब—हृदय, मस्तिष्क और अन्य प्रधान अवयव और काम देव को बलदायक है और दोषों को शुद्ध, रुधिर को स्वच्छ और शरीर को हृष्ट पुष्ट करता है ।

विधि—तरुण बकरे का निर्मल मांस सात सेर, दस कबूतरों का निर्मल मांस, चालीस बटेर का मांस, दो तरुण मुर्गों का मांस, चार तीतरों का मांस, पचास पालतू अथवा जंगली चिड़ों का मांस, लेकर उसको मुंह बन्द देग में जोश दें और उस में दाल चीनी एक छटांक, लौंग एक तोला, बड़ी इलायची डेढ़ छटांक, तेजपात डेढ़ छटांक, साबत प्याज पावभर सबको एक पोटली में बांध कर डालदें जब मांस खूब गल जाय तब पोटली को निकाल कर मांस को मलकर उसका जल छानलें और उस में गावज़बां के पत्ते, गुढ़ल के सूखे फूल, आमला, किशमिश छुआरे, सैंमल का मूसला, बिल्ली लोटन, गुल मुंडी प्रत्येक आध पाव उस्त खुद्दूस दालचीनी, तज, तेजपात, गुलाब के फूल, कासनी के बीज, सफेद चन्दन का बुरादा, रक्त चन्दन का बुरादा, आबनूस बड़े गोखरू, उन्नाव, नीलोफर के फूल, प्रत्येक

एक छटांक, दोनों बहमनी दोनों तोदरी, दोनों मूसली, इन्दर जो प्रत्येक चार चार तोले लेकर सब को एक रात जल में भिगोकर डाल दें और पांच सेर गाय का दूध मिलाकर अर्क खेंचें और नहचे के मुख पर केशर तीन माशे और छोटी इलायची के बीज छै माशे पोटली में रखकर बांधें ।

द्रष्टव्य—विदित हो कि जो मांस मतानुसार वर्जित हो अथवा मिल न सके उस के न डाल ने से उस के गुण से कुछ न्यूनता न होगी बशरते कि और सब औषधें उस में मिली हों और यदि कामदेव को अधिक पुष्ट करना इच्छित हो तो चार नील कण्ठ का मांस और दस ममोले का मांस उस में और अधिक करें ।

❀ एक सौ दसवां अध्याय ❀

माउल शईर (जौ का पानी) और माउल असुल (जड़ों का पानी) का वर्णन ॥

बहुधा हकीमों की इस बात पर सम्मति है कि कोई खाने की दवाई माउल शईर से उत्तम नहीं है और उस में दस प्रकार के गुण हैं (१) शीतल कर ने वाला, (२) गांठ खोल ने वाला, (३) कोठा साफ करने वाला (४) आमाशय को साफ़ करने वाला (५) शीघ्र पकाने वाला, (६) मज़ेदार (७) मातदिल आहार (८) छींक लाने वाला, (९) उबकाई रोकने वाला, (१०) उदर में अफरा नहीं करता,

परन्तु ठण्डी प्रकृति की झिल्ली को हानि कारक है और उसका हानि नाशक गुल कन्द है।

विधि--उत्तम यव छिला हुआ एक छटांक लेकर सवा सेर जल में जोश दें और जब पानी लाल हो जाय तब उस को बदल डालें और दूसरा पानी डाल कर पकावें और जब उस में सुर्खी आवे उसे भी बदल दें इसी प्रकार दो तीन पानी बदल कर आखिर में खूब पकावें कि जौ फट जांय और पानी गाढ़ा होजाय तब ठण्डा करके तब सफेद मिश्री अथवा कोई अन्य शरबत मिलाकर पीवें।

माउल शईर मुलहिम--जब मरीज़ को अधिक बल देना इच्छित हो तो माउल शईर में मांस मिलावें उस की दो तदबीरें हैं एक यह कि मांस को कूर्मे की तरह उचित मसाला डाल कर पकावें परन्तु उस में घी न डालें यदि डालें तो बहुत थोड़ा केवल भूनने अथवा सुगंधित करने को डालें और फिर छिले हुए जौ, दो रंगीन जल बदल कर उस में मिलावें और उस में रसे की तरह नया जल डाल कर पकावें परन्तु जल अधिक हो जिससे कि मांस का असर भली प्रकार निकल आवे।

दूसरी रीति यह है कि जब माउल शईर पिछले

जल में पकाने लगें तब मांस की ईखनी का जल उस में मिलाकर पकावें । यदि यह इच्छित हो कि माउल शईर में गरिष्टता हो तो छिले हुए जो भून कर पकावें अथवा थोड़े पोस्त के डोड़ा एक पोटली में बांध कर जब पकने पर आजाय तब उसमें डालदें ।

माउल असूल—कफज ज्वर, श्वास की तंगी, गला बैठ जाना, और यकृत और प्लीहा की ग्रन्थियों के खोल ने में उपयोगी है ।

विधि—सौंफकी जडका छिलका, कासनी की जडका छिलका, मुलहटी छिली हुई प्रत्येक एक तोला, ज्वरांकुश, अजमोद की जड़, बालछड़ प्रत्येक छे माशे, मुनक्का उन्नाव प्रत्येक बीसनग लेकर सवासेर जलमें जोश करें जब चतुर्थांश शेष रहे बिना मले साफ करलें और उसमें से उचित मात्रा में लेकर थोडा शरबत अथवा सफेद मिश्री मिलाकर पीयाकरें।

❋ एकसौ ग्यारवां अध्याय ❋

क़ैयात (वमन लाने वाली) का वर्णन ॥

मुकी—पित्त और कफके दोषको आमाशय से निकाले और शिरदर्द और ज्वर को गुण करे ।

विधि—मूलीकी जड़ और पत्ते, मुलहटी बिना छिली कुटी हुई जौकुट दोनों को उचित मात्रा में

लेकर जोश करके पानी साफ करें और उसमें सादा सिकंजबीन और नमक मिलाकर गुनगुना बहुतसा पीकर वमन करें।

मुकी—बात पित्त और कफके दोषों को आमाशय से निकाले और पेटका अफरा, दमघुटना और गुरदे के दर्द को गुण करे।

विधि—राई, मेनफल, मूलीके बीज, मुलहटी छे छे माशे जोश करके छानकर उसमें सिकंजबीन सादा दो तोले और नमक चारमाशे मिलाकर थोड़ा थोड़ा करके पीवें और थोड़ी देर पीछे वमन करें।

❋ एकसौ बारहवां अध्याय ❋

मजमजे का वर्णन।

मजमज़ा—मसुड़े और होटके भीतरके घाव, दांतका का दर्द और हिलना और मुखसे रुधिर आनेकोहितहै।

विधि—गुलनार, माजूफल, जौकुट किये हुए, माईं ततरीक सब समान भाग जोश करके ग़रग़राकरें।

मज़मज़ा—मसूड़ों से रुधिर निकलना बंद करे।

बिधि—ततरीक, बालछड, गुलाबका जीरा, तीन तीन माशे, बेरके पत्ते, जंगली बेरकी जड़, एक एक तोले, माजूफल चार माशे, जोश करके ग़रग़राकरें।

मज़मज़ा—दांतोंके दर्द और गर्मी से मुंह आने को अत्यन्त गुणदायक है।

विधि- सूखा धनियां और नारंतग छे छे माशे पानी में पीसकर छानें और नौ माशे ईसबगोल का लुआब और एक माशे कपुर मिलाकर गरगरा करें और यदि मकोय के पत्तों का ताजा रस अथवा कुलफे के पत्तोंका रस और मिलावें तो औरभी अधिक गुणदायक होगा ।

मज़मज़ा—दांतों के दर्द को जो तरी और नजले से उत्पन्न हो उपयोगी है ।

विधि—अकरकरा, खुरासानी अजवायन, प्रत्येक छे माशे मसुर एक तोला, पोस्तके डोड़ा सात माशे जोश करके गरगरा करें ।

मज़मज़ा—दांतों के दर्द को दूर करें ।

विधि—सिरस के पेड की छाल चार तोला, चमेली के पत्ते दो तोले, बाग बिडंग तीन माशे, जोशकर केगरगरा करें।अथवा मकोय,पोस्तके डोडा, असबंद प्रत्येक एक तोला मजीठ छेमाशे जोश करकेगरगराकरें।

मज़मज़ा—गरमी और सरदीसे मुंह आने कोदूरकरें

विधि—अंजीर चारनग नाखूना एक तोला अलसी एक तोला, जोश करके छानकर थोडी केशर और चमेली का तेल मिलाकर गरगरा करें। अथवा ततरीक गुलाब का जीरा प्रत्येक नो माशे, कीकरका दूध, माजूफल प्रत्येक छे माशे जोश करके गरगराकरें।

मज़मज़ा—कफ को निकालने के पश्चात् मुखकी दुर्गंधि को उपयोगी है।

विधि—कच्चा अमर, मस्तगी, लौंग, जायफल, जावित्री प्रत्येक तीन माशे, जौकुट करके पोटली बांधकर गुलाब जल में जोशकर रक्खें और दिनरात कईबार ग़रग़रा किया करें।

मज़मज़ा—मुखकी दुर्गन्धि कोदूर करता है।

विधि—स्वच्छ शहतको जल में घोलकर मज़मज़ा किया करें।

मज़मज़ा—मुखका स्वाद बिगड जाने और स्वाद न आने को गुण करे।

विधि—राई, अकरकरा, मुनक्का, जोशकरकेमज़मज़ा करें। यदि हरारत के कारण हो तो गुलाब के फूल और तंतरीक औटाकर मज़मज़ा करें।

मज़मज़ा—दांतों को मज़बुत और उसके दर्द को दूर करै।

विधि—गुलनार कीकर का दूध, मांई, सुआसुपारी, सुपारी, गुलाबकेफूल, श्वेत चंदन, रक्त चंदन अनार का छिलका, और नागर मोथा समान भाग जोश करके और छानकर थोडा दम्मुल अखवैन मिलाकर ग़रग़रा करें।

मज़मज़ा—जिह्वाके ढीले हो जाने कोगुण दायकहै।

विधि—राईसोंठ, कालीमिर्च, अकरकरा, नौसा; दर, लवण, सज्जी, कलोंजी, और सूखा पोदीना, समान भाग औटाकर गरगरा करें।

मज़मज़ा—जिह्वा और मुखके शोथको उपयोगीहै

विधि—बनफशेके पत्ते, मेथी, अलसी, मुलहटी मकोय नौ नौ माशे अंजीर चार नग अमलतास का गूदा तीन तोले औटाकर छानकर गरगरा करें।

❋ एक सौ तेरहवां अध्याय ❋

मतबूखात [काढ़े] आमाशय, आंत, यकृत, तपीहा, और जलंधर के रोग दूर करने वाले।

मतबूख—आमाशय के कफज शोथ को गुण करे।

विधि—ज्वराकुंशकी कली, मस्तगी, अजमोद, अनीसूं प्रत्येक तीन माशे. हंसराज पांच माशे सौंफ की जड पांच माशे, जोश करके साफ करें और उस में बादाम की मींगी का शीरा पांच माशे और लाल बूरा एक तोला मिलाकर पीवें।

अन्य—आमाशय के शोथ को दूर करे।

विधि—सौंफ, अजमोद, और मकोय समान भाग जोश करके उस में बादाम की मींगी का शीरा और लाल बूरा मिलाकर पीवें।

अन्य—आमाशय के शोथ को दूर करे।

विधि—सोंफ अजमोद और मकोय समान भाग जोश करके उस में बादाम की मींगी का शीरा और लाल बूरा मिलाकर पीवें।

अन्य—आमाशय को बलदे और वमन बंद करे।

विधि—अनारदाना नौ माशे, मस्तगी पोदीना, कचूरी अगर प्रत्येक तीन माशे, जोश करके एक तोला सफेद मिश्री मिलाकर पीवें।

अन्य—संग्रहणी को बन्द करे।

विधि—नागर मोथा, बेलगिरी सूखी हुई, नेत्र वाला, सोंठ, खस, समान भाग जोश कर के सफेद बूरा डालकर पीवें।

अन्य—प्लीहा के सोथ को दूर करे।

विधि—काली हड़, पीली हड़, प्रत्येक तीन माशे शाहतरा, कासनी के बीज, प्रत्येक छे माशे, आकाश बेल के बीज दो माशे, आलू बुखारा पांच नग जोश करके दो तोले गुलकन्द आफताबी मिलाकर पीवें।

अन्य—यकृत आमाशय और तिल्ली के शोथ और जलोदर और कमल वाय को दूर करे और बिगड़े हुए दोषों को नर्म करे और आमाशय और यकृत को बलदे।

अन्य—मजीठ, मस्तगी, सोंफ की जड़ का छि-

रुका, अजमोद की जड का छिलका कासनी की जड़ का छिलका, अनीसूं अजमोद, बालछड प्रत्येक तीन माशे, आकाश बेल के बीज दो माशे, मुनक्का एक तोला, लेकर जोश करके एक तोला सफेद बूरा और सातनग बादामकी मींगीका शीरा मिलाकरपीवें

अन्य–यकृत की ग्रन्थियों को खोलै ।

विधि–रेवन्दचीनी दो माशे, अफसन्तीन ज्वरां कुशकीकली तीन तीन माशे, तितली मेथी चार २ माशे, मुनक्का दस नग पीली अंजीर दो नग लेकर जोश करके डेढ़ तोला सफेद बूरा और दो माशे बादाम का तेल मिलाकर पीवें ।

अन्य–यकृत के शोथ को दूर करे ।

विधि–रेवन्द चीनी डेढ़ माशे, आकाश बेल के बीज, अजमोद, सोंफ प्रत्येक तीन माशे, अफसन्तीन त्रिसफायज, काबली हड, बहेडा पांच पांच माशे, मुनक्का पन्द्रह नग जोश करके उस में दो तोले खुराशानी तुरंजबीन मिलाकर पीवें ।

* एक सौ चौदहवां अध्याय *

मतबूखात (काढ़े) गुरदे और मसाने के रोग दूर करने वाले ।

मतबूख–गुरदे के दर्द और कठिनता से मूत्र आने को गुण करे ।

विधि–काकनज पांच माशे, खुव्वाज़ी के बीज, पांच माशे, सफेद जीरा चार माशे, खरबूज़े के बीज जौकुट नौ माशे लेकर जोश करके पीवें ।

अन्य–गुरदे के दर्द को दूर करे ।

विधि–मेथी अजवायन, गाजर के बीज, अजमोद, तितली के बीज, बाबूना के फूल समान भाग जोश करके पीवें ।

अन्य–गुरदे और मसानेकी पथरी और दर्दको दूरकरे

विधि–सौंफ अनीसु बड़े गोखरू हंसराज, खुव्वाजी के बीज, गुल बनफशा, आकाश बेल के बीज कुलथी के बीज, तीन तीन माशे, खरबूजे के बीज नौ माशे खीरे ककडी के बीज एक तोला जोश करके शरबत बजूरी वारिद दो तोला मिलाकर पीवें ।

अन्य–गुरदे के दर्द को उपयोगी है ।

विधि–खरबूज़े के बीज जौकुट दो तोला, लाल बूरा दो तोला, लेकर डेढ़ पाव जल में जब आध पाव जल शेष रहे तब छानकर गुनगुनी पीवें ।

❀ एक सौ पन्द्रहवां अध्याय ❀

मतबूरवाद–रजको प्रवाहित करने वाले ॥

मतबूरव–रजके न्यून अथवा बन्द हो जानेको दूरकरे

विधि–आसारून तीन माशे, तितली दो माशे सौंफ छे माशे, लोबिया के बीज नौ माशे, जल में

पकाकर मासिक धर्म्मके समय तीन दिनलगातार पीवें

अथवा—तितली, सौंफ, अजमोद प्रत्येक छै माशे पीली अंजीर पांच नग जल में औटाकर दो तोला गुलकन्द आफताबी मिलाकर पीवें।

अथवा—लोबिया सुर्ख, अनीसून मजीठ, तितली के बीज, समान भाग जल में औटाकर पीवें।

अन्य—कड के बीज जौकुट, गावज़बां के पत्ते खरबूज़े के बीज जौकुट समान भाग औटाकर साफ करके लाल बूरा मिलाकर पीवें।

❀ एकसौ सोलहवां अध्याय ❀

मतबूखात—दर्द दूर करने वाले।

मतबूख सुरंजान—जोड़ोंके दर्दको दस्तों द्वारादूरकरे

विधि—सुरंजान मीठा, बूजीदान छै छै माशे, सफेद निसोत छेदद ार कड के बीजकी मींगी. सोंठ इन्द्रायन का गूदा तीन २ माशे, मजीठ, अजमोद अनीसून सात सात माशे जल में औटाकर एक तोला लाल बूरा मिलाकर पीवें।

मतबूखबूज़ीदान—जंघा और पीठ की पीड़ा और दर्दों को उपयोगी है।

विधि—बूज़ीदान, चीता, सोंठ, प्रत्येक पांच माशे सुरंजान, ज्वरांकुश की जड़ अजमोद की जड़ का बक्कल. सौंफ की जड़ का बक्कल चार चार माशे,

मुनक्का मेथी दस दस माशे औटाकर नौ माशे अण्डी का तेल मिलाकर पीवें ।

मतबूख़ हलैला—जोडों के दर्द को गुण करे ।

विधि—सुरंजान, सोंफ, सोंफकी जड़ का छिल्का, अजमोद अनीसूं पांच पांच माशे, हंसराज, गावज़ुबां, बिल्ली लोटन चार २ माशे, गुलाब के फूल, पीली हड़ छैछै माशे, सनायमक्की सातमाशे, गुलकंद आफतावी डेढ़ तोला जल में औटाकर तीन तोले तुरंजबीन घोलकर प्रातः काल पीवें ।

मतबूख़—कूले के दर्द और रांगन के दर्द को दूर करने में अत्यन्त उपयोगी है ।

विधि—मस्तगी, अनीसूं पांच पांच माशे, सोंठ, ज्वरांकुश की जड तीन तीन माशे, मजीठ, चीता, सुरंजान बूजीदान, अजमोद, मेथी, सोंफ चार २ माशे, मुनक्का १५ नग जलमें जोश देकर एक तोला अंडी का तेल मिलाकर पीवें ।

❀ एक सौ सतरहवां अध्याय ❀

मतबूख़ात—ज्वरों को दूर करने वाले ।

मतबूख़—कफज्वर और चौथैया ज्वर को दस्तों द्वारा दूर करे ।

विधि—ज्वरांकुश की जड़, शाहतरा, ऊंट कटेरा कबाब चीनी चार चार माशे, आकाशबेल तीनमाशे,

काबली हड छे माशे, मुनक्का पंद्रह नग का काठा बनाकर और दो तोले सिकंजबीन मिलाकर पीवें।

अन्य–उस ज्वरको गुणदायक है जो प्रति दिन चढ़ा रहे और एक दिन छोड़कर जोरका आवे।

विधि–मुलहटी, अजमोद, सोंफ की जड, पांच पांच माशे, ऊंट कटेरा तीन माशे, पोदीना, मस्तगी दो दो माशे, सूखा धनिया, गुलाब के फूल, चार चार माशे, लेकर जल में औटाकर चार तोले तुरंजबीन मिलाकर पीवें।

अन्य–उस कफ ज्वरको दूर करेजो बिना किसी नियत समय के आजाय।

विधि–बालछड़, अनीसूं, सूखा धानियां, गुलाब के फूल प्रत्येक पांच माशे, मस्तगी दो माशे, अफसंतीन, आकाश बेल के बीज, ज्वरांकुश की जड़ अजमोद, सौंफकी जड़का छिलका, चारचार माशे पीली हड सातमाशे मुनक्का १९नग शहत का गुलकंद तीन तोले लेकर जलमें जोश देकर दो तोला सिकंजबीन मिलाकर पीवें।

अन्य–चौथेया ज्वर के मलको नर्म करकेनिकाले।

विधि–सनायमकी, आकाशबेल, बनफशे के पत्ते, खरबूजे के बीज जौकुट, सोयेके बीज, प्रत्येक पांच माशे, काबली हड पीलीहड सात सात माशे,

लेकर जल में जोश देकर तीनतोले सिकंजबीन, मिलाकर पिलावें।

अन्य–चौथैया ज्वरको दूरकरे।

विधि–खिल्ली लोटन, गावज़बांके पत्ते, आम ला पांच पांच माशे, सनायमकी सात माशे, बिस-फायज, खबाली, आकाशबेल, गारीकून, तीन तीन माशे, तीनों हड चार चार माशे, आलूबुखारे मुन क्का दस दस नग, गुलकंद आफताबी तीन तोले लेकर जोश देकर पीवें।

अन्य–कफज्वर और पट्ठों के दर्द को दूरकरे।

विधि–अजमोदकी जड़, सोंफकी जड, ज्वरांकुश की जड़, हंसराज, अनीसूं, मस्तगी, समानभाग लेकर जलमें औटाकर छानकर पीवें।

अन्य–विषमज्वर तथापुराने शीतज्वर कोदूरकरे।

विधि–खस, रक्तचंदन, सूखाधनिया, नरकचूर सोंठ, ताज़ा गिलोय, समान भाग लेकर औटावें और जब अष्टांस जल शेष रहे तब छानकर सफेद मिश्री मिलाकर पीवें।

अन्य–चौथैया ज्वरको अत्यन्त उपयोगी है।

विधि–पोस्त के डोडा प्रकृति अनुसार तोल में लेकर उसके आठवां भाग कालीमिर्च कुटी हुई उसमें मिलाकर औटाकर छानकर पीवें।

अथवा—काबलीहड का बक्कल, कासनी के बीज, छेछे माशे, सौंफकी जड, शाहतरा, चार २ माशे, अमरबेलके बीज तीन माशे, आलूबुखारे उन्नाब प्रत्येक दस नग और गुलकंद तीन तोले जल में औटाकर छानकर पीवें।

अन्य—कफज्वरको दूरकरै।

विधि—मुलहटी पांचमाशे, सौंफचारमाशे, ताजा गिलोय सातमाशे, पीली अंजीर दो नग जलमेंऔटा कर छानकर और दो तोले लालबूरा मिलाकरपीवें।

अन्य—खांसी और ज्वर को दूरकरै।

विधि—हंसराज, खतमी के बीज, खुब्बाजी के बीज, मुलहटी की जड, सौंफ प्रत्येक चारमाशे, पीपरामूल दो माशे, लेकर जल में औटाकर दो तोले लाल बूरा मिलाकर पीवें।

अन्य—बुखार और सूखी खांसी को दूर करै।

विधि—मुलहटी की जड, बनफशेके पत्ते, गावजबांके पत्ते, चारचार माशे, बिहीदाना दो माशे, लिहसौहे दस नग लेकर जलमें औटाकर दो तोले लाल बूरे में मिलाकर पीवें।

❀ एकसौ अठारवां अध्याय ❀

मतबूखात—विविध प्रकार के।

विधि—नागरमोथा, बावची चिरायता बकायन के पेड की भीतरी छाल, सफेद चंदन, प्रत्येक तीन माशे, गिलोय, छोटी कटेरी, बडी कटेरी, हड बहेडा आमला प्रत्येक चार माशे, कुटकी बायबिडंग, हल्दी बच, सोंठ, मीठाकूट इन्दरजौ, भांगरा, बिजयसार प्रत्येक दो माशे, लेकर आधसेर जल में औटावें जब डेढ़ छटांक जल शेष रहे तब विना मले छानलें और एक तोला सफेद मिश्री मिलाकर पीवें।

अन्य—गलितकुष्ठ, सून्यता और इसी प्रकार के अन्य रोगों को दूरकरे।

विधि—मजीठ, झाऊका छिलका, नागरमोथा, ताजागुर्च, सोंठ, हल्दी, बडी कटेरी, छोटी कटेरी, बंगला पान, बायबिडंग, चितावर, देवदार, इन्द्रजौ, भांगरा, सितावर, पीले कनेर की लकड़ी, हड बहेडा आमला, चिरायता, बकायन के पेड की छाल, बिजेसार, गुलफांग, बकची, सफेद चदन, बेरके नरमपेड़ की अंतर छाल, करंज की अंतर छाल पित्तपापड़ा, अतीस, इन्द्रायन कीजड, प्रत्येक दो माशे; लेकर जोश देकर छानकर पीवें।

अन्य—आतशक के दूर करने में गुणदायक और परीक्षा किया हुआ है।

विधि—नीमकी छाल, कचनाल की छाल, इन्द्रा

यन की जड़, मुंडी, छोटीकटाई कीजड, छोटी क
टाई कीलकड़ी, पुराना गुड प्रत्येक एक छटांक लेक
तीन सेर जल में औटावें जब चौथाई भाग जल शे
रहे तब छानकर एक शीशी में रक्खें और प्रकृति अ
नुसार उचित मात्रा में पीया करें।

❋ एकसौ उन्नीसवां अध्याय ❋

मुरब्बों का वर्णन।

मुरब्बासोंठ—इसकी प्रकृति गर्म खुश्क है, गुरदा
मसाने और आमाशय की सरदी को दूर करता है
मूत्र लाता है काम शक्ति को प्रबल करता है और
कफ ज्वरों को गुणदायक है।

विधि—बेरेशे सोंठ को एक बरतन में रखकर
बालू से बंद करें और उसपर पानी डालें इक्कीस दि-
न तक इसी प्रकार तर रक्खें फिर निकालकर खूब
धोवें और किसी नोकदार चीज़ से खूब गोदकरपा
नी और शहत के साथ जोश दें कि चाशनी होजाय
और चाशनी में सोंठ डूबी रहे।

मुरब्बा तुरंज—हृदय और आमाशय को बलदे
और चित्तको प्रसन्न करे।

विधि—बिजोरा का छिलका जोश करें जब आ
धा सीजजाय तब निचोड़ कर शहत या सफेद कंद

मुरब्बा आमला—हृदय मस्तिष्क और आमाशय को बलदायकहै और चित्तको प्रसन्न करताहै औरउचित वस्तुओंके संयोगसे सेवनकरना अग्निको बढाता हैकामदेव को प्रबल करताहै और भोजनकोपचाताहै।

विधि—हरे आमले जो पकने पर आगये हों बांस की कीलीसे गोदकर चूने के जल में भिगोदें तीन दिन पश्चात् निकालकर धो डालें और थोडा जोश देकर पानी निकालले जब जल का अंशन रहै तब घी में भूनलें और घी की चिकनाई दूर करके सफेद बूरेकी चाशनीमें डालें जब चाशनी पतली होजाय तब उसमें थोडा बूरा और मिलाकर चाशनी करें और उसमें आमले पडे रक्खें इसी प्रकार जब चाशनी पतली हो जाया करें उसको गाढी करलिया करें।

मुरब्बा हड—पेटको नर्म करता है वायु को दूर और आमाशय को बल देता है।

विधि—साबत सुखी हड को चंदरोज पानी में भिगोकर पानी बदलकर जोशदें (यदि गीली हड मिलजांय तो उत्तम हैं) कि उसका छिलका और मींगी नर्म होजाय उसके पश्चात् आमले के मुरब्बेकी रीति अनुसार तैय्यार करें।

मुरब्बा पेठा—गरमी के ज्वरों को दूर करता है खासकर महीन ज्वरको और होल दिली और गरमी की मस्तिष्क पीडा को गुणदायक है।

विधि—पेठेको छीलकर तराशें और उसका कड़ा गूदा अलग करदें और उसका नरम गूदा जिसमें बीज होते हैं पीस डालें और पानी जो पेठे के तराशने में निकला हो उसमें मिलाकर छानलें औरउस पानीमें कड़े कतलों को जोशदें जब पानी सोखजाय तब कतलों को अधसूखे करके घीमें अधभुने करके उसकी चिकनाई कपड़े से साफ करें और सफेद कंद की चाशनी में डुबा रक्खें और जब चाशनी पतली हो जाया करे तब आमले की चाशनी की रीति से उसको ठाककर लिया करें।

मुरब्बा गाजर—कामशक्तिको बलदायक चित्तको प्रसन्न करने वाला और निर्मल रुधिर उत्पन्न करने वाला है।

विधि—गाजरों को छीलकर और बीचका डंठलदूर करके गायके दूधमें औटावें जब पक जांय अधसुखी करलेंऔर घीमें भूनकर सफेद शकरकी चाशनीमेंडूबी रक्खें यदि चाशनी पतली होजाय तो उसको फिर गाढ़ी करलें।

❀ एक सौ बीसवां अध्याय ❀

मरहमों का वर्णन।

मरहम सेफ़दा—मांसको जमावे घावको शुष्क करे और उसकी गरमी को शान्ति करे।

विधि–रांग की भस्म छै माशे, सफेद मोम एक तोला गुलरौगन दो तोला लेकर मरहम बनावें ।

अन्य सफेदा कपूरी–फोड़े के बुरे मवाद को दूर करके अच्छा मांस और खाल जमावे ।

विधि–सफेद मोम एक तोला, लेकर तीन तोले गुलरौगन में गूंध कर, पांच माशे रांग की भस्म चार माशे मुरदासंग, और तीन माशे कपूर मिलाकर मरहम बनावें ।

अन्य–फोड़े की सूजन और कड़ापन दूर करे और घाव को आराम करे ।

विधि–पीला मोम, गाय की पिंडली का गूदा, बकरी के गुरदे की चरबी एक एक तोला, गुलरौगन तीन तोला, एक नग मुर्गी के अण्डे की ज़र्दी लेकर सबको आग पर रख कर मिलावें और केशर बाबूना के फूल, तीन तीन माशे चूर्ण करके मिलावें ।

अन्य आबी–घाव और ज़ख्म को बिलकुल अच्छा करे और नासूर को दूर करे ।

विधि–गूगल चार माशे और मोम एक माशे लेकर दोनों को पानी में खूब हल करें फिर चार माशे पारा मिलाकर खूब घोट कर मरहम बनावें ।

अन्य उशुक़–सोथको बिठाने और कण्ठ माला और नासूर को अत्यन्त गुणदायक है ।

विधि—कान्दर पांच माशे और गूगल पांच माशे लेकर चार तोला सरसों के तेल में हल करके एक तोला पीला मोम मिलाकर अग्नि पर रक्खें और राई, समुद्रफेन, जराबन्द लम्बा, आंवलासार, गंधक प्रत्येक पांच माशे चूर्ण करके मिलावें और यदि फोड़े को शीघ्र पकाना हो तो इस में एक एक तोला खतमी के फूल और पत्ते पीस कर और मिलावें और गुने गुना फोड़े पर बांधें।

मरहम एजाज़—बन्दूक के घाव, और नासूर, बुरे घाव, और बादी के घावों को जो किसी दवा से अच्छे न होते हों दूर करता है।

विधि—तिल का तेल और मीठा पानी पांच पांच तोले एक कसकुट के बरतन में डालकर हाथ से खूब घोटें कि मट्टी के समतुल्य हो जाय इस के उपरान्त नीलाथोता, फिटकिरी, लाल कत्था, सफेद राल सवा सवा तोले चूर्ण करके इतना हाथ से रिगड़ें कि मरहम के सदृश्य होजाय और चीनी के बरतन में रक्खें और जब इस मरहम का सेवन करें तब नमक की पोटली से घाव को सेका करें।

मरहम बासलीकून—पट्ठों के जोड़ों के घाव तथा अन्य घावों को अच्छा करे और फोड़ों को नरम करे और बिठावें।

विधि—आध पाव कड़वे तेल में पांच तोला पीला मोम घिसकर एक तोला वहरोज़ा मिलावें फिर सफेद राल दो तोला, फिटकिरी भुनी हुई, मस्तगी प्रत्येक छे माशे चूर्ण करके मिलावें और खूब हल करके मरहम बनावें।

मरहम जाज़िब—जिस चीज़ ने शरीर में चुभकर फोड़ा कर दिया हो उसको निकाले और गहरे घावों को अच्छे मांस से भरे और घावों को अच्छा करे।

विधि—सफेद राल एक तोला, रूमी मस्तगी एक तोला छे माशे, पीला मोम डेढ़ तोला, सरसों का तेल चार तोला, लेकर मरहम बनावें।

मरहम—फोड़े को पका कर तोड़ दे और नश्तर लगाने की आवश्यकता न हो।

विधि—बूरए अरमनी तीन माशे, साबन छे माशे गेहूं के आटे का सूखा हुआ ख़मीर नौ माशे, सूखा चूना सवा तोला, मुर्ग़ की बीट ढाई तोला, कबूतर की बीट आधी छटांक लेकर कड़वे तेल में मिलाकर मरहम बनावें।

मरहम दाख़िलयून—यह हकीम बुकरात का निर्माण किया हुआ है माल जाती बुक़राती नामक पुस्तक में इस के बहुत से गुण लिखे हैं। शोथ फोड़ा और कड़ी गिलटी को पकावे और तोड़ कर आराम

करे, कण्ठ माला को गुण करे, और गरमी के शोथ की पीड़ा और पुट्ठों के कड़ापन को दूर करे ।

विधि—खतमी के बीज, ईसपगोल, मेथी के बीज, अलसी प्रत्येक डेड़ तोला, रात को पानी में भिगोकर सुबह को गाढ़ा लुआब निकाललें और जैत अथवा सरसों के पुराने दस तोले तेल में ढाई तोला मुरदासंग पीसकर मिलावें और आग पर रक्खें और एक लकड़ी से चलाते रहें जब गाढा और श्याम वर्ण होजाय तब उपरोक्त लुआब को मिलाकर मरहम की रीति पर पकावें फिर अंगूर की लकड़ी की राख और भटवांस का, आटा प्रत्येक छे माशे, फिटकरी और जंगाल तीन तीन माशे, पीसकर मिलावें ।

मरहम अस्ल—फोड़े और कड़े शोथ को तोड़े और भाफ़ करे ।

विधि—शहत को ओटावें कि गाढा होजाय फिर उसकी चतुर्थांश फिटकिरी पीसकर मिलावें ।

मरहम मिश्री—यह मिश्र देश के हकीमों का बनाया हुआ है पुराने और कड़े घावको दूरकरताहै ।

विधि—पांच पांच तोला सिरका और शहत मिला कर जोशदें जब गाढ़ा होजाय जंगाल छे माशे, और

मरहम सिंदूर—घाव और जख्म को भरदे ।

विधि—तिलका तेल चार तोला, सफेद मोम दो तोले मिलाकर संगवसरी छै माशे, सिंदूर दोनों सात सात माशे पीसकर मिलावें ।

❀ एकसौ इक्कीसवां अध्याय ❀

प्रधान मरहमों का वर्णन ।

मरहम—कान के भीतर के घावों को अच्छाकरे।

विधि—डेढ़ तोला ख़ालिस सिरका और दो तोले ख़ालिस शहत मिलाकर औटावें जब गाढ़ाहो जाय छै माशे जंगाल बारीक पीसकर मिलावें ।

मरहम सफरजल—नाकके घाव तथा अन्य घावों को भरता है ।

विधि—गुल बनफशा नौ माशे, बिहीदाना छै माशे, थोडे जलमें जोश करके कुआब निकालै और साफ करके दो तोले गुल रोग़न एक तोला सफेद मोम मिलाकर मरहम बनावें ।

अथवा—नागर मोथा, माजूफल, केशर, तीन तीन माशे, रोगन गुल दो तोले सफेद मोम एक तोला लेकर मरहम बनावें ।

अन्य—होट के फटने और सूखे रेशोंको दूरकरे

विधि—सफेद मोम एक तोला, सफेद तिल का तेल दो तोला, मिलाकर सफेद कत्था, वंग, गेहूंका

निशास्ता, हरे माजूफल प्रत्येक तीन माशे चूर्ण
रके मिलावें ।

अन्य-ववासीर को गुणदायक है ।

विधि-लोहे का मैल, मुरदासंग, वंग, केश
फिटकिरी प्रत्येक तीन माशे पीसकर पीला मोमए
तोलाऔर गायका घीर तोले,में गूंधकरमरहमबनावें

अन्य-गुदा के फटजाने को दूर करता है ।

विधि-सफेद मोम दो तोले, महँदी के पत्ते नौ
माशे, गुलरोगन चार मासे, लेकर मरहम बनावें ।

मरहम कपूरी-गुदा के सोथ और फटजाने को
अच्छा करे ।

विधि-सफेद मोम एक तोला, गुलरोगन ती-
न तोला, मुरदासंग तीन माशे, निशास्ता छै माशे,
अफीम दो माशे लेकर मरहम बनाकर लगावें ।

अन्य-गुदा की पीड़ा और कांच निकलनेको
गुणदायक है ।

विधि-मकोय, मसुर छिली हुई, गुलाब के फूल
समान भाग बारीक पीसकर ताजा धनियें का पा-
नी मिलाकर पकावें और गुल रोगन मिलाकर
मरहम बनावें ।

चार तोला, मुरदासंग, गुलनार आंवा हलदी, द-
म्मुल अख़वैन, फिटकिरी भुनी हुई, सुरमा बारह
सींगे की भस्म प्रत्येक दो माशे लेकर मरहम बनावें।

अन्य–मूत्रेन्द्रिय के घावको गुणदायक है।

विधि–दो तोला मोम, चार तोला गुलरोग़न
में गूधकर छे माशे नीलाथोता घिसकर मिलावें।

मरहम राल–मुत्रेन्द्रियके घाव दूर करनेमें अत्य-
न्त गुणदायक और अद्वितीय है।

विधि–सफेद मोम दो तोला, लेकर पांच तोले
गुलरोग़न में गूंधकर सफेद राल एक तोला, बंग,
दम्मुल अखवेन, मुरदासंग, नीला थोता, गुलनार,
कालीमिर्च, प्रत्येक छे माशे, वारीक पीसकर मिला
वें ओर प्रतिदिन घावको महँदी अथवा चोबचीनी
के पानी से धोकर इस मरहम का फाया लगायाकरें।

मरहम सिंदूर–अंडकोश के घाव कंठमाला और
सरतान को दूरकरे।

विधि–मुरदासंग, गंदाबहरोजा, छेछे माशे लो
बान, रूमी मस्तगी कान्दर, बबूलका गोंद, सिंदूर,
नौ नौ माशे, लेकर सरसों का तेल मिलाकर घोटें।

मरहम–मुत्रेन्द्रिय के राधदार तर व विनाराधके
शुष्क घावों अच्छा करे।

विधि–लोहे का मेल, मुरदासंग प्रत्येक छे माशे,

लेकर दो तोले सिरके में खरल करें जब सूखजाय तब दम्मुल अखवैन नो माशे, कागज़ की राख छै माशे, फिटकिरी जली हुई छै माशे और गुलरोगन चार तोले मिलाकर मरहम बनावें।

मरहम—मूत्रेन्द्रिय और अंडकोषके घाव को गुणदायक है।

विधि—सफेद मोम एक तोला लेकर चार तोले बादाम या अंड के तेल में गूंधें और पीला मुरदासंग, सफेद मुरदासंग, बंग, फिटकिरी, जलीहुई प्रत्येक छै माशे और एक नग मुर्गे के अंडे की सफेदी मिलाकर खरल करें।

मरहमसुजरिंव—एक दिन में उपदंश के घाव और दानों को आराम करता है।

विधि—गोल चोबचीनी दो माशे, शिंगरफ ९ माशे, नीलाथोता धुला हुआ एक तोला, गजी के कपड़े की राख जिसमें पाराछाना गया हो और वह काला होगया हो तीन माशे, भूभल में भुने हुए मुर्गी के दो नग अंडेकी ज़र्दी, लेकर उसमें गाय का घी डालकर मरहम बनावें।

अन्य—उपदंश को दूर करता है।

विधि—जंगाल, पारा प्रत्येक एक तोला, कुन्दर

ऐलुवा छे छे माशे लेकर छे तोला गाय के घी में खरल करके मरहम बनावें।

मरहम—सफेद दाग और छीपको दूरकरताहै।

विधि—तांबे की भस्म, आमलासार गंधक, पत्थर का चूना, चितावर, ज़राबन्द समान भाग लेकर पीसकर तेज़ सिरके में घोल कर बीस दिन तक धूप में रक्खें उसके पश्चात् घोटकर काम में लावें।

मरहम-ठेरे तथा बिना ठेरे पीठके फोड़ेकोअच्छाकरै

विधि—शीशे की भस्म, नीलाथोता धुला हुआ छे छे माशे, लेकर एक तोला ईसपगोल के लुआब और थोड़ा गुलरोग़न मिलाकर मरहम बनावें।

अथवा—शीशे के खरल में अरमनी मट्टी और सिरका डालकर घिसें कि काला होजाय फिर उसमें थोडा गुलरोगन मिलाकर घिसें कि मरहम बनजावे

मरहम—बवासीर के विशेष दर्द को गुणदायकहै।

विधि—एक नग करम कल्ला जल में जोश करें जब घुल जाय तब बेसन, एक नग मुर्गी के अण्डे की सफेदी और ज़रदी और रोग़नगुल प्रत्येकतीन तोला, अफीम दो माशे सब को अग्नि पर रखकर मरहम बनावें।

मरहम शलजम—घाव को भरने और शोथ और कड़ापन के दूर करने में बेनज़ीर है।

विधि—आध पाव गुलरोगन में पांच तोले शलजम टुकड़े टुकड़े करके भूने जब शलजम जलजाय तेल को छान कर उस में दो तोला सिंदूर डालकर नीमकी लकड़ी से खूब घोटें और छे माशे कपुर मिलावें

मरहम—बढ़ती मांस के काटने मे उपयोगी है और दर्द नहीं होगा।

विधि—जमाल गोटा दो तोला, जिंगार एक तोला, दोनों को खूब पीसकर और बढती मांस पर लगा कर ऊपर से एक फाया किसी मरहमका रखदें।

मरहम काला—हर प्रकार के फोडे को पका कर तोड़ता है और मवाद निकाल कर शीघ्र अच्छा करता है और घावों को सुखाता है।

विधि—पांच तोला तिलका का तेल और काशगारी सफेदा दो तोला, लेकर प्रथम सफेदे को रिगड़ कर तिल के तेल में मिलाकर लोहे बरतन में आग पर रक्खें और नीम की लकड़ी से घोटें जब ऐसा गाढ़ा होजाय कि एक बूंद मरहम पानी में डाकें तो वह बंध जाय और पानीमें न मिले तब आगसे उतारलें

मरहम ज़ब्दुल बहर—हकीम गैलानी ने अपनी पुस्तकों में घाव के भरने और शुष्क करने मे अत्यन्त उपयोगी लिखा है।

विधि—तीन तोला गाय के घी में एक तोला

सफेद मोम डालकर घूंवें उस के पश्चात् सिंदूर, मुरदासंग, समुद्रफेन, एक एक तोला, नीलाथोंता छे माशे उसमें डालकर और खूब घोटकर मरहम बनावें ।

❋ एक सौ बासईवां अध्याय ❋

माजून का वर्णन जो सब प्रकार के रोगों को दूर करें और अवयवों को बलदें ।

माजून निजाअ—वातज रोग, बावलेपन, और मिरगी को दूर करे और मस्तिष्ककी शुद्धि करे ।

विधि—कालीदड़, बहेडा, आमला, प्रत्येक एक तोला, बिसफायज, खंकाली, आकाश बेल, उस्तखुद्दूस सफेद निसोत छेददार छिली हुई, प्रत्येक ढाई तोला नरम गारीकून कुटी हुई छे माशे लेकर तिगुने शहद के साथ माजून बनावें ।

माजून—मुहम्मद ज़करिया की बनाई हुई है इस के सेवनसे मिरगी, लकुवा और पक्षाघात दूर होताहै ।

विधि—आकाश बेल उस्तखुद्दूस, बिसफ़ायज, खंकाली, अकरकरा, समान भाग लेकर तिगुनी जंगली प्याज की सिकंजवीन के साथ या तिगुनी मुनक्का के साथ माजून बनावें ।

माजून अफ़तीमून—मस्तिष्क और समस्त शरीर से बात और कफ़ को निकालती है और माली खोलिया और जिनून को दूर करती है ।

विधि—अमर बेल, खकाली, सनायमकी, गारीकून, सफेद निसौत प्रत्येक एक तोला, गावज़बां, उस्तख़ुद्दूस, ख़िल्लीलोटन, प्रत्येक नौ माशे, वाय बिडंग, राम तुलसी, काजबई प्रत्येक छे माशे, मीठा कूट तीन माशे लेकर सब ओषधों से तिगुना शहत डालकर माजून बनावें।

माजुन ज़बीब—मृगी को दूर करती है।

विधि—काबली हड़, पीली हड़, बहेड़ा, आमला उस्तख़ुद्दूस प्रत्येक एक तोला, ऊदसलीब छे माशे, अकरकरा चार माशे लेकर पाव भर मुनक्का के साथ माजून बनावें।

अन्य विधि—पीली हड़, सफेद निसौत, सौंठ, मस्तगी, ऊदसलीब, प्रत्येक एक तोला, उस्तख़ुद्दूस, काली हड़, आमला दो दो तोला दारचीनी डेढ़ तोला, मीठे बादाम के तेल में चिकनी करके तिगुने शहत के साथ माजून बना कर चालीस दिन पश्चात् काम में लावें।

माजून—विस्मृती को दूर करे।

विधि—लोबान, सफेद बच प्रत्येक ढाई तोला, सौंठ काली मिर्च प्रत्येक सवा तोला, लेकर तिगुने शहत के साथ माजून बनावें।

माजून—विस्मृति को दूर करने और मस्तिष्क व हृदय को बल देने में अत्यन्त गुणदायक है।

विधि—दालचीनी, बालछड़, हब्बबिलसां, अगर मस्तगी, केशर, कुन्दर, सोसन की जड़, दरूज अकरबी, नागरमोथा, बहमन सुर्ख, बहमन सफेद, वच, उस्तखूद्दूस, कबाब चीनी, नेत्र बाला, तीन तीन माशे, काबली हड़, गिरी गोला की, फिंदक की मींगी छे छे माशे, आबरेशम कतरा हुआ, मुनक्का प्रत्येक एक तोला, पीपला मूल, सोंठ, काली मिर्च दो दो माशे, लेकर दो भाग सफेद बूरा और एक भाग शहत के साथ माजून बनावें।

माजूनयूनस—बुद्धि को तीव्र करे विस्मृतिको दूरकरे

विधि—तज, वच, जराबन्द, दार चीनी, मस्तगी प्रत्येक दो तोला, मीठा कूट, तितली के बीज सफेद मिर्च तीन तीन तोला, मिलाकर अमरबेल, गारीकून एक२ तोला, लेकर तिगुने शहतके साथ माजूनबनावें

माजन मुजरिंब—होलदिली को दूर करती है।

विधि—आमला, बिल्लोलोटन, काबली हड़, सफेद बंसलोचन, लौंग, जावित्री, जायफल, तेज पात, छोटी इलायची के बीज, अगर नौ नौ माशे बिजोरेका छिलका, चायखताई, पिस्ता के ऊपर का छिलका एकर तोला, लेकर चौगनी मिश्री की

में जो अनार के जल या गुलाब के अर्क या जरिश्क के पानी या नीबू के रस में की हुई दो मिलावें ।

माजून—यह माजून हकीम सैयद इसमाईल जिर यानी की बनाई हुई है और हौलदिली को हित है।

विधि—काबली हड़ चार तोला, आमला, गाव ज़बां के पत्ते छै छै तोला लेकर डेढ़ सेर जल में जोश करें जब अर्द्धभाग जल शेष रहै तब मलकर छानलें और पाव भर शहत और आध सेर सफेद शकर मिलाकर चाशनी करें और बिल्ली लोटन, बिजौरे का छिलका, बहमन, नरकचूर, बालंगा, राम तुलसी, बालछड़, प्रत्येक एक तोला, लौंग, जायफल तज, केशर, तीन तीन माशे, मस्तगी, सफेद इलाय-ची के बीज, दरूनअकरबी छैर माशे पीसकर मिलावें

माजून सीर (लहसन पाक)—लकुवा, अर्द्धांग बात, कंपन पाय, बादी की बवासीर, छीप और सफेद दाग़ को गुण करे. कफ़ को दूर करे आमाशय को बलदे, क्षुधा और अग्नि को बढ़ावे और शरीर के रंगको सुर्ख और रूपवान करे और बुड्ढे मनुष्य को अत्यन्त गुणदायक है ।

विधि—लहसन का छिलका दूर करके ढाई पाव लेकर आध सेर दूध में पकावें जब दूध सोख जाय तब सब को पीसकर तीन पाव शहत और पाव भर

घी में मिलाकर पकावें जब पानी का अंश शेष न रहे तब लौंग, जावित्री, जायफल, काली मिर्च मस्तगी छोटी बड़ी इलायची के बीज, काबलीहड़ अगर दालचीनी सोंठ, एक एक तोला और केशर छे माशे कूट छानकर मिलावें ।

माजून कुचला—इसको "अकसीरुल बदन" और "मुब्दुल मिजाज़" भी कहते हैं अफीम खाने की टेव छुड़ाने जोड़ोंकी शिथिलता दूर करने और अर्द्धांग वात और शीत के रोग गठिया का दर्द रांगन और पेशाव की विशेषताको अत्यन्त गुणदायक है ।

विधि—कुचला छे तोले गाय के दूध में भिगो कर उसका छिलका दूर करें और बारीक वर्क़ तराश कर सुखावें और पीसें और गावजवां के पत्ते चार तोला सफेद इलायची के बीज, नरकचूर शकाकुल मिश्री, सफेद चन्दन, आमला, काली हड़, दो दो तोला अगर लौंग एक एक तोला, उस्तखुद्दूस चिरौंजे के बीज, कतीरा, गोला, तीन तीन तोला लेकर तिगुने शहद में माजून बनावें ।

माजून बच—श्वास को आरम्भ में गुणदायकहै ।

विधि—बच हींग, सोंठ, सोंफ समान भाग लेकर दूने शहद के साथ माजून बनावें ।

माजून—यह माजून हकीम "अरस्तूनातबस" यू-

नानी की बनाई हुई है। रुधिर थूकने, खांसी, फेफड़े के घाव, छाती में राध जम आना, पहलू की जलन, भोजन उलट जाना, हैज़ा संग्रहणी, आतों के व्रण, मसाने के रोग और पेडू फूल जाने को गुणदायक है ज्वर आने से एक घड़ी पहले देने से उसको रोकती है और शरीर की कमज़ोरी को, खाने के विषों का ज़हर दूर करने को, जानवरों के विषको और बिच्छू के डंक को अत्यन्त उपयोगी है और अत्यन्त गुणदायक है।

विधि—शुद्ध नहरोज़ा, सलारस प्रत्येक डेढ़ तोला पाव भर शहत में मिलाकर आग पर रक्खें जब घुल जाय साफ करके दारचीनी, मीठाकूट, काली मिर्च पीपल एक एक तोला, जुंदबेदस्तर छै माशे, और अफीम दो माशे मिलावें।

माजून संदल—खफ कान गर्म आमाशय से गर्म अबखरों के निकलने झडी और योनि की गरमी को दूर करती है।

विधि—तीन पाव शकर की चाशनी बनावें और नौ तोला सफेद चन्दन घिसकर उस में इमली का का पानी पाव भर और खट्टे अनार का पानी डेढ पाव मिलाकर चाशनी करें और सफेद बंसलोचन

अगर प्रत्येक एक तोला केशर छै माशे पीसकर मिलावें

माजून बुकरात—यकृब, आमाशय, गुरदे और काम शक्ति को बलदे क्षुधा बढ़ावे, कफ वाय अजीर्ण और मुख से लार बहने को दूरकरे मुखको सुगंधित करे और पेट के कीड़ों को मारे।

विधि—अजवायन. गाजरके बीज, सोंठ प्रत्येकढाई तोला, केशर, बिसफायज प्रत्येकपांच माशे, अजमोदकी जड सवा तोले लेकर तिगुने शहत में माजून बनावें।

माजून—मास्तिष्क हृदय और आमाशय को बल देती है शरीर को कान्तिवान करती है भोजन को पचाती है मुखको सुगन्धित करती है मसुडोंको मजबूत करती है वायुको दूर करती है मसाने को शुद्ध और मूत्रेन्द्रियको कड़ा करतीहै।

विधि—अजमोद के बीज, अजवायन, सोये के बीज, गाजर के बीज, गंदने के बीज, प्रत्येक ढाई तोले, मस्तगी, लोंग, तज, अकरकरा, नेत्रबाला, जावित्री, अगर पांच पांच माशे, केशर तीन माशे, कस्तुरी एक माशे, मुनक्का आधपाव, सबको पीसकर डेढ पाव सफेद बूरे के साथ पकावें जब पकजाय तब उपरोक्त औषधों को पीसकर मिलावें।

माजून मलूकी—इन्द्री उदर और क्षुधा को बलदे और काम शक्तिको बलवान करे।

विधि–जायफल, लौंग, जावित्री, इन्द्रयव, गं-धोल की जड़, सोंठ, दालचीनी, मस्तगी, केशर, ऊदगरकी प्रत्येक एक तोला, छोटी इलायची के बी-ज, कुन्दर उशवा, छे छे माशे, सफेद बूरा शहत प्-त्येक तीन छटांक कोआधपाव गुलाब के अर्कमें चाशनी करके मिलावें।

माजून असबद–पेचिश और पुराने अतीसार को दूर करे।

विधि–अफीम, खुरासानी अजवायन, केशर, ने-त्र वाला, अजमोद, अनीसूं, बालछड़, तज, अरमनी मिट्टी, समान भाग लेकर तिगुने शहत के साथ चाशनी बनावें।

माजूनगूगल–खूनी और बादी बवासीर, आंतों की वात और गुदाके दर्द को दूर करती है।

विधि–गूगल चार तोले, मुनक्का अंजीर प्रत्येक दो तोले, पानी में पीसकर पकावें और कावलीहड़ बहेड़ा, आमला, गुलाबके फूल असबंद, गंदना के बीज प्रत्येक सात माशे पीसकर मिलावें।

माजून खब्सुलहदीद–बवासीर के रुधिर को बन्द करे।

विधि–लोहे का मैल सुधा हुआ सवा तोले, काली हड़ बहेड़ा आमला, मांई प्रत्येक नौ माशे,

बालछड, गंधील, नागरमोथा छे छे माशे लेकर दूनी मिश्री के साथ माजून बनावें ।

माजून—हाथपांव पर सूजन आने. जलोदर मस्तिष्क आमाशय और अन्य अवयवों के रोगों को गुणदायक है ।

विधि—दारचीनी, किब्रकी जड़ का छिलका विसफायज गंधील प्रत्येक डेढ़ तोला, बालछड तीनतोले, आसारून, रेवन्द चीनी मठिाकुट, मजीठ, नागर मोथा प्रत्येक एक तोला चूर्ण करके बाबूना के तेल में चिकनी करके तिगुने शहत में मिलावें ।

माजून—गठिया और आतोंके दर्दको गुणदायकहै।

विधि—सुरंजान दो तोले, सनायमकी एक तोला जीरा, पीपल, प्रत्येक नो माशे, लेकर तिगुने शहत में माजून बनावें ।

माजून मसीहा—पीठ और पेरके दर्द को गुणदायक है वमन लातीहै और आमाशयको बलदायकहै

विधि—गुलाब के फूल, नागरमोथा, तितली, अक़रक़रा, लोंग बालछड, मस्तगी. नरकचूर केशर दोनों इलायची,जायफल समान भाग और सबका तिगुना शहत और कंद लेकर माजून बनावें।

माजून चोबचीनी—शीत बिकार. गठिया. और

भाग शहत सब औषधोंका तिगुना लेकर माजूनबनावे

माजून-गुरदेऔरमसानेकी पथरीको तोडेओरगिरावे

विधि—बीछू की भस्म एक तोला, सोंठ, चार माशे, सफेद मिर्च, काली मिर्च, आठ आठ माशे, काकनज डेढ़ तोला, शीशे की भस्म तीन माशे, मुरगी के अण्डे के छिलके की भस्म जिससे बच्चा निकल चुका हो हुज्जुलयहूद पोदीना प्रत्येक छे माशे लेकर तिगुने शहत के साथ माजून बनावें और इस माजुन को खाकर काले चने और बड़े गोखरू प्रत्येक सात माशे का काढ़ा पीवें।

माजून हुज्जुलयहूद—गुरदे और मसाने की पथरी को गिरावे।

विधि—मीठे कद्दू के बीज की मींगी, खीरे ककड़ी के बीज की मींगी, खरबूजे के बीज की मींगी काकनज प्रत्येक डेढ़ तोला हुज्जुलयहूद नौ तोले शहत तिगुना लेकर माजुन बनावें।

अन्य विधि—हुज्जुलयहूद दस तोले, काकनज, आसारून, खरबूजे के बीज की मींगी, गाजरके बीज, अजमोद, कसुम के बीज की मींगी, अनीसून, तरबूज़ के बीज की मींगी, मीठे कद्दू के बीज की मींगी खीरे के बीज की मींगी, प्रत्येक एक तोला और

माजून काकनज—नले और पेडू के घाव और मूत्र में रुधिर आने को उपयोगी है ।

विधि—खुरासानी अजवायन, अजमोद, सौंफ, प्रत्येक चार माशे, खरबूजे के बीज की मींगी, चूका चिलगोज़े की मींगी, कतीरा, मीठे बादाम की मींगी फिंदक की मींगी, प्रत्येक एक तोला, अफीम केशर प्रत्येक दो माशे, काकनज तीन माशे, और शहत तिगुना लेकर माजून बनावें ।

माजून—चिनग, स्वप्न में मूत्र होजाना, वीर्य के बहने और तरी और पवनको हितदायकहैं ।

विधि—काली हड़ और काबली हड़, घी में भुनी हुई प्रत्येक छे माशे, कहरुबा एक तोले, सफेद कत्था सुआ सुपारी, हब्बुल्लास, सालब मिश्री प्रत्येक नौ नौ माशे, कुन्दर तीन माशे पीसकर और बीस तोले बड़ी और सुर्ख मुनक्का को गुलाब के अर्क़ में जोश देकर और पीसकर मिलावें ।

माजून—जो कफके कारण उत्पन्न पैर की अँगुलियों की पीडा को गुणदायक है ।

विधि—पीली हड़, सूरंजान, अकरकरा, प्रत्येक सवा तोले, सफेद मिर्च पांच माशे, कालाजीरा दो तोले, रासन एक तोला, सोंठ सात माशे अफीम दो माशे, और शहत ढाई गुना लेकर माजून बनावें

माजून–पैरकी अंगुलियों के दर्द को गुणदायकहै।

विधि–मीठा सुरंजान डेढ़ तोला, कनेर की जड़ पीपल, काली मिर्च, काला ज़ीरा, प्रत्येक पांच माशे नौसादर, समुद्रफेन, सिलारस तीन तीन माशे सफेद निसौत राई सोंठ प्रत्येक सात माशे, और शहत तिगुना लेकर माजून बनावें।

माजून–पैर की उंगलियों के दर्द और गठिया को अत्यन्त गुणदायकहै।

विधि–नेत्र बाला, सोंठ, काला जीरा, पीपल, मीठा शोरंजान, छै छे तोले सनायमकी तीन तोले और शहत तिगुना लेकर माजून बनावें।

ॐ एक सौ चौबीसवां अध्याय ॐ

माजून–पुष्ट कारक कामोत्पादक और वीर्य को गाढ़ा करने वाली।

माजून मूसली–कामशक्तिको प्रबल और वीर्यको शुद्ध करने में अत्यन्त गुणदायकहै यहां तक कि अयोग्य मनुष्यको भी उपयोगी है।

विधि–सालम मिश्री, दोनों मूसली, सेमल की मूसली, कामराज, सोंठ प्रत्येक डेढ़ तोला शलजम के बीज, सोये के बीज, गाजरके बीज, प्याज के बीज मिर्च पीपल प्रत्येक आठ माशे, शहत और लाल बूरा प्रत्येक पाव भर लेकर माजून बनावें मात्रा नौ माशे से एक तोले तक खटाईकापरहेज़ करें।

माजून दारचीनी–कामदेव को बढाने में उपयोगी है।

विधि–दालचीनी डेढतोला, मीठाकूट, सोंठ, सफेद मिर्च, बड़े गोखरू, छोटे गोखरू, तेजपात नेत्रबाला, लौंग मस्तगी। छोटी इलायची के बीज, मूली के बीज, शलजम के बीज. छैछै माशे, सफेद तिली, मीठे बादाम की मींगी, पिस्ता चिल्गोज़ेकी मींगी, सालबमिश्री. शकाकुलमिश्री, दोनों बहमन अगर एक एक तोला, सफेदमिश्री समान भाग शहतदूना लेकर माजूनबनावें मात्राछै मासेसे १तोलेतक।

माजून सालब मिश्री–कामदेव को प्रबल और वीर्य को गाढा करे।

विधि–सालबमिश्री पांच तोला, शकाकुलमिश्री तीन तोला, अकरकरा, कुलीजन समन्दरसोख, भिलायेकी मींगी, असगंध प्रत्येक एक तोला, पीपल, मस्तगी, हालों के बीज, जायफल, सोंठ, दोनों बहमनी, दोनों तोदरी प्रत्येक छे माशे, सफेद तिल, कौंच के बीज की मींगी, गाजर के बीज एक एक तोला, जावित्री केशर तीन तीन माशे, सफेद कंद सब औषधों के समान भाग और शहत सबका तिगुना लेकर माजून बनावें। मात्रा तीन माशे से छे माशे तक सुबह शाम सेवन करें।

माजून लूलूई–(मोतीपाक)–यह अत्यन्त गुण

दायक है। हकीम जालीनूस की बनाई हुई है। स्तम्भन करने में अत्यन्त गुणदायक है संभोग के समय पांचमाशे खाकर थोड़ा गरमजल पीनाउचितहै

विधि–अनबिंधे मोती, मूंगा, पांच पांच माशे अनीसु बहमन सफेद, दस दस माशे, काकनज, इश्कपेचां की जड, चार चार माशे,ऊदबिलाव, गंधील नागरमोथा, मांई तज,दालचीनी नेत्रबाला मस्तगी, प्रत्येक तीन माशे, बबूल का गोंद, कतीरा, दो दो माशे, समान भाग शहत लेकर पाक बनावें।

माजून मिश्री– यह मिश्रदेशके वैद्यों की बनाई हुई है काम-देवको प्रबल करने में अद्वितीय है।

विधि–गाजर के बीज, मूली के बीज, शलजम के बीज, शकाकुल मिश्री, स्नालन, मिश्री, पीपल, जावित्री, अकरकरा, मस्तगी प्रत्येक एकतोला, लौंगदो तोला, सोंठ चार तोला, पीसें और चालीस नग मुर्गी के अंडे की ज़रदी को थोडा जोश देकर उसमें सब औषधों को हाथ से खूब मींडकर समान भाग बूरे की चाशनी में मिलावें। मात्रा नौ माशे से एक तोले तक।

माजून–बलदायक चित्त को प्रसन्न करने वाला और कामोद्दीपन है।

विधि–दोनों बहमनी, शकाकुल मिश्री, दालची

नी, बुजीदान, जावित्री, कबाब चीनी, कुलीजन, इन्द्रयव, काकलतेन (देखो पृष्ट ११ नं० १६) बालछड, बनतुलसी, लोंग, मस्तगी, तेजपात नौ नौ माशे, सालबमिश्री तीन तोले, अगर नागदून के बीज छैछे माशे, भंग चार तोले, मीठे बादाम की मींगी अखरोट की मींगी छैछे तोले, शकर औरशहत उचित रीति पर सब औषधों से दूना लेकर माजून बनावें। मात्रा छे माशे से ९ माशेतक।

माजूनरेगमाही—कामदेवको प्रबल और वीर्य्य को गाढा करने में उपयोगी है।

विधि—रेगमाही, इन्दरजौ, सफेद पोस्त के डोड़ा, नरकचूर, सफेद चंदन, गिरी, बादाम की मींगी पिस्ता, चिलगोजे की मींगी, अखरोट की मींगी, मुनक्का, काले तिल धुले हुए दो दो तोले, प्याज के बीज, शलजम के बीज, कवाचके बीज की मींगी, हालों के बीज, मांई, असबंद के बीज, गाजर के बीज, मस्तगी. नागरमोथा, अगर चीता, बिजोरे का छिलका, तेजपात, सोये के बीज, मूली के बीज, तोदरीन, (देखो पृष्ठ ११ नं० १३) मूसलीस्याह मूसली सफेद, एक एक तोला. सलाजीत अकरकरा. लोंग जावित्री कालीमिर्च. दालचीनी. नौ नौ माशे सफेद बूरा ४

ति से सब औषधों का दूना लेकर माजून बनावें। मात्रा छे माशे से एक तोले तक।

माजून मसीही—अत्यन्त कामोद्दीपक और पीठ को बलदायक और भोजन को पचाने वाली है।

विधि—अक़रक़रा डेढ़ तोला, जायफल तीननग, बाजरा चिकना किया हुआ मीठे बादाम का तेल प्रत्येक ढाई तोला, पीसकर छे गुने सफेद बूरे की चाशनी में मिलावें।

माजून बिलादर—कामदेवको प्रबल करने और स्तम्भन करने में अद्वितीय है वृद्ध मनुष्यों कोतरुणाई का बल देती है इसको जाडेकी ऋतु में सेवन करना चाहिये।

विधि—एक सेर भिलावा टुकडे टुकडे करके एक हांडी में रक्खें और उस हांडी के नीचे बहुतसे सुराख करें कि उन छिद्रों में से भिलावे का शहत निकल सके और हांडी का मुख चीनी से बंद करके हांडी को एक देगची पर रक्खें और देगची को गड्ढे में रक्खें और हांड को अरने कंडों से बंद करकेजलावें जब सबउपले जलजांय तब और उपले रखकर अग्नि दें इसी प्रकार तीन बार करें तब ठंडी करके देगची को निकालें जितना शहत देगची में एकत्रित हुआ हो उसका ...

मिलाकर पकावें जब चतुर्थांश शेष रहे तब तीन चौथाई मिलाये का शहत और तिलका तेल मिलाकर पकावें बिलकुल एकसा माजून की सदृश्य हो जाय उस में से प्रत्येक दिन प्रातःकाल नौ माशे खायाकरें।

माजुन—काम शक्तिको प्रबल करने में अत्युत्तम है शरीर के रंगको सुर्ख, शरीर को मोटा और वीर्य को अधिक करती है।

विधि—मुरगी के अण्डे की सफेदी और जर्दी, गौ घृत, प्याज का पानी, गाजर का पानी, शहत समान भाग पका कर माजून बनावें और उचित मात्रामें जितनी कि बरदाश्त हो सके चालीस दिन तक सेवन करें।

माजुन घीग्वार—कामदेव को शक्ति देने और ठण्डे रोगों को दूर करने में अत्यन्त उपयोगी है।

विधि—घीग्वार का गूदा पाव सेर, लेकर सवा सेर गाय के दूध में जोश देकर खूब मलकर मिलाव और सेर भर सफेद शकर मिलाकर पकावें कि माजून बन जाय।

माजुन—कामदेव को प्रबल और मूत्रेन्द्रिय को दृढ़ करने में अत्यन्त उपयोगी है।

विधि—असबन्द, जावित्री, जायफल, लौंग, दाल चीनी, एक एक तोला, काले तिल धुले हुए दो तोला लेकर तिगुने शहत के साथ माजून बनावें।

❀ एक सौ पच्चीसवां अध्याय ❀

मुफ़र्रहात अर्थात् चित्त प्रसन्न करने वाली औषधों का वर्णन।

मुफ़र्रह—तनकिये के पश्चात् हौलदिलीको गुणकरे

विधि—काबली हड़ का काढ़ा दस तोले, आमला पन्द्रह तोले में एक रतल शहत मिलाकर चाशनी करें और बिल्ली लोटन, बिजौरे का छिलका, लौंग मस्तगी, जायफल, तज, इलायची, नागकेशर, बहमन सफेद, दरूंज अक़रबी, नरकचूर, केशर, जंगली तुलसी के बीज, राम तुलसी सात सात माशे पीसकर मिलावें।

मुफ़र्रह—उस हौलदिली को जो बात के जल जाने से उत्पन्न हो दूर करती है और हृदय को बल देती है।

विधि—गुलाब के फूल, नागरमोथा, लौंग, सवा सवा तोले, जावित्री, जंगली तुलसी के बीज, तज प्रत्येक नौ माशे, कस्तूरी दो माशे, पीसकर आध सेर सेब के शरबत में मिलावे या चाशनी में जो आध सेर क़दकी गावज़बां के अर्क में की हो।

मुफ़र्रह सर्द—दिल की निर्बलता, बावले पन, वहम और हौलदिली को अत्यन्त गुणदायक है।

विधि—अनबिंधे मोती तीन माशे, कहरुबा शमई मूंगा, सफेद चन्दन, सूखा धनियां प्रत्येक

सात माशे, सफेद बंसलोचन, सफेद बहमन, गुलाब के फूल, गावज़बां के फूल, प्रत्येक सवा तोले बहमन सुर्ख, पिस्ता का ऊपर का छिलका, कुलफे के बीज छिले हुए, जरिश्क, आबरेशम, कतीरा प्रत्येक नौ नौ माशे, चांदी के वरक बीस नग, सोने के बरक दस नग और सफेद कंद आध सेर लेकर माजून बनावें

मुफ़र्रह—चित्त को प्रसन्न करे और हृदयको बलदे,

विधि—बालछड़, तज, कालतैन, पांच पांच माशे, दरूंज अकरबी, उस्तखुद्दूस, तितली, प्रत्येक एक तोला, कुन्दर केशर, नरकचूर, अगर, तेजपाल दालचीनी, बिल्ली लोटन, कहरुबा, गावज़बां के पत्ते, गुलाब के फूल नौ नो माशे, और शहत तिगुना लेकर माजून बनावें ।

मुफ़र्रह—हृदय की दुर्बलता, वहम विक्षिप्ता, और हौलदिली को दूर करे और हृदय को बलदे और प्रसन्न रक्खे ।

विधि—अनबिंधे मोती, मूंगा, तीन तीन माशे बिल्ली लोटन, बिजौरे का छिलका, पिस्ताका ऊपर का छिलका, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, गुलाब के फूल, तुलसी के बीज, सफेद बंसलोचन प्रत्येक नौ माशे, करुहवा शमई, संगयशब, लौंग, केशर, कपूर पांच पांच माशे, कबाब चीनी, बहमन सफेद

बहमन सुर्ख़, दालचीनी, अगर, धनियां, नकर चूर गावज़वां के फूल, आमला, जरिश्क, सात सात माशे, सफ़ेद मिश्री आध सेर, गुलाब जल, और क्योड़े के अर्क़ में चाशनी करके बनावें।

मुफ़र्रह मोतदिल—प्रधान अवयवों को बलदायक है और खफ़कान दिल के धड़कने और वहम को दूर करती है।

विधि—गावज़ुवां के पत्ते, कहरुबा शमई, धनियां छिला हुआ, आबरेशम कतरा हुआ, बहमन सफ़ेद गुलाब के फूल, बिजौरे का छिलका, कुलफ़े के बीज सफ़ेद चन्दन सब समान भाग लेकर तिगुनी सफ़ेद मिश्री के साथ माजून बनावें।

मुफ़र्रह—काम शक्ति और जिगर को बलदायक वीर्योत्पादक, स्त्री संभोग में सुखदायक, गुरदे और मसाने को साफ़ करने वाली है।

विधि—शक़ाक़ुल मिश्री, कुलीजन, सालबमिश्री, दोनों बहमनी, दोनों तोदरी, इन्द्रयव, नागदून के बीज, गोखरू, शलजम के बीज, खरबूजे के बीज की मींगी, खीरे ककड़ी के बीज की मींगी, सफ़ेद पोस्त के डोडा, कद्दू के बीज की मींगी, बिनौले की मींगी नौ नौ माशे, जायफल, सोंठ, कबाब चीनी, आसा

हून, अगर बुज़ीदान छे छे माशे सफेद मिश्री डेढ पाव लेकर बदस्तूर माजून बनावें।

हर्फनून।

❀ एकसौ छब्बीसवां अध्याय ❀

नबीज का वर्णन।

नबीज खुरमा-वीर्य्यको उत्पन्न कामदेवको प्रबल और शरीर को बलवान करै और चित्त को प्रसन्न और कामोद्दीपन करने वालीहै।

विधि—सात सेर छुआरे एक मन जल में औटावें जब आधाजल शेप रहे तब जायफल लौंग दारचीनी सोंठ तेजपात बडी इलायची प्रत्येक दोतोला बिजोरे का छिलका तीन तोला नारंगी के पत्ते पांच तोले, केशर छे माशे सबको जौकुट करके मिलावें और उपरोक्त विधि से बनावें।

नबीज किशमिश—स्वच्छ रुधिर उत्पादक पुष्ट कारक और चित्तको प्रसन्न करने वाली है।

विधि—किशमिश पाचसेर, गाजर छिलीहुई तीन सेर, बीस सेर जल और दस सेर ईखके रस में जोशदें जब अर्द्धभाग जल शेपरहै तब दारचीनी तेजपात, बिजोरे का छिलका, पांच पांच तोले, खुरासानी अजवायन, लौंग, सोंठ दो दो तोले जौकुट करके मिलावें।

मवीज फ़वाकु–रुधिर संशोधक, बलदायक, चित्तको प्रसन्न करने वाली और मस्ती लाने वालीहै।

विधि–छुआरे किशमिश डेढ़ डेढ़ सेर, आलू-बुखारा उन्नाब, पावपाव सेर, बबूलकी भीतरकीछाल बेर की छाल, आमकी छाल प्रत्येक आधपाव, लेकर बीस सेर जल में औटावें जब अर्द्धभाग शेष रहे तब खुरासानी अजवायन, नागरमोथा, खस लौंग दो दो तोले मिलाकर बनावें।

* एकसौ सत्ताईसवां अध्याय *

नुतूल अर्थात् तड़ेरों का वर्णन।

नुतूल–गरमी की मस्तिष्क पीडा हाथ पैरों का कांपना बावलेपन और सरसाम को गुणदायक है।

विधि–बनफसे के पत्ते, कद्दूके बीज जौकुट, अ-लसी खश खाश के बीज, खतमी के बीज, काहू के बीज, गुलाब के फूल, जौकुट समान भाग पानी में जोशकरके शिरपर तड़ेरा दें।

नुतूल–खुमारी की मस्तिष्क पीडा को गुणकरे।

विधि–गुलाब का अर्क आधपाव, सिरका एक छटांक दो सेर ठंडे जल में मिलाकर शिरपर तड़ेरादें।

नुतूल–बातके सरसाम को दूर करे।

विधि–बनफशे के पत्ते, बाबुना के फूल, नाजबू, सोया, नरगिस के फूल समान भाग जोश करके

थोडा सफेद तिलका तेल मिलाकर गुनगुना काममें लावें।

तुतुल–स्तनों के शोथ को जो दूध के जमजाने से हो दूर करे ।

विधि–बाबूना के फूल, सोया, तितली, मेथी, नाखूना और पोदीना समानभाग लेकर जल में औटाकर तडेरा दें ।

तुतूल–मसाने और गुरदे की पथरी को टुकडे टुकडे करके मूत्र द्वारा निकाले ।

विधि–नाखुना, बाबूनाके फूल, गुलाबके फूल, प्रत्येक डेढ तोला, सूखा हुआ खरबूजे का छिलका, हंसराज, कुलथी के बीज, जौकुट दो दो तोले, लानी मुलहटी सौंफकी जडका छिलका, काकनज, मेथी, एक एक तोला, तुलसी बनफशा, नीलोफर के पत्ते, नौ नौ माशे जलमें औटाकर तडेरा करें ।

तुतुल–गुरदे और मसानेकी पथरी औरदर्दकोदूरकरे

विधि–अंडी के चीयां, हंसराज, गोखरू, बाबुना के फूल, बनफशे के फूल, नाखूना, खतमी के फूल अजमोद, कुलथी, मेथी, मकोय, दौनामरुआ, सौंफ की जड का छिलका, काकनज, तुलसी, तितली के पत्ते, गुलाब के फूल, अनीसुन, अमर बेलके बीज, अलसी दो दो तोले, खरबुजेका सूखा छिलका,

गेहूं की भुसी चार चार तोले, नागदून के बीज एक तोला पानी में जोशकरके तड़ेरा दें ।

नुतुल–मूत्रेन्द्रिय और अंडकोप के सरदी के शोथ को गुणदायक है और उसके गलीज़ मवादको तहलील करता है ।

विधि–पोदीना, दौनामरुवा, एकोय, दो दो तोले, बैलका पित्ता एक नग शहत एक तोले जल में जोश करके तडेरा करें ।

❋ एकसौ अट्ठाईसवां अध्याय ❋

नफूक का वर्णन ॥

नफूक–सरदी का शिरदर्द, आधासीसी, नजले का जल उतर आने को और नेत्रके पुराने शीत बिकारों को गुणदायक है ।

विधि–गेंहू को तीन बार आक के दूध की पुट देके वारीक पीसकर नाक में फूंकें ।

नफूक–ठंडे शिर दर्द और आधासीसीको हित है ।

विधि–जायफल, लौंग, सोंठ दालचीनी काली मिर्च तीन तीन, माशे छोटी इलायची के बीज, केशर दो दो माशे, सफेद चन्दन, चार माशे पीसकर गुलाब के अर्क में नम करके सुखाकर नाक में फूकें ।

नफूक–मृगी को दूर करे ।

विधि—इन्द्रायन का गूदा, नौसादर, कलोंजी, छिकनी, कालीमिर्च समान भाग पीसकर नाकमें फूंकें।

नफूक़—सकते को गुण करे।

विधि—ऊद बिलावके अण्डकोष, काली मिर्च नक छिकनी, तितली समान भाग पीसकर नाकमें फूंकें।

नफूक़—फालिज के रोग को गुणदायक है।

विधि—नकछिकनी, काली मिर्च, अकरकरा सोंठ कटए अरमनी, नौसादर, एलुवा, दालचीनी, सफेद कुटकी, दौना मरुवा सूखा हुआ, समान भाग पीस कर नाक में फूंकें अथवा पिसी हुई और औषधोंको दौनामरुवा के रस में घोटकर नाकमें टपकावें।

नफूक—नकसीर को बन्द करे।

विधि—कागज़ जला हुआ, सीपी जली हुई एक एक भाग सोनामाखी आधा भाग पीसकर नाकमें फूंकें

अन्य विधि—माजू फल अधजला, धनियां, लोबान, हंसराज, एलुवा फिटकरी समान भाग पीस कर नाक में फूंकें।

नफूक—काग गिर जाने को उपयोगी है।

विधि—हरे माजु फल, गुलाब के फूल, गुलनार, पोदीना चार चार माशे, अकरकरा, बड़ी इलायची के बीज, वंसलोचन दो दो माशे, और केशर एक माशे, पीसकर हलक में फूंकें कि कौवेपर पहुँचे

अन्य विधि—मसुर, नोसादर, गुलाब का ज़ीरा, समान भाग पीसकर हलक में फूंकें काग पर पहुँचे।

❀ एक सौ उनतीसवां अध्याय ❀

नकूअ अर्थात् खिसादों का वर्णन।

नकूअ जरिश्क—कलेजे की गरमीको दूर करे और आमाशय और यकृत को बलदे।

विधि—जरिश्क छै माशे, अमरबेल के बीज, कासनी के बीज, जोकुट चार २ माशे, सफेद मिश्री डेढ़ तोला रातको जलमें भिगोदें प्रातःकाल मल छानकर पीवें।

नकूअ—हरिदया कमलवाय और नसोंकी ग्रन्थियों को दूर करे।

विधि—कासनी के बीज छै माशे, सोंफ, सोंफ की जड़ तीन तीन माशे, मकोय चार माशे, लेकर रात को जल में भिगोदें सुबह को मल छानकर दो तोले सिकंजबीन सादा मिलाकर पीवें।

नकूअ—काली कमल वाय को दूर करे।

विधि—गुलाब के फूल, बिल्ली लोटन चार २ माशे शाहतरेके पत्ते, आशाकबेल, तीन माशेमुनक्का एक तोला रातको जलमें भिगोकर प्रातकाल मलछानकर दो तोले सिंकजबीन सादा मिलाकर पीवें।

नकूअ—पित्तज ज्वर को दूर [illegible]

[illegible] बर[illegible] [illegible]रा, नीलो

फर के फूक, गुलाब के फूल चार चार माशे, आलू बुखारा दस नग, सफेद मिश्री डेढ़ तोला लेकर खिसांदा करके पीवें ।

अन्य विधि—जौकुट कासनी के बीज नौ माशे जौकुट कुलफे के बीज छे माशे, सेवती के फूल चार माशे, आलू बुखारा सात नग, इमली दो तोले सफेद मिश्री डेढ़ तोला खिसांदा बनाकर पीवें ।

नकूअ—द्वंदज कफ पित्त ज्वर को दूर करे ।

विधि—मकोय, सौंफ, कासनी के बीज, काहुके बीज, कुलफे के बीज, चार चार माशे, मुनक्का दस नग, खतमी जौकुट तीन माशे, सफेद बूरा दो तोले।

अन्य विधि—शाहतरे के पत्ते, सूखा धनियां, नीलोफरके फूल, गुलाब फूलके चार२ माशे, खतमी के बीज, खुब्बाजी के बीज, मुलहटी पांच पांच माशे रात को जलमें भिगो कर सुबह को मल छानकर डेढ़ तोले सिकंजबीन सादा मिलाकर पीवें ।

हर्फ़ वाव ।

* एक सौ तीसवां अध्याय *

वजूर का वर्णन ॥

वजूर—मृगी को दूर करे और मृगी वाले को होश में लावे ।

अन्य विधि—मसूर, नौसादर, गुलाब का ज़ीरा, समान भाग पीसकर हलक में फूंकें काग पर पहुँचे।

❋ एक सौ उनतीसवां अध्याय ❋

नक़ूअ अर्थात् खिसांदों का वर्णन।

नक़ूअ जरिश्क—कलेजे की गरमीको दूर करै और आमाशय और यकृत को बलदे।

विधि—जरिश्क छे माशे, अमरबेल के बीज, कासनी के बीज, जौकुट चार २ माशे, सफेद मिश्री डेढ़ तोला रातको जलमें भिगोदें प्रातःकाल मल छानकर पीवें।

नक़ूअ—हारिद्या कमलवाय और नसोंकी ग्रन्थियों को दूर करे।

विधि—कासनी के बीज छे माशे, सौंफ, सौंफ की जड़ तीन तीन माशे, मकोय चार माशे, लेकर रात को जल में भिगोदें सुबह को मल छानकर दो तोले सिकंजबीन सादा मिलाकर पीवें।

नक़ूअ—काली कमल वाय को दूर करे।

विधि—गुलाब के फूल, बिल्ली लोटन चार २ माशे शाहतरेके पत्ते, आशाकबेल, तीन माशे मुनक्का एक तोला रातको जलमें भिगोकर प्रातकाल मलछानकर दो तोले सिंकजबीन सादा मिलाकर पीवें।

नक़ूअ—पित्तज ज्वर को दूर करे।

विधि—गावज़बां के पत्ते, बनफशे के पत्ते, नीलों

फर के फूल, गुलाब के फूल चार चार माशे, आलू बुखारा दस नग, सफेद मिश्री डेढ़ तोला लेकर खिसांदा करके पीवें।

अन्य विधि—जोकुट कासनी के बीज नौ माशे जौकुट कुलफे के बीज छे माशे, सेवती के फूल चार माशे, आलु बुखारा सात नग, इमली दो तोले सफेद मिश्री डेढ़ तोला खिसांदा बनाकर पीवें।

नकूअ–हुंदज कफ पित्त ज्वर को दूर करे।

विधि–मकोय, सोंफ, कासनी के बीज, काहूके बीज, कुलफे के बीज, चार चार माशे, मुनक्का दस नग, खतमी जोकुट तीन माशे, सफेद बूरा दो तोले।

अन्य विधि–शाहतरे के पत्ते, सूखा धनियां, नीलोफरके फूल, गुलाब फूलके चार२ माशे, खतमी के बीज, खुब्बाजी के बीज, मुलहटी पांच पांच माशे रात को जलमें भिगो कर सुबह को मल छानकर डेढ़ तोले सिकंजबीन सादा मिलाकर पीवें।

हर्फ वाव।

* एक सौ तीसवां अध्याय *

वजूर का वर्णन॥

वजूर–मृगी को दूर करे और मृगी वाले को होश में लावे।

विधि–हींग दो भाग, जुंदबेदस्तर एक भाग जल में घोलकर हलक में टपकावें।

अन्य विधि–अनीसूं और काला जीरा समान भाग जल में पीसकर गुन गुना हलक में टपकावें।

वजूर–दूध पीते बच्चेकी कफकी खांसीको दूरकरे।

विधि–अतीस बच चार चार माशे, भारंगी, काकड़ा सींगी, नागरमोथा, पियाबांसा, पीपल, छै छै माशे, बारीक पीसकर उसमें थोड़ा शहत मिलाकर रक्खें और उस में से दो रत्ती मा के दूध में या जल में घोलकर बच्चे को पिलावें।

वजूर–बच्चों की सब प्रकार की खांसी को हितहै।

विधि–पोहकर मूल, काकड़ा सींगी, पीपलामूल शकरतगाल, समान भाग पीसकर डेढ़ भाग शहत में मिलाकर रक्खें और उसमें से थोडासा मा के दूध या पानी में मिलाकर बालक को चटावें।

वजूर–बच्चों की मिरगी को गुण करे।

विधि–पहाड़ी पोदीना, जुंदबेद स्तर कालाजीरा प्रत्येक एक रत्ती माके दूध में पीसकर बच्चे को चटावें।

वजूर–अचेतनता को उपयोगी है।

विधि–कस्तूरी और अंबर थोडे गुलाब जल में घिसकर हलक में डालें।

वजुर–अचेतनता को जो विशूचिका में होजाय तुरन्त दूर करै ।

विधि–दरयाई नारियल गुलाब जल में घिस कर हलक में टपकावें ।

हर्फ ये ॥

❀ एकसौ इकत्तीसवां अध्याय ❀

याकूती का वर्णन ॥

विदित हो कि माजों के खयाल से याकूती की विधि नवीन है परन्तु विश्वसनीय पुस्तकों से ज्ञात होता है कि हकीम अरस्तू ने सिकंदर बादशाह के वास्ते याकूती बनाई थी, इससे इसकी प्राचीनता प्रगट होती है। यह बात प्रत्यक्ष है कि याकूत सब खाने की जवाहरातों में विशेष मजबूत और पुष्टकारक है इसलिये उसको ज्यादा घिसना चाहियेक्योंकि ज्यादा घिसने से उसको तबियत ग्रहण करती है उसको बारह पहर से कम और अट्ठाईस पहर से ज्यादा नहीं घिसना चाहिये और अन्य औषधों को पृथक पीसना चाहिये ।

याकूती–हकीम शेखउलरईस ने हौलदिली वहम और सब प्रकार के बात के रोगों को गुणदायक और हृदय और मस्तिष्क को बलदायक लिखाहै ।

विधि–याकूत रम्मानी तीन माशे, अनबिंधेमोती, केशर पांच पांच माशे, हुब्रे अरमनी, लाजवर्द सात सात माशे,कस्तूरी दो माशे, कपूर तीन माशे अर्क गुलाब में घिसे जांय और गावजवां के फूल, कासनी के बीज, कहरुवा शमई आवरेशम कतरा हुआ,केकडा जला हुआ, तुलसी के बीज, उस्तखुद्दूस, बहमन सफेद, अगर, छोटी इलायची के बीज, जदवारखताई, दरूंज अकरबी, बालछड, गुलाबके

फूल, खीरे के बीज की मींगी प्रत्येक छे माशे पीस कर तिगुने मीठे अनारके शरबत में मिलाकर चालीस दिन तक रख छोडें इसके पश्चात तीन माशे से छे माशे तक सेवन करें।

याकूती–हकीम हाजीउलमुल्क अमलखां की बनाई हुई है। सब प्रकार की विक्षिप्तताको गुणदायक है और काम शक्तिको बलदायक है।

विधि–याकूत, मोती कहरुवा, मूंगा, पन्ना, लाजबर्द नो नौ माशे, तेजपात, गुलाब के फूल, गावजवां के पत्ते, दोनों बहमनी, दोनों तोदरी, सुखा धनिया, आमला, दोनों चंदन, दो दो तोले, अगर दोनों इलायची के बीज, दालचीनी, आबरेशम कतरा हुआ, बालछड, बिजोरे का छिलका एक एक तोला, कस्तूरी दो माशे केशर बनतुलसी दरूज अकरबी, बूज़ीदान छे छे माशे, सोने के वर्क बीस नग, चांदीके वर्क २० नग सफेद मिश्री डेढ़ रतल लेकर गुलाब अथवा केवडे के डेढपाव अर्क में चाशनी करके बदस्तूर बनावें।

याकूती–जले हुए दोषों और वाय और तरीके मवाद को निकाले, विक्षिप्तता को दूरकरे मस्तिष्क हृदय और प्रधान अवयवों को बलदे अग्निको सर्दी

पन करै और बल बढ़ाने में और फिक्र दूरकरनेमें अद्वितीय है ।

विधि—याकूत रुम्मानी, बसद, अनबिंधे मोती कहरुबा, सात सात माशे,लाजवर्दनो माशे,गावज-वां के पत्ते,रूमी मस्तगी, कुलफेके बीज, राम तुलसी के बीज, काहू के बीज,खीरेके बीज की मींगी, मीठे कद्दू के बीज की मींगी, सफेद चन्दन, एक एक तोला, बंसलोचन, छोटी इलायची के बीज, बालछड केशर छेछे माशे सोनेके वर्क बीस नग सफेद मिश्री एक रतल लेकर विधि अनुसारबनावें ।



उपसंहार ।

❀ प्रथम अध्याय ❀

वैद्यों का गुप्त रहस्य ।

औषधि—पुरानी खांसी, पुराना सोज़ाक, स्वास की तंगी, शीत ज्वर, और आमाशय, यकृत, प्लीहा और गुरदे के शीतरोगों को दूरकरै कामशक्ति को पुष्ट करे और वीर्य्य को गाढा करै ।

विधि—बड़ी और साफ सीपी जिससे मोती निकली हो चार भाग पीसकर हरन भरी, रांगके बारीक वर्क करके और टुकडे टुकडे

लेकर मट्टी की कुल्हिया में घीग्वारका गूदा इतना डालकर दोनों चीज़ों को डालें कि बीच में होजाय और कुल्हिया को गिलहिकमत करके एक गड्ढे में आरने ऊपले भरकर फूंकदें ठंडा होनेके पश्चात् निकालकर पीसें और एक रत्तीसे दो रत्ती तक जबान पर रखकर निगलजांय ऊपरसेएकबताशाखांय

औषधि–जिगर और मसाने के दर्द और स्वास की तंगीको दूरकरतीहै और कामशक्तिको बढाने में अद्भुत गुण रखती है ।

विधि–गतरु बकरेके अंडकोषको फाडकर जरावन्द गोल, काला जीरा, जवाखार तीन तीन माशे पीसकर उसपर छिडकें और सुखाकर सबको पीस कर रख छोडें प्रातः काल छै माशे खाकर ऊपर से थोडा जल पीवें ।

औषधि–इसको लेपकरके संभोग करने से अत्यन्त हर्ष प्राप्तहोता है ।

विधि–पीपल, कच्चा सुहागा, कबूतर की बीट, कपूरसमान भाग शहतमेंमिलाकर मूत्रेन्द्रियपरलेपकरें

औषधि–चना का तेल,पाताल यंत्रद्वारा निकाल कर उसका सेवन करना अत्यन्त कामोद्दीपक तथा पुष्टकारक है यद्यपि इसमें दुर्गन्ध होती है परन्तु किसी वस्तु में मिलाकर सेवन किया जासकताहै।

लेप–यदि आमाशयपर करें तो वमन लावे, यदि नाभिपर करें तो दस्त लावे, और पेडू पर रक्खें तो मूत्र और रजको प्रवाहित करे ।

विधि–वडंगकावली, करेले का उस्सारह तीन तीन माशे, सफेद कुटकी, मुरदासंग चार चार माशे, पीसकर प्रथम चार तोले जैत या पुराने सरसों के तेल में सफेद मोम और बकरी की चरबी एक एक तोले मिलाकर उपरोक्त पिसी हुई औषधोंको मिलावें।

लेप–यदि कपड़े पर लगाकर आमाशयके मुखपर रक्खें तो बादीके दस्तलावे, यदि बगलके नीचे लगावें पित्त के दस्त लावे यदि पीठ की ओर दोनों चूतड़ों के बीच में लेपकरें तो कफके दस्तलावे।

विधि–बाकला छिला हुआ एक छटांक देगची में रखकर इतना गायका ताज़ा दूध डालेंकि बाकला ढकजाय और इतनी आग दें कि दूध सोख जायफिर पीसकर गायका घी मिलाकर काममेंलावें।

तिला–अंडकोश पर लगाने से उतरी हुई आंत चढ़ाता है और आगे को रक्षा करता है ।

विधि–अफीम दो माशे, वहरोजा छे माशे, पानी में पीसकर एक कपडे के टूक पर लगाकर उस पर चार माशे लोबान और छे माशे माजू पीसकर छिडकें और अंडकोश पर बाबूने या सरसों

लगाकर उस पट्टीको रखकर बांधें और चार पहर के पश्चात् फिर बदलें और आंत चढने के चंदरोज बाद तक यह अमल करें।

चटनी—ज्वर और पुरानी खांसीको दूरकरताहै।
विधि—छोटी इलायची के बीज, सफेद बंसलोचन छे छे माशे, छोटी पीपल एक नग, दारचीनी दो रत्ती, एक माशे पीसकर, जितने शहत में चाटने के योग्य हो जाय मिलावें और एक एक माशे तीनों समय चाटें।

पाक—यह हकीम जालीनूस का निर्माण किया हुआ है और मृगीरोग दूरकरने में जादू के समानहै।
विधि—पांच तोले अकरकरा बारीक पीसकरपांच तोले पुराने सिरके में घोटकर सात तोले शहत में मिलावें और प्रत्येक दिन चार माशे खाकर ऊपर से तीन तोले जल पिया करें।

पाक—इसके तीन सप्ताह के सेवन से मृगीरोग दूर हो जाता है।
विधि—अकरकरा, आकाशनेल, उस्तखुदूस, बिसफायज, खखाली समान भाग पीसकर दूने मुनक्का मे पीसकर मिलाकर पकावें, मात्रा चार माशे से सात माशे तक।

टोटका—मांसको सुखाकर पीसकर खाना कामश

क्ति को प्रबल करने और बातोदर को दूर करने में अद्भुतगुण रखता है और विषोंके लियेज़हर मोहराहै।

टोटका—रांगन का दर्द यद्यपि अति दुखदाई है परन्तु मुहम्मद ज़करिया ने अपना तजरुबा लिखा है कि ऐलुवा बहीहड, सुरंजान मीठा समान भाग लेकर गोली बनावें और नौ माशे खाकर थोडा गर्म जल पीवें। पांच छै दस्त होतें हैं परन्तु रोग तुरन्त दूर होता रहै।

टोटका—पटेरा जो झील या तालाब के किनारे जमता है उसको गोंद भी कहते हैं और उसका बोरिया बनातेहैं जलाकर उसकी राख पानी में घोल कर पीना रुधिर थूकने को दूर करता है और सिर: के में घोलकर टपकाने से नासुर दूर होता है।

टोटका—तिधारा पानी में पीसकर गुनगुनी लगाने या बांधने से गठिया रोग दूरहोता है।

❋ दूसरा अध्याय ❋

तत्काल गुणदायक औषधें।

विदित हो कि बाजे रोग उचित औषधि केसेवन से तुरन्त आरोग्य हो जातेहैं उनमें से चंदयहहैं।

मस्तिष्क पीड़ा—यदि मस्तिष्क और शिर में दर्द हो तो सरेरू की फस्द खोलें, और गले के पीछे पछने लगावें, अथवा अफीम सूंघे या अफीम को

नासिका के भीतर और कनपटी पर लगावे। या गुलाब अथवा सफेद खशखाश के ताजा फूल सूंघें और लगावें। यदि शिरके बीच में दर्द होतो रोगन गुलमें कपडा भिगोकर पीडित स्थान पर रक्खें, अथवा रोगन गुल और नमक तलुवों पर लगावें, अथवा कस्तुरी सूंघे या नाक में टपकावें या खुटबढ़ैया की ताजा खाल मस्तिष्क पर बांधे अथवा कवाब चीनी गुलाब में पीसकर शिर पर लगावें और यदि शिर के पीछे गरदन की ओर दर्द होतो कफकी वमन करने से अथवा रेवन्दचीनी और बाबुने का तेल गुनगुना लगाने से दूरहोता है।

आधासीसी—किसी ओर हो नासिका में कुत्तेकी हड्डी का धूआं लेने से दूर होती है अथवा दोनामरुवा की पत्ती नाक में निचोडने औरगुनगुनी लगाने से या मीठे पानीमें पीसकर नाकमें टपकानेसे।

मिरगी—कडवे बादाम के तेल में रीठा घिसकर नाक में टपकावें अथवा सोंठ, मिरच, नकछिकनी, या फाकता की बीट, या सोंठ नाक में फूंकें या गारीकून जीरा, अकरकरा उस्तखुद्दू समान भाग लेकर दूनें शहत के साथ माजून बनाकर खांय।

सकता रोग—नकछिकनी और काली मिर्च नाक

मुखकी दुर्गन्धि—मुनक्का लोंग, छोटी इलायची की गोली बनाकर मुखमें रक्खें दुर्गन्धि दूर होजायगी अथवा छडीला और नागरमोथा जोश करके शहत मिलाकर ग़रग़रा करें।

गले का शोथ—शहतूत का पानी और भेडिये की मेगनी से ग़रग़रा करे या अबाबील की बीट और अमलतास के गूदे से ग़रग़रा करें।

कण्ठमें जोक या कांटा या हड्डी—शराबके सिरके या अजवायन के काढे से ग़रग़रा करने से दूर होता है।

कान का दर्द—मदार का पीला पत्ता या सदा-सुहागा या सुदरसन का पत्ता या महावट का पानी कान मे निचोडने से या अफीम जल में घोलकर कान में टपकाने से या रसोत बकरी के दूध में घो-लकर कान में डालने से दुर होताहै।

कान में शब्द होना—अच्छी अफीम पानी में घोलकर कान में डालने से कान में शब्द होना तुरन्त दूर होजाता है अथवा सोये का तेल या मूली का तेल या लहसन का तेल कान में टपकाने से तुरन्त लाभ होता है।

नकसीर—भुनी हुई फिटकिरी पीसकर नाकमें फूंकें कपूर पानीमें घोलकर नाकमें टपकावें गरदन के पीछे पछने लगावें मरे हुए बादल की भस्म या मरे ऊंट

की भस्म नाक में फूंकें पुरानी गच या आमला माथे पर लगावें।

अन्तड़ियों का दर्द (कूलंज)—माजून मलूका या हब्बडल मलूक की गोली खांय इन्द्रयवके फलके गूदे से शाफा करें बांस की जड़ का जोशांदा (काढ़ा) या अण्डी का तेल पीवें कबूतर या मुर्ग की ताजा बीट कि उसमें गर्मी बाकी हो नाभिपर रक्खें।

मरोड़—आक की जड़ पानी में पीसकर गुनगुनी पेट पर लगावें या कड़के बीज की मींगी का शीरा या बादाम की मींगी का शीरा गुनगुना पीवें।

बच्चों की पेचिश—हब्बुलरशाद और कालाजीरा समान भाग पीसकर गौ घृत में चिकना करके मा के दूध में घोलकर पिलावें।

कांच निकलना—बकरी के सींग और खुर की भस्म सुआ सुपारी, गुलनार, पीले माजूफल और अनार दाना समान भाग पीसकर लगावें या बांधें या इन को जलमें घोलकर आबज़न की रीतिसे उस जलमें बैठें।

मूत्र रुक जाना—मूसे की मेंगनी, सज्जी, और कलमी शोरा पानी में घोलकर नाभि पर रक्खें या केशर मूत्र नाली में रक्खें।

प्रसव पीडा—मनुष्य या घोडे के बाल जलाकर धूनी देने से या नकछिकनी पीसकर शहत मिलाकर

नाभि पर रखने से प्रसव पीड़ा दूर होती है और बच्चा आसानी से उत्पन्न हो जाताहै ।

बवासीर—शहतूत और गूगल समान भाग लेकर गोली बनाके उचित मात्रा में खाने और लगाने से दूर होती है ।

राह चलने की थकावट—और सख़्ती और अवयवों का जकड़ जाना दूर होताहै, सब नसों पर किसी प्रकार का तेल लगावें या गरमी के मौसम में ठण्डे जल में और जाड़े के मौसम में गर्म जल में घुटनों तक खड़े होजांय और वहीं तक भींड़े बाकी शरीर पर जल न पहुँचावें ।

सूखी खुजली हाथ पांवों की— गरम पानी में लवण मिलाकर धोने से तुरन्त दूर होती ।

